॥ श्रीः ॥

हरिदास–संस्कृत–ग्रन्थमाला

६१

निघण्टुसारसङ्ग्रहः ।

[...तुरूपबहुविषयपरिष्कृतो भावप्रकाश-
निघण्टुपरिशिष्टरूपः]

...श्रीपाह्वभिषग्रत्नश्रीब्रह्मशङ्करशास्त्रि-
प्रणीतः ।

प्रकाशकः—
जयकृष्णदास हरिदास गुप्तः—
...खम्बा संस्कृत सीरिज़ आफिस,
बनारस सिटी ।

THE

HARIDAS SANSKRIT SERIES

61

THE

Nighantu Sāra Sangraha

OR

BHĀVAMIS'RA'S MATERIA MEDICA

Explained and supplemented with copious extracts from Standard Works.

BY

BHIS'AGRATNA

Pandit S'ri Brahma S'ankara Mis'ra

PUBLISHED BY

JAYA KRISHNA DAS HARI DAS GUPTA

The Chowkhamba Sanskrit Series Office

BENARES.

1937.

Registered According to Act XXV of 1867,
All Rights Reserved by the Publisher

PRINTED BY

JAYA KRISHNA DAS GUPTA,

VIDYA VILAS PRESS, BENARES CITY.

1937.

❀ श्रीः ❀

हरिदास-संस्कृत-ग्रन्थमाला

६१

निघण्टुसारसङ्ग्रहः।

[तदनुरूपबहुविषयपरिष्कृतो भावप्रकाशस्थ-
निघण्टुपरिशिष्टरूपः]

श्रीमन्मध्वसंप्रदायाचार्यदार्शनिकसार्वभौमसाहित्यदर्शनाद्याचार्यन्यायरत्नतर्क-
रत्नगोस्वामिश्रीदामोदरशास्त्रिणामन्तेवासिना "वस्ती" मण्डलान्त-
र्गत"मिश्रौलिया"ग्रामवासिना सरयूपारीणपङ्क्तिपावनान्ववायिना
गौतमगोत्रोद्भवश्रीव्रजमोहनशर्मणां सूनुना साहित्य-
शास्त्रिणा मिश्रोपाह्व-

भिषग्रत्नश्रीब्रह्मशङ्करशर्मणा

विरचितं सम्पादितञ्च।

प्राप्तिस्थानम्—

जयकृष्णदास हरिदास गुप्तः—

चौखम्बा संस्कृत सीरिज़ आफिस,

बनारस सिटी।

१९९४

प्राप्तिस्थानम्—
जयकृष्णदास हरिदास गुप्तः—
चौखम्बा संस्कृत सीरिज़ आफिस,
बनारस सिटी।

श्री गौरकृष्णः शरणं ममास्तु।

प्राक्कथनम्-

अयि ! आयुर्वेदप्रेमिसज्जनमहोदयाः !

आपलोगों की तथा विशेषरूप से छात्रों को असुविधा दूर करने के लिये सं० १९९२ में चौखम्बा संस्कृत पुस्तकालयाध्यक्ष श्रीयुत बाबू श्रीजयकृष्णदास हरिदास गुप्तजीने मेरे द्वारा भावप्रकाश (वैद्यक ग्रन्थ) का मूल संस्करण गुटका साइज में सम्पादन करा कर निकाला है। पुनः उन्हीं के आग्रहसे मैंने बड़े परिश्रमसे "निघण्टुसारसंग्रह"-नामक ग्रन्थ जिसमें हरीतक्यादि वर्ग से लेकर अनेकार्थनाम वर्ग तक के प्रत्येक वर्गों के ऊपर परिशिष्ट लिखा है। इसमें प्रत्येक ओषधियों के अनेकभाषाओं के नाम तथा उनके अङ्ग (पत्र- पुष्प-फल-मूलादिक) जो व्यवहार में आते हैं, प्रायः करके उनका तथा यथासम्भव साथ २ उनके मात्राओं का भी उल्लेख किया गया है। और जहां पर मूल ग्रन्थ से अधिक गुण अन्यत्र मिले उनका ग्रन्थान्तर से लेकर उद्धृत किया गया है। तथा जो प्रकरण-प्राप्त ओषधियां थीं उनके अनेक भाषाओं के नाम गुण आदि का भी यथाप्राप्त उल्लेख किया गया है। अतएव इसका नाम "निघण्टुसारसंग्रह" ही रक्खा गया है। इसमें अन्ततो गत्वा जहां तक हो सका उपस्थित सभी संस्करणों से इस संस्करण को सर्वोत्तम तथा सर्वोपयोगी बनाने में पूर्ण श्रम किया गया है तथा ओषधियों के सामने जो पृष्ठाङ्क दिये गये हैं वे मूल संस्करण गुटका साइज के जिस पृष्ठ में उक्त ओषधियों का वर्णन है उनके समझने चाहिये।

आपलोगों को स्वरूप ज्ञान कराने के लिये प्रस्तुत पुस्तक के पृष्ठ ६ में मूलके हरीतक्यादिवर्ग में पृ० १५३ में आये हुए चित्रक का वर्णन जिस भांति है, वह निम्नलिखित है—

११ चित्रक (चीता) पृ० १५३

हि०-चीत, चीता, चित्रा, चित्ता, चितरक, चितउर। बं०-चिता, चितु। म०-चित्रकु। गु०-चित्रक। क०-चित्रमूल, चित्रकमूल। ०-चित्रा।

ते०-चित्रमूलमु, चित्रमूलं, तेल्ला चित्रा । ता०-वेंचित्तिर, कोदिवेल । द्रा०-चित्रमूलं । उ०-धुवचिता । तु०-बोलडु । गु०-चित्रो, चित्रापोतरो । मला०-टपकोटुवलि, कोटुवेलि । सिंह०-सुदुनीतुल । ब्र०-कन् खेन् फिउ, किन् खेन् इन । फा०-वेख बरन्दा, वेखबरन्दह, शीतरह, शीतरुह, शीत-रख, वेखबुरिन्दा । अ०-शितरज , शितरम्भ, शीतरज हिन्दी, शैतरज ।

ले०-Plumbago Zeylanica (प्लाम्बागो जिलानिका)

Syn:-Plumbago Owriculata या (प्लाम्बागो आवरीकुलेटा)

१२ लाल चीता—

हि०-लालचीत, लालचीता, लाल चित्रक, लाल चितउर । बं०-एड-चिते, रक्तो चितो । म०-रक्तचित्रक । क०-कोपिन चित्र मूल, लाल चित्रक-मूल । ता०-शिवप्पु चित्तिर, शिउकोडिवयलो । उ०-रक्तचिता, रकतचिता । मला०-स्वेट्टी कोडिवली, चुपाण्डा फोडु अवलि ।

ले०-Plumbago rosea (प्लाम्बेगो रोजिया) ।

१३ काला चीता—

रक्त-कृष्ण-चित्रकयोर्गुणाः क्रमेण—

स्थूलकायकरो रुच्यः कुष्टघ्नो रक्तचित्रकः ।
रसे नियामको लोहे वेधकश्च रसायनः ॥ १ ॥
केशाः कृष्णाः प्रजायन्ते कृष्णचित्रकभक्षणात् ।
कृष्णचित्रं समुत्पाट्य गोभिराघ्रातमेव वा ॥
क्षीरमध्ये क्षिपेद्वाऽपि क्षीरं कृष्णं प्रजायते ॥ २ ॥

व्यवहार—पञ्चाङ्ग, जड़, जड़की छाल । मात्रा—१-३ माशे ।

इसमें आये हुये साङ्केतिक शब्दों का विवरण—

संकेताक्षर—	पूरा नाम	संकेताक्षर—	पूरा नाम	संकेताक्षर—	पूरा नाम
अ०	अरबी	ति०	तिब्बत	म०	मराठी
अं०	अंग्रेजी	तिर०	तिरहुत	म० प्र०	मध्य प्रदेश
अज०	अजमेर	तु०	तुर्किस्तान	मल०	मलयालम
अव०	अवध	ते०	तेलङ्ग	मला०	मलाया
आसा०	आसाम	द०	दक्षिण	मा०	मारवाड़ी
उ०	उड़िया	द्रा०	द्राविड़	माल०	मालवा
उत्क०	उत्कल	देह०	देहरादून	मेर०	मेरवाड़ा
क०	कर्णाटक	ने०	नेपाल	मेवा०	मेवाड़
कच्छ०	कच्छ	नेवा०	नेवार	मै०	मैसूर
कट०	कटक	पं०	पंजाब	यु० प्रा०	युक्तप्रान्त
कना०	कनाडा	पंच०	पंचमहल	यू०	यूनानी
काना०	कानावार	पट०	पटना	राज०	राजपूताना
काश०	काशमीर	पला०	पलामू	रावल०	रावलपिण्डी
कु०	कुमाऊं	पश्चि०	पश्चिमोत्तरप्रदेश	लि०	लिपचा
कों०	कोंकण	पहा०	पहाड़ी	ले०	लेटिन
कोल०	कोल	पू०	पूना	लै०	लैटिन
खा०	खानदेश	पू० त०	पूर्वी तराई	शि०	शिमला
गढ़०	गढवाल	पोर०	पोरबन्दर	सं०	संस्कृत
गारो०	गारो	फा०	फारसी	संथा०	संथाल
गु०	गुजरात	बं०	बंगला	सत०	सतलज
गुर०	गुरडी	बर०	बरमी	सहा०	सहारनपुर
गोंड०	गोंड	ब्र०	ब्रह्मदेश	सि०	सिन्ध
गोंडा०	गोंडा	बिज०	बिजनौर	सिंह०	सिंहली
ची०	चीन	बिहा०	बिहार	सी०	सीलोन
छो० ना०	छोटा नागपुर	भील०	भीलबाड़ा	ह०	हजारी
जौन०	जौनसर	भो०	भोटिया	हि०	हिन्दी
ता०	तामिल			है०	हैदराबाद

इसमें अन्त में अनेकार्थनामवर्ग पर अकारादि क्रम से आये हुए द्व्यर्थक-त्र्यर्थक-चतुरर्थक तथा बह्वर्थक ओषधियों की पृथक् २ सूची भी देकर ग्रन्थ समाप्त कर दिया गया है।

आरम्भ में विषयसूची संस्कृत में, तथा अन्त में अकारादिक्रमसे ओषधियों के हिन्दी नाम तथा उसके जो संस्कृत नाम हैं वे भो दे दिये गये हैं।

आशा है कि सज्जन लोग अपनी त्रुटियों की भांति इसमें जो कुछ त्रुटियां होगीं उन्हें क्षमा करते हुए सादर ग्रहण करके इससे लाभ उठावेगें।

अन्त में मैं इसके लेखादि में साहाय्य पहुंचाने वाले सुहृद्वर ठक्कुरवंशावतंस "बर्धमान" मण्डलान्तर्गत "श्रीखण्ड" ग्रामवासी पं० श्री स्वरूपानन्दजी वंगीय महाशय को हार्दिक धन्यवाद देता हूं तथा ओषधियों के नामादि में जो सहायता श्रद्धेय श्रीलालारूपलालजी से प्राप्त हुई उसके लिये केवल सदा ऋणी रहने के अतिरिक्त और क्या कर सकता हूं, क्योंकि उनके लिये केवल धन्यवाद ही पर्याप्त नहीं है। चौखम्बा संस्कृत पुस्तकालयाध्यक्ष उक्त बाबू साहब को शतशः धन्यवाद है कि वे ऐसे पुस्तकों के प्रकाशन के लिये सदा प्रस्तुत रहते हैं, ईश्वर उन्हें तथा उनके छोटेभाई चि० श्रीव्रजजीवनदासजी प्रेस संचालक तथा प्रधान कार्यकर्त्ता चि० श्रीकृष्ण दासजी आदिको चिरायु करें। जिन लोगों के परिश्रम तथा अर्थव्यय से शीघ्रातिशीघ्र प्रकाशित होते हुए भावप्रकाश ओषधियों के विषय में भाषा टीका निघण्टु तथा अभिनव बूटीदर्पण सचित्र इन दो ग्रन्थों से जो ज्ञान प्राप्त होगा वह अतुलनीय होगा।

किं बहुना विज्ञवरेष्विति शम्।

अधिकाशि
श्रीराधारमणमन्दिरे
रथयात्रायां-
सं० १९९४ वै०।

श्रीमतामायुर्वेदविदां
विनेयतमस्य
भिषग्रत्नश्रीब्रह्मशङ्करशास्त्रिणः।

॥ श्रीः ॥

भावप्रकाशे निघण्टुभागे परिशिष्टस्य

विषयानुक्रमाणिका—

वि०	पृ० सं०
अथ हरीतक्यादिवर्गः ।	
हरीतकी (हरडे)	१
विभीतकः (बहेड़े)	२
आमलकी (आंवला)	”
त्रिफला	३
शुण्ठी (सोंठ)	”
आर्द्रकम् (अदरक)	”
पिप्पली (पीपर)	४
मरिचम्	”
सितमरिचम्	”
पिप्पलीमूलम् (पिपरामूल)	५
चव्यम्	”
गजपिप्पली	६
सैंहलीपिप्पली	”
वनपिप्पली	”
मर्कटीपिप्पली	”
चित्रकः (चीता)	”
रक्तचित्रकः (लालचीता)	”
कृष्णचित्रकः (कालाचीता)	७
यवानी (अजवायन)	”
अजमोदा	”
वनयवानी- (अजवायन जङ्गली)	८
पारसीकयवानी (खुरासानी अजवायन)	”
शुक्लजीरकः (सफेद जीरा)	९
कृष्णजीरकः (काला जीरा)	”
कालाजाजी (कलौंजी)	”

वि०	पृ० सं०
अरण्यजीरकः	९
धान्यकम् (धनिया)	१०
शतपुष्पा (सोआ)	”
मिश्रेया (सौंफ)	”
मेथी	११
वनमेथी	”
चन्द्रशूरम् (चनसुर)	”
हिङ्गु (हींग)	”
हिङ्गुशोधनविधिः	१२
वचा (बच)	”
पारसीकवचा (खुरासानी)	”
शुक्लवचागुणाः	”
वचाया अद्भुतगुणाः	१३
सुगन्धा वचा (कुलिञ्जन)	”
महाभरी वचा	”
द्वीपान्तरवचा (चोपचीनी)	”
हवुषाद्वयम् (हाऊबेर)	१४
विडङ्गः (बायविडङ्ग)	”
तुम्बुरुः (तुम्बुरु)	१५
वंशरोचना (वंशलोचन)	”
समुद्रफेनः (समुन्दरफेन)	”
अष्टवर्गः	१६
यष्टीमधु (मुलहठी)	”
जलयष्ट्यर्कगुणाः	१७
काम्पिल्लः (कबीला)	”
काम्पिल्लशाकगुणाः	”
आरग्वधः (अमलतास)	”

वि०	पृ० सं०
एतत्पुत्रपुष्पमज्जमूलगुणाः	१८
कटुका (कुटकी)	”
कटुकीशोधनविधिः	”
किराततकः (चिरायता)	”
किराततकभेदनैपालगुणाः (चिरायता भेद)	१९
इन्द्रयवः (इन्द्रजौ)	”
मदनः (मैनफल)	”
रास्ना (रासना)	२०
नाकुली (नकुल कन्द)	”
द्विविधनाकुलीगुणाः	”
माचिका (मोइया)	२१
तेजवती (तेजबल)	”
ज्योतिष्मती (मालकांगनी)	”
कुष्ठम् (कूठ)	”
पुष्करमूलम् (पोहकरमूल)	२२
कटुपर्णी (चोक, सत्यानाशी)	”
एतत्क्षीरगुणाः	२३
कर्कटशृङ्गी (काकड़ासिंगी)	”
कट्फलः (कायफल)	”
भार्गी (भारङ्गी)	”
एतत्पत्रगुणाः	२४
पाषाणभेदः	”
क्षुद्रपाषाणभेदगुणाः	”
धातकी (धाय, धायके फूल)	”
मञ्जिष्ठा (मजीठ)	”
अस्याः शाकफलमूलगुणाः	२५
कुसुम्भम् (कुसुम, बरें फूल)	”

वि०	पृ० सं०
अस्य पुष्पपत्रबीजतैलगुणाः	२५
लाक्षा	२६
अलक्तकगुणाः	”
हरिद्रा	”
कर्पूरहरिद्रा	”
वनहरिद्रा	”
दारुहरिद्रा	२७
रसाञ्जनम्	”
अस्य शोधनविधिः	”
बाकुची	”
बाकुचीभेदश्वित्रारिगुणाः	२८
बाकुचीस्वरूपम्	”
चक्रमर्दः	
अतिविषा	”
लोध्रः	२९
पट्टिकालोध्रः	”
लशुनः	”
लशुनभेद (एक–पुतिया-लहसुन)	३०
पलाण्डुः	”
राजपलाण्डुगुणाः	”
पलाण्डुबीजगुणाः	”
भल्लातकः	”
अस्य फलत्वग्गुणाः	३१
अस्य शोधनविधिः	”
नदीभल्लातको वृषाङ्कस्तस्य गुणाः	”
भङ्गा	”
गञ्जा (गांजा)	”
भङ्गोत्पत्तिः	३१
भङ्गासेवनविधिः	३२

वि०	पृ० सं०
खाखसः	३२
अहिफेनकम्	”
अस्य शोधनविधिः	”
खाखसतिलाः	३३
सैन्धवम्	”
शाकम्भरीयम्	”
सामुद्रं लवणम्	३४
विडलवणम्	”
काचलवणस्य नामानि गुणाश्च	”
खानिजं लवणम्	
औषरलवणस्य नामानि गुणाश्च	३५
रोमकलवणगुणाः	”
द्रोणीलवणस्य नामानि गुणाश्च	”
नरसारस्य नामगुणाः	”
अस्य निर्माणविधिः	”
अस्य शोधनविधिः	”
चणकाम्लकम्	३६
यवक्षारः	”
स्वर्जिका	”
सुवर्चिका	”
सर्वक्षारगुणाः	३७
लवणक्षारगुणाः	”
टङ्कणक्षारः	”
टङ्कणशोधनविधिः	”
श्वेतटङ्कणगुणाः	”
चुक्रम्	३८

इति हरीतक्यादिवर्गः

वि०	पृ० सं०
अथ कर्पूरादिवर्गः	
कर्पूरम्	३८
कर्पूरस्य भेदास्तल्लक्षणानि	”
पोतासभीमसेनीबरास-कर्पूरगुणाः	”
शङ्करावासकर्पूरगुणाः	”
हिमकर्पूरगुणाः	”
उदयभास्करकर्पूरगुणाः	३९
पर्णकर्पूरगुणाः	”
चीनाककर्पूरः	”
कस्तूरी	”
कस्तूरीभेदास्तल्लक्षणानि	”
कस्तूरीपरीक्षा	”
कस्तूरीगन्धभेदलक्षणम्	४०
दुष्टकस्तूरीलक्षणानि	”
दुष्टकस्तूरीपरीक्षा	”
लताकस्तूरी	”
गन्धमार्जारवीर्यम्	”
चन्दनम्	”
चन्दनस्य भेदाः	४१
वेट्टचन्दनगुणाः	”
सुक्कडिचन्दनगुणाः	”
शम्बरचन्दनस्य नामानि गुणाश्च	”
पीतचन्दनम्	”
रक्तचन्दनम्	”
पतङ्गम्	४२
बर्बरचन्दनस्य नामगुणाः	”
हरिचन्दनस्य नामगुणाः	”
अगुरु	”

वि०	पृ० सं०
काष्ठागुरु–दाहागुरु–मङ्गलागुरुगुणाः	४३
देवदारु	,,
देवदारुभेदाः	,,
स्निग्धदारुगुणाः	,,
काष्ठदारुगुणाः	,,
चीडागुणाः	,,
सरलः	,,
तगरम्	४४
पद्मकम्	,,
गुग्गुलुः	,,
अस्योत्पत्तिः	,,
अस्य परीक्षा	४५
अस्य शुद्धिः	,,
गन्धराजगुग्गुलुगुणाः	,,
भूमिजगुग्गुलुगुणाः	,,
सरलनिर्यासगुग्गुलुः	,,
रालः	,,
रालतैलगुणाः	,,
कुन्दुरुः	४६
शिलारसः	,,
जातीफलम्	,,
अस्य लक्षणम्	,,
अस्य तैलगुणाः	,,
जातीपत्री	४७
लवङ्गम्	,,
अस्य तैलगुणाः	,,
स्थूलैला	,,
एला	,,
त्वक्	४८
त्वक्तैलगुणाः	,,
दारुसिता	,,

वि०	पृ० सं०
पत्रकम्	४८
नागकेशरः	४९
कुङ्कुमम्	,,
कुङ्कुमलक्षणम्	,,
तृणकुङ्कुमस्य नामगुणाः	,,
गोरोचना	५०
नखं, नखी च	,,
नखीपञ्चभेदाः	,,
अस्य शुद्धिप्रकारः	,,
बालम्	,,
वीरणमुशीरं च	
जटामांसी	
आकाशमांसीनामगुणाः	,,
गन्धमांसीगुणाः	,,
शैलेयम्	५२
मुस्तकम्	
मुस्तकशुद्धिः	,,
नागरमुस्तकम्	,,
भद्रमुस्तकस्य नामगुणाः	५३
कर्चूरः	,,
मुरा	,,
गन्धपलाशी	,,
प्रियङ्गुर्गन्धप्रियङ्गुश्च	,,
रेणुका	५४
ग्रन्थिपर्णम्	,,
ग्रन्थिपर्णलक्षणम्	,,
स्थौणेयकम्	,,
चोरकः	,,
तालीसपत्रम्	,,
कक्कोलम्	५५
गन्धकोकिला	,,

वि०	पृ० सं०
गन्धमालती	
लामज्जकम्	
श्वेतलामज्जकलक्षणम्	,,
एलवालुकम्	
कैवर्त्तीमुस्तकम्	,,
स्पृक्का	
पर्पटी	
नलिका	
प्रपौण्डरीकम्	,,
इति कर्पूरादिवर्गः ।	
अथ गुडूच्यादिवर्गः ।	
गुडूची	,,
कन्दगुडूच्या नामगुणाः	५७
गुडूचीसत्त्वगुणाः	,,
नागवल्ली	,,
ताम्बूलगुणाः	५८
श्रीवाटी–अम्लवाटी–सातसी–मालवोद्भवाङ्करा-अन्ध्रदेशोद्भवपट्टुलिका-हंसणीयाह्वानां ताम्बूलीनां पर्णगुणाः	,,
नवीनप्राचीनपर्णगुणाः	,,
कृष्णशुभ्रपर्णगुणाः	,,
ताम्बूलीपर्णशिरादिगुणाः	५९
नागवल्लीमूलफलगुणाः	,,
पर्णभक्षणनिषेधः	,,
बिल्वः	,,
अस्य बाल–तरुण–पक्वफलानां मूलस्य पत्राणां च गुणाः	,,
अस्य पुष्पगुणाः	६०

वि०	पृ० सं०
बिल्वमज्जाभवतैलगुणाः	६०
बिल्वपेशिकागुणाः	,,
काञ्जिकस्थितबिल्वगुणाः	,,
गाम्भारी	,,
अस्याः पुष्पमूलयोर्गुणाः	,,
पाटला	,,
घण्टापाटलिः	६१
भूमिपाटला–क्षुद्रपाटला-वल्लीपाटलानां गुणाः	,,
अग्निमन्थः	,,
क्षुद्राग्निमन्थगुणाः	६२
तेजोमन्थगुणाः	,,
श्योनाकः	
श्योनाकयुगलस्य गुणाः	,,
शालिपर्णी	,,
पृश्निपर्णी	६३
बृहती	,,
अस्याः फलगुणाः	,,
क्षुद्रबृहतिकागुणाः	,,
श्वेतबृहतिकागुणाः	६४
बृहतीभेदगुणाः	,,
कण्टकारी	,,
श्वेतकण्टकारी	
गोक्षुरः	,,
लघुगोक्षुरः	६५
बृहद्गोक्षुरः	,,
द्विविधगोक्षुरगुणाः	,,
अस्य शाक–बीज–क्षारगुणाः	,,
जीवन्ती	,,
बृहज्जीवन्तीनामानि	,,
अस्या गुणाः	६६
स्वर्णजीवन्ती नामगुणाः	६६
तिक्तजीवन्तीनामगुणाः	,,
मुद्गपर्णी	,,
माषपर्णी	६७
एरण्डः	,,
एरण्डमूल–पुष्प–तैलगुणाः	,,
शुक्लैरण्डः	,,
रक्तैरण्डः	६८
आकारकरभः	,,
अर्कस्य नामानि मूलत्वग्गुणाश्च	,,
रक्तार्कः	६९
श्वेतार्कः	,,
सेहुण्डस्य नामानि पत्रगुणाश्च	,,
सेहुण्डभेदः	,,
शातला	७०
कलिहारी	,,
अस्य शुद्धिप्रकारः	,,
करवीरः	,,
रक्तश्वेतकरवीरौ	७१
धत्तूरस्य नामभेदाः	,,
कृष्णधत्तूरनामानि	,,
राजधत्तूरनामानि	,,
अस्य शोधनविधिः	७२
आटरूषः	,,
पर्पटस्य नामानि शाकगुणाश्च	,,
निम्बः	,,
अस्य कोमलपल्लव–जीर्णपत्र-पुष्प-सूक्ष्मशाखानामामपक्वफलयोश्च गुणाः	७३
अस्य बीजस्य मज्जागुणास्तैलगुणाः पञ्चाङ्गगुणाश्च	७३
महानिम्बः	,,
कैडर्यस्य नामगुणाः	७४
पारिभद्रः	,,
अस्य पुष्पगुणाः	७५
काञ्चनारो रक्तकाञ्चनारश्च	,,
श्वेतपुष्प–पीतपुष्प–काञ्चनारगुणाः	,,
काञ्चनीगुणाः	,,
शोभाञ्जनः	,,
अस्य पुष्प–फल–शाकगुणाः	७६
अपराजिता–श्वेतपुष्पा नीलपुष्पा च	,,
सिन्दुवारो निर्गुण्डी च	७७
कर्तरी निर्गुण्डीगुणाः	,,
अरण्यनिर्गुण्डीगुणाः	,,
अस्याः पर्णपुष्पयोर्गुणाः	७८
कुटजः	,,
अस्य पुष्पशिम्बीभवशाकयोर्गुणाः	,,
करञ्जो घृतकरञ्जश्च	,,
अस्य पुष्पाङ्कुरयोर्गुणाः	७९
करञ्जतैलगुणाः	,,
महाकरञ्जगुणाः	,,
घृतकरञ्जगुच्छकरञ्जयोर्गुणाः	,,
पूतिकरञ्जतत्पत्रयोर्गुणाः	,,
कुरञ्जः	८०
कण्टकरञ्जगुणाः	,,
करञ्जी	

वि० पृ० सं०
गुञ्जा ८०
गुञ्जाशोधनविधिः ८१
श्वेता रक्ता च गुञ्जा ”
कपिकच्छूः ”
लघुकपिकच्छुगुणाः ”
मांसरोहिणी ”
रोहिणीगुणाः ८२
द्विविधरोहिणीगुणाः ”
चिल्हकः ”
टङ्कारी ”
वेतसः ”
अस्याङ्कुर-पत्र-बीजगुणाः ”
बृहद्वेत्रगुणाः ”
जलवेतसः ”
बृहज्जलवेत्रगुणाः ८३
इज्जलः ”
अङ्कोटः ”
अस्य रसबीजयोर्गुणाः ”
बलाचतुष्टये बला ८४
बलाफलगुणाः ”
बलाया भेदचतुष्टयम् ”
महाबला ”
महाबलाया द्वैविध्यम् ८५
अतिबला ”
त्रिविधबलागुणाः ”
नागबला ”
नागबलाफलगुणाः ८६
बृहन्नागबलागुणाः ”
लक्ष्मणा ”
स्वर्णवल्ली ”
कार्पासी ”

वि० पृ० सं०
वनकार्पासीनामगुणाः ८७
कालाञ्जनीनामगुणाः ”
वंशः ”
अच्छिद्रसच्छिद्रवंशयोर्गुणाः ८८
नलः ”
देवनालस्य नामगुणाः ”
भद्रमुञ्जः ”
मुञ्जः ८९
काशः ”
गुन्द्रः ”
एरका ”
कुशः ९०
क्षुरपत्रः ”
अस्य मूलगुणाः ”
कत्तृणम् ”
दीर्घरोहिषस्य नामगुणाः ९१
भूतृणम् ”
सुगन्धभूतृणस्य नामगुणाः ”
नीलदूर्वा ”
श्वेतदूर्वा ९२
सामान्यदूर्वागुणाः ”
गण्डदूर्वा ”
वाराहीकन्दः ”
वाराह्यास्तत्कन्दस्य च गुणाः ”
विदारीकन्दः ९३
विदारीक्षीरविदार्योर्नामानि ”
संयुक्तप्रान्तीयविदारीकन्दः ”
वङ्गीयविदारीकन्दः ९४
विदारीकन्दपुष्पगुणाः ”
क्षीरविदारीगुणाः ”

वि० पृ० सं०
मुशलीकन्दः ९४
श्वेतमुशली ९५
शतावरी ”
शतावर्यङ्कुरगुणाः ”
महाशतावरी ”
द्विविधशतावरीगुणाः ९६
अश्वगन्धापत्रलेपगुणाः ”
पाठा ”
लघुपाठागुणाः ”
श्वेता त्रिवृत् ९७
श्यामा त्रिवृत्
रक्तत्रिवृन्नामगुणाः ”
सामान्यत्रिवृद्गुणाः ”
लघुदन्ती
दन्तीगुणाः ”
बृहद्दन्ती
भद्रदन्तीनामगुणाः ”
बृहद्दन्तीबीजगुणाः
जयपालः ”
अस्योत्पत्तिस्थानं गुणाः शोधनविधिश्च ”
अस्य तैलगुणाः ”
इन्द्रवारुणी ”
इन्द्रवारुणीगुणाः
महेन्द्रवारुणी ”
रक्तेन्द्रवारुणी ”
महेन्द्रवारुणीगुणाः ”
नीली १०१
महानीलीनामगुणाः ”
शरपुङ्खः
श्वेतशरपुङ्खानामगुणाः ”

वि०	पृ०
कण्ठपुङ्खानामगुणाः	१०२
यवासः	”
दुरालभा तद्गुणाश्च	”
मुण्डी	”
महामुण्डी	१०३
अस्या गुणाः	”
अपामार्गः	”
रक्तापामार्गः	”
कोकिलाक्षः	१०४
अस्य पत्रगुणाः	”
अस्य बीजगुणाः	”
अस्थिसंहारः	”
अस्य भेदाः	”
अस्य भेदयोस्त्रिधाराचतुर्धारयोर्गुणाः	१०५
कुमारी	”
अस्या दण्डपुष्पयोर्गुणाः	”
एलीयकस्य नामानि गुणाश्च	”
श्वेतपुनर्नवा	१०६
अस्या मूलस्य विशेषप्रयोगाः	”
अस्याः पत्रशाकगुणाः	”
रक्तपुनर्नवा	”
नीलपुनर्नवागुणाः	”
गन्धप्रसारिणी	१०७
कृष्णशारिवा	”
अस्या गुणाः	”
श्वेतशारिवा	”
अस्या गुणाः	”
भृङ्गराजः	१०८

वि०	पृ०
भृङ्गराजभेदाः	१०८
शणपुष्पी	”
अस्या भेदयोर्नामगुणाः	”
शणस्य नामगुणाः	१०९
अस्य बीजगुणाः	”
त्रायमाणा	”
मूर्वा	”
अस्याः कन्दगुणाः	११०
काकमाची	”
काकनासा	”
काकजङ्घा	”
नागपुष्पी	१११
मेषशृङ्गी	”
अस्याः फलगुणाः	”
हंसपदी	”
सोमलता	”
आकाशवल्ली	११२
पातालगरुडी	”
वन्दा	”
वटपत्री	११३
हिङ्गुपत्री	”
वंशपत्री	”
मत्स्याक्षी	”
सर्पाक्षी	”
शङ्खपुष्पी	”
अर्कपुष्पी	११४
लज्जालुः	”
विपरीतलज्जालुनामगुणाः	”
अलम्बुषा	”
दुग्धिका	११५

वि०	पृ०
दुग्धफेनीनामगुणाः	११५
नागार्जुनीनामगुणाः	”
भूम्यामलकी	”
ब्राह्मी	११६
मण्डूकपर्णी	”
द्रोणा	”
अस्याः पत्रगुणाः	११७
सुवर्चला	”
ब्रह्मसुवर्चला	”
बन्ध्या कर्कोटकी	११८
मार्कण्डिका	”
देवदाली पीतदेवदाली च	”
देवदालीत्रयस्य गुणाः	११९
जलपिप्पली	”
गोजिह्वा	”
नागदमनी	”
वीरतरुः	१२०
छिक्कनी	”
बर्बरीनामगुणाः	”
कुकुन्दरः	”
सुदर्शना	”
आखुकर्णी	१२१
बृहत्याखुकर्णीगुणाः	”
मयूरशिखा	”

इति गुडूच्यादिवर्गः ।

अथ पुष्पवर्गः ।

वि०	पृ०
कमलम्	”
श्वेतकमलनामानि	१२२
रक्तनीलकमलयोर्नामगुणाः	”

वि०	पृ० सं०
नीलोत्पलस्य नामगुणाः	१२२
पद्मिनीपत्रगुणाः	१२३
मकरन्दपद्ममधुगुणाः	"
मृणालस्य नामानि	"
शालूकस्य नामगुणाः	"
पद्मचारिणी	"
कुमुदं कुमुदिनी च	१२४
उत्पलस्य नामगुणाः	"
कुमुदिनीनामगुणाः	"
वारिपर्णी	"
शैवालम्	१२५
शतपत्री	"
वासन्ती	"
वार्षिकी	१२६
वार्षिकीमल्लिकयोर्नामानि	"
मुद्गरस्य नामगुणाः	"
मालती स्वर्णजाती च	"
जात्याः कलिकापुष्पयोर्गुणाः	१२७
स्वर्णजातीगुणाः	"
उपजातेर्नामगुणाः	"
यूथिका पीतयूथिका च	"
चाम्पेयः	"
अस्य पुष्पगुणाः	१२८
चम्पकभेदाः	"
श्वेतादिचम्पकगुणाः	"
बकुलः	१२९
बकुलपुष्पगुणाः	"
बकुलस्य फलबीजयोर्गुणाः	"
बृहद्बकुलः	"

वि०	पृ० सं०
कदम्बः	१२९
अस्याङ्कुरापक्वपक्वफलपुष्पाणां गुणाः	१३०
राजकदम्बगुणाः	"
धाराकदम्बस्य नामगुणाः	"
भूमिकदम्बस्य नामगुणाः	"
धूलीकदम्बगुणाः	"
कदम्बिकागुणाः	"
द्विविधकदम्बस्य गुणाः	१३१
कुब्जकः	"
अस्य पुष्पगुणाः	"
रक्तकुब्जकगुणाः	"
मल्लिका	"
अस्याः पुष्पगुणाः	"
माधवी	"
केतकः	"
स्वर्णकेतकी	१३२
केतकीद्वयस्य पुष्पादीनां गुणाः	"
किङ्किरातः	"
कर्णिकारः	"
अशोकः	१३३
अस्य त्वग्गुणाः	"
अन्योऽशोकः	"
अम्लाटनः	"
सैरेयकः	"
सैरेयकभेदाः	"
सैरेयकः	१३४
कुरण्टकः	"
अस्य नामगुणाः	"
कुरवकस्य नामगुणाः	"

वि०	पृ० सं०
आर्त्तगलः	१३४
आर्त्तगलनामगुणाः	१३५
कुन्दम्	"
मुचुकुन्दः	"
तिलकः	"
अस्य गुणाः	"
बन्धुजीवः	"
जपापुष्पम्	१३६
अस्य गुणाः	"
सिन्दूरी	"
अगस्त्यः	"
अस्य पुष्प–पत्र–शिम्बीनां गुणाः	१३७
तुलसी	"
कृष्णतुलसीनामानि	१३८
मरुवकः	"
दमनकः	"
वनदमनकगुणाः	"
अग्निदमनकगुणाः	"
बर्बरी	१३९
अर्जक–सितार्जक–कृष्णार्जकानां नामगुणाः	"
वनबर्बरी नामानि	"

इति पुष्पवर्गः।

अथ वटादिवर्गः।

वि०	पृ० सं०
वटः	१४०
पिप्पलः	"
अस्य पक्वफलगुणाः	"
पारीषः	"
नन्दीवृक्षः	१४१
उदुम्बरः	"

वि०	पृ०
अस्य गुणाः	१४१
नद्युदुम्बरस्य नामगुणाः	१४२
काकोदुम्बरिका	”
अस्याः फलगुणाः	”
प्लक्षः	”
शिरीषः	१४३
शालः	”
अस्य फलगुणाः	”
सर्जकः	”
शल्लकी	१४४
अस्याः फलपुष्पयोर्गुणाः	”
शिंशपा	”
श्वेतशिंशपाकपिलशिंशपयोर्नामगुणाः	”
ककुभः	१४५
असन	”
अस्य पुष्पगुणाः	”
खदिरः	”
अस्य निर्यासादिगुणाः	१४६
खदिरसारस्य नामगुणाः	”
श्वेतखदिरः	”
इरिमेदः	”
अस्य निर्यासगुणाः	१४७
लघुखदिरगुणाः	”
वल्लीखदिरगुणाः	”
रोहीतकः	”
श्वेतरोहीतकनामानि	”
रोहीतकद्वयगुणाः	१४८
बब्बूलः	”
अस्य फलनिर्यासयोर्गुणाः	”
अरिष्टकः	”

वि०	पृ०
अस्य गुणाः	१४९
पुत्रजीवः	”
इङ्गुदी	”
अस्य फलपुष्पमज्जगुणाः	”
जिङ्गिनी	”
तमालः	१५०
अस्य नामगुणाः	”
तूणी	”
भूर्जपत्रः	”
पलाशः	”
अस्य भेदाः	१५१
अस्य बीजनूतनपल्लवयोर्गुणाः	”
अस्य निर्यासमूलस्वरसयोर्गुणाः	”
हस्तिकर्णपलाशस्य नामगुणाः	”
शाल्मलिः	”
अस्य त्वग्रस–पुष्प–फल–कन्दानां गुणाः	१५२
मोचरसः	”
कूटशाल्मलिः	”
धवः	”
अस्य फलमूलयोर्गुणाः	”
धन्वङ्गः	१५३
धन्वनस्य नामगुणाः	”
करीरः	”
अस्य पुष्पफलयोर्गुणाः	”
शाखोटः	”
वरुणः	१५४
अस्य पुष्पफलयोर्गुणाः	”

वि०	पृ०
कटभी	१५४
श्वेतकटभीनामगुणाः	”
मोक्षः	”
मोक्षद्वयस्य गुणाः	१५५
अस्य पुष्पफलनिर्यासानां गुणाः	”
जलशिरीषिका	”
शमी	”
अस्याः फलगुणाः	”
सप्तपर्णी	”
तिनिशः	१५६
भूमीरुहः	”
अस्य पुष्पवल्कलयोर्गुणाः	”
इति वटादिवर्गः ।	

अथाम्रफलादिवर्गः ।

वि०	पृ०
आम्रः	१५७
आम्ररसस्य दुग्धेन सह प्रयोगे गुणाः	”
चोषिताम्रगुणाः	”
शस्त्रच्छिन्नाम्रगुणाः	”
मधुघृतयुक्ताम्रयोर्गुणाः	”
आम्रास्थितैलगुणाः	”
आम्रत्वचादिगुणाः	”
आम्रान्तस्त्वग्गुणाः	१५८
आम्रमूलगुणाः	”
आम्रपल्लवगुणाः	”
आम्रावर्त्तः	”
आम्रातकः	”
अस्य पर्णगुणाः	”
राजाम्रः	”

वि०	पृ० सं०
अस्य बाल-मध्यम-पक्व-फलानां गुणाः	१५८
कोशाम्रः	१५९
कोशाम्रमज्जगुणाः	”
अस्य तैलगुणाः	”
पनसः	”
अस्य पुष्पगुणाः	”
अस्य कोमलामफलगुणाः	”
लकुचः	”
कदली	”
कोमलमध्यमकदलीफल्योर्गुणाः	१६०
कदलीपुष्पमोचकयोर्गुणाः	”
कदलीजल-कन्द-साराणां गुणाः	”
आरण्य-काष्ठ-सुवर्ण-चम्पक महेन्द्र-कृष्ण कदलीफलानां गुणाः	१६१
चिर्भिटम्	”
आमशुष्कचिर्भिटफलयोर्गुणाः	१६२
चिर्भिटपुष्पगुणाः	”
मृगाक्षीनामगुणाः	”
नारिकेलः	”
पक्व-शुष्कनारिकेलफलगुणाः	”
तरुणादिनारिकेलाम्बुगुणाः	१६३
नारिकेलपुष्प-पुष्पजलगुणाः	”
नारिकेलतरुतोयगुणाः	”
नारिकेलफलतैलगुणाः	”

वि०	पृ० सं०
मधुनारिकेलगुणाः	१६३
कालिन्दम्	१६४
अस्य मज्जपर्णयोर्गुणाः	”
खर्बूजम्	”
त्रपुसम्	”
गुवाकः	”
पक्व-शुष्कगुवाकफलयोर्गुणाः	१६५
आन्ध्रादिदेशोद्भवपूगफलानां गुणाः	”
पूगवृक्षनिर्यासगुणाः	१६६
तालः	”
तालगुणाः	”
अस्य फलगुणाः	”
अस्यामफलगुणाः	”
अस्यार्द्रफल-बीजगुणाः	१६७
तालफलोद्भवजलगुणाः	”
तालमण्डिकागुणाः	”
तालप्रलम्ब-पञ्जरयोर्गुणाः	”
तालवृन्तवायुगुणाः	”
तालमूलगुणाः	”
श्रीतालस्य नामगुणाः	”
हिन्तालस्य नामगुणाः	”
बिल्वफलम्	”
कपित्थः	”
अस्य बीज-बीजतैल-पुष्प-पर्णानां गुणाः	१६८
नारङ्गः	”
तिन्दुकः	”
अस्य सारगुणाः	”
कुपीलुः	१६९

वि०	पृ० सं०
अस्य गुणाः	१६९
अस्य शुद्धिप्रकारः	”
मर्कटतिन्दुकस्तद्गुणाश्च	”
राजजम्बूः	१७०
महाजम्ब्वा नामगुणाः	”
जम्ब्वा नामगुणाः	”
जम्बूमज्जाङ्कुरयोर्गुणाः	”
क्षुद्रजम्बूः	१७१
क्षुद्रजम्ब्वादीनां नामानि गुणाश्च	”
जलजम्बूगुणाः	”
बदरी	”
अस्या गुणाः	१७२
गजकोलराजबदरयोर्गुणाः	”
भूबदरीगुणाः	”
बदरीफल-मज्जगुणाः	”
बदरीपत्रत्वग्बीजगुणाः	”
प्राचीनामलकम्	”
अस्य गुणाः	१७३
लवली	”
करमर्दः	”
अस्य पक्वादिफलानां गुणाः	”
अस्य मूलगुणाः	”
करमर्दिका	”
प्रियालः	१७४
अस्य मूलतैलयोर्गुणाः	”
राजादनः	”
विकङ्कतः	”
अस्य गुणाः	”
पद्माक्षम्	”
मखान्नम्	१७५

वि०	पृ० सं०
शृङ्गाटकम्	१७५
अस्य गुणाः	”
कैरविणीफलम्	”
मधूकः	”
अस्य गुणाः	”
अस्य पक्वफलगुणाः	१७६
अस्यत्वक्तैलसारयोश्चगुणाः	”
जलमधूकः	”
अस्य तद्भेदस्य च नामगुणाः	”
परूषकम्	”
अस्य त्वग्गुणाः	”
तूतः	”
अस्य भेदाः	१७७
दाडिमः	”
अस्य फलगुणाः	”
दाडिमपुष्पादिगुणाः	”
बहुवारः	”
भूकर्बुदारस्य नामगुणाः	१७८
कतकः	”
अस्य गुणाः	”
द्राक्षा	१७९
द्राक्षानामानि	”
कपिलद्राक्षाकाकलीद्राक्षयोर्नामानि	”
द्राक्षाया बाल-मध्यम-पक्वादिफलानां गुणाः	”
खर्जूरी	१८०
अस्या आमपक्वफलयोर्गुणाः	”
खर्जूरादिमस्तकगुणाः	”
पिण्डखर्जूरी	”

वि०	पृ० सं०
अस्या गुणाः	१८०
छुहारा	”
सुलेमानी खर्जूरी	१८१
वातादः	”
वातादस्याम-पक्व-शुष्कफलादीनां गुणाः	”
वातादतैलगुणाः	”
सेवम्	”
अमृतफलम्	१८२
पीलुर्बृहत्पीलुश्च	”
बृहत्पीलुनामगुणाः	”
अक्षोटः	”
अक्षोटस्य गुणाः	१८३
बीजपूरः	”
अस्य बाल-पक्वफल-फलत्वक्-त्वग्द्रव-केसर-तद्रस-बीज-फलमज्जा-पुष्पाणां गुणाः	१८४
वनबीजपूरगुणाः	”
मधुरमातुलुङ्गगुणाः	”
मधुरकर्कटी	१८५
जम्बीरद्वयम्	”
जम्बीरफलगुणाः	”
बृहज्जम्बीरगुणाः	”
मधुकुक्कुटिकागुणाः	”
लिम्पाकगुणाः	”
जम्बीरपत्रगुणाः	”
निम्बूकम्	१८६
अस्य नामगुणाः	”
कृष्णनिम्बूकगुणाः	”
मिष्टनिम्बूकम्	”

वि०	पृ० सं०
कर्मरङ्गम्	१८६
अस्यामपक्वफलयोर्गुणाः	”
अम्लिका	१८७
अस्या वृक्ष-पुष्प-पर्ण-पक्वापक्व-शुष्क-नूतनानूतनफल-क्षार-रस-साराणां गुणाः	”
अम्लवेतसः	१८८
अस्य गुणाः	”
वृक्षाम्लम्	”
इत्याम्रफलादिवर्गः समाप्तः ।	

अथ धात्वादिवर्गः ।

सुवर्णम्	”
अस्य श्रेष्ठतावर्णनपुरःसरं विशेष प्रयोग-कथनम्	”
रूप्यम्	१८९
अस्य विशेषप्रयोगाः	”
ताम्रम्	”
वङ्गम्	”
क्षुरकवङ्गस्य नामानि	”
वङ्गप्रयोगविषयाः	१९०
अशोधितवङ्गदोषाः	”
श्रेष्ठवङ्गलक्षणम्	”
यशदम्	”
सीसम्	”
नागस्य प्रकारभेदाः	”
लोहम्	१९१
कान्त-कृष्ण-मुण्डलोहानां-गुणाः	”

वि०	पृ० सं०
लोहसेविनां कार्याणि	१९१
लोहभेदाः	”
मण्डूरम्	१९२
मण्डूरभेदाः	”
उपधातवः ।	
स्वर्णमाक्षिकम्	”
श्रेष्ठस्वर्णमाक्षिकलक्षणम्	”
तारमाक्षिकम्	”
तुत्थम्	१९३
कांस्यम्	”
अस्य श्रेष्ठतालक्षणम्	”
आरकूटम्	”
अस्य भेदस्तल्लक्षणं च	”
सिन्दूरम्	१९४
शिलाजतु	”
श्रेष्ठशिलाजतुलक्षणम्	”
अशुद्धशिलाजतुदोषाः	”
अथ रसः ।	
पारदः	”
पारदे पथ्यानि	१९५
पारदप्रशंसा	”
अथोपरसाः ।	
हिङ्गुलम्	”
हिङ्गुलनिर्माणविधिः	”
गन्धकः	१९६
श्रेष्ठगन्धकलक्षणम्	”
अभ्रकम्	”
अभ्रकसेवनेऽपथ्यानि	”
हरितालम्	”
हरितालस्य नामानि भेदाश्च	१९७

वि०	पृ० सं०
हरितालभस्मानुपानम्	१९७
हरितालसेवने नियमाः	”
हरितालस्य प्रचलितभेदाः	”
मनःशिला तद्भेदाश्च	”
स्रोतोऽञ्जनम्	१९८
अस्य श्रेष्ठतालक्षणम्	”
सौवीरम्	”
अस्य गुणाः	”
पुष्पाञ्जनस्य नामगुणाः	”
टङ्कणः	१९९
अस्य भेदौ	”
स्फटिका	”
अस्या निर्माणविधिः	”
राजावर्त्तः	”
अस्योत्तमतालक्षणम्	२००
चुम्बकः	”
गैरिकम्	”
स्वर्णगैरिकम्	”
अस्य गुणाः	”
खटिका	”
गौरखटिका	२०१
बालुका	”
अस्या गुणाः	”
खर्परी	”
अस्या भेदौ	”
काशीशम्	”
काशीशलक्षणम्	२०२
पुष्पकाशीशनामानि	”
सौराष्ट्री मृत्तिका	”
अस्या भेदौ	”
उत्तमगोपीचन्दनलक्षणम्	”

वि०	पृ० सं०
गोपीचन्दनगुणाः	२०२
कृष्णमृत्तिका	”
कर्दमः	२०३
अस्य नामानि	”
कपर्दकः	”
अस्य गुणा भेदादयश्च	”
शङ्खः	”
अस्य गुणाः	”
अस्य भेदास्तद्गुणाश्च	२०४
श्रेष्ठशङ्खस्य लक्षणम्	”
कृमिशङ्खस्य नामगुणाः	”
बोलम्	”
अस्य भेदास्तल्लक्षणं च	”
कंकुष्ठः	”
अस्य गुणाः	२०५
अस्य भेदौ तल्लक्षणं च	”
अथ रत्नानि ।	
हीरकः	”
अस्य रूपभेदाः	”
गारुत्मतम्	”
मरकतगुणाः	२०६
अस्य परीक्षा	”
माणिक्यम्	”
अस्य गुणाः	”
अस्य भेदवर्णाः	”
बहुमूल्यमाणिक्यगुणाः	२०७
अथ प्रमाणम्	”
अथ मूल्यम्	”
रत्नपरीक्षा	२०८
पुष्परागः	”
पुष्परागगुणाः	”

वि०	पृ० सं०
पुष्परागलक्षणम्	२०९
नीलम्	,,
अस्य गुणाः	,,
अस्य वर्णभेदाः	,,
अस्य प्राप्यभेदौ	,,
गोमेदः	,,
अस्य नामानि गुणाश्च	,,
अस्य परीक्षा	२१०
वैदूर्यम्	,,
अस्य गुणाः	,,
उत्तमवैदूर्यलक्षणम्	,,
मौक्तिकम्	,,
अस्य गुणाः	२११
शुक्तिमौक्तिकम्	,,
शङ्खमौक्तिकम्	,,
गजमौक्तिकम्	,,
बाराहमौक्तिकम्	,,
सर्पजमौक्तिकम्	२१२
मत्स्यजमौक्तिकम्	,,
दर्दुरमौक्तिकम्	,,
वेणुमौक्तिकम्	,,
मुक्तालक्षणम्	,,
मुक्तापरीक्षा	,,
मुक्तायाः परीक्षायां प्रयोगः	,,
प्रबालः	२१३
अस्य गुणाः	,,
अस्य मञ्जरीगुणाः	,,
अस्योत्पत्तिर्लक्षणं च	,,
अथोपरत्नानि।	
वैक्रान्तमणिः	२१४
अस्य गुणाः	,,

वि०	पृ० सं०
स्फटिकः	२१४
अस्य गुणाः	,,
काचः	,,
अस्य नामानि गुणाश्च	,,
सूर्यकान्तमणिः	,,
अस्य नामानि गुणाश्च	२१५
अस्योत्तमतालक्षणम्	,,
चन्द्रकान्तमणिः	,,
अस्य गुणाः	,,
एतदुद्भूतजलस्य गुणाः	,,
अस्य स्वरूपम्	,,
पेरोजम्	,,
अस्य नामानि गुणाश्च	,,
दुग्धपाषाणिका	२१६
अस्या नामानि गुणाश्च	,,
मुक्ताशुक्तिः	,,
अस्या गुणाः	,,
अस्या मुख्यभेदौ	,,
जलशुक्तिः	,,
अस्या नामानि गुणाश्च	२१७
शङ्खभेदः क्षुद्रशङ्खः	,,
अस्य गुणाः	,,
अथ विषम्।	
वत्सनाभस्तल्लक्षणं च	,,
वत्सनाभगुणाः	२१८
हारिद्रविषम्	,,
शृङ्गिकविषम्	,,
अस्य शुद्धिः	,,
कालकूटविषम्	,,
शतमल्लविषस्य नामानि गुणाश्च	,,

वि०	पृ० सं०
विषस्य भेदद्वयम्	२१९
स्थावरविषस्य दशप्रकाराः	,,
अस्य भक्षणदोषाः	,,
जङ्गमविषस्य षोडशप्रकाराः	,,
जङ्गमविषाश्रयजीवानां नामानि	,,
अस्य दोषाः	,,
विषसेवनप्रकारः	,,
विषसेवने पथ्यपदार्थाः	२२०
मात्राऽधिकविषभक्षणस्य परीक्षा	,,
विषदूरीकरणोपायाः	,,
विधिसेवितविषगुणाः	२२१
एषां शुद्धिः	,,
इति धात्वादिवर्गः।	
अथ धान्यवर्गः।	
धान्यम्	,,
शालिधान्यम्	२२२
रक्तशालिः	,,
भेदसहितानामेषां गुणाः	,,
व्रीहिधान्यम्	२२३
अस्य गुणाः	,,
षष्टिकधान्यम्	,,
अस्य गुणाः	,,
अथ शूकधान्यानि।	
यवः	,,
अस्य नामानि	,,
गोधूमः	,,
अस्य नामानि	२२४

वि०	पृ० सं०
अथ शिम्बीधान्यानि ।	
मुद्गः	२२४
अस्य नामानि	”
कृष्णमुद्गस्य नामगुणाः	”
हरिन्मुद्गस्य नामगुणाः	”
धूसरमुद्गगुणाः	”
माषः	२२५
अस्य नामानि	”
राजमाषः	”
अस्य सूपगुणाः	”
निष्पावः	”
रक्तनिष्पावगुणाः	२२६
नदीनिष्पावगुणाः	”
वनमुद्गः	”
अस्य सूपगुणाः	”
मसूरः	”
अस्य नामानि	”
अस्य पर्णशाकगुणाः	२२७
आढकी	”
अस्या नामगुणाः	”
श्वेताढकीगुणाः	”
रक्ताढकीगुणाः	”
कृष्णाढकीगुणाः	”
चणकः	”
कृष्णचणकगुणाः	२२८
कलायः	”
अस्य गुणाः	”
त्रिपुटः	”
अस्य गुणाः	”
कुलत्थः	”
अस्य नामानि	२२९

वि०	पृ० सं०
तिलः	२२९
अस्य नामानि	”
अस्य पिण्याकगुणाः	”
अतसी	”
अस्याः पर्णगुणाः	२३०
रक्तसर्षपः	”
गौरसर्षपः	”
अस्य नामानि गुणाश्च	”
राजिका	”
राजिकापत्रशाकगुणाः	२३१
कृष्णराजिका	”
अस्या नामानि	”
अस्या गुणाः	”
अथ क्षुद्रधान्यम् ।	
कङ्गुः	”
चीनकः	२३२
वरकस्य नामगुणाः	”
नर्त्तकस्य नामगुणाः	”
श्यामाकः	”
अस्य नामानि	”
अस्य गुणाः	२३३
कोद्रवः	”
वनकोद्रवः	”
अस्य गुणाः	”
कुसुम्भबीजम्	”
गवेधुका	”
नीवारः	”
अस्य नामानि	”
यावनालः	२३४
मकायस्य नामगुणाः	”
इति धान्यवर्गः ।	

वि०	पृ० सं०
अथ शाकवर्गः ।	
वास्तूकम्	२३४
शाकपञ्चकस्य चक्षुष्यता-कथनम्	”
गौडवास्तूकम्	२३५
अस्य नामगुणाः	”
पोतकी	”
पोतकीभेदाः	”
श्वेतमारिषः	”
रक्तमारिषः	”
तण्डुलीयः	२३६
अस्य मूलगुणाः	”
पानीयतण्डुलीयम्	”
पलक्या	”
कालशाकम्	”
पट्टशाकः	२३७
नाडीकशाकस्य भेदौ तयोर्गुणाश्च	”
कलम्बी	”
लोणी	”
बृहल्लोणी	”
चाङ्गेरी	”
चुक्रिका	२३८
चञ्चुकी	
चञ्चु–महाचञ्चु–क्षुद्र-चञ्चुनामानि	”
महाचञ्चु–क्षुद्रचञ्चु-गुणाः	”
चञ्चुबीजगुणाः	२३९
हिलमोचिका	”
शितिवारः	”

वि०	पृ० सं०
अस्य बीजगुणाः	२३९
मूलकपत्रम्	”
द्रोणपुष्पीदलम्	”
यवानीशाकम्	”
दद्रुघ्नपत्रम्	”
सेहुण्डपत्रम्	”
पर्पटपत्रम्	”
गोजिह्वा	२४०
पटोलपत्रम्	”
गुडूचीपत्रम्	”
कासमर्दः	”
अस्य गुणाः	”
चणकशाकम्	”
कलायशाकम्	”
सार्षपं शाकम्	”
अथ पुष्पशाकानि ।	
अगस्तिपुष्पम्	”
कदलीपुष्पम्	”
शोभाञ्जनस्य पुष्पं मधु च	२४१
शाल्मलीपुष्पम्	”
अथ फलशाकानि ।	
कूष्माण्डम्	”
अस्य पक्वमज्जगुणाः	”
पीतकूष्माण्डस्य नामगुणाः	”
कूष्माण्डी	२४२
अलाबूर्दीर्घा वर्त्तुला च	”
अस्याः काण्डगुणाः	”
कटुतुम्बी	”
अस्याः पर्णगुणाः	”
अस्या विषयाः	”
कर्कटी	२४३
गृहे जीर्णाया अस्या गुणाः	”
द्वितीयतृतीयकर्कट्योर्गुणाः	”
अरण्य–तिक्त–चीनाक–कर्कटीनां गुणाः	”
सर्वकर्कटीगुणाः	२४४
चिचिण्डः	”
कारवेल्लम्	”
कारवेल्ली	”
जलज–वनजकारवेल्लयोर्गुणाः	२४५
महाकोशातकी	”
तिक्तकोशातकीनामगुणाः	”
राजकोशातकी	”
पटोलः	२४६
तिक्ता पटोलिका	”
अस्याः फल–पर्ण–मूल–वल्ली–तैलानां गुणाः	”
बिम्बी	”
अस्या गुणाः फल–पुष्प–पर्णशाकानां च	२४७
तिक्तबिम्बीनामगुणाः	”
शिम्बिः	”
कोलशिम्बिः	२४८
दधिपुष्पीनामगुणाः	”
शोभाञ्जनफलम्	”
वृन्ताकम्	”
डिण्डिशः	”
भेण्डानामगुणाः	२४९
पिण्डारम्	”
कर्कोटकी	”
अस्याः फल–पर्ण–	
कन्दानां गुणाः	२४९
डोडिका	”
कण्टकारीफलम्	२५०
अथ नालशाकम् ।	
सार्षपनालम्	”
सूरणनालगुणाः	”
अथ कन्दशाकानि ।	
सूरणम्	”
वनसूरणनामगुणाः	”
आलुकम्	”
काष्ठालुकम्	”
शङ्खालुकम्	२५१
हस्त्यालुकम्	”
पिण्डालुकम्	”
अस्य नामगुणाः	”
मध्वालुकम्	”
रक्तालुकम्	”
अस्य नामगुणाः	२५२
आलुकी	”
मूलकम्	”
अस्याः शुष्कता–पुष्प–फलानां गुणाः	”
बृहन्मूलकम्	”
अस्य नामानि	२५३
गृञ्जनम्	”
कदलीकन्दः	”
मानकन्दः	”
वाराहीकन्दः	”
हस्तिकर्णः	”
अस्य नामगुणा–राजनिघण्टौ	”

वि०	पृ० सं०
केमुकम्	२५४
कसेरुः	”
अस्य नामानि	”
शालूकम्	”
संस्वेदजशाकानि	”
एषां भेदास्तद्गुणाश्च	२५५
इति शाकवर्गः ।	
अथ मांसवर्गः ।	
मांसम्	”
हरिणः	”
एणः	”
कुरङ्गः	”
ऋष्यः	”
पृषतः	”
न्यङ्कुः	”
शम्बरः	२५६
राजीवः	”
मुण्डी	”
गोधा	”
शशः	”
भुजङ्गः	”
आखुः	”
शल्लकी	”
गुहाशयाः	”
पर्णमृगाः	”
विष्किराः	”
प्रतुदाः	”
प्रसहाः	”
ग्राम्याः	२५७
कूलेचराः	”
प्लवाः	२५७
कोशस्थाः	”
पादिनः	”
मत्स्याः	”
रोहितः	”
शिलीन्ध्रः	”
भकुरः	”
मोचिका	”
पाठीनः	२५७
शृङ्गी	”
इल्लीसः	”
शष्कुली	”
गर्गरमत्स्यः	२५८
कविका	”
वर्मिमत्स्यः	”
दण्डमत्स्यः	”
एरङ्गः	”
महाशफरः	”
गरघ्नी	”
मद्गुरः	”
सपादमत्स्यः	”
प्रोष्ठी	”
इति मांसवर्गः	
अथ कृतान्नसाधनवर्गः ।	
सक्तवः	२५९
चिपिटाः	”
होलकः	”
कुल्माषाः	”
पललम्	”
पिण्याकः	”
इति कृतान्नसाधनवर्गः ।	
अथ वारिवर्गः ।	
पानीयम्	२५९
करकाजलम्	”
तौषारजलम्	”
इति वारिवर्गः ।	
अथ दुग्धवर्गः ।	
दुग्धम्	२६०
सन्तानिका	”
इति दुग्धवर्गः ।	
अथ दधिवर्गः ।	
दधि	२६०
इति दधिवर्गः ।	
अथ तक्रवर्गः ।	
तक्रम्	”
इति तक्रवर्गः ।	
अथ नवनीतवर्गः ।	
नवनीतम्	२६१
इति नवनीतवर्गः ।	
अथ घृतवर्गः ।	
घृतम्	”
इति घृतवर्गः ।	
अथ मूत्रवर्गः ।	
मूत्रम्	”
इति मूत्रवर्गः	

वि०	पृ० सं०
अथ तैलवर्गः।	
तैलम्	२६१
इति तैलवर्गः।	
अथ सन्धानवर्गः।	
मद्यम्	२६२
इति सन्धानवर्गः।	
अथ मधुवर्गः	
मधु	२६२
इति मधुवर्गः।	
अथेक्षुवर्गः।	
इक्षुः	"
फाणितम्	२६३
गुडः	"
शर्करा	२६३
सितोपला	"
इतीक्षुवर्गः।	
अथानेकार्थनामवर्गः।	
द्व्यर्थकशब्दानामकाराद्यनुक्रमणिका	२३४
त्र्यर्थकशब्दानाम०	२६५
चतुरर्थकबह्वर्थकशब्दा०	२६६

समाप्तिश्च।

छप रहे हैं! आयुर्वेद के अमूल्य ग्रन्थरत्न!! छप रहे हैं!!!

भावप्रकाश विद्योतिनी नाम्नी भाषाटीका-सहित।

यह ग्रन्थ मेरे यहां छपरहा है। आशा है कि पूर्वखण्ड निघण्टु के सम्पूर्ण ओषधियों के ऊपर विशद विवरण तथा सन्दिग्ध प्रधान २ ओषधियों के चित्रों के साथ २-३ मास के अन्दर आप लोगों की सेवामें उपस्थित हो जायगा-जिसे देखकर आप स्वयं कहेगें कि ऐसा उत्तम संस्करण अभीतक दूसरा नहीं निकला।

अभिनव बूटीदर्पण-यह स्वतन्त्र बूटियों के ऊपर आजतक के वनस्पति विषयक विद्वानों के विचारों से तथा सुन्दर चित्रों से सुसज्जित मुद्रित हो रहा है। इसके संकलनकर्त्ता तथा संपादक श्रद्धेय प्रसिद्ध वनस्पतिविशारद रूपनिघण्टुकार वयोवृद्ध लाला श्रीरूपलालजी हैं। इन ग्रन्थों के जो ग्राहक अभी से ग्राहकश्रेणी में नाम लिखवा लेवेंगे उन्हें ये ग्रन्थ पौने मूल्य में दिये जायँगे।

आयुर्वेद सम्बन्धी सब प्रकार के ग्रन्थों के मिलने का

एक मात्र स्थान—

चौखम्बा संस्कृत पुस्तकालय, बनारस सिटी।

॥ श्रीः ॥

भावप्रकाशे निघण्टुभागे

परिशिष्टम् ।

अथ हरीतक्यादिवर्गः ।

१ हरीतकी (हरड़) पृ० १४७

अनेक भाषा के नाम—

हि०—हर्र, हर्रें, हरड, हड़, हरे । ब०—बालहरीतकी,, हरीतकी-गाछ, नर्रा । म०—हरडा, बालहरडी, । गु०—हरडे, हिमज । ते०—करकचेट्टु, करकाय । ता०—कड़कै, करकैया, कडुकैमरम क०—अणिलेय, अनिलैकाय । उड़ि०—हरिडा, करडा । द०—कलरा । द्रा०-कडुक्काय । फा०-हलेलज अस्फर, हलेले जर्द, हलैलाह । अ०-अहलीलज् अस्फर, एहलीलज् कावली, अहलीलज् अस्वद । ले०—टरमिनेलिया चेब्युला (Terminalia Chebula) टरमिनेलिया सिट्रिना (Terminelia) Citrina) । अं०—चेब्युलिआ (Chebulia). ब्लैक माइरोबेलन्स (Black myrobalans)

अम्लभावाज्जयेद्वातं पित्तं मधुरतिक्ततः ।
कफं रूक्षकषायत्वात् त्रिदोषघ्नो ततोऽभया ॥ १ ॥
हरीतकी मनुष्याणां मातेव हितकारिणी ।
कदा चित् कुप्यते माता नोदरस्था हरीतकी ॥ २ ॥
द्राक्षां नियोज्य विधिना द्विगुणां शिवायाः-
संचूर्ण्य चाक्षफलपानमितां प्रभाते ।

कल्याणिकां च सुकृतां गुटिकामिमां यः-
संसेवते भवति तस्य हि पित्तनाशः ॥ ३ ॥

हृद्रोगरक्तविषमज्वरपाण्डुवान्ति-
कुष्ठानि कासकमलारुचिमेहमुख्याः ।
आनाहगुल्मपिटिकाप्रभवा विकाराः-
सर्वे च ते विलयमाशु सुखेन यान्ति ॥ ४ ॥
भुक्ते पथ्याऽभुक्ते पथ्या भुक्ताभुक्ते पथ्या पथ्या ।
जीर्णे पथ्याऽजीर्णे पथ्या जीर्णाजीर्णे पथ्या पथ्या ॥ ५ ॥
हरस्य भवने जाता हरिता च स्वभावतः ।
हरेत्तु सर्वरोगांश्च तेन प्रोक्ता हरीतकी ॥ ६ ॥
हरीतक्याः स्मृतं बीजं चक्षुष्यं गुरु वातनुत् ।
पित्तनाशकरं चैव मुनिभिः परिकीर्त्तितम् ॥ ७ ॥

व्यवहार—हरड़के फलकी छाल । मात्रा-४ मासे से १॥ तोला ।

२ बिभीतकः (बहेड़ा) पृ० १९०

हि०-बहेड़ा, फिनास, भैरा । ब०-बयड़ा, बोहेरा, बेहरी । म०-बेहड़ा, घाटींग, बहेला । गु०-बेड़ा, बेहेड़ा । क०-तोड़े, तोरै । तै०-तांड़े चेट्टु, वल्ला, ताड़िकाय । ता०-तनितांडी, तोअण्डी, कट्टुएलुपय । फा०-बलेले, वलैलाह । अ०-वलेलज् । अं०-बेलिरिक मेरोबेलन्स् (Beleric myrobalans) ले०-टरमिनेलिया बेलिरिका (Terminalia belerica)

परं केश्यस्तु तन्मज्जा नेत्रपुष्पहरोऽञ्जनात् ।
नासारोगनेत्ररोगकृमिशुक्रहरो लघुः ।
अक्षवृक्षभवः कल्कश्चित्रपाण्डुगदापहः ॥ १ ॥

व्यवहार—फलकी छाल । मात्रा—६ से १० मासे ।

३ आमलकी (आंवला) पृ० १९०

हि०-आमला, आंवड़ा, आंवरा। ब०-आमला, आमरो । म०-आंवले, आंवलकाटी । गु०-आमलां, आमली । क०-नेल्लि, नेल्लिकायि । तै०-उसरिकाय । उ०-अण्डा । ता०-नेल्लकर । फा०-आम्लज, आमलह ।

अ०-अमलज । अं०-एम्ब्लिक मेरोबेलन् (Emblic myrobalan.) ले०-फाइलेन्थस् एम्ब्लिका (Phyllanthus Emblica)

अम्लत्वाद्वातहं प्रोक्तं माधुर्याच्चैव शीततः ।
पित्तनाशकरं चोक्तं रूक्षत्वाच्च कषायतः ॥ १ ॥
कफनाशकरं प्रोक्तं पूर्वैर्विद्याविशारदैः ।
आमलस्य फलं शुष्कं तिक्तमम्लं कटु स्मृतम् ॥ २ ॥
मधुरं तुवरं केश्यं भग्नसन्धानकारकम् ।
धातुबृद्धिकरं नेत्र्यं लेपनात् कान्तिकारकम् ॥ ३ ॥
पित्तं कफं तृषां घर्मं मेदोरोगं विषं तथा ।
त्रिदोषं नाशयत्येवं पूर्वाचार्यैर्निरूपितम् ॥ ४ ॥
तन्मज्जा प्रदरच्छर्दिवातपित्तज्वरापहा ।
कषाया मधुरा वृष्या श्वासकासनिबर्हणा ॥ ५ ॥

व्यवहार—फलकी छाल । मात्रा—६ मासा से १ तोला तक ।

त्रिफला पृ०।१६०

एका हरीतकी योज्या द्वौ च योज्यौ बिभीतकौ ।
चत्वार्यामलकान्येव त्रिफलैषा प्रकीर्त्तिता ॥ १ ॥
पथ्या बिभीतकं धात्री महती त्रिफला मता ।
स्वल्पा काश्मीरखर्जूरपरूषकफलैर्भवेत् ॥ २ ॥

व्यवहार—फलके छिलके । मात्रा—३ माशे से १ तोला तक ।

४ शुण्ठी (सोंठ) पृ० १६१

हि०-सोंठ, सिंघी । ब०-शुण्ठि, सुंट । म०-सुण्ठ । गु०-शुंठ्य, सूंठ । क०-शुंठि, ओणसुंठि, बेबशुंठी । तै०-शोंठी, सोंटि । ता०-इञ्जी । द्रा०-शुक्कू । फा०-नंजबील, जंजबीलखुश्क । अं०-ड्राइ जिञ्जिबेर (Dry gingiber.) ले०-ज़िंजिबेर आफिसिनेलि (Zingiber officinale)

व्यवहार—कन्द । मात्रा —३-७ माशे ।

५ आर्द्रक (अदरख) पृ० १६१

हि०-अदर(ख) क, आदी । ब०-आदा । म०-आले । गु०-आदु । क०-अल्ल, असिशोंठि, हसीशुंठी । तै०-अल्ल, अल्लम । ता०-शुक्क ।

द्रा०-इश्जि। फा०-जञ्जबीलेतर। अ०-जंजबीले रतब। अं०-जिञ्जेर रूट (Ginger root.) लै०-Gingeber officinale (जिंजिबेर आफिसिनेलि)।

वातपित्तकफेभानां शरीरवनचारिणाम्।
एक एव निहन्त्यत्र लवणार्द्रककेशरी॥ १॥
आर्द्राङ्कुरा रसाभावात् कफवातकरा मताः।
रक्तदोषस्य शमनास्ते वृद्धाः कफनाशकाः॥ २॥
काञ्जिका सैन्धवं चार्द्रं पाचकं चाग्निदीपनम्।
रुच्यं प्रियं सरं प्रोक्तं शोथवातकफापहम्॥
लकुचस्य रसे क्षिप्तमार्द्रकं मुखशोधनम्॥ ३॥

व्यवहार—कन्द, स्वरस। मात्रा—२ मासे से १ तोला तक।

६ पिप्पली (पीपल) पृ० १५१

हि०-पीपर (ल)। बं०-पी(पि)पुल। म०-पिंपली। गु०-लीडी पीपल, लिण्डी पीपल। क०-हिप्पली। ते०-पिप्पलि चेट्टु। ता०-पिंप्पलि, तिप्पिली। फा०-पिलपिल दराज, फिलफिल दराज। अ०-दार फिल्फिल्। अं०-लांग पीपर (Long Pepper)। लै०-पाइपर लंगाम (Piper Loungum) या-चविका राक्स बर्घि (Chavica Rox burghii)।

व्यवहार-फली। मात्रा-१-३ माशे।

७ मरिचम् (मरिच) पृ० १५२

हि०-काली मरिच, गोल या दक्षिणी या चोखा मिरच, मरिच। ब०-मुरिच, मोरिच, गोल मिरच। म०-मिरे, मिरीं, काली मिर्च। गु०-मरि, मरितीखा। क०-मेणसु, मोलुबु कोठि। ते०-मरिया, मरियन, मरियलु। ता०-मिलगु, मिलंड चोक। फा०-पिल्पिले अस्वद, हलपिला गिर्द। अ०-फिल्फिले अवीद, फिल्फिलस्सोदाय। अं०-ब्लाक पीपर (Black peper) लै०-पाइपर नाइग्रम (Piper nigrum)

सितमरिच (सफेदमरिच)

ब०-सादा मरिच। म०-पांढ़रे मिरे। गु०-धोला मरी। क०-विलेय मेणसु। ता०-मिलाओ।

कटूष्णं लघु तच्छुष्कमवृष्यं कफवातजित् ।
नात्युष्णं नातिशीतं च वीर्यतो मरिचं सितम् ॥ १ ॥
गुणवन्मरिचेभ्यश्च चक्षुष्यं च विशेषतः । (सु० सं०)
शोभाञ्जनबीजं श्वेतमरिचं केचिद्वदन्ति ।
कटूष्णं श्वेतमरिचं विषघ्नं भूतनाशनम् ।
अवृष्यं दृष्टिरोगघ्नं युक्तं चैव रसायनम् ॥ २ ॥ (रा० नि०)

व्यवहार—बीज । मात्रा-१—४ माशे ।

८ पिप्पलीमूलम् (पिपरामूल) पृ० १६२

हि०—पीपलामूल, पी(पि)परामूल । ब०-पिपुलमूल । म०-पिपलीमूल, पिपलमूल, पिपलामूल । गु०-पीपरीमूलना गंडाडा, पीपलीमूल । क०-पिप्पलीयबेरु, हिप्पलीयबेरु, हिप्पलीमूल । तै०-पिप्पली वेरु, पिप्पळी दुम्प । प०-पिप्पला मूल । मा०-पीपलामूल । द्रा०-तिप्पली मूल । फा०-फिल्फिल् मोया, फिल्फिल् मूयह । अ०-असलुल फिल्फिल् । अं०-(पाइपर रूट) Paiper root. (रूट ऑफ् दी पाइपर लाङ्गम) Root of the Piper langum ।

व्यवहार—जड़ । मात्रा ३-४ माशे

९ चव्य पृ० १६२

हि०-चव्य, चाभ, चाब, चब, । ब०-चइ, चई, चोई । म०-चवल, मिरबेली चे मूल । गु०-चवक । तै०-सेवामु, चैकाणी, चव्यमु । द्रा०-शव्यं । मु०-कंकल । ले०-(पाइपर चब) Piper Chaba. (चविका आफिसिनेरम्) Chavica officinaram. (आई पाइपर चब) Aya Piper Chaba ।

तन्त्रान्तरे-चव्यं तु चविका चाथ बिम्बीगुञ्जे तु कृष्णला । चविका कटु तिक्तोष्णा दीपनी पाचनी लघुः ॥ १ ॥ कफपित्तहरी चैव किञ्चिद्वातप्रकोपनी । श्लेष्मपित्तहरं शाकमस्य तूक्तं भिषग्वरैः ।

मदनपाले-चव्यपुष्पं गरश्वासकासक्षयविनाशनम् ।

व्यवहार—डण्ठल । मात्रा—३-८ माशे ।

१० गजपिप्पली (गजपीपल) पृ० १६३

हि०-गजपीपर, हाथी पीपली, बड़ी पीपली, चव्य का फल। ब०-गज-पीपल; गजपिपुल, करिपिपुल। म०-गजपिपली, मोरवेलीला, पिंप्पल्या येतातली। क०-गज हिप्पली। गु०-गजपीपर, मोटी पीपर। मोर-बेलीला। ते०-गजपिप्पलु, पेद्द पिप्पलु। ता०-अति तिप्पली। मा०-गज-पीपल, थोरपिम्पली। द्रा०-यावै तिप्पली। प०-गजपीपल। सन्ता०-दूरे भाक। खा०-दोदहिप्पली। माल०-अति पिप्पली, अनैत तिपिली। ले०-(सिन्डेप्सस आफिसिनेलिस्) Scindapsus officinalis, या-(पोथॉस् आफिसिनेलिस्) Syn:-Pothos officinalis।

सैंहलीपिप्पली, वनपिप्पली, मर्कटीपिप्पली च भवन्ति तासां क्रमेण गुणाः प्रोक्ता राजनिघण्टौ निघण्टुरत्नाकरे च। तद् यथा—

सैंहली कटुरुष्णा च जन्तुघ्नी दीपनी परा। कफश्वाससमीरार्तिशमनी कोष्ठशोधनी ॥१॥ वनपिप्पलिका चोष्णा तीक्ष्णा रुच्या च दीपनी। आमा भवेद् गुणाढ्या तु शुष्का स्वल्पगुणा स्मृता ॥२॥ मर्कटीपिप्पली तिक्ता तुवरा सुरसा स्मृता। मूत्रकृच्छ्राश्मरीयोनिशूलविस्फोटकाञ्जयेत् ॥ ३ ॥

व्यवहार—फल। मात्रा—१-३ माशे।

११ चित्रक (चीता) पृ० १६३

हि०-चीत, चीता, चित्रा, चित्ता, चितरक, चितउर। ब०-चिता, चितु। म०-चित्रकु। मु०-चित्रक। क०-चित्रमूल, चित्रकमूल। प०-चित्रा। ते०-चित्रमूलमु, चित्रमूलं, तेल्ला चित्रा। ता०-वेंचित्तिर, कोदिवेल। द्रा०-चित्रमूलं। उ०-धुवचिता। तु०-बोलड्ड। गु०-चित्रो, चित्रापीतरो। मला०-टपकोटुवलि, कोटुवेलि। सिह०-सुदुनी तुल। ब्र०-कन् खेन् फिउ, किन् खेन् इन्। फा०-वेख बरंदा, बेखबरंदह, शीतरह, शीतरुह, शीतरक, बेखबुरिंदा। अ -शितरज, शितरभ, शीतरज हिन्दी, शैतरज। ले०-(प्लाम्बागो जिलानिका) Plumbago Zeylanica. या (प्लाम्बागो आवरीकुलेटा Syn:- Plumbago ouriculata।

१२ लाल चीता।

हि०-लालचीत, लालचीता, लालचित्रक, लालचितउर, ब०-एडचिते, रक्तोचिते। म०-रक्तचित्रक। क०-कोपिनचित्रमूल, लालचित्रकमल।

ता०-शिवप्पुचित्रिर, शिवप्पु चित्तिर, शिउकोडिवयली । उ०-रक्तचिता रक्तचिता । मला०-स्वेट्टी कोडिवल्ली, चुपेण्डा फोडु अवलि ।

ले०-Plumbago rosea (प्लाम्बेगो रोझिया) ।

१३ कालाचीता

रक्तकृष्णचित्रकयोर्गुणाः क्रमेण —

स्थूलकायकरो रुच्यः कुष्ठघ्नो रक्तचित्रकः ।
रसे नियामको लोहे वेधकश्च रसायनः ॥ १ ॥
केशाः कृष्णाः प्रजायन्ते कृष्णचित्रकभक्षणात् ।
कृष्णचित्रं समुत्पाट्य गोभिराघ्रातमेव वा ।
क्षीरमध्ये क्षिपेद्वाऽपि क्षीरं कृष्णं प्रजायते ॥ २ ॥

व्यवहार—पञ्चाङ्ग, जड़, जड़को छाल । मात्रा—१-३ माशे ।

१४ यवानी (अजवाइन) पृ० १९३

हि०-अजवायन, अजमायन, जवाइन, अजवां, अजोवां । ब०-यमानी, यउयान, योयान्, जोवान् । म०-ओवा, ठंवा । गु०-अजमा, यवान, जवाइन, अजमो । क०-उंठु, ओंठू, ओमु । तै०-वामु, ओममी, ओममु, ओमा । ता०-अमन, ओमन, ओमम् । मा०-आजवाण । कच्छ०-चोहरा । काश्मी०-जविन्द । मु०-अजमा, ओवा । फा -नानुखा, नान्ख्वाह, जीनान् । अ०-कमुन्, अमूने मुल्की । अं०—The Bishops wed (दि बिशौप्स वेड), Ajwa seeds (अजवा सीड्स्) । ले०-Carum Copticum (कारम कोप्टिकम) Syn:-Ligusticum Ajowan या-(लिगस्टिकम अजोवां) Syn:-Otychotis Ajowan या (ओटिचोटिस अजोवां) ।

व्यवहार—बीज । मात्रा—२-६ माशे ।

१५ अजमोदा (अजमोद) पृ० १९३

हि०-अजमोद, अजमोत, अजमोदा । बं०-वनयमानी, रान्धुनी, अज मूद, चनु । गु०-बोडी अजमोद, बोडी अजमो । ते०-आजामोदा, वोमा, अशमदागां वोमा, अजोदावोमरु । द०-अजमुदा, आजमुदा, अजवां । मध्य प्र०-रान्धुनी । ता०-अशम, टागम, तागम, अशमता

ओमान् । म०-अजमोदा वोवा, कोरंजा । क०-अजमोदा वोमा । फा०-करप्स । अ०-बज़रुल् करप्स । अं०-Celery seeds (सिलेरी सीडस्) । ले०-Carum Roxburghianum (कारम राक्सबर्घियानम) Syn:-Apium involucratum या (एपियम इन्वोल्युक्रेटम) Syn:—Ptychotis Roxburghiana या (पिचोटिस राक्सबर्घियाना)

व्यवहार—बीज । मात्रा-२-८ माशे ।

१६ अजवायन जङ्गली पृ० १६३

हि०-वन अजवायन, घोड़ अजवायन, अजमोदा । सं०-वनयवानी । बं०-वनयोवान । म०-किरमानी, अजवां । ले०-Seseli Indicum (सिसिली इंडिकम) Syn:-Ligusticum diffusum (लिगस्टिकम डिफ्युजम)

१७ पारसीक यवानी (खुरासानी अजवाइन) पृ० १६४

हि०-खुरासानी अजवाइन, खुरसाना, किरमानी अजवायन । बं०-खुरासानो योयान, खोरासानी यमानी । म०-खुरासानी ओंवा, किरमानी ओंबा । गु०-खुरासाणी अजमा, छुहारी अजमोद । ते०-खुरसाण वामु, खुरसनी उमा, खरासानी वाममु । ता०-खोरसनी ओमाम, शिट्टामुट्टि, कुरासानी योमाम । प०-खुरासानी अजवाइन, बजरुल । मा०-खुरासानी अजवाण । क०-खुरासानी वोमं । द्रा०-कुरोशानि वोमं । फा०-तुख्मबञ्जे, बङ्गदिवाना, बञ्ज, तुख्मविनग, तुख्मेबंग । अ०-बज़रुल बञ्ज, अबीद शिकरान, बजुलबञ्ज, बज़रुलविनग । यू०-अजवायन खुरासानी, ले०-Hyoscyamus niger (हाइयोस्यामस निगर)

पारसीकाजमोदाया नामगुणाः—

यवानीया यवानी स्याद्यौहारो जन्तुनाशनः ।
पारसी यावनी गन्धाछारश्च खरपुष्पका ॥
पारसीकयवानी तु तिक्तोष्णा कटुतीक्ष्णा ।
अग्निदीप्तिकरी वृष्या लघ्वी चैव प्रकीर्त्तिता ॥
त्रिदोषाजीर्णक्रमिनुच्छूलामस्य च नाशिनी ।
विशेषात्तु गुणास्त्वन्ये यवानीव प्रकीर्त्तिताः ॥

व्यवहार—बीज । मात्रा—१-२ माशे

१८ शुक्लजीरक (जीरा) पृ० १६४

हि०-जीरा, सादा जीरा, सफेद जीरा । बं०-सादा जीरे, शाहा जीरे, जीरे । म०-जीरें, पांडरे जीरें, पांढ़रे जीरें, जीरो । गु०-जीरुं, शाकनुजीरुं, सादूं जीरुं, धोलुजीरुं । क०-जिरिगे, विलियजीरगे । ते०-जिलकारा, जीलकरर । द्रा०-शीराम । यू०-खामुने । ता०-शिरगम । फा०-जीरये सफेद । अ०-कमून अबियज । अं-Cumin seeds (क्युमिन सीड्स्) । ले०-Cuminum Cyminum (क्युमिनम् सिमिनम)

व्यवहार—बीज । मात्रा-३-७ माशे ।

१९ कृष्णजीरक (स्याहजीरा) पृ० १६४

हि०-कालाजीरा, स्याह् जीरा, कृष्णजीरा । बं०-कालजीरें, कृष्णजीरा । म०-शहाजीरें, शाहाजीरं, कालेजीरं । गु०-श्याजीरुं । क०-करिजीरके, करिजिरिगे । ते०-नल्लजीर- तल्लजिल्कर्र । ता०-शिमइ शोम्बु । मा०-श्याजीरो । द्रा०-करुंशीराम । चनाब०-गंयूं । फा०-सियाह्जीरा, जीरये स्याह् । अ०-कमूने किरमानी, कमून अस्वद । अं०-Black Caraivay seeds (ब्लैक काराइवे सीड्स्) ले०-(१) Carum Carui (कारम कारुइ) (२) Carum Bulbocastanum (कारम बल्बोकास्टेनम)

व्यवहार-बीज । मात्रा-६-७ माशे ।

२० कालाजाजी (कलौंजी) पृ० १६४

हि०-कलोंजी, कलौंजी, मंगरेल, मंगरैला । बं०-मोटा काले जीरे, मोट काल जीर । म०-कलौंजीं जीरें, काले जीरे । गु०-कलौंजी जीरुं । क०-करिदोड्डु जीरिगे । ले०-नल्लाजीरा कारा । फा०-शोनिझ, स्यादाने, शोनिज, शओनीज । अ०-हब्बतुस्सोदा, हब्बुलस्सोदाय, हब्बतुस्सोदा । अं०-Small Black cummin (स्माल ब्लैक क्युमिन) । ले०-Nigella Sativa (निगेला साटिवा)

व्यवहार-बीज । मात्रा-२-५ माशे

अरण्यजीरकस्य (कालीजीरी) नामगुणाः—

बृहन्पाली क्षुद्रपत्रोऽरण्यजीरकणौ तथा।
आरण्यजीरकं चोष्णं तुवरं कटुकं मतम् ।

स्तम्भं वातं कफं चैव व्रणं चैव विनाशयेत् ।

व्यवहार-बीज । मात्रा-२-३ माशे ।

२१ धान्यकम् (धनिया) पृ० १९४

हि०-धनियां । बं०-धने । म०-धने, कोथिंबीर, धणे । गु०-धाना, धाणा, कोथमीर । क०-कोथुंबुरी, कोथम्बरी, हविज । ते०-कोथमिलु, धनियलु, धाणीपापु, कोचिमिर चेट्टु । ता०-कोटमल्लि, कोतमल्ली । मु०-धनु-कोथमीर । सिन्ध०-धानु । फा०-तुख्मेकसीज, कुजवर, कश्नीज । अ०-कज़बुरा, कजबुरह । लै०-Coriandrim sativum (कोरिअण्ड्रिम-सेटिवम) । अं०-Coriander seeds (कोरिअण्डर सीड्स्) ।

व्यवहार—बीज । मात्रा ६ माशे से १ तोला तक ।

२२ शतपुष्पा (सोआ) पृ० १९४

हि०-सोआ, सोया, वनसौंफ । बं०-शुलूफा, शुल्फा । पं०-सोया । म०-बालंत शेप, बालंत शेफ । क०-सधसिले, संजसिगे, सब्बसिगे, सदापे । गु०-शुवा, शुवानी भाजी । ते०-पेद्दे सदाप चेट्टु, सदापा, सदाप, सोम्पा । द्रा०-शतकुप्पे, शतकुपइ । मा०-सोवा, सुवा । मु०-सुबा, सोफा, शेपू, शिवपा, शवपा । ता०-सोयी किरइ विरइ, शतकुप्पी विरइ । द०-सयी । अं०-Dill seeds (डिल सीड्स्) । लै०-Peucedanum graveolens (पिउसिडानम ग्रेवियोलेन्स) Syn:-Anetheum sowa या (अनेथियम सोवा) ।

शतपुष्पाया आकृतिस्तु—

शतपुष्पा सूक्ष्मपत्रा पीतपुष्पाऽतिछत्रका ।
प्रसिद्धा चेत्रविख्याता दीपनोक्ता महर्षिभिः ॥

व्यवहार—बीज । मात्रा—२-३ माशे ।

२३ मिश्रेया (सौंफ) पृ० १९४

हि०-सौंफ, सोंफ । ब०-मौरी मीठाजीरा । म०-बड़ीसोफ, बड़ीसोप । गु०-बरिआली, बारिअरी, बरिअरी । क०-सोपु, कासंछसिगे । मा०-सोंफ । प०-सोंफ । ते०-सोपु, पेद्दजिलकुरह, पेद्दजिलकर, जिलाकुरी । ता०-सोहिकिरे, सोम्बु । मु०-अनिसन, बड़ी सोंफ । फा०-राज़यानज़, राजयाना, बादियान, राजियानह । अ०-एजियानज़, असलुल एजिया-

नन राजियाज । अं०-Fennel Seeds (फेन्नेल सीड्स्) । ले०-Faeniculum Vulgare (फेनिक्युलम वलगेर) Syn:-Anethum Panneorium या (एनेथम पान्निओरिअम ।

व्यवहार—बीज । मात्रा—६ माशे से १ तोला ।

२४ मेथी पृ० १९९

हि०-मेथी । प०-ब०-म०-गु०-मेथी । क०-मेथय, मेथपक, मेंत्या, मेंन्थ्य । ते०-मेंटुलु, मेंतुलु । ता०-वरण्डयम्, वेन्दयम् । व०-मेति । द्रा०-वेन्दियं । फा०-तुख्मे शमपीत, तुख्मशमलीत, शमबलीद फरीकह् । अ०-बजरुल हुल्बा, बजरुल हुल्बह्, हुलबह् । अं०-Fenugreek (फेनुग्रीक) । ले०-Trigonella Foenum Graecum (ट्रिगोनेला फोइनम ग्रेइकम) ।

व्यवहार—बीज । मात्रा—२-९ माशे ।

२५ वनमेथी पृ० १९९

हि०-वनमेथी, जङ्गलीमेथी । प०-सिंजी । सिन्ध०-जिर । ले०-Melilotus Parviflora (मेलिलोटस् पार्विफ्लोरा) Syn:-Trifolium indicum या (ट्रिफोलिअम् इण्डिकम) ।

व्यवहार—बीज । मात्रा—२-९ माशे ।

२६ चन्द्रशूरम् (चनसुर) पृ० १९९

हि०-हालों, हालिम, चनसुर, चन्दसुर । ब०-हालिम, हालिमा, हालो, चांदशूर, अलवेरी । म०-आलीव, हलिम, अहालीव । गु०-अशेलियो, अशेरिया, माशालबीज । यू०-तरम राहके बीज । फा०-तुख्म तरह् तेजक । अ०-बजरुज्जर जीर । कुमा०-हालिम । मु०-अस्सालिया, अहालिव । ता०-अलिवेरइ । ते०-अदित यलु । पं०-तेजक । सि०-अहेरे । क०-अलिबीज । अं०-Common Cress (कामन क्रेस) । ले०-Lepidium Sativa (लेपिडियम सेटिवा) ।

व्यवहार—बीज । मात्रा—३-६ माशे ।

२७ हिङ्गु (हींग) पृ० १९९

हिं०-मा०-हींग । ब०-क०-हिङ्गु । प०-हिङ्गे, हींग । म०-हिंग । गु०-हिंगड़ो, बघारणी, हिंग बघारणी । ते०-इंगुव, इंगुर, इंगुरा । ता०-पेरुं-

गियम, पेरुंग्यम् । मु०-हिंगा । द्रा०-पिरुङ्गायं । फा०-अङ्गोजा, अङ्गज, अंगूजह, अंगुजा, अंघुजेह इलरी । अ०-हिल तीत्, हिलतीस । अं०-Assafoetida (आसेफोटिडा) ले०-Ferula Narthex (फेरुला नार्थेक्स) Syn:-Narthex Asafoetida या (नार्थेक्स आसेफोटिडा) । Syn:-Ferula Asafoetida या (फेरुला आसेफोटिडा) ।

हिङ्गुशोधनविधिर्यथा आत्रेयसंहितायाम्—

अङ्गारस्थे लोहपात्रे सघृते रामठं क्षिपेत् ।
चालयेत् किञ्चिदारक्तवर्णं योगेषु योजयेत् ॥

व्यवहार—गोंद । मात्रा—२ रत्तीसे १ माशा ।

२८ वचा (वच) पृ० १९९

हि०-बच, घोरबच, गुड़बच, गुरबच । ब०-बच । म०-वेखंड । ते०-वड़ज, नल्लवस, वासा, वस । गु०-वज, घोड़ावज, गंडिलो वज, गोड़वज । क०-वजे । ता०-वशंबु, वखशंबु । मु०-बेखंडे । मला०-व्ययंपु, वशम्ब । गोमा०-येखंड । द्रा०-वशम्बु । प०-बड़ीबोज, वर्च । फा०-सोसन जर्द, अगर तुर्की, सबे बवा । अ०-उद्‌ल बुज़, अकरुन, बज़, बिज़ । यू०-अकुरुन् । अं०-Sweet Flagroot (स्वीट फ्लागरूट) । ले०-Acorus Calamus (एकोरस केलेमस)।

व्यवहार—जड़ । मात्रा—१-३ माशे ।

२९ पारसीकवचा (खुरासानी या सफेद वच) पृ० १९६

हि०-सफेदवच, बालवच, खुरासानी वच, दूधियावच । ब०-खोरासानीवच, श्वेतवच । म०-पांढरे वेखंड । गु०-धोलावच, बालावज, खुरासानी बज । क०-विलेबजे, कपगादगड्डे, नारुवेरु । ते०-तेल्लावासा, वाड़ज, तेल्लवस ।

व्यवहार—जड़ । मात्रा—१-३ माशे ।

शुक्लवचागुणाः—

वचा श्वेता बुद्धिमेधावह्निदीप्तिकरी मता ।
आयुष्यदा गुणाढ्या च वृष्या कफविनाशिनी ।
वातभूतक्रिमिहरा त्वितरे पूर्ववद् गुणाः ॥

वचाया अद्भुतगुणाः—

अद्भिर्वा पयसाऽऽज्येन मासमेकन्तु सेविता।
वचा कुर्यान्नरं प्राज्ञं श्रुतिधारणसंयुतम्॥
चन्द्रसूर्यग्रहे पीतं पलमेकं पयोऽन्वितम्।
वचायास्तत्क्षणं कुर्यान्महाप्रज्ञाऽन्वितं नरम्॥

३० कुलिञ्जनः (सुगन्धा वचा) पृ० १९६

हिं०-कुलिञ्जन, कुलंजन, बड़ा कुलंजन। बं०-कुरचीवच, महाभरी-वच, कुड़चीसेष, महाभैरवी वच। म०-कुलिजन्, कोश्तकुलिंजान। गु०-कुलिजन् जातु। कोलिजन। सिन्ध०-कुंजर, कंजर, कांठी। ता०-पेरर-त्तइ। ते०-पेड्दुम्पराशत्रकम। मला०-पेरारट्टा। दुम्परास्मी। ब्रह्मी०-पद्-गोजी। फा०-खिरदारु, खरदारु, खुशरवे दारु एकलान्। अ०-इर्क खोलिं-जान, खुलंजान, खुलांजाने कस्वी, खुलंजान्-ए कबीर। अं०-Greater Galangal (ग्रेटर गैलंगाल)। ले०-Alpinia Galanga (अल्पी-निया गैलङ्गा)।

व्यवहार—जड़। मात्रा—३-९ माशे।

३१ महाभरीवचा (कुलिञ्जन भेद) पृ० १९६

हिं०-महाभरा बच, महाभरी वच, कुलञ्जन भेद। बं०-महाभरीबच, नर कचूर। प०-कचूर। नरकचूर। मला०-कठुइंशीकुआ। ले०-Zingiber Zirumbet (जिंजीबर जिरम्बेट।

व्यवहार-जड़। मात्रा—३—९ माशे

३२ द्वीपान्तरवचा (चोपचोनी) पृ० १९६

हिं०-चोपचोनी, तोपचोनी, चोबचीनी बं०-तोपचीनी, कुमारिका। म०-गु०-चोपचीनी। ते०-फिरंगी चक्का, कोंडडोटेना, कोंडतामरा, सितपु चेट्टु। म०-गुटो, गुटबेल, धोलयेल। ता०-मलैत तामड़ा। द्रा०-परंगि शक्के। मला०-कलतामरा। सन्ता०-अटकोर। ने०-चोपचीनी। यू०-ख-सिलियर आशसिनी। फा०-रावन, रवन, बेखेचीनी। अ०-एवन, रायन, खुशबुस्सीनी। अं०-China root (चाइना रूट) ले०-Smilax

china (स्माइलाक्स चाइना) Syn:-Smilax Macrophylla या (स्माइलाक्स माक्रोफिला)।

फिरङ्गदेशसम्भूता चीनदेशेऽथ विश्रुता।
नामतश्चोपचीनी स्यादश्वगन्धसमाभवेत्॥

अस्याः सेवनसमये त्याज्यपदार्थाः—
मद्यं त्यजेत्तथा तैलं काञ्जिकं शाकमेव च।
क्षारमम्लरसं चैव लवणं तिक्तभोजनम्॥ शिवनिघण्टौ।

व्यवहार—जड़। मात्रा—३—४ माशे।

३३ हवुषाद्वयम् (हाऊबेर) पृ० १९६

हि०-हाऊबेर, हाहूबेर, हौहबेर। ब०-हवुषफल, हवुषा,। म०-परडुहव्वे, लघुयाथेरशेरणी। क०-हौबेर, परडुहव्वे। मा०-हाऊबोर। गु०-हाश। प०-हाऊबेर, पेत्थरी, अबहुल। कुमा०-चिचिया। काश्मी०-तुच, पाम, पेथरा। काना०-लङ्गशूर, थेलु, चुनी। ला०-स्बना। द०-अबहुल। फा०-तुख्मदुहुल, ओरस। अ०-अरअर, अबहाल, हब्बउल अरअर। अं०-Juniper (ज्युनिपर)। ले०-Juniperus Communis (ज्युनिपरस कम्युनिस)।

व्यवहार—फल। मात्रा—३—६ माशे।

३४ विडङ्गः (वायविडङ्ग) पृ० १९६

हि०-बायबिडङ्ग, बायभिर(ड)ङ्ग, भाभिरङ्ग, बाबिरङ्ग, बभिरङ्ग। ब०-विडङ्ग। म०-बावडिङ्ग, कारकुनी। गु०-बावढिंग, बावडींग। क०-वायुविडङ्ग, बायबिलङ्ग। ते०-बायुविडंगपुचेट्टु, बायुबिडंघमु, बायविलंगं। मु०-बर्बट्टि, अम्बट, कार्कणनी, कारकन्नी, बारडिंग। ता०-बायबिलं, बायुबिलंगम। प०-बाबिरंग, बबरंग। मा०-बायबिरंगं। द्रा०-बायबिलंगं। सिलह०-बेबरंग। सिहली०-उम्बेलिया, अम्बेलिया। ने०-हिमलचेरी। अ०-बरंज कावली, बिरंज काबुली। फा०-बरंगकाबली, बिरंजकाबली, बिरंगकाबुली। अ०-Babreng seeds of Embelia ribes (बेब्रिंग सीड्स् ऑफ् एम्बेलिया रिबिस)। ले-०Emdelia Ribes (एम्बेलिया

रिबिस) Syn:-Embelia glandulifera या (एम्बेलिया ग्लेण्ड्युलिफेरा) ।

व्यवहार—बीज । मात्रा—५-१० माशे ।

३५ तुम्बुरुः (तुम्बुल) पृ० १५७

हिं०-तुम्बुरु, तुम्बुल, तेजबल, झाड़मिरच । ब०-तुम्बुरुफल, नेपालीधने, । नेपालीधनिया । म०-तेंदु, चिरफल । मा०-तूगरू । क०-तुम्बुरु । कों०-तिरफल । ते०-तुम्बरलु । प०-तुम्बर । गु०-तुम्बरुफल । लिपचा०-ग्रुकुंग । ले०-Zanthoxylon Alatum (जानथोक्सिलन एलेटम)

,,-Zanthoxylon Acanthopodium (ज़ानथोक्सिलन एकेन्थोपोडियम) दूसरी जाति ।

व्यवहार-छाल, बीज । मात्रा—३-६ माशे ।

३६ वंशरोचना (वंशलोचन) पृ० १५७

हिं०-वंशलोचन । मु०-म०-बंसलोचन । ब०-वांशकावर । गु०-वंशकपूर, वांशकपूर । क०-वंशलोचना, वंशरोचना । ते०-तवक्षीरी, तरक्षीरी, वंशलोचनमु । द्रा०-वंशलोचनम् । फा०-तवासीर । अ०-तवाशीर । अं०-Bamboo Manna (बम्बू मान्ना) । ले०-Bambusa Arundinacia (बांबुसा अरंडिनेसिया) ।

व्यवहार—श्वेतपिंड चूर्ण । मात्रा—३—६ माशे ।

३७ समुद्रफेनः (समुन्दरफेन) पृ० १५७

हिं०-समुद्रफेन, समुन्दरफेन । ब०-समुद्रेर फेना, समुद्रफेला । म०-समुद्रफेण । मा०-समन्दरझाग । प०-समुन्द्रझाग, समुद्रझाग । गु०-समुद्रफिण, समुद्रफिन । क०-कडलनागले, समुद्रनोरे । द्रा०-कड़लनोरे । ते०-समुद्रनालिके, समुद्रपनुरुगु । पू०-समन्दरफेन । फा०-कफदरिया, कफेदरिया । अ०-जुबदुल्लहेरे, जब्दुलबहेर । अं०-Cutle Fish Bone (कटल फिश बोन) । ले०-Sepia offisinalis (सेपिया ओफिसीनेलीस) ।

कर्णस्रावरुजागूथहरः पाचनदीपनः ।
अशुद्धः स करोत्यङ्गभङ्गं तस्माद्विशोधयेत् ।
समुद्रफेनः संपिष्टो निम्बुतोयेन शुद्ध्यति ॥ यो० त० ।

समुद्रजलोपरि विद्यमानतया "समुद्रफेने"ति नाम प्रसिद्धम् , परन्तु प्रायशो मत्स्यविशेषास्थिरूपोऽयमिति निश्चीयते द्रव्यगुणविद्भिः ।

व्यवहार—शुष्कफेन । मात्रा-१—२ रत्ती ।

३८ अष्टवर्गः। पृ० १६७

आधुनिकैर्भिषग्वरैरष्टवर्गप्रतिनिधिरूपेण निर्दिष्टेषु वरीविदार्यश्वगन्धा-वाराहीकन्दद्रव्येषु न्यूनगुणदर्शनाद् अष्टवर्गकल्पगुणशालीनि द्रव्याणि नि-म्नाङ्कितान्येव प्रदीयन्तेऽष्टवर्गस्थाने, तेषां नामानि देशभाषायां सुखबोधार्थं प्रदीयन्ते—

१ जीवक	अभावे	बहमन लाल या लम्बा सालव
२ ऋषभक	,,	बहमन सफेद
३ मेदा	,,	सालव श्रेष्ठ
४ महामेदा	,,	शकाकुल मिश्री
५ काकोली	,,	काली मूसली
६ क्षीरकाकोली	,,	श्वेत ,,
७ ऋद्धि	,,	चिड़ियाकन्द
८ वृद्धि	,,	सालव पंजा

व्यवहार-कन्द। मात्रा-६ माशे से १ तोला तक ।

३९ यष्टीमधु (मुलहठी) पृ० १६९

हि०-मुलहठी, मुलेटी, मुलेठी, मीठीलकड़ी, मुलैठिका, जेठीमधु । ब०-यष्टिमधु । म०-ज्येष्ठमध, ज्येष्टिमध । गु०-जेठीमधु, जेठीमधनोमूल, जेठीमधनो शीरो । क०-यष्टिमधु, अतिमधुरा । ते०-यष्टिमधुकमु, मिष्ठमूल-विशेषमु । प०-मुलहठो । मा०-मलहटी । द्रा०-अतिमधुरं । फा०-वेखमेहे-कूमज, वेखमहक, रुब्बुलसूस , बेखेमहक । अ०-असलुस्सूस । अं०-Liquorice Root (लिकोरिस रूट) और Licris Root (लिकरिस रूट) । ले०-Glycyrhiza Glabra (ग्लाइकरहिज़ ग्लेबरा) ।

यष्टीमधुकं-द्विविधं स्थलजं जलजं च, तत्र स्थलजमपि द्विविधं भवति, एकं क्षुपरूपमपरं लतारूपम् ,

जलयष्ट्यर्कगुणाः-

वार्यष्ट्यर्को विपच्छर्दितृष्णाग्लानिक्षयापहा । (लंकेशः)

व्यवहार-लकड़ी । मात्रा—६—१ माशे ।

४० काम्पिल्लः (कबीला) पृ० १९९

हि०-कबीला, कमीला, कमोना, काम्बीला, कमुद, कमेला, रोरीरोहिनी, चमार गूलर, सिन्दूरी, वसन्तगन्ध । ब०-कमलागुराडी, धोलसिन्दूर, कमिला, कमलागुरी । म०-कमोला, कपिला । गु०-कपिलो । मा०-कपीलो । क०-कम्पिलकं, कपिल्ल, कुंकुमा, केसले, कमेला । प०-कमीला, कमला, रूलिया । ते०-कम्पिल्लमु, कुम्कुमा, वसन्तगन्धमु । उडिया०-कुमला, कमला, सुन्दरगुण्डी । सन्ताल०-रोरा, रोर, । आसाम०-गंगई, पदुम । गारो०-चिन्देरपंग । ने०-सिन्दूरिया । गोंड०-कोकु । काश्मी०-कैम्बिल्ल । ता०-कपिला रंग, कपिला पोडि । मला०-पोनागम । ब्रह्मी०-यिडिन इमोक । श्याम०-टवथडिन् । सिंहली०-हम्परनडेल्ल । फा०-कम्बिलाय, कमीलह, कम्बेला । अ०-कम्बील, किम्बोल । अं०-Kamila (कमीला) । ले०-Mallotus Philippinesis (मैलोटस फिलिपाइनेसिस)

,,-Rottlera Tinctoria (रोट्टलेरा टिङ्क्टोरिया)

,,-Croton Punctatus (क्रोटन् पंकटेटस)

व्यवहार-लालरज । मात्रा-१-२ माशे ।

काम्पिल्लशाकगुणाः—

तच्छाकं शीतलं तिक्तं वातलं ग्राहि दीपनम् ।

४१ आरग्वधः (अमलतास) पृ० १९९

हि०-अमलतास, धनबहेड़ा (रा), सोनालु, किरमाला, बनरलउर, सोनहाली, वानरकाकरी । ब०-सोन्दाल, सोनालु, बन्दरलाठी, सुन्दा, रखालनड़ी । म०-बाहवा, बाहग्याचे झाड़, भावा । क०-हेग्गके, कक्केमर, काको । ते०-रेल्लाकाया, रेलचेट्ट, रेलकायलु, सुवरनम । गु०-गरमाली, गरमालो । प०-अमलतास, करङ्गल, कनियार । मा०-किरमालो, किरवारी । द्रा०-कोन्नेमरं, शरकोन्ने । कुमा०-राजवृक्ष, कितोला । ने०-राजवृक्ष । सिन्ध०-चिमकनी । सन्ताल०-तुरनिक । कोल०-हरी । गारो०-सोनालु ।

उत्कल०-सुनारी। आसा०-सनारु। कच्छा०-वनदोलत। म० प्रा०-जगरवाह. रैला, पिरोजा। गोंड०-जगरा, जगरूआ। ता०-कोरैकाय, कोरैककाय। मालवा०-कोनककाय। फा०-ख्यारेचम्बर। अ०-ख्यारेशम्बर, ख्यारशम्बर। अं०-Pudding Pipe Tree (पुडिङ्ग पाइप ट्री)
,,-The Indian Laburnum (दी इण्डियन लेबर्नम)
,,-The purging Cassia (दी पर्जिङ्ग केसिया)
ले०-Cassia Fistula (केसिया फिस्टुला) Syn:-Cathartocarpus Fistula (केथार्टोकार्पस फिस्टुला)

व्यवहार—फलकी गूदा। मात्रा—१-२तोले।

एतत्पत्र·पुष्प·मज्ज·मूल·गुणाः—

पत्रमारग्वधस्यापि कफमेदोविशोषणम्। ज्वरे च सततं पथ्यं मलदोषसमन्विते॥ पुष्पाणि स्वादुशीतानि तिक्तानि ग्राहकाणि च। तुवराणि वातलानि कफपित्तकराणि च॥ मज्जा तु मधुरा पाके स्निग्धा चाग्निविवर्द्धिनी। रेचिका पित्तवातानां नाशिका समुदाहृता॥ कृतमालस्य मूलं तु दुग्धेन सह पाचयेत्। वातरक्तं निहन्त्याशु दद्रुमण्डलकान्यपि॥

४२ कटुका (कुटकी) पृ० १६०

हि०-कुटकी, कटुकी, कटुका। ब०-कटुकी। म०-केदार कुटकी, काली कुटकी। गु०-कटु, कडु। ते०-नल्लकोरकर. काटकरोहिणी, कटुकुरोगनी, कटुकुरोनी। मा०-कुटक, कुटकी। प०-कौड़, करू। क०-कटुकरोहणी। द्रा०-कटुकरोहनी। मु०-कालीकुटकी, बालकटु। द०-कालीकुटकी। ता०-कटुकुबोगनी। फा०-सबंकेस्याह। अ०-सर्बक अस्वद, सर्वके अबीयद। अं०-Black Hallebore (ब्लैक हेल्लबोर)। ले०-Picrorhiza Kurrooa (पिक्रोरिज़ा कुरोआ)।

कटुकीशोधनविधिः—

कटुकीमुष्णदुग्धेन प्रक्षाल्य ग्राहयेदपि।

व्यवहार—जड़। मात्रा—२॥-३ माशे।

४३ किरातकः (चिरायता) पृ० १६०

हि०-चिरायता, चिरेता, चिरैता। ब०-चिराता, चिरता, चिरेता।

म०-किराइत, चिराइता । गु०-कड़ियातु, करियातु, चिरावत । क०-नेल-बंउच, नेलबेउचु, नेलाबेवु । ते०-नेलबेसु, नेलानेमु, नेलबेमु, नीलाबेम । को०-काडेकिराइत, फूलकिराइत । द०-चिरायता । ता०-शिरतकुच्छी, नीलाबेम्बु । मा०-निलाबेप्या । मु०-चिराइता, किराइता । ब्रह्मो०-सेखागि । फा०-नोनिहाद, नोनिहादन्दी । अ०-कसबुज्जरीरा, कस्बुभ्भारिरा, कस-बुल्रायरह । अं०-Chireta (चिरेटा) । ले०-Swertia Chirata (सिविर्टिया चिराटा) Syn:-Gentiana Chirayta या (जिंटियाना चिरायटा) Syn:-Ophelia Chirata या (ओफेलिया चिराटा) ।

व्यवहार—पत्रादि । मात्रा—२ माशे ।

किरातकभेदनैपालगुणाः—

नैपालः सन्निपातारिज्वरनिद्राऽपहस्तथा ।

४४ इन्द्रयव पृ० १६०

हि०-इन्द्रजव, इन्द्रजो । गु०-इन्दरजव, इन्द्रजव । म०-कुडयाचे बीज, कोडसिगेय बीज, कुडयचोबों । फा०-जवान कुजिश्क । अ०-लिसा-नुल् असाफिर, कुंजश्कजवां । ले०-Holarrhena Antidy Senterica (होलर्रहेना अण्टिडि सेण्टेरिका)

व्यवहार—बीज । मात्रा—६ रत्तीसे ३ माशे ।

४५ मदनः (मैनफल) पृ० १६१

हि०-मैनफल, करहर, मैनर, मैन्युल । ब०-मयना, मयनाफल, मयना-कांटा, मेन्द्रफल । म०-मेणाहल, गेल, गेला, गेलफल, गण्डरो । गु०-मी-ढोल, मींढल, ढोल, ढील, मींढोल, मिन्धल । क०-वोनगरेरणय, बीनगरे-ऐरंडु, मेणाहल, मगरेगिड । ते०-बसन्तकड़िमिचेट्टु, मराड[मंग]चेट्टु, उत्तमेत्त [उन्मेत] चेट्टु, । उड़ि०-पातर, पतिरी । ता०-मडुक्करय, मदुकरय ने०-मैदल । प०-मिड्डकोल, मैनफल, राड़ा । मा०-मणाफल, मींडल । लिपचा०-पंजी । द०-मेठहाल । फा०-जोज़ अल्कै, जौजुलकी, जौजुल्कै । अ०-जोज़ अल्कै । अं०-Bushy Gardenia (बुशी गार्डिनिया) । ले०-Randia Dumetorum (रैंडिया डयुमेटोरम)
Syn:-Posoqueria Dumetorum या (पोसोक्युरिया डयुमेटोरम) ।

कृष्णः श्वेतश्च मदनः शीतलो मधुरः स्मृतः। कटुस्तिक्तश्च तुवरो-वान्तिकृत्कफनाशनः॥ पक्वामाशयशुद्धेश्च कारकः पित्तनाशकः। हृद्रोगनाशकश्चैव पूर्वस्मादुत्तमो गुणैः॥

व्यवहार—फल। मात्रा-२-३ माशे।

४६ रास्ना पृ० १६१

हि०-रासन, रायसन, रहसनी, रचना, रोचना, बायसुरई, रसना। ब०-रास्ना। म०-नावलीच्या मूला, रासना। मा०-राठका पान। गु०-रासना। क०-रासना केदार, सन्नरास्ने। ते०-रासना पुड़का, किरम्मिचक्क, क्रिरम्मिचक्कु, अन्तरदामर, सन्नरास्ना। प०-रवासन्, जन्तर, रहसन। द्रा०-सन्नदुम्पराष्ट्रम्। फा०-रासुन। अ०-जंजबील शमी। काश्मी०-पुश्कर, पोस्कर। ले०-Inula Racemosa (इन्युला रेसोमोसा),

,,-Pluchea Lanceolata (प्लुचिया लैनसियोलेटा)

,,-Vanda Roxburghii (वाण्डा राक्सबर्घाइ).

रास्ना में मतभेद से भिन्न २ के उपर्युक्त ये ३ लैटिन नाम हैं।

रास्ना तु त्रिविधा प्रोक्ता मूलं पत्रं तृणं तथा।
ज्ञेयौ मूलदलौ श्रेष्ठौ तृणरास्ना तु मध्यमा॥

व्यवहार—मूल। मात्रा—२-६ माशे।

४७ नाकुली (नकुलकन्द) पृ० १६१

हि०—नकुलकन्द, नाकुलीकन्द, नाई, हरकाई चन्द्रा, रास्नाभेद, छोटा-चांद। ब०-नाकुली, गन्धरास्ना, चन्द्र। म०-मुंगुसवेल, नाई वेसापसन्द। गु०-नोरवेल्य, नोरवेल। क०-विषमुङ्गरी। ते०-पाम्रचेट्टु, सर्पाच्चिचेट्टु, पाटलागनि। मु०-चन्द्र, छोटाचांद, करवी, हरकई। मा०-हरकय। मलया०-चुवन्ना अविलपोरी। फा०-छोटाचान्दा, ले०-Rauwolfia Serpentina (रावोल्फिया सर्पेण्टाइना)।

नाकुली-द्विविधा-नाकुली, गन्धनाकुली च।

नाकुलीयुगलं तिक्तं कटूष्णं च त्रिदोषनुत्।
अनेकविषविध्वंसि किञ्चिच्छ्रेष्ठं द्वितीयकम्॥

व्यवहार—जड़। मात्रा—१—३ माशे।

४८ माचिका (मोइया) पृ० १६१

हि०-मोइया, मोहुवा, मोहुया, अम्बारी, पटसन, पटुवा, कुद्रुम। ब०-मेस्टापाट, मेस्तापाट। क०-पुडोन, पिमद्रिकेगिड, होलोदा। म०-अम्बाड़ा, अम्बोडि। गु०-नहानी पीलुडी, भिंडी अम्बोई। द०-अम्बोडि। ता०-पलुंगु। ते०-गोंगुकरु। सन्ता०-डरेंकुद्रुम। उडि०-कनुरिया। सिन्ध०-सञ्जोडो। ले०-Hibiscus Cannabinus (हिबिस्कस् कान्नाबिनस)।

४९ तेजवती (तेजबल) पृ० १६२

हि०-म०-ब०-गु०-तेजबल। म०-तिर्पानी। द०-जलधरी। अं०-Toothache Tree (टूथेक ट्री)। इसका लेटिन नाम जो "तुम्बुरु" का है वही है क्योंकि उसीकी छाल यह है।

व्यवहार—छाल। मात्रा—३-६ माशे।

५० ज्योतिष्मती (मालकांगुनी) पृ० १६२

हि०-मालकांगुनी, मालकंगुनी, मलकौनी, मालटांगु(नी)न, उमिजिनी, मलकंगनी, मालकांगी। ब०-लताफटकी, बनउच्छे। म०-मालकांगोनी, काकामर्दनिका, ककुन्दलितिर, कंगोनी, पिगावी, पेगी। को०-करड़, कांगुनी, पिंगवो। क०-कैगु एरड्डु, गंगुगे। ते०-बेक्कुडुतीगे, वावजी, मलकंगुनी, विन्तुलु। प०-मालकांगनी, संखु। पोरबन्दर०-मालकांकना, मालकांकनी, माळकांकनी नो वेलो। गु०-मा०-मालकांगणी। द्रा०-काणि। अवध०-मालकाकनी। कुमा०-मालकाकनी। म०-प्र०-कहुन्दनरंगुल। द०-मालकांगनी का जन्तर। सिंहली०-दुहुदु। फा०-काल। अ०-हब्बे किलूकिलू। अं०-Staff Tree (स्टाफ् ट्री)। ले०-Celastrus Paniculatus (सिलेस्ट्रस पेनिक्युलेटस)
Syn:—Celastrus Multiflora या (सिलेस्ट्रस मल्टीफ्लोरा)।
ज्योतिष्मती द्विविधा-ज्योतिष्मती, महाज्योतिष्मती च।

व्यवहार—बीज। मात्रा—१-२—माशे।

५१ कुष्ठम् (कूठ) पृ० १६२

हि०-कूठ, कूट, कुष्ठ। ब०-कुड, कुढ़, पचक, कुर। म०-कोष्ठ। गु०-कुठ, उपलेट, कठ, उपलेटा। क०-कोष्ठ, चंगलकुष्ठ, कोढ। ते०-चङ्गलकुष्ठ,

चेङ्गलिकोष्ठ, चञ्चलकोष्ट, चङ्गलकोष्टमु। प०-कुष्ठ, कुट, कोढ। मा०-कूठ। द्रा०-संगल्वकोष्टम्। फा०-कोतह्। अ०-कुस्तबेहेरी। काश्मी०-पोसाख। भोटिया०-कुष्टा। मु०-दुपलटे। ता०-कोस्टम। अं०-Costus root (कोस्टस् रूट)। ले०-Sassurea lappa (सास्सुरिया लप्पा) Syn:- Aplotaxis lappa या (एप्लोटेक्सिस लप्पा)।

व्यवहार—जड़। मात्रा—३-९ माशे।

६२ पुष्करमूलम् (पुहकरमूल) पृ० १६२

हि०-पुहकरमूल, पोहकरमूली, पोखरमूल। ब०-पुष्करमूल, कुष्ठविशेष, कूड़विशेष। प०-पोहकरमूल। गु०-पोकरमूल। काश्मी०-पतालपद्मिनी। द्रा०-पुष्करमूलं। यू०-मूल। फा०-कुश्ता। अ०-कुस्त। ले०-Inula Racemosa (इनुला रेसीमोसा)।

व्यवहार—जड़। मात्रा—२-४ माशे।

६३ कटुपर्णी (चोक) पृ० १६२

हि०-सत्यानाशी, कटेरी, कटैया, भंगरजवा, भरवेदं, पिसोला, भरभेंडा, रजभंगवा, करुआ, भरेवंद, भटकैया, कंडयारी, भरभंड, पीला धुतुरा, फरंगीधतूरा, उजरकांटा, सियालकांटा, स्यारकांटा, भड़भांड़, चोक। ब०-स्यारा कांटार, स्वर्णक्षीरी, शेयालकांटा, सोणाखिरुई, सियालकांटा, बड़ो सियालकंट। म०-कांटे धोत्रा, फिरंगी धोत्रा, पिंवला धोत्रा, पिसोला, पिसौराभेंदु, फरङ्गी धोत्रा। को०-पीत कांटे धोत्रा। दे०-करसरा चोक। क०-चिकनी केय भेद, चिक्कणि केय भेद, चिक्कणिक्केसेंदु, दत्तुरी, दत्तुरि। दत्तुरि गिड्ड। गु०-दारुड़ी, दाहड़ी, भरभंडा। ता०-ब्रह्मदंडु बिरई, बिरमडंडु, करक्कुम चोंड, कुरुक्कुम चोंड। ते०-ब्रह्मडंडी चेट्टु। प०-लीह, कोउसी कंडियारी, स्यालकांटा, भटमिल, सत्यनशा, भरेवंड, भटकटैया। सन्ता०-गोकुहल जानम। पश्चिमो०-भरमुखा, कडवह, कंटेला। द०-फरंगी धतूर, भरम डंडी, दारुरी पीला धतूरा। मला०-ब्रह्मडंटी। उड़ि०-कांटाकुशम। अं०-The Mexican Pappy (दि मेक्सिकन पाप्पी)—The Prickly Pappy (दि प्रिक्ली पाप्पी)

ले०-Argemone mexicana (अर्गिमाने मेक्सिकेना)।

मूलं चास्याश्चोक इति गुणाः पूर्वोक्तवत्स्मृताः ।
एतत्क्षीरगुणाः—
तस्याः क्षीरं बिन्दुमात्रं नेत्रे क्षिप्तं घृतप्लुतम् ।
शुक्लं च ह्यधिमांसं च नेत्रान्ध्यं चैव नाशयेत् ॥ (रा० नि०) ॥
व्यवहार—जड़, बीज । मात्रा— २–४ माशे ।

९४ कर्कटश्रृङ्गी (कांकड़ाशिङ्गी) पृ० १६३

हि०–काकड़ाशिंगी, कांकरासिं(घी)गी, कक्कड़सिंगी । कांक(रा)ड़ाश्रृङ्गी । म०—कांकड्शींगी, कांकड़ाशिङ्गी । क०–कर्कटिश्रृंगी, कर्कोटकश्रृङ्गी । ते०–कर्कटाश्रृंगी, कर्कोटकश्रृङ्गी । को०–जंगली हरडचांचे फूल । द्रा०–कर्कोटकश्रृङ्गी । मा०–काकड़ाशिंगी । प०–कक्कड़सिंगी । ता०–काकटशिंगी, कक्काटशिंगी । गु०–काकड़ाशिंगी । ले०–Pistacia Integenima (पिस्टेसिआ इण्टिजिनिमा) Syn:-Rhus Kakarasinga (ढ्स काकरासिंगा) ।
व्यवहार—फल । मात्रा—१—३ माशे ।

९५ कट्फलः (कायफल) पृ० १६३

हि०–कायफ(ल)र , काफर । ब०–काय(शा)छा ल, कट्फल । म०–कुम्भ्याचीशाल, कुभ्याचीफल, कुम्भा । क०–किरुसिव(ञि)ह्री, इप्पेमारा । ते०–पापड़बुड़म, कायडरियमु, उद्दल । म०–मा०–गु०–प०–कायफल । द्रा०–मरुधंपटे । खासिया०–डिंगसोलिर । मु०–करिफल । ता०–मरुदम्पतइ । फा०–दारशीश(आ)वा, दारशीशान् । अ०–उदुलबर्क, ऊदुलबुर्राक । ले०–Myrica nagi (मिरिका नागी) Syn:–Myrica Sapida (मिरिका सापीडा) ।
व्यवहार—छाल । मात्रा— ३–७ माशे ।

९६ भार्गी (भारङ्गी) पृ० १६३

हि०–भा(ड़)र ङ्गी, ब्रह्मनेटी, बभनेठी, बारङ्गी । ब०–बाम (मु) नहाटी, बामुनहाडी । म० भारङ्ग । गु०–भार (रु) ङ्गी, भारङ्ग । क०–किहृ (रु) देगु । ते०–भंटभारङ्गी, गुंटुभांडि, ब्रह्मरोमरी । ने०–चूया (अ) । प०–भाड़ङ्गी । मा०–भारांगमूल, मूलरूट । द्रा०–गण्डुपरङ्गी ।

गु०-मजीठ। प०-मञ्जीठ। द्रा०-मञ्जिष्ठी,। मल०-पून्त। फा०-रोदक। अ०-फुवहतु, फुव्वाह, फौहुल अवागीन।

अं०-Indian madder (इण्डियन मेडर)।-

''-Madder root (मेडर रूट)। ले०-Rubia Cordifolia (रूबिया कार्डिफोलिया), Syn:-Rubia Manjista (रूबिया मञ्जिष्टा)।

अस्याः शाक-फल-मूलानां गुणाः—

शाके स्यान्मधुरा लघ्वी स्निग्धा दीप्तिकरी मता।

वातपित्तहरी चोक्ता ऋषिभिः सत्यवादिभिः॥(नि० र०)।

फलं-यकृद्दोषहरं, मूलं-चर्मविवर्णताहरं तिलकालकघ्नं च।

व्यवहार-लकड़ी। मात्रा-१-३ माशे।

६० कुसुम्भम् (कुसुम) पृ० १६४

हि०-कु (सू) सु म, कर्र, बर्रें। ब०-कुसुम, कुसुमफूल। म०-कर्डईचे झाड़, क(र्ड्य)र्ड्या, कर्डी, कर्डई। गु०-कु (क) सुम्बो, कबरी। क०-कुसु(म्ब)म्भ। ते०-लत्तुक, ल(क)ध, बंगार (म)मु, अग्निशिखा, कुसुम्ब वित्तुलु। द्र०-करड। प०-कूसम, कर्तुम, कुर्त्तुम, करर। यु० प्रा०-बर्र, कर्र,।। मु०-कुसुम्ब, कर्डई। फा०-मास्कर, गुलेमास्कर, गुलकाफसा। अ०-अखरीज, अहरीज। अं०-The Safflower (दि साफ्फ्लावर)। ले०-Carthamus Tinctorius (कार्थेमस टिङ्क्टोरियस)।

व्यवहार-फूल-बीज। मात्रा-३-१० माशे।

अस्य पुष्प-पत्र-बीज-तैलगुणाः—

कुसुम्भपुष्पं सुस्वादु त्रिदोषघ्नं च भेदकम्। रूक्षमुष्णं पित्तलं च केशरञ्जनकारकम्। कफनाशकरं चैव लघु प्रोक्तं मनीषिभिः॥ कुसुम्भपत्रं मधुरं नेत्र्यमुष्णं कटु स्मृतम्। अग्निदीप्तिकरं चातिरुच्यं रूक्षं गुरु स्मृतम्। सरं पित्तकरं चाम्लं गुदरोगकरं मतम्। कफविण्मूत्रमेदानां नाशकं परमं मतम्॥ (नि० र०)॥ कुसुम्भबीजं मधुरं स्निग्धं शीतं कषायकम्। अवृष्यं गुरु च प्रोक्तं कफवातास्रपित्तनुत्॥ कुसुम्भतैलमुष्णं तु विपाके कटकं गुरु। विदाहकं विशेषेण सर्वदोषप्रकोपनम्। (आत्रेयसंहिता)॥

गु०–मजीठ । प०–मञ्जीठ । द्रा०–मञ्जिष्ठी, । मल०–पून्त । फा०–रोद्क । अ०–फुवहतु, फुव्वाह, फौहुल अवागीन ।

अं०–Indian madder (इण्डियन मेडर) ।–

"–Madder root (मेडर रूट) । ले०–Rubia Cordifolia (रूबिया कार्डिफोलिया), Syn:–Rubia Manjista (रूबिया मञ्जिष्ठा)।

अस्याः शाक·फल·मूलानां गुणाः—

शाके स्यान्मधुरा लघ्वी स्निग्धा दीप्तिकरी मता ।

वातपित्तहरी चोक्ता ऋषिभिः सत्यवादिभिः॥ (नि० र०) ।

फलं–यकृद्दोषहरं, मूलं–चर्मविवर्णताहरं तिलकालकघ्नं च ।

व्यवहार–लकड़ी । मात्रा–१–३ माशे ।

६० कुसुम्भम् (कुसुम) पृ० १६४

हि०–कु (सू) सु म, करं, वरँ । ब०–कुसुम, कुसुमफूल । म०–कर्डई चे झाड़, क(ड्यं)ड्यां, कर्डी, कर्डई । गु०–कु (क) सुम्बो, कबरी । क०–कुसु(म्ब)म्भ । ते०–लत्तुक, ल(क)ध, बंगार (म)मु, अग्निशिखा, कुसुम्ब वित्तुलु । द०–करड । प०–कूसम, कर्तुम, कुत्तुम, करर । यु० प्रा०–बरं, करं, । । मु०–कुसुम्ब, कर्डई । फा०–मास्कर, गुलेमास्कर, गुलकाफसा । अ०–अखरीज, अहरीज । अं०–The Safflower (दि साफ्फ्लावर) । ले०–Carthamus Tinctorius (कार्थेमस टिङ्क्टोरियस) ।

व्यवहार–फूल–बीज । मात्रा–३–१० माशे ।

अस्य पुष्प·पत्र·बीज·तैलगुणाः—

कुसुम्भपुष्पं सुस्वादु त्रिदोषघ्नं च भेदकम् । रूक्षमुष्णं पित्तलं च केशरञ्जनकारकम् । कफनाशकरं चैव लघु प्रोक्तं मनीषिभिः ॥ कुसुम्भपत्रं मधुरं नेत्र्यमुष्णं कटु स्मृतम् । अग्निदीप्तिकरं चातिरुच्यं रूक्षं गुरु स्मृतम् । सरं पित्तकरं चाम्लं गुदरोगकरं मतम् । कफविण्मूत्रमेदानां नाशकं परमं मतम् ॥ (नि० र०) ॥ कुसुम्भबीजं मधुरं स्निग्धं शीतं कषायकम् । अवृष्यं गुरु च प्रोक्तं कफवातास्रपित्तनुत् ॥ कुसुम्भतैलमुष्णं तु विपाके कटुकं गुरु । विदाहकं विशेषेण सर्वदोषप्रकोपनम् । (आत्रेयसंहिता) ॥

६१ लाक्षा (लाही) पृ० १६४

हि०-लाख, लाही, ला(ई) ही । ब०-ला, लाहा । पं०-मा०-गु०-म०-लाख । क०-अरगु । ते०-लत्तक, लक्क, लेक्का, लाका । द्रा०-अरक्क । ता०-अरक्कु । फा०-लाक । अ०-लुक, लुक मकसुल । अं०-Lac (लाक) या Shell lac (शेल लाक) । ले०-Coccus Lacca (कोकस लाक्का)

अलक्तकगुणाः—

अलक्तको रजोरोधी रक्तपित्तक्षयापहः ।
प्रदरं चाप्यतीसारं सरक्तं क्षपयेद् ध्रुवम् ॥ आत्रे० सं० ॥

मात्रा-२-४ माशे ।

६२ हरिद्रा (हलदी) पृ० १६४

हि०-हल (र) दी, हर्दी (ल्दी) । ब०-हरिद्रा, हलुट, हलुद । म०-हलद (द्रि) । गु०-हलद (दा), हलदर । क०-आ (अ) रसिन, अरिसिन । ते०-प (पा) सुपु । द्रा०-हलद, मंजल । मला०-मन्नल, मरिनलु । फा०-ज (र्द) रद चोब । अ०-उरुकुस्सफर । अं०-Termeric (टर्मेरिक) । ले०-Curcuma Longa (कर्क्युमा लोंगा)

व्यवहार-जड़ । मात्रा-२-६ माशे ।

६३ कर्पूर हरिद्रा (आमा हरदी) पृ० १६५

हि०-अमिया हलदी, आमा ह (र) लद, आम आदा, कपूर हलदी, अम्बिया हरदी । ब०-आम आदा । म०-अम्बे हळद, आम्बा हलद । गु०-आम्बा हलदर । क०-हुली आरसीन । ते०-कारुपुसुपु, पालुपसुपु, ममिडि अल्लम, कस्तूरी पुसुप । ता०-पशुमंजल । मा०-आंबा हलदी । पं०-अंबिया हलदी । फा०-दारचोबह । द्रा०-कस्तूरी मंजल । अ०-दारहल्द द०-आमकी अदरक । अं०-Mango Ginger (मैङ्गो जिंजर) । ले०-Curcuma Amada (कर्क्युमा अमाडा) ।

व्यवहार-जडका गांठ । मात्रा-१-४ माशे ।

६४ वनहरिद्रा (वन हलदी) पृ० १६५

हि०-बनह(ल)रदी, जंगली हलदी । ब०-बनह (ल) लुद । म०-साली, शोली, रानहलद, अड़िविषका । को०-अरिसिन । ते०-अड़विपसुपु, कस्तुरिपसुपु । गु०-कचोरा, राणहलद । ता०-कस्तुरी मंज(जु)ल, राणहलद ।

गु०-वनहलदर, कपूरकाचली । पं०- मा०-जंगली हलदी । मला०-अन-कुव, कट्टमन्नर । क०-कस्तूरी अरिशनिया । अं०-Wild Termeric (वाइल्ड टर्मेरिक) ।
ले०-Curcuma Aromatica (कर्क्युमा अरोमेटिका) ।

व्यवहार-जड़की गांठ । मात्रा—१—४ माशे ।

६५ दारुहरिद्रा (दारुहरदो) पृ० १६५

हि०-दारुह(र)लदी, दारहलद । बं०-दारुहरिद्रा । म०-जरकेहलद, जारकेहलदि, दारुहल्द । गु०-दारुह (ल्द) लदर । मा०-दारुहलदी । क०-मरन रिसिन, मदनरिसिन, मरदआनीसेन । ले०-मनिपसुपु, मानु-पसुपु । ता०—मरमंजिल । कुमा०-चित्र, चोत्र । पं०-सुमलु, दारुहलदी । ने०-चित्रा । भो०-त्सेमा । फा०-दारचोबह् । द्रा०-मरमंजल । अ०-दारहलक । अं०-Barberry (बारबेर्री) । ले०-Berberis Aristata (बेर्बेरिस अरिस्टाटा) ।

व्यवहार—जड, जडकी छाल, व लकडी । मात्रा—१—३ माशे ।

६६ रसाञ्जनम् (रसौत) पृ० १६५

हि०-रसौत, रसोत, रसवत । ब०-रसाञ्जन । म०-रसवत, रसाञ्जन । गु०-रसवती । क०-रसाञ्जन । ते०-रसांजनमु । मा०-रसोंत । पं०-रसौ-त । फा०-हुजुज़ हिन्दी । अ०-हुज़ूज़ । अं०-Extract of indian Berberis (इक्स्ट्राक्ट आफ् इण्डियन बेर्बेरिस) ले०-Extractum Berberis (एक्स्ट्राक्टम बेर्बेरिस)

अस्य शोधनविधिः—

तोयेऽत्युष्णे परिक्षिप्य द्रवाकुर्याद्रसाञ्जनम् ।
वाससा स्रावयित्वा च शोधनं भानुरश्मिना ॥
एवंविशोधितं सर्वकर्मसु परियोजयेत् ।
विशुद्धं नाशयेद्व्याधीन्नाविशुद्धं कदा चन ॥

व्यवहार—घनसत्त्व । मात्रा—१—३ माशे ।

६७ बाकुची पृ० १६५

हि०-बा(क)कुची, बकुची, बाय(ची)चा, बावची, सोमराजी । ब०-सोमरा(ल)ज, हा(ह)कुच । म०-बाउची, बाँवचा, बावजी । गु०-बा(य)व-

ची । क०-बाउचिगे । ते०-तिप्प तोग, नेल-वटरलिय, नेलवरलिय । ता०-बोगिबिदुल, बोगिविट्टुलु, बावच वित्तुलु । गु०-बाम्बची, बावची । मा०-बावची । द्रा०-कार्पोह अरिशि । फा०-अवलगुज, स्याह सफर । मला०-कौरवोल, द०-बावचन । पं०-बवेही । ले०-Psoralea Corylifolia (सोरलिया कोरिलीफोलिया)

व्यवहार—बीज । मात्रा-१-२ माशे ।

वाकुचीभेदश्वित्रारिगुणाः—

श्वित्रारिर्वाकुचीभेदः कुष्ठदोषत्रयास्रजित् ।
वातरक्तहरो लेपात् सिध्मश्वित्रविनाशनः ॥ आ० सं० ॥

वाकुचीस्वरूपम्—

क्षुपो वाकुचिकायाश्च गोवारीसदृशो भवेत् ।
कृष्णपुष्पो गुच्छफलो दुर्गन्धः कृष्णबीजकः ॥ शो० नि० ॥

६८ चक्रमर्दः (चकवड़) पृ० १६६

हि०-चकव(र)ड़, पवां(र)ड़, पमार, पनवार, गांव का ठाकुर । बं०-च(चा)कुन्दा, चाटकांटा, एडांचो । म०-टां(का)कला, तरोटा, तरबटा, टाकला, टायकडा । गु०-कुवा(डी)धियो, पंवाडियो । क०-चगच, टकरिके, हुंसलगी, तगचे । को०-टांकला । ते०-तगिरिस, तगरिशचेट्टु, तांटयमु । ता०-उवित्त गरयी, उशिट्टगरयी । सन्ता०-चकवड, अरक । पं०-पंवार, चकुन्दा । मु०-टांकला, कोवरिया । द०-तरोटा । फा०-संजीसबोया । अं०-Oval Leaved Cassia (ओवल् लीवड् केसिया) या The Foeted Cassia (दि फोटेड केसिया) । ले०-Cassia Obtusifolia (केसिया अब्ट्युसिफोलिया) Syn:-Senna Tora या (सेना टोरा) ।

व्यवहार—बीज । मात्रा-१-२ माशे ।

६९ अतिविषा (अतीस) पृ० १६६

हि०-अतीस । बं०-आतइच । म०-अतिविष । मा०-अतीस, पतीस । पं०-अतीस, पतीत, सखीहरी । ते०-अतिबस, अतिबासा । द्रा०-अतिविषं । क०-अतिषजे, अतिविषा । गु०-अतवसनी कली । ता०-अतिवद-

यम । काश्मी०-मोहन्द्-इ-गजसफेद्, हेंग-इ-सफेद् । भो०-आ(अ)इस । लेo-Aconitum Heterophyllum (एकोनाइटम हिटरोफाइलम) Syn:-Aconitum Cordatum या (एकोनाइटम कार्डेटम)

अतिविषा त्रिधा ज्ञेया शुक्ला कृष्णा तथाऽरुणा ।
रसवीर्यविपाकेषु निर्विषेव गुणाधिका (रा० नि०) ॥

व्यवहार—जड़ । मात्रा—६ रत्ती से १॥ माशे ।

७० लोध्र (लोध) पृ० १६६

हि०-लोध । बं०-म०-क०-लो(ध्र)ध । गु०-लोद्र । मा०-लोध । ते०-तेल्ल लोदुवाचेट्टु, तेल्ल लोट्टुकचेट्टु । ने०-चमळनी । लिपचा०-पल्योक । मेची०-कैडये । भोटि०-सिंग्यन । अ०-मुगाम । लेo-Symplocos Racemosa (सिम्प्लोकोस रेसोमोसा)

व्यवहार—छाल । मात्रा—१-३ माशे ।

७१ पट्टिकालोध्र (पठानीलोध) पृ० १६६

हि०-प(पा)ठानी लोध । बं०-पटिआ लोध । मा०-पठाणी लोद । गु०-पठाणी लोद्र । पं०-पठानी लोद, लान्द्र, लो(श)ज । म०-पट्टीलोध्र । ते०-तेल्ल लोट्टुगु । क०-बिलीलोध्र । सिन्ध०-लोद्र, पठानीलोध । लेo-Symplocos Crataegoides (सिम्प्लौकोस क्रेटेग्याइडिस) ।

व्यवहार—छाल । मात्रा—१-३ माशे ।

७२ लशुनः (लहसुन) पृ० १६६

हि०-लह(शु)सुन, लशु (सु) न, लहशन, कांदा । बं०-लशन, रसुन । म०-ल (सु)सन, लसूण, पांडु (तांब) री लसूण, पांडरा रासणु । क०-बिलियबेल्लुलि, जुवा, वेल्लुलि । ले०-तेल्लवुल्लि, तेल्ला उल्लिगांडा । वेल्लुलि तलगड्डा । ता०- वल्लइ पाण्डु, वलइ पंडु । गु०-लसण । द्रा०-वल्लुलि । पं०-थोम । आसा०-नहरु । द०-शुनम । भोटि०-गोकपस । मु०-गोधरीलसून फा०-शार, सूमशीर । अ०-सोम, सूम, सुमल हैयार, सुमइ स्कुर्दियून् । अं०-Garlic Root (गर्लिक रूट) । लेo-Allium Sātivum (एलियम साटिवम) ।

व्यवहार-कन्द । मात्रा १-३ माशे ।

७३ एक पुतिया लहसुन (दूसरी जाति)

हि०-लहसुन, एक कांदा लहसुन, एककली लहसुन, एकपुत्ती लहसन, एकपुतिया लहसुन । अं०-Shallot (शाल्लोट),
„ One Clove Garlic (वन क्लोव गर्लिक) ।
ले०-Allium Ascalonicum (एलियम एस्कालोनिकम)

७४ पलाण्डुः (पियाज़) पृ०—१६७

हि०-पि(य)याज़, प्याज । बं०-पेयाज । पं०-गण्डा । म०-कांदा, पांढरा (श्वेत) कांदा । क०-उल्लि, ऊली, लोह्विवो, इरुल्लि । गु०-डुंगली । मा०-कां(दा)दो । ते०-नीर उली, नीरुल्लि चेट्टु, उल्लि गड्डु । मु०-कान्द । ता०-बेंजयम, वेल्ल वेंगजम । द्रा०-बेगायं । फा०-प्याज़ । सिन्ध०-डंगरी । मला०-बवंग । अ०-बसल, बुसिल, अस्कील बसलुल् फार । अं०-Onion [ओनियन] । ले०-Allium Cepa [एल्लियम सिपा]

व्यवहार—कन्द । मात्रा १—३ माशे ।

राजपलाण्डुगुणाः—

पलाण्डुर्नृपपूर्वः स्याच्छिशिरः पित्तनाशनः ।
कफहृद्दीपनश्चैव बहुनिद्राकरस्तथा ॥

पलाण्डुबीजगुणाः—

बीजं पलाण्डोर्वृष्यं स्याद्दन्तकीटप्रमेहजित् [रत्नाकरे]

गन्धाकाररसैस्तुल्यो गृञ्जनस्तु पलाण्डुना । सूक्ष्मनालाग्रपत्रत्वाद्भिद्यतेऽसौ पलाण्डुतः ॥ स च स्वेदनभोजने च प्रयुक्तः कफवातजान्यर्शांसि हन्ति, पित्तवतां नराणामपथ्यः ।

७५ भल्लातकः (भिलावा) पृ० १६८

हि०-भिला (मा)वा, भिला (ये)या, भेला, भिलौरा । बं०-भेला, भेलागाछ, भेलतुकी । म०-बिब, बिबवा, बि (ब्बे)ब्बा । गु०-भिला (या)मा, भियामु । क०-गोडंबी, करेबीज, गेरुबीजा, गिरु । ते०-जिड़ि चेट्टु (बिट्टुलु), नालाजीड़ी, जीड़ी विट्टुलु (गिजा) । उ०-भिल्लिय, भाल्लेय । ता०-शरण्टकट्टई, शेङ्कोट्टई, शराङ्कोट्टई । द०-भि(ला)लवन । मु०-बिब्म, बिब्बा । पं०-भिलावे । मा०-भिलावो । द्रा०-सोनकीट्टै । लिपचा०-कोंघो । मला०-वेरुनकुरु । फा०-भिला [दु] दर, बलादर,

बिलादुर । अ०-हब्बुल कल्ब, हब्बुलकम, हब्बुलफहम । अं०-The Marking Nut Tree [दि मार्किङ्ग नट ट्री] । ले०-Semecarpus Anacardium [सेमीकार्पस एनाकार्डियम] ।

व्यवहार— { फल (विषयुक्त) मात्रा १—२॥ माशे ।
तैल—मा ।—४ रत्ती से १ माशा ।

अस्य फलत्वग्गुणाः—

फलत्वचा सुमधुरा स्निग्धा लघ्वी कषायका । रसे कट्वी पाचिका च लघुस्तीक्ष्णा च भेदिका ॥ उष्णा छेदनकर्त्री च दीपनी कफनाशिनी । मेध्या वातं च कुष्ठं च व्रणं चोदरमेव च ॥ अर्शःसंग्रहणीगुल्मशोफानाह-ज्वरक्रिमीन् । नाशयेदिति संप्रोक्ता मुनिभिः सत्यवादिभिः ॥

भल्लातकशोधनविधिः—

भल्लातकानि पक्वानि समानि प्रक्षिपेज्जले । मज्जन्ति यानि तत्रैव शुद्ध्यर्थं तानि योजयेत् ॥ इष्टकाचूर्णनिचयैर्घर्षणान्निर्विषं भवेत् ॥ आ० सं० ॥

नदीभल्लातको वृषाङ्कुस्तस्य गुणाः—

वृषाङ्कुस्तु भवेत्तिक्तः कषायो मधुरो हिमः । संग्राही वातलश्चैव कफरक्तादिपित्तहा । व्रणहेति भिषक्श्रेष्ठैः प्रोक्तः कैयनिघण्टुके ॥ [नि० र०] ॥

७६ भंगा (भांग) पृ० १६८

हि०–भां[भं]ग, बूटी । बं०-सिद्धि । म०-पं०-मा०-भांग । गु०-भांग्य । ते०-जन परितुलु, भंगि । ब्रह्मो०-बिन । मा०-बूटी । क०-भंगी । द्रा०-कंजा । फा०-कनब, वंग । अ०-क़ुजब आज़म, बरकुल ख्याल ।

गांजा

हि०-गां[झा]जा, गंजा । ब०-म०-गांजा । गु०-गाजो । पं०-चरस । ता०-गांजा चेड, गांजा इलई । ते०-गांजाई, गंजरी चेट्टु । मला०-कंचाव चेट्टि । फा०-बंगदस्ती । अ०-कतबबरी । अं०-Indian Hemp [इण्डियन हेम्प] । ले०-Cannabis Sativa [केनेबिस साटिवा],
,,-Cannabis Indica [केनेबिस इण्डिका] ।

भंगोत्पत्तिस्तु—

जाता मन्दरमन्थनाज्जलनिधौ पीयूषरूपा पुरा
त्रैलोक्ये विजयप्रदेति विजया श्रीदेवराजप्रिया ।

लोकानां हितकाम्यया क्षितितले प्राप्ता नरैः कामदा
सर्वातङ्कविनाशहर्षजननी सा सेविता सर्वदा ॥

व्यवहार—पत्र, बीज । मात्रा—२-१० रत्ती ।

विजयाबीजचूर्णस्य भक्षणं विधिना प्रिये । सर्वोपकारकं तत्तु सर्वरोगापहारकम् ॥ परिपक्वानि बीजानि वृक्षादानीय यत्नतः । छायायां पातयेद्रक्षेद्भक्षयेत् कर्षमात्रकम् ॥ कपिलापयसा सार्धं मासमात्रं वरानने । धातुवृद्धिर्भवेत्तस्य चान्त्रवृद्धिर्विनश्यति । मांसदार्ढ्यं वसादार्ढ्यं देहदार्ढ्यं भवेत् प्रिये । अग्निदीप्तिर्मनोदीप्तिः कामदीप्तिस्तथैव च । प्रज्ञादीप्तिर्दृष्टिदीप्तिर्दीप्तीनां पञ्चकं भवेत् ॥

७७ खाखसः (पोस्ता) पृ० १६८

हि०-पो[स्ता]स्त, पोस्तदाना, खसखस का फल, पोस्त के डोडे, दाने की ढेंढी, पोस्तवृक्ष, दाने का पेड़ बं०-पोस्त दानार गाछ, पोस्त टेंडि, खाकसी, टेरीवृक्ष, पोस्त, पोस्तार गाछ । म०-अफूचे बोड़, पोस्त, खसखस चेन झाड़ । क०-अफीणना डोडवा, खसखसी गिड़ । को०-खसखसी चे झाड़ा चे फलां चे बोड । ते०-पुस्तकाय चेट्टु, गसगसाल चेट्टु, पोस्तकय चेट्टु । द०-खसखस का झाड़ । ता०-गशगशा चेडि, पोस्तक चेडि । मला०-कशकशा च चेटि । फा०-कोकनार । गु०-खसखस नु झाड़ । अ०-नवतुलखसखस । मु०-खसखसी चे झाड़ । ब्रह्मा०-भिनविन, भएनविन । अं०-Poppy Capsules (पापी कप्स्युलस्) । ले०-Papaver Capsulae (पापावर कप्स्यूले) ।

व्यवहार—डोडी, छिलका । मात्रा—३-६ माशे ।

७८ अहिफेनकम् (अफीम) पृ० १६८

हि०-अफीम, अमल, अफयून । बं०-आफू, आफिन । म०-अफू, अफु । मला०-आफन । मा०-अफीम, आफू, अमल । गु०-अफीण । ते०-नलमंडु, नल्लमंदु । क०-अफिनि । द्रा०-अफिनी । फा०-अफयून । अ०-लवनुलखसखास । अं०-Opium [ओपियम] ।

अहिफेनशोधनविधिर्योगतरङ्गिण्याम्—

अहिफेनं शृङ्गवेररसैर्भाव्यं त्रिसप्तधा ।
शुद्धयत्युक्तेषु योगेषु योजयेत्तु विधानतः ॥

जारणो मारणश्चैव धारणः सारणस्तथा।
अहिफेनश्चतुर्धोक्तो गुणांस्तस्य ब्रवीमि ते ॥
श्वेतवर्णो जारणः स्याद् भुक्तमन्नं च जारयेत्।
मृतिप्रदः कृष्णवर्णो मारणस्तु प्रकीर्त्तितः ॥
जरानाशकरः पीतो धारणः सम्प्रकीर्त्तितः।
चित्रवर्णः सारणः स्यान्मलसारणकार्यतः ॥ नि० र० ॥

मात्रा—½ से १ रत्ती।

७९ खाखसतिलाः (खसखस) पृ० १६९

हि०—पोस्तदाना, दाना, खसखस, खसखस के दाने, खसबीज। बं०—पोस्तदाना, पोस्तबीज। म०—गु०—खसखस। ता०—गसगस। माला०—कशकश। फा०—तुख्मे कोकनार, खसखास सफेद। अ०—हब्बुल कोकनार, बज़रुल् खसखासुल बुस्तानी। अं०—Poppy Seeds [पापी सीड्स्] ले०—Papaver Somniferum [पापेवर सामनिफेरम]।

व्यवहार—बीज। मात्रा—६ माशे से १ तोला।

८० सैन्धवम् (सेन्धा निमक) पृ० १६९

हि०—सैं[सीं]धा नोन, सेंधा नमक, सेल्हा निमक, लाहोरीनमक, लाहौरीनोन। बं०—सैन्धवलवण। म०—सेंधेलोण। गु०—सिंधालु[लू]ण, सीन्धालूण। क०—सैन्धव, सैन्धवलवण। मा०—सीधोलूण। ते०—सैन्धवलवणमु, सिन्धुउपु। पं०—सैन्धानमक। द्रा०—सैन्धवलवणं। फा०—नमक[के]संग, नमके सेन्ध, नमकलाहोरी। अ०—मिलहे हिन्दी, मलह अन्दरानी। अं०—Chloride of Sodium [क्लोराइड ऑफ् सोडियम]
,,—Rock Salt [राक साल्ट] Bay Salt [बे साल्ट]।
ले०—Sodii Cloridum [सोडिआइ क्लॉरीडम]।

मात्रा—३-८ माशे।

८१ शाकम्भरीयम् (सांभर नमक) पृ० १६९

हि०—साम्भर नोन (निमक), साम्हर नमक। बं०—साभरलुण, शाम्भारिलवण। म०—गड़लोण। गु०—बड़ा गरू मीठ, साम्भरमीठ, सामरलून। क०—गाड़ (ढ़) लवण। फा०—मिलहे अवकीर, नमकसांभर।

अ०-मल्ह् उल् अवकर।

मात्रा—३-९ माशे।

८२ सामुद्रं लवणम् (पाङ्गा) पृ० १६१

हि०-पांङ्गा निमक, पंगानोन, समुद्रनिमक, समुद्रीनोन। बं०-करकच लवण। म०-मीठ। गु०-मीठुं (ठूं), दरिआई लूण। क०-बड़ा गर० लवण। ते०-उप्पुं, ताडप्पु। फा०-नमक, नमकदरिया। अ०-मिलह् शोरी, मलहे उल् मुहीत। अं०-Salt (साल्ट)। लै०-Sodii Muras (सोडिआइ मुरास)।

मात्रा—१-३ माशे।

८३ विडलवणम् (विरिआसंचर (नोन) पृ० १६९

हि०-बिरिआ (या) नोन, बिरिया सं (सों) चर नोन, कटीलानोन। बं०-विटनुन। म०-विडनोन, विड़लोण। गु०-विड़लवण।

मात्रा—१-३ माशे।

८४ सौवर्चलं लवणम् (कालानोन) पृ० १७०

हि०-कालानोन, सोंचर नमक (नोन), चौहार (ड़) कोड़ा, चोहार-कोरानोन, चौहार कारा(ला)। बं०-संचल लवण। म०-पादेलोण। गु०-संचल। क०-चौवर्चल, सावचल। ते०-नालुउपु। फा०-नमकसिया, नमक स्याह। यू०-नमककाला। अ०-मालाअस्वद, मलह् अस्वद। अं०-Black Salt (ब्लेक साल्ट), अं०-Sochal Salt (सोचल साल्ट)। लै०-Unaqua Sodium Chloride (अनकुआ सोडियम क्लोराइड)।

मात्रा—१-३ माशे।

काचलवणस्य नामानि गुणाश्च—

काचं त्रिकूटं पाक्याह्वं लवणं काचसम्भवम्।

हि०-कचियानोन। बं०-कालालोण। म०-बांगडखार गु०-बंगडीखार। काचं दीपनमत्युष्णं रक्तपित्तविवर्धनम्।

८५ खानिजं लवणम् (रेहगवा नोन) पृ० १७०

हि०-रेहगवा नोन, रेहका निमक, मटिया नोन, शोरानोन। बं०-फूला लवण।

मात्रा—१-३ माशे।

औषरलवणस्य नामानि गुणाश्च—

औषरकं सार्वगुणं सार्वसंसर्गलवणमूषरजम् । साम्भारं बहुलगुणं च मिश्रकं नवधा । औषरं तु पटु क्षारं तिक्तं वातकफापहम् । विदाहि पित्तकृद् ग्राहि मूत्रसंशोषकारि च (रा० नि०)

हि०—खारीनोन । बं०—खारीनुन । म०—खारादिमीठ, ऊषर भूमीवर पिकवें तें । फा०—शोरे अर्मनी । अ०—बोदकबहलोज ।

अं०—कार्बोनेट ऑफ सोडा Carbonate of Soda ।

लै०—सोडियम कार्बोनास Sodium Carbonas.

रोमकलवणगुणाः—

रोमकं तीक्ष्णमत्युष्णं पटु तिक्तं च दीपनम् ।
दाहशोषकरं ग्राहि पित्तकोपकरं परम् ॥

द्रोणीलवणस्य नामानि गुणाश्च—

द्रौणेयं वार्धेयं द्रोणीजं वारिजं च वार्धिभवम् ।
द्रौणीलवणं द्रौणं त्रिकटु लवणं च वसुसंज्ञम् ॥
द्रौणेयं लवणं पाके नात्युष्णमविदाहि च ।
भेदनं स्निग्धमीषच्च शूलघ्नं चाल्पपित्तलम् ॥ रा० नि० ॥

नरसारस्य नामानि गुणाश्च—

क्षारश्रेष्ठोऽमृतक्षारश्चूलिकालवणाभिधः ।
सादरो नरसारश्च वज्रक्षारो विदारणः ॥
नरसादरकस्तीक्ष्णः सरो व्रणविदारणः ।
रसजारणकारी स्यादति चोष्णश्च गुल्मनुत् ।
मलस्तम्भं चोदरं च शूलं प्लीहां च नाशयेत् ॥

निर्माणविधिस्तु—

औष्ट्रं वा माहिषं गव्यं पुरीषं भस्मतां गतम् ।
क्षारपाकविधानेन नृसारः सिद्ध उच्यते ॥

शोधनविधिस्तु—

नरसारो भवेच्छुष्कश्चूर्णतोये विपाचितः ।
दोलायन्त्रेण यत्नेन भिषग्भिर्योगसिद्धये ॥

हि०—नवसादर । बं०—निशादल । म०—नवसागर । गु०—नवसार ।

अ०-नवसादर खुरासानी। अं०—आमोनियम् क्लोरिडम् Ammonium Chloridum। लै०-आमोनियम् मूरिआस Ammonium Muriaus

८६ चणकाम्लकम् (चनाखार) पृ० १७०

हि०-चनेका खार, चनाखार, चनक लोनी, चनेका नोन। म०-हरभरे ची आंब, हरभय्यांचो आम। गु०-चणानो खार।

८७ यवक्षारः (जवाखार) पृ० १७०

हि०-जवा(व)खार। बं०-यवक्षार। द्रा०-क०-यवक्षारं। म०-गु०-यवाखार। मा०-जोखार। पं०-जौखार। ते०-यवक्षारमु। अ०-नुतरुन्। अं०-Carbonate of Potash (कार्बोनेट ऑफ् पोटाश। लै०-Potassium Carbonass (पोटासियम कार्बोनस)।

मात्रा—१-३ माशे।

८८ स्वर्जिका (सज्जीखार) पृ० १७०

हि०-सज्जी, सज्जीखार, सज्जी मिट्टी। बं०-साजिखार, साजीमाटी, साजीखारु। म०-सज्जीखार, साजी। मा०-साजीक्षार। गु०-साजीखार। क०-साजीखारुं(र), सज्जीखार। द्रा०-सज्जीकारं। पं०-सज्जी, लोटाखार। फा०-संजार कलिया, अशखार। अ०-कलिमास्फर, कलि वशब्बुल असफर। अं०-Barilla (बरिल्ला)

,,-Carbonate of Soda (कार्बोनेट ऑफ् सोडा)

,,-Punjab Salt Wort (पञ्जाब साल्ट वर्ट)।

लै०-Coroxylon Griffithii (कोरोक्सिलन ग्रिफिथाइ)।

मात्रा—२-८ रत्ती।

८९ सुवर्चिका (सोरा) पृ० १७०

सूर्यक्षारस्य नामानि गुणाश्च—

सूर्यक्षारोऽर्कक्षारश्च तार्क्ष्यस्तीक्ष्णरसस्तथा।
सुवर्चिका सर्वसहो द्यौरिणश्च शिलाजतुः॥
औद्भिदं लवणं तीक्ष्णमत्युष्णं रेचकं कटु।
तिक्तमग्नेर्दीप्तिकरं सूक्ष्मं क्षारं लघु स्मृतम्।
दाहकृच्छोषकृद् ग्राहि वातनुत् पित्तकोपनम्।
प्लीहामूर्च्छामूत्रकृच्छ्रनेत्ररुग्वातरक्तनुत्॥

पलाश क्षार, सेंहुड क्षार, चिचिड़ा क्षार, इमली क्षार, मदार क्षार, तिलनाल का क्षार, जवाखार तथा सज्जी इन सब [illegible] मिला देने से क्षाराष्टक - अग्नि तुल्य है तथा गुल्म तथा शूल के नाश करने में उत्तम होते हैं।

कुम्भकामलनुत् कासनासापाकं च पीटिकाम् ।
शिरःपाकं च शूलं चाप्याध्मानं चैव नाशयेत् ॥ रा० नि० ॥

हि०–सोरा, सूर्याखार, वाजी । म०–सोरा । गु०–सुरोखार । तै०–चिटलु भस्ममु । फा०–शोरा । अ०–अबकेर । अं०–नाइटर साल्ट पिटर Nitre Salt peter । ले०–पोटासियम नैट्रास Potassium Nitras ।

सोराकी मात्रा—१–२ मासे

सर्वक्षार (साबुन) गुणाः—

सर्वक्षारो वस्तिशुद्धिकारको मलशोधनः । वस्त्रशुद्धिकरश्चैव चक्षुष्यः कृमिनाशकः । उदावर्त्तहरश्चैव मुनिभिः परिकीर्त्तितः (नि० र०) ॥

लवणक्षार (लोणारक्षार) गुणाः—

लवणक्षारमत्युष्णं तीक्ष्णं पित्तप्रवृद्धिदम् ।
क्षारलवणमीषच्च वातगुल्मादिदोषनुत् (रा० नि०) ॥

१० टङ्कणक्षारः (सोहागा) पृ० १७०

हि०–सु(सो)हागा, सु(सो)हग्गा । बं०–सोहागा । म०–टंकणखार, खां(खा)गीखार, टाणखार । मा०–सोगो । गु०–टङ्कण, टंकणपाढ़ियो, टंकणफुलियो टङ्कणखार । क०–टङ्कणखारु, बिलियटंकणु, बेलगार, एलिगारं वेलिगारमु । पं०–सुहागा । द्रा०–वणवारं । ते०–एलिगारम । फा०–तिगार, तनकार । अ०–बुरग, जबदुलबूरग ।

अं०–Borax(बोराक्स)
,,–Baborate of Soda (बाबोरेट ऑफ् सोडा) ।
ले०–Soda Biboras (सोडा बाइबोरास) ।

टंकणशोधनविधिः—

आदौ टंकणमादाय काञ्जिकाम्ले विनिक्षिपेत् । एकरात्रात् समुद्धृत्य रौद्रयन्त्रे विभावयेत् ॥ नरमूत्रगतं टङ्कं गवां मूत्रगतं तथा । दिनान्ते तत्समुद्धृत्य जम्बीराम्लगतं कुरु ॥ जम्बीराम्लात् समुद्धृत्य नारिकेलस्य पत्रके । मरीचचूर्णसंयुक्तं क्षालयेच्छीतलाम्बुना ॥ एवं टंकणमादाय सर्वरोगेषु योजयेत् । टंकणं वह्नियोगेन स्फुटितं शुद्धतां नयेत् ॥

व्यवहार–श्वेतपिंड (शुद्ध) । मात्रा—१–३ माशे ।

श्वेतटंकणगुणाः—

सुश्वेतं टंकणं स्निग्धं कटूष्णं कफवातनुत् ।

आमत्तयापहृच्छ्वासविषकासमलापहम् ॥ रा० नि० ॥

११ चुक्रम् (चूक) पृ० १७१

हि०-चूक, चूका । मा०-चूका । गु०-चुका ।

इति द्वितीयो हरीतक्यादिवर्गः ॥ २ ॥

अथ तृतीयः कर्पूरादिवर्गः ॥ ३ ॥

१ कर्पूरम् (कपूर) पृ० १७१

हि०-कपूर । ब०-कर्पूर । मा०-कापूर । म०-कापूर । ते०-कर्पूरमु, कपूरमु, कपुरामु । गु०-कपुर । फा०-कापूर, काफूर । क०-कर्पूर । अ०-काफूर । द्रा०-कर्पूरम् । अं०-Camphor (केम्फर)। ब्रा०-परोय राकु ॥ ले०-Camphora (केम्फोरा) Borneo

कर्पूरलक्षणम्—

शिरो मध्यं तलं चेति कर्पूरस्त्रिविधः स्मृतः । शिरः स्तम्भाग्रजं मध्ये मध्यं पर्णतले तलम् ॥ भास्वद्विदर्शपुलकं शिरोजातं तु मध्यमम् । सामान्यपुलकं स्वच्छं तले चूर्णं तु गौरवम् ॥ स्तम्भगर्भस्थितं श्रेष्ठं स्तम्भबाह्ये च मध्यमः । स्वच्छमीषद्धरिद्राभं शुभं तन्मध्यजं स्मृतम् । सुदृढं शुभ्ररूक्षं च पुलकं बाह्यजं वदेत् ॥ रा० नि ॥

पोतास-भीमसेनी-बरास कर्पूरगुणाः— $C_{10}H_{16}O_1$

पोताश्रयः स्वादु शीतो वृष्यस्तिक्तः कटुः स्मृतः । तृड्दाहरक्तपित्तानां कफस्य च विनाशकः ॥ त्रयोऽप्येते तु कर्पूराः पक्वापक्वविभेदतः । द्विप्रकारः स उद्दिष्टः पक्वोऽतिगुणदः स्मृतः ॥ नि० र० ॥

शङ्करावासकर्पूरगुणाः—

ईशावासश्च कर्पूरो भेदी वृष्यो मदापहः । अतिशुभ्रोन्मादतृष्णाश्रमकासक्रमिच्छयान् ॥ स्वेदं चैत्राङ्गदाहं च नाशयेदिति कीर्त्तितः ॥ नि० र० ॥

हिमकर्पूरगुणाः—

हिमकर्पूरकः शुभ्रो वृष्यः शीतो रसे कटुः ।
तृड्दाहमोहस्वेदानां नाशकः परमो मतः ॥ नि० र० ॥

उदयभास्करकर्पूरगुणाः—

कर्पूरोदयभास्करो निगदितः पीतः सरः स्वच्छकः-स प्रोक्तः कठिनः कटुः समुदितः स्याद्दीपकोऽग्नेर्लघुः । शीदः पित्तकरः कफक्रिमिविषान् वातं च नासास्रुतिं-लालास्रावगलग्रहौ च शमयेज्जिह्वाजडत्वापहः ॥ नि० र० ॥

पर्णकर्पूरगुणाः—

पर्णकर्पूरकस्तिक्तः शुद्धयुन्मादकरो मतः । मूत्रकृत् पीनसं दाहं नाशयेदिति कीर्त्तितः ॥ नि० र० ॥

कपूरभीमसेनी—

मिश्री वीकानेरी १ तो० । इलायचीछोटी १ तो० । कपूर १ तो० एक प्रहर खरल करै ।

मात्रा-$\frac{1}{8}$ से $\frac{1}{4}$ रत्ती ।

२ चीनाककर्पूरः (चीनिया कपूर) पृ० १७२)

हि०-चीनिया कपूर, चीन कपूर, चीनी कपूर । बं०-चीनेर कर्पूर । म०-चीनी कापूर । गु०-चिनाई कपूर । ले०-Cinemonum Camphora (सिनेमोनम् केम्फोरा)

मात्रा—८ रत्ती से $\frac{1}{4}$ रत्ती ।

३ कस्तुरी पृ० १७२

हि०-कस्तूरी, मृगनाभ, मृगनाफ । बं०-मृगनाभि । ते०-कास्तूरा । म०-गु०-क०-ता०-कस्तूरी । फा०-मुश्क, मुष्क । अ०-मिस्क ।
अं०-Musk (मुस्क) । ले०-Moschus (मोस्कस्) ।

मात्रा—$\frac{1}{2}$ से २ रत्ती ।

साऽप्येका खरिका ततश्च तिलका ज्ञेया कुलत्थाऽपरा ।
पिण्डाऽन्याऽपि च नायिकेति च परा या पञ्चभेदाभिधा ॥ रा० नि० ॥

चूर्णाकृतिस्तु खरिका तिलका तिलाभा-कौलत्थबीजसदृशा च कुलत्थिका च । स्थूला ततः कियदियं किल पिण्डकाख्या-तस्याश्च किंचिद्धिका यदि नायिकाऽऽख्या ॥ रा० नि० ॥

कस्तूरीपरीक्षा—

या गन्धं केतकीनां हरति परिमलैर्वर्णतः पिञ्जराभा-
स्वादे तिक्ता कटुर्वा लघुरथ तुलिता मर्दिता चिक्कणा स्यात्

दाहं या नैति वह्नौ चिमिचिमि कुरुते चर्मगन्धा हुताशे-
सा कस्तूरी प्रशस्ता वरमृगतनुजा राजते राजभोग्या॥ रा० नि०॥

कस्तूरिकागन्धभेदलक्षणम्—

बाले जरति च हरिणे क्षीणे रोगिणि च मन्दगन्धयुता।
कामातुरे च तरुणे कस्तूरी बहलपरिमला भवति॥ रा० नि०॥

दुष्टकस्तूरीलक्षणानि—

या स्निग्धा धूमगन्धा वहति विनिहिता पीततां या वसोऽन्त-
निःशेषं या निविष्टा भवति हुतवहे भस्मसादेव सद्यः।
या च न्यस्ता तुलायां कलयति गुरुतां मर्दिता रूक्षणं च
ज्ञेया कस्तूरिकेयं खलकृतमतिभिः कृत्रिमा नैव सेव्या॥ रा० नि०॥

दुष्टकस्तूरीपरीक्षा—

करतलजलमध्ये स्थापनीया महद्भिः-पुनरपि तदवस्थं चिन्तनीयं मुहूर्त्तम्। यदि भवति च रक्तं तज्जलं पीतवर्णं-न भवति मृगनाभिः कृत्रिमोऽयं विकारः॥ का०॥

४ लता कस्तूरी पृ० १७२

हि०-लता कस्तूरी, लती कस्तूरी, मुश्कदाना। बं०-काल कस्तूरी, लता कस्तूरिका। म०-कालकस्तूरी, कस्तूरी भेंडा। मा०-मुश्कदाणा। गु०-लताकस्तूरी। ते०-तक्कोल फलमु, कर्पूरवेंड। ता०-कटे कस्तूरी, कट्टुककस्तूरी। द०-कस्तूर वेंड। प०-धोनार कस्तूरी।

ले०-(हिबिस्कस आबेल मोस्कस्) Hibiscus Abel Moschus।

व्यवहार—बीज। मात्रा—१—२ माशे।

५ गन्धमार्जारवीर्यम् (जवादि कस्तूरी) पृ० १७२

हि०-जवादि कस्तूरी, गोरासार, बेद अंजीर, मुश्कबिलाव कस्तूरी। गु०-जवदियां कस्तूरी।

६ चन्दनम् (सफेद चन्दन) पृ० १७२

हि०-चन्दन, सफेद चन्दन। बं०-म०-ते०-चन्दन। क०-वेट्ट पश्चोगन्ध, श्रीगन्ध मारा। गु०-सुखड़। द०-सन्दल। ता०-चन्दनमरेन, चन्दनमार। ते०-गन्धपुचेक्क, चन्दनमु। फा०-सन्दल, सन्दले सुफेदः।

अ०-सन्दले अबीयद ।। अं०- Sandal wood (संडल उड्) ।

ले०-Santaium Album (संटेयम एलबम्)

व्यवहार— { लकडी । मात्रा—३—४ माशे । तैल । ,, —१—२ माशे ।

चन्दनस्य भेदाः—

चन्दनं द्विविधं प्रोक्तं वेट्टसुक्कडि संज्ञकम् । वेट्टं तु सार्द्रविस्फाटं स्वयं शुष्कं तु सुक्कडि ।। मलयाद्रिसमोपस्थाः पर्वता वेट्टसंज्ञकाः । तज्जातं चन्दनं यत्तु वेट्टवाच्यं क चिन्मतम् ।। नि० र० ।।

वेट्टचन्दनगुणाः—

वेट्टचन्दनमतीव शीतलं दाहपित्तशमनं ज्वरापहम् ।
छर्दिमोहतृषिकुष्ठतैमिरोत्कासरक्तशमनं च तिक्तकम् ।। नि० र० ।।

सुक्कडिचन्दनगुणाः—

सुक्कडिश्चन्दनं तिक्तं कृच्छ्रपित्तास्रदाहनुत् ।
शैत्यं सुगन्धिदं चाद्रं शुष्कं लेपे तदन्यथा ।। नि० र० ।।

शम्बरचन्दनस्य नामानि गुणाश्च-

कैरातकं बहुलगन्धं बल्यं शम्बरचन्दनम् । कैरातकं शीतलतिक्तकं च श्लेष्मानिलघ्नं श्रमपित्तहारि । विस्फोटपामाऽऽदिकनाशनं च तृषाऽपहं तापविमोहनाशनम् ।। रा० नि० ।।

७ पीतचन्दनम् (कलम्बक) पृ० १७३

हि०-पीत चन्दन, पीला चन्दन, कलम्बक । बं०-कलंबा । म०-मलयागर पीतचन्दन, पिंवला चन्दन। फा०-संदल अबिराल ।

ले०-Santalum Flonum (संटलम् फ्लोनम्)

व्यवहार— लकड़ी । मात्रा— २—३ माशे ।

८ रक्तचन्दनम् (लाल चन्दन) पृ० १७३

हि०-लालचन्दन, रक्तचन्दन । बं०-म०-रक्तचन्दन। गु०-रताञ्जली। ते०-एरं गन्धपुचेक्क, रक्तचन्दनम्, कुचन्दनम् । ता०-सेन् शाण्डम् । प०-मा०-लालचन्दन । मला०-उत्ताह । द्रा०-शोप्पु शन्दनम् । फा०-सन्दले सुर्ख ।। अ०-सन्दले अहमर ।

अं०–Red sandal wood (रेड सण्डल उड्)।

लै०–Pterocarpus Santolinus (पटेरोकार्पस सेन्टेलिनस्)

व्यवहार–लकड़ी। मात्रा–२–४ माशे।

९ पतङ्गम् (पतङ्ग) पृ० १७३

हि०–पतंग, बक, बकमकाठ, आल। बं०–बकम काष्ठ, वोकम। म०–पतंगल। क०–गु०–म०–पतंग। ते०–ओकनुकट्टु,। ता०–बटङ्गी, घटंगी। उ०–बकमो, बोकमो। मला०–चप्पनुम। फा०–अ०–बकम।

अं–Sappan wood (सेप्पन उड्)।

लै०– Caesalpinia Sappan (केसालपिनिया सप्पन)

व्यवहार–लकड़ी। मात्रा–१–४ माशे।

बर्बरचन्दनस्य नामगुणाः–

बर्बरोत्थं बर्बरकं श्वेतबर्बरकं तथा। शीतं सुगन्धि पित्तारिः सुरभिश्चेति सप्तधा॥ बर्बरं शीतलं तिक्तं कफमारुतपित्तजित्। कुष्ठकण्डूव्रणान् हन्ति विशेषाद्रक्तदोषजित्॥ रा० नि०॥

हरिचन्दनस्य नामगुणाः–

हरिचन्दनं सुरार्हं हरिगन्धं च चन्दनं दिव्यम्। दिविजं च महागन्धं नन्दनजं लोहितजं नवसंज्ञम्॥ हरिचन्दनं तु दिव्यं तिक्तहिमं तदिह दुर्लभं मनुजैः। पित्ताटोपविलोपे चन्दनवच्छ्रमहरं च शोषहरम्॥रा०नि०॥

चन्दन की जातियां–

१ सफेद चन्दन, २ शम्बरचन्दन, ३ रक्तचन्दन, ४ पीतचन्दन, ५ पतङ्गचन्दन, ६ बर्बरचन्दन, ७ हरिचन्दन।

१० अगुरु (अगर) पृ० १७३

हि०–अगर, काली अगर। बं०–अगरुकाष्ठ, अगरुचन्दन। म०–गु०–ते०–अगर, अगरु। क०–मा०–प०–अगर। प०–ऊद, ऊद फारसी। ता०–अग्गालि चंड। द्रा०–अहिल कट्टे, अंहरु कट्टे, अहरु कट्टई। ते०–कृष्ण अगरु। हरिगुह चेट्टु। फा०–ऊद हिन्दी, ऊद गर्की, कसवेववा। अ०–ऊद खाम्।

अं०–Calambac (कालम्बक) और Eaglewood (इगल वुड)

लै०–Aquilaria Agallocha (एक्वीलरिया) एगेलोचा)

व्यवहार–लकड़ी। मात्रा–६ रत्तीसे ३ माशे।

काष्ठागुरु-दाहागुरु—मङ्गलागुरुगुणाः—

काष्ठागुरु कटूष्णं च लेपे रूक्षं कफापहम् । दाहागुरु कटुकोष्णं केशानां बर्धनं च वर्ण्यं च । अपनयति केशदोषानातनुते सन्ततं च सौगन्ध्यम् ॥ मङ्गल्यागुरु शिशिरा गन्धाढ्या योगवाहिका ॥ रा० नि० ॥

११ देवदारु पृ० १७४

हि०-देवदार, देवदारु । बं०-देवदारु । ते०-देवदारचेका, देवदारि चेट्टु । म०-तेल्या देवदार, देवदारु । प०-देवदार, गेया । गु०-देवदार, वांसियो देवदार । ता०-देवदारु चेडि । फा०-देवदार ।
अं०-Himalayan Cedar (हिमालयन सिडर), अं०-Deodar (डेवडार) । लें०-Cedrus Libani (सिडरस लिबानी) ।
,, Cedrus Deodar (सिड्रस डेवडार) ।

व्यवहार—लकड़ी । मात्रा—१—४ माशे ।

देवदारुभेदाः—

देवदारु द्विधा ज्ञेयं तत्राद्यं स्निग्धदारुकम् ।
द्वितीयं काष्ठदारु स्याद् द्वयोर्नामान्यभेदतः ॥ नि० र० ॥

स्निग्धदारुगुणाः—

स्निग्धदारुः कटुः पाके स्निग्धोष्णस्तिक्तको लघुः । कफवातप्रमेहार्शोमलस्तम्भामदोषहा ॥ ज्वराध्मानश्वासकासशोथकण्डूविनाशकः । हिक्कां तन्द्रां रक्तदोषं पीनसं चैव नाशयेत् ॥ नि० र० ॥

काष्ठदारुगुणाः—

देवकाष्ठं मतं चोष्णं तिक्तं रूक्षं कफापहम् ।
वातं च भूतबाधां च लेपाद् व्यङ्गं विनाशयेत् ॥ रा० नि० ॥

चीडागुणाः—

चीडा कटूष्णा कासघ्नी कफजिद् दीपनी परा ।
अत्यन्तं सेविता सा तु पित्तदोषश्रमापहा ।

१२ सरलः (धूप) पृ० १७४

हि०-धूपसरल, चिर, चीढ़ । म०- सुरूचे झाड़ । बं०-सरलगाछ, सरलकाष्ठ, तार्पीन तैलेर गाछ । गु०-सरलदेवदारु, सरल देवदारि चेट्टु,

पीलो बेरजो। ता०-सरल देवदारी। क०-सरली देवदारु। द्र०-चिर। अं०-Long Leaved Pine (लौंग लीव्ड पाइन)।
ले०-Pinus Longifolia) (पाइनस लौंगिफोलिया।)

१३ तगरम् (तगर) पृ० १७४

हि०-तगर। बं०-तगरपादुका, तगरचंडी। म०-गांळ्या तगर गोडे-तगर। ते०-गन्धि तगरपु चेट्टु, नन्दिवर्द्धन चेट्टु, ग्रन्थि तगरमु। उ०-पाणिफलरा। ने०-चम्पा, चम्महा। क०-ग्रन्थितगर। मु०-तगर गंठोड। कुमा०-शुमियो, असारून्। यू०-असगंध वाला। फा०-अ०-आशारून, आसारून। ले०-Veleriana Hardwickii (वेलेरियाना हार्डविकाई)।

व्यवहार-जड़। मात्रा-२-५ माशे।

१४ पद्मकम् (पद्माख) पृ० १७४

हि०-पद्माक, पद्माख, पदुमकाठ, पद्म। बं०-पद्मकाष्ठ। म०-पद्म-काष्ठ, पद्मक। गु०-पद्मकनु लाकडुं। पद्मकाठी। क०-पद्मक। ते०-एणुगु सहदेवि, एडगु सहदेवि, पद्मपेचुका, पद्मपुचेववा॥ लिपचा०-कोंगकी। ले०-Prunus Paddum (प्रुनस् पड्डुम)।

व्यवहार-लकड़ी। मात्रा-१-३ माशे।

१५ गुग्गुलुः (गूगल) पृ० १७५

हि०-गूगल, गूगर, गूगरी। बं०-गुग्गुलु, गुग्गुल। म०-गुग्गुल, गुगुल, हंसा गुगुल, मुकुल। गु०-गुगल, गुग्गल। क०-इडबोल। ते०-गुग्गिलमु चेट्टु, महिषाक्षी। द्रा०-गुग्गुलं। ता०-मैशाक्षी, गुक्कल। फा०-बोयजहुदान, बूयजहूदां। अ०-मुश्किले अर्जक।

अं०-Indian Dellium (इंडियन डेलियम)।

ले०-Balsamodendron Mukul (बालसमोडेनड्रोन मुकुल)।

मात्रा-१-३-माशे।

अस्योत्पत्तिः-

जायन्ते पुरपादपा मरुभुवि ग्रीष्मेऽर्कसंतापिताः-शीतर्त्तौ शिशिरेऽपि गुग्गुलुरसं मुञ्चन्ति ते पञ्चधा। हेमाभं महिषाक्षतुल्यमपरं सत्पद्मरागो-पमं-भृङ्गाभं कुमुदद्युतिं च विधिना ग्राह्याः परीक्षा ततः॥ रा० नि०॥

अस्य परीक्षा—

वह्नौ ज्वलन्ति तपने विलयं प्रयान्ति-क्लिद्यन्ति कोष्णसलिले पयसा समानाः । ग्राह्याः शुभाः परिहरेच्चिरकालजातान् सत्त्वारवर्णसमपूयविगन्धवर्णान् ॥ प्र० मृ० ॥

अस्य शुद्धिः—

दुग्धे वा त्रिफलाकाथे दोलायन्त्रे विपाचितः ।
वाससा गालितो ग्राह्यः सर्वकर्मसु गुग्गुलुः ॥ आ० सं० ॥

गन्धराजगुग्गुलुगुणाः—

कणगुग्गुलुः कटूष्णः सुरभिर्वातनाशनः ।
शूलगुल्मोदराध्मानकफघ्नश्च रसायनः ॥

भूमिजगुग्गुलुगुणाः—

गुग्गुलुर्भूमिजस्तिक्तः कटूष्णः कफवातजित् ।
उमाप्रियश्च भूतघ्नो मेध्यः सौरभ्यदः सदा ॥ रा० नि० ॥

१६ सरलनिर्य्यासगुग्गुलुः (गन्धविरोजा) पृ० १७६

हि०-गंधाबिराजा, गन्धबिरोजा, गंधबरोजा, बिरोजा, सरलका गोंद, सरलका रस, चन्द्रस् , गंदाबिरोजा, चिढ़का गोंद । बं०-टार्पिन तेल, नवनति खोटी, गंधबिरजा । म०-सरलडीक, चन्द्रस् । गु०-जनार्जन, गंधबेराजा । क०-श्रोत्रेष्टक । ता०-पिनैमारु । भो०-टोडोंग । फा०-बिरोजह, संदरूस । लिपचा०-ग्निएट ।

अं०-Oleo Rasin (ओलियो रेज़िन) ।

१७ रालः पृ० १७६

हि०-राल, रार, धूना, करायल, डामर, । ब०-धुना, धुनो, राल । म०-राळ पिंबली, पिंपली राल, राला । गु०-राळ । क०-सज्जरस । ते०-सज्जरसमु, सर्ज्ज । पं०-राल अर्लु । मु०-राल, धुआ । फा०-राल मगरबी । अ०-किहकर । अं०-Yellow Resin (यलो रेज़िन) ।

ले०-Resina Fleva (रेज़िना फ्लेवा) ।

रालतैलगुणाः—

तैलं सर्जरसोद्भूतं विस्फोटव्रणनाशनम् ।
कुष्ठपामाक्रिमिहरं वातश्लेष्मामयापहम् ॥ आ० सं० ॥

१८ कुन्दुरुः (बिरोजा) पृ० १७६

हि०-कुन्द (न्दु) रु, गुन्द (गन्ध) बरोसा, बिरोजा । बं०-कुन्दुरुखोटी, कुन्दरखोटी, कुन्दरुखोटी । म०-सालइचाडीक, अवलगुन्दर, सालईडीक । गु०-किन्दुरु, शेषगुन्दर । ते०-चंगलकुष्ट, कुन्दरुमु, कुन्दुरुमु गुग्गुलमु । क०-इडवोल । फा०-कुन्दुररूमी, खोटी मस्तकी, लोबान । अ०-कुन्दुरे जकर । अं०-Gum Resin (गम रेजिन) ।

शर्करासहितं मेहं वृषणस्य व्यथां हरेत ॥ शो० नि० ॥

व्यवहार-गोंद । मात्रा—२-४ माशे

१९ शिलारसः (सिलारस) पृ० १७६

हि०—शि (सि) लारस । बं०-म०-शिलारस । गु०-शे (शै) लारस क०-पिंडतेल, हालुमड्डि। ते०-तुरुष्कमु । द०-कपितेल । मा०-शिलारस। पं०-सिलारस । फा०-सरारस । अ०-उसारे कमिया, मियास आयला ।

अं-Liquid Amber (लिक्विड एम्बर) ।

ले०-Liquid AmberOrientalis (लिक्विड एम्बर ओरीएण्टलिस्)

२० जातीफलम् (जायफल) पृ० १७७

हि०—जायफल (र) । बं०-म०-जायफल । गु०-क०-जाईफल । ते०-जाजीकाया, जाजिकाय । ता०-जोदिकराय, जातिक्काय, जोडीकाया । ब्रह्मी०-जादिक्षु । प०-जाफल । क०-जाजिकाय । द्रा०-जादिकाइ । फा०-जोजबूया, जोजबोया । अ०-जोज्ज उतलीब । अं०-Nut Meg (नट मेग)। ले०-Myristica Officinalis (मिरिस्टिका आफिसिनेलिस) । जङ्गली जायफल का लेटिन में नाम-Myristica Malabarica (मिरिस्टिका मालाबेरिका) है ।

व्यवहार—बीज । मात्रा-२-६ माशे ।

जातीफललक्षणम्—

जातीफलं सशब्दं च स्निग्धं गुरु च शस्यते ।
लघुकं शब्दहीनं च रूक्षाङ्गमतिनिन्दितम् ॥ (भैषज्यचिकित्सा)॥

जातीफलतैलगुणाः—

तैलं जातिफलोद्भूतं समुत्तेजनमग्निदम् ।
जीर्णातिसारशमनमाध्मानाक्षेपशूलहृत ॥
आमवातहरं बल्यं दन्तवेष्टव्रणार्त्तिनुत् ॥ (आ० सं०) ॥

२१ जातीपत्री (जाबित्री) पृ० १७७

हि०-जा (ज) वित्री । ब०-जाय (यि) त्री, जयित्री । म०-जायपत्री, पत्री । गु०-जावंत्री । क०-जाय (ई) पत्री, जापत्री । ते०-जातिपत्री । फा०-जवत्री, बजवार । अ०-बिसवासह । अं०-Mace (मेस) । ले०-Myristica Fragrans (मिरिस्टिका फ्रेगरेनस्) ।

व्यवहार—फूल । मात्रा-१-३ माशे ।

२२ लवङ्गम् (लौंग) पृ० १७७

हि०-लों (लौं)ग, लवङ्ग, करन फल । ब०-म०-लवङ्ग । गु०-लविंग । क०-लवङ्ग कलिका । ते०-लवङ्गलु, लवङ्गमु ता०-किरमबेर । द्रा०-लवं, लवंगं । मा०-लोंग । फा०-मेहक, मेखक । अ०-करनफल, करनफूल । अं०-Cloves (क्लोवस्) । ले०-Caryophyllus Aromaticus (करियोफाइलस एरोमेटिकस) ।

व्यवहार-फूल । मात्रा-१-४ माशे ।

लवङ्गतैलगुणाः—

देवपुष्पोद्भवं तैलमग्निकृद्वातनाशनम् ।
दन्तवेष्टकफार्त्तिघ्नं गर्भिण्या वमनापहम् ॥ आ० सं ॥

२३ स्थूलैला (बडी इलायची) पृ० १७७

हि०-बड़ी इलायची, पूर्वी इलायची, लाल इलायची । ब०-बड़ इलायच, बड़ इलाच । म०-थोर (ड़) बेला, बेलदोडे, मोटबेलदोडे । गु०-एलचा, मोटी एलची, नर एलची । ते०-पेद्म एलाकुलु, एलुक चेट्टु, पेंग एलाकुलु । ता०-एलम, पेरिय एलक्काय, काट्टु एलक्काय । क०-डोड्डा एलाकी, दोड्डयालक्की । फा०-हीलकलां । अ०-काकलह किवार ।
अं०-Large Cardamum (लार्ज कार्डमम) ।
ले०-Amomum Subulatum (एमोमम सबुलेटम्) ।

व्यवहार-बीज । मात्रा-३-५ माशे ।

२४ एला (गुजराती इलायची) पृ० १७८

हि०-छोटी (सफेद) इलायची, गुजराती (चौहरा) इलायची । ब०-छोट इलायच, गुजराती एलायच, छोट एलाच । गु०-एलची कागदी,

नानी एलची । म०-बे (ए) लची, बारीक बेलदोड़े । ते०-चिल्ल याल्ल-कुल्लु, एल्लकाया, एलाकु, एल्लकयं, चिन्न एलकलु । द्रा०-एलो कुल कायो, चिन्न एलं । मा०-छोटीइलायची । क०-किरीया लक्कि । फा०-हिल-खुर्द, खैरबोश्रा । अ०-काकलह सिगार । मला०-एल्लेतरी ।

अं०-Cardamum (कार्डेमम)।

ले०-Elettaria Cardamomum (इलेट्टरिया कार्डेमोमम)

व्यवहार-बीज । मात्रा-२-४ माशे ।

२५ त्वक् (तज) पृ० १७८

हि०-तज । ते०—सन लिङ्गु । गु०-जाड़ी तज । फा०-अ०-सलीखा, कुफी । अं०-Cinnamon Bark (सिनेमन बार्क) । यह दारुसिता (दालचीनी) का भेद है ।

व्यवहार-छाल । मात्रा १-४ माशे ।

त्वक्तैलगुणाः—

वह्निमान्द्यानिलहरमाध्मानाक्षेपनाशनम् ।
वान्त्युत्क्लेशप्रशमनं संग्राहि दशनार्त्तिहृत् ।
त्वाचं तैलं रजःस्रावि तोये क्षिप्तं निमज्जति ॥ आ० सं० ॥

२६ दारुसिता (दालचीनी) पृ० १७८

हि०-दाल (र) चोनी । ब०-दारुचिनी । म०-दा (डा) ल चीनी । ते०-सनाल लिगपुता, सनलिंगु, लवंगचक्क । ता०-कररुषा, करुंषा (वा) । ब्रह्मो०-मिटख्यावे, लुसाईथ्वाक । गु०-तज । क०-लवंगपटे ।

अं०-Cinnamon Bark (सिनेमन बार्क) ।

ले०-Cinnamomum Zeylanicum (सिन्नामोमम जिलानिकम) ।

व्यवहार-छाल । मात्रा-१-६ माशे ।

दारुसितावृक्षो महान्, त्वग्वृक्षस्तु लघुरित्यनयोर्भेदः ।

२७ पत्रकम् (तेजपात) पृ० १७८

हि०-तेजपात (ता), तेजपत्ता (त्र), पत्रज, पतरज । ब०-तेजपत्र । म०-संभारपान, तमालपत्र । ते०-आकुपत्री, तालीसपत्रो । ने०-चोटासि-कोला । आसा०-दोपती । ता०-तालीसपतिरी । फा०-साज़ज़, साजिज़

हिन्दी । अ०—साज़िज, जरनव । अं०—Folia Malabathy (फोलिया-मालाबथी) । ले०—Cinnamomum Tamala (सिन्नामोमम टमाल) ।

व्यवहार—पत्ते । मात्रा—१—४ माशे ।

२८ नागकेशरः (नागकेसर) पृ० १७८

हि०—नागकेसर, ना(न)गेसर, नागेश्वर । ब०—नागेश्वर, नागेश्वर-चम्पाफुलेर गाछ । म०—नागकेसरं । ग०—नागकेसर । क०—नागकेसरी, नागसम्पिगो । ते०—नागकेसरालु, नागकेसरमु । ता०—नांगल, नौगल, नागशप्पु । द्रा०—नागकेसरं । मु०—नागचम्प । मा०—केसर । यू०—नागेसुर । अ०—नारमुश्क । अं०—Cabras Safron (केबराज सेफ्रोन) ।

ले०—(१) Mesua Ferrea (मेसुआ फेरिया) ।

,,—(२) Ochro carpus longifolius (ओक्रो कार्पस लौंगिफोलियस) ।

व्यवहार—फूल । मात्रा—१-२ मासे ।

२९ कुङ्कुमम् (केसर) पृ० १७९

हि०—केसर । ब०—म०—गु०—केशर । क०—कुंकुम, कुंकुमदहु । मु०—सरफरान । द्रा०—कंकुमप्पु, तै०—कंकुमपूवु । कंकुमअपावे । ता०—कंगुमपु । फा०—करकीमास । अ०—जाफरान । अं०—Saffron (सेफ्रोन) । ले०—Crocus Sativus (करोकस सेटाइवस) ।

व्यवहार—फूल की केसर । मात्रा—२—६ रत्ती ।

कुङ्कुमलक्षणम—

अव्यक्तरक्तिमामोदि मर्दनात् कर्णिकात्मकम् ।
स्थिररागं करे लग्नं भग्नं कुंकुममुत्तमम् ॥
हीनमेवाग्निकाश्मीरं गरं पाण्डुरकेशरम् ॥

तृणकुङ्कुमस्य नामानि गुणाश्च राजनिघण्टौ—

तृणकुङ्कुमं तृणास्रं गन्धितृणं शोणितं च तृणपुष्पम् ॥
गन्धाधिक्रं तृणोत्थं तृणगौरं लोहितं च नवसंज्ञम् ।
तृणकुङ्कुमं कटूष्णं कफमारुतशोफनुत् ।
कण्डूतिपामाकुष्ठामदोषघ्नं भास्करं परम् ॥

३० गोरोचना (गोलोचन) पृ० १७९

हि०-गो (गौ) लोचन, गो (गौ) रोचन । ब०-गोरोचना । म०-गोरोचन । गु०-गोरोचन्दन । ते०-गोरोचनमु । द्रा०-गोरोजनम् । फा०-गायरोहन । अ०-हजरुल बक्कर । अं०-Gall stone Bijoor (गेल स्टोनबिजूर) । ले०-Bostarous (बोस्टारूस) ।

मात्रा—१—२ रत्ती ।

३१ नखं नखी च (नख, नखी) पृ० १७९

हि०-नख, नखी, छोटानख । बं०-नखीगन्धद्रव्य, छोटनखी । म०-नखला, बाघनख । ते०-नखमुचिप्प । गु०-नखला, सावजना नख । क०-नख, बाघनख । फा०-नाखुनपर्य्या, ग्राहकसर, नाखून बिरिया । अ०-अज्फारुतिव, इकलिलुल् मुलुक । अं०-Shell (शेल) ।

ले०-Helix Ashera (हेलिक्स आशरा) ।

नखीपञ्चभेदाः—

नखी पञ्चविधा ज्ञेया गन्धार्थां गन्धवत्परैः ।
क चिद्बदरपत्राभा तथोत्पलदला मता ॥
का चिदश्वखुराकारा गजकर्णसमा परा ।
वराहकर्णसंकाशा पञ्चमो परिकीर्त्तिता ॥ च० चि० ॥

अस्य शुद्धिर्यथा चरके—

पञ्चपल्लवतोयेन गन्धानां क्षालनं तथा ।
शोधनं चापि संस्कारो विशेषश्चात्र वक्ष्यते ॥
चण्डीगोमयतोयेन यदि वा तिन्तिडीजलैः ।
नखं संस्कारयेदेभिरलाभे मृण्मयेन तु ॥
पुनरुद्धृत्य प्रक्षाल्य भर्जयित्वा निषेचयेत् ।
गुडपथ्याऽम्बुना ह्येवं शुद्ध्यते नात्र संशयः ॥

३२ बालम् (सुगन्धबाला) पृ० १८०

हि०-सुगन्धबाला, नेत्रबाला । ब०-बाल्य, बाला, गन्धबाला । म०-बाळा, गन्धबाला । गु०-बालो, धोलो बालो, कालो बालो । क०-मुष्टिबाल, खसमु ष्टिबाल, बालदवेरु, मुडिवाल । ते०-वट्टिवेल्लु, कुरुवेरु । द्रा०-कुरु-

वेर। मु०-कालावाला । ता०-पेरामुतिवेर । मा०-नेत्रवालो । द०-करं-बाल । प०-नेत्रबाळा । फा०-असारूं ।

ले०-Pavonia Odorata (पावोनिया ओडोराटा) ।

मात्रा—१ माशा ।

३३ वीरणमुशीरञ्च (बीरण-खस) पृ० १८०

हि०-खस, खसखस, बीरनमूल, गांडर । बं०-बेणरमूळ, व्यानार मूल, व्याणार मूल । म०-कालावाला, वाला, पीलावाला । गु०-कालोवालो, काला वालना झाड़नु मूल । क०-बालद्बेस । ते०-बट्टिबेलु, अवरुगट्टि, वट्टिवे-ल्लुनल्ल । ता०-वेत्तवेर, वट्टिवेर । उ०-बीणा, गन्धबीणा । मु०-खसखस, रेशये खस खानह ।

ले०-Andropogon Squarrosus (एण्ड्रोपोगन स्क्वारोसस्) ।

व्यवहार- जड़ । मात्रा—३—६ माशे ।

३४ जटामांसी । पृ० १८०

हि०-जटामांसी, बालछड़, कनुचर । बं०-म०-जटामांसी । ते०-ज-टामांसी, जटामांसमु । क०-बहुलगन्ध जटामांसी । गु०-बालछड़ । द०-प०-बिल्ली लोटन । द्रा०-जटामांस । मु०-सम्बुल । फा०-सुम्बुल हिन्दी । अ०-सुबुलुत्तीव, सुम्बुल उततीब ।

अं०-Spike Nard (स्पाइक नार्ड) ।

ले०-Nardostachys Jatamansi (नार्डोस्टेकीस जटामांसी)

व्यवहार—जड़ । मात्रा—१—४ माशे ।

आकाशमांसीनामगुणाः—

आकाशमांसी सूक्ष्माऽन्या निरालम्बा खसंभवा ।
सेवाली सूक्ष्मपत्री च गौरी पर्वतवासिनी ॥
अभ्रमांसी हिमा शोफव्रणनाडीरुजाऽपहा ।
लूतागर्दभजालादिहारिणी वर्णकारिणी ॥ रा० नि० ॥

गन्धमांसीगुणाः—

गन्धमांसी तिक्तशीता कफकण्ठामयापहा ।
रक्तपित्तहरा वर्ण्या विषभूतज्वरापहा ॥ रा० नि० ॥

३५ शैलेयम् (भूरिछरीला) पृ० १८०

हि०-छरीला, भूरिछरीला, छड़छरीला, पत्थरका फूल, शिलाबाक। बं०-शैलज। म०-दगड फूल, मोथ दगदफूल, बारीक दगदफूल। गु०-पत्थरफूल, घविलो। क०-कलहू (हू)। ते०-शैलेय मने द्रव्यमु, रतिपंचे। ता०-कलपसी। फा०-उशनह, दोबालह। अ०-आशीना।

ले०-Parmelia Perleta (परमेलिया परलेटा)।

मात्रा—६ माशे तक।

३६ मुस्तकम् (मोथा) पृ० १८१

हि०-मोथा। बं०-मुत्ता, मुथा। म०-मोथे (थ), बिम्बल। गु०-मोथ, मोथ्य। क०-मुस्ता, कोन्नरि। ते०-तुगमुस्त, सकहतुंगविरु, मुस्तेरु। ता०-कोरब (य), कोरइ किलंगु। द्रा०-कोरक डंग। सं०-टण्डीसुर। फा०-मुष्कजमीं। अ०-शादकफी।

ले०-Cyperus Rotundus (साइपरस रोटण्डस)

व्यवहार—जड़। मात्रा—३—४ माशे।

मुस्तकशुद्धिर्यथा—

मुस्तकं तु मनाक् क्षुण्णं काञ्जिके त्रिदिनोषितम्।
पञ्चपल्लवतोयेन स्विन्नमातपशोषितम्॥
गुडाम्बुना सिच्यमानं भर्जयेच्चूर्णयेत्ततः।
आजशोभाञ्जनजलैर्भावयेच्चेति शुद्धयति॥

३७ नागरमुस्तकम् (नागरमोथा) पृ० १८१

हि०-नागरमोथा, नगरवथा। बं०-नागर मुथा। म०-नागरमोथे। मा०-नागरमोथो। गु०-नागरमोथ्य (थ)। क०-नागरमुस्ता, कोन्नरिभेद। ते०-तुंग गड्डल विम, सकह तुंग, नागमुस्तेलु। ता०-मुट्टहकाच, मुदहकाच। द०-गरमोटा। फा०-मुष्कजमीं, मुश्क-इ-जमीं। अ०-सादकोफी, सोअद केफी।

ले०-Cyperus Scariouc (साइपरस स्कारियस)।

व्यवहार—जड़। मात्रा—२—६ माशे।

भद्रमुस्तकस्य नामानि गुणाश्च—

गाङ्गेयं कुरुबिल्वं च भद्रमुस्तं कुटन्नटम् ।
भद्रमुस्ता तु तुवरा शीता तिक्ता च पाचका ॥
कट्वग्निदीपनीग्राहिण्यम्लपित्तकफापहा ।
अतिसारं रक्तदोषं ज्वरं चैव विनाशयेत् ।
अरुचिं च तृषां चैव कृमीनपि विनाशयेत् ॥ नि० र० ॥

३८ कर्चूरः (कचूर) पृ० १८१

हि०–कचूर, काली हलदी । बं०–कचूर, एकाङ्गी, शोरी कचूर । म०–कचोरा, नरकचोरा, काचरी । गु०–कचुरी (रो), कचूरा । ते०–गण्डला-कचोरमु, कचोरालु, ओकातो । मु०–काफूर कचरो । क०–हुलिअरसिन, पटकचोरा । फा०–जरंबाद । अ०–एरकुल काफुर ।

ले०—Curcuma Zedoaria (करक्युमा जेडोरिया) ।

व्यवहार—जड़ । मात्रा—२—३ माशे ।

३९ मुरा (एकांगी) पृ० १८१

हि०–एकाङ्गी, मुरा, मुरों, मुरामांसी । बं०–मुरामांसी । म०–एकांगी-मुरा, मोरमांसी । क०–मुरे । गु०–मोरमासी । यह कपूरकचरी का भेदहै ।

व्यवहार—जड़ । मात्रा—३—६ माशे ।

४० गन्धपलाशी (कपूरकचरी) पृ० १८१

हि०–गन्धपलाशी, कपूरकचरा, छोटाकचूर । बं०–शठी, गन्धशठी । म०–कापूरकचरी (काचरी), अंबे हलद । गु०–कपूरकाचरो, कठ । क०–गन्धशठी (टी) । ते०–किचलिरा गट्ठलु । मु०–आबे हलद । प०–कचूर-कचु । अ०–जरंबाद, अर्कुल काफूर ।

ले०–Hedychium Spicatum (हेडीशियम स्पाइकेटम) ।

मात्रा—२—३ माशे ।

४१ प्रियङ्गुर्गन्धप्रियङ्गुश्च (प्रियंगु-फूलप्रियङ्गु) पृ० १८२

हि०–प्रियङ्गु, फूलप्रियङ्गु, फूलफेन, दहिंगना, मथुरामाला । बं०–प्रियंगु, गन्धप्रियङ्गु । म०–गहु (ह्व) ला, फूलप्रियङ्गु । ते०–प्रेंकणपुचेट्टु, प्रेकनगिड़ । क०–नेपिलगु, घउला । गु०–घउला ।

ले०-Aglaina Roxburghiana (अगलेना राक्सबर्घीयना ।
व्यवहार—पञ्चाङ्ग, फल । मात्रा—३—६ माशे ।

४२ रेणुका पृ० १८२

हि०-रेणुका, रेनुका (क)। बं०-रेणुक। म०-रेणुक बीज। गु०-हरेणु।। क०-रेणुका। मु०-कौन्ती। ता०-येट्टी।
व्यवहार—बीज। मात्रा—१—३ माशा।

४३ ग्रन्थिपर्णम् (गठिवन) पृ० १८२

हि०-ग (गे) ठिवन, गठोना। बं०-गेंठे (टे) ला, गेंठेना। म०-गठोणा, गठोनाचा झाड़। क०-गाठिवन, गठिवना मूल, चोरबेलि। गु०-तगरनी गांठ।
ग्रन्थिपर्णलक्षणम्—

ग्रन्थिकः पाण्डुरः किञ्चित्कनिष्ठः सर्वसम्मतः।
उत्तमः कृष्णवर्णो यः स्थूलोऽतीव च निन्दितः॥

४४ स्थौणेयकम् (थुनेर) पृ० १८२

हि०—थुनेर, गठिवन भेद, थुनियार। बं०-ग्रन्थिपर्णभेद, गांठिबाला। गु०-भरूंठ, थूणेर, थुणेर। क०-स्थौणज, स्थौणजे। ते०-सुगन्ध द्रव्यमु।

४५ चोरको ग्रन्थिपर्णभेदः (भटेउर) पृ० १८३

हि०-भ(भं)टेउर, भंटीउर, धनहर, चौरा, निशाचरबूटी। म०-गाठिवना। ते०-लिंबीदोडं। ने०-भटेउर। मु०-भटोरा।
मात्रा—२ माशे।

४६ तालीसपत्रम् (तालीसपत्र) पृ० १८३

हि०-तालास(श)पत्र, तालीसपात। बं०-तालीसपत्र। म०-लघु तालीसपत्र। ता०-तालीसपत्री। ते०-तालीसपत्रम्। द०-पनियल, पंनियल। मु०-ताम्बट। द्रा०-तालीसपत्रै। कुलु०-टोस। गढ़वा०-बंग। ने०-गोवरिया। फा०-जरनब। अ०-तालीसफर।

ले०-(१) Abies Webbiana (एबीज़ वेब्बियाना)
,,-(२) Texus Baccata (टेक्सस बेकेटा)।
व्यवहार—पत्ते। मात्रा—१-३ माशे।

४७ कङ्कोलम् (शीतलचीनी) पृ० १८३

हि०-शीतलचीनी, कबाबचीनी, कंकोल, कंकोलमरिच । बं०-कांकला। म०-कंकोल, कापूरचीनी । गु०-चणकबाब । क०-कक्कोल, तक्कोल । ते०-कबाकचीनी, क(त)क्कोलालु । म०-प०-कंकोलमिरच । फा०-कबाबह, कबाबा । अ०-हब्बुल उरूस । अं०-Cubebs (क्यूबेबस्) ।
,,-Cubeba Pepper (क्यूबेब पिपर) ।
ले०-Cubeba Officinalis (क्यूबेब आफिसीनेलिस्)

व्यवहार—फल । मात्रा—२-४ माशे ।

४८-४९ गन्धकोकिला, गन्धमालती पृ० १८३

हि०-गन्धकोकिला । सं०-गन्धकोकिला, सुगन्धकोकिला । हि०-गन्धकाकिला । बं०-घोड़वच, गन्धमन्त्री ।

गन्धमालती

सं०-गन्धमालतो, सुगन्धमालती । हि०-गन्धमातरी, गन्धमातरा ।

५० लामज्जकम् (लामज्जक) पृ० १८३

हि०-लामज, लामज्जक, पीलाबाला, गुलाबकांड़ा, करनकुश, घाटजारी । बं०- गन्धवोणा, कारां कुश । म०-लावज, पिवला बाला, पीतबाला, इज्ख़िर । गु०-पीलोबालो, सुगन्धि पीलुं खंड़, सुगन्ध पीलु खड़जल । ते०-तैल वट्टि वेरु । मा०-लामज्जक । फा०-गोरग्याह, इद्ख़िर अ०-इज़ख़र । ले०-Andropogon Iwarancusa (एण्ड्रोपोगन इवरंकुसा)।

श्रेष्ठलामज्जकलक्षणम् ।

दीर्घमूलं दृढं सूक्ष्ममुत्तमं गन्धसयुतम् ।
देशे साधारणे जातं लामज्जं भद्रकं भवेत् ॥ भै० चि० ॥

५१ एलवालुकम् (एलुआ) पृ० १८४

हि०-एलवालु, एलबालुक, एलवा, एलुआ । बं०-एलाबालुक, लालू । म०-कलंगडले । ते०-कुतुर वुडम चेट्टु । यू०-एलयालक ।

५२ कैवर्त्तीमुस्तकम् (केवटीमोथा) पृ० १८४

हि०-केवटमोथा, केवटीमोथा, केसुरिआघास, गुड़तजी । बं०-केउटमुथा, केउदमुथा, केसुरियामुथा । म०-केवडोमोथ, केवड़ीमोथा । गु०-कैवर्त्तमोथा । गु०-केवड़ीमोथ, कोमडीमोथा ।

व्यवहार—जड़ । मात्रा—२-६ माशे ।

९३ स्पृक्का (असवरग) पृ० १८४

हि०-असवरग, स्परग, अस्परक, लंकोदकपुरी, लंकोईकपुरी। बं०-पिण्डिशाक, गन्धपिण्डिम, पिंडिमशाक। म०-कर्पूरवल्ली, कापुरीशाक, गगोना, स्पृक्काकपुरी। ता०-कारितुम्ब, कारोतुम्बै। गु०-स्पृक्का, कपुरी-मधुरी। क०-हिक्के। ते०-स्पृक्कुप्पनेडु द्रव्यमु। उ०-फिरिकी शाक। फा०-तिरीर।

ले०-Trifolium Officinale (ट्रिफोलियम आफिसिनेल)।

९४ पर्पटी (पनड़ी) पृ० १८४

हि०-पपड़ी, पपरी, पनरी, पनड़ी, पानड़ी, पानरी, पद्मावती, जन्तुका। बं०-पर्पटी, पंकपर्पटी। म०-रंगवासा, जन्तुका, जन्तुवासा, पापड़ी। गु०-पापड़ी।

९५ नलिका पृ० १८५

हि०-नलिका, नलुका, नली, पवारी, प्रवाली, यवारी। बं०-नाल्को। म०-नलिकाजाई। गु०-यवारी, वेतललिके, वेसनलिके। ते०-पक्केमुक-सुगन्ध द्रव्यमु।

९६ प्रपौण्डरीकम् (पुण्डेरी) पृ० १८५

हि०-पुंडेरी, पुंडेरिया, पुंडरिया। बं०-पुण्डरिया। म०-पुण्डरीक। गु०-पांडेरवा, पुंडरिया। तै०-पुंडरीक मनुगे विध्यानमु।

इति तृतीयः कर्पूरादिवर्गः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थो गुडूच्यादिवर्गः ॥ ४ ॥

१ गुडूची (गिलोय) पृ० १८५

हि०—गिलोय, गुरुच, गुरिच, गुरच, गुड़बेल, गिलोइ, गुलवेल। बं०-गुलंच, गुरच, गिलो। म०-गुलवेल, गरुड़वेल, गरोल, गिलवे। गु०-गलो, गुलवेल। क०-अमरदवल्ली, अमृतवल्ली। ते०-तिप्पतोगे, तिप्पतिगा, ति-घातिज, गोघुचि। ता०-सिन्दीलकोदि, तिप्पतिमा, शिन्दिलकोडि। उ०-गिरुली। प०-गलाह, गटो, गिलो, गरुम। को०-गरुडवेल, गरोल।

द्रा०-सींदलकुड़ि, । म०-गुलवेल, गिलोइ । द०-गुलवेल, गुलो । मला०-अमृतवल्ली । गोश्रा०-अमृतव्हेल । फा०-गिलोइ, गलोय । अ०-गिलोइ । ले०-Tinospora Cordifolia टिनोस्पोरा कार्डिफोलिया ।

Syn:-Coculus Cordifolius या (कोक्युलस कार्डिफोलियस्) ।

व्यवहार— डण्डी । मात्रा—४—९ माशे ।
सत्त्व । ,, —१—२ माशे ।

कन्दगुडूच्या नामानि गुणाश्च—

अन्या कन्दोद्भवा कन्दामृता पिण्डगुडूचिका ।
बहुच्छिन्ना बहुरुहा पिण्डालुः कन्दरोहिणी ॥
कन्दोद्भवा गुडूची च कटूष्णा सन्निपातहा ।
विषघ्नी ज्वरभूतघ्नी वलीपलितनाशिनी ॥

गुडूचीसत्त्वगुणाः—

गुडूचिसत्त्वं सुस्वादु पथ्यं लघु च दीपनम् ।
चक्षुष्यं धातुकृन्मेध्यं वयःस्थापनकारकम् ॥
वातरक्तं त्रिदोषं च पाण्डुं तीव्रज्वरं तथा ।
वमिं जीर्णज्वरं पित्तं कामलां च प्रमेहकम् ॥
अरुचिं श्वासकासौ च हिक्कां चार्शः क्षयं तथा ।
सदाहं मूत्रकृच्छ्रं च प्रदरं सोमरोगकम् ॥
नाशयेदिति संप्रोक्तं पित्तं मेहं सशर्करम् ॥ रा० र० ॥

मदनविनोदे—

घृतेन वातं सगुडा विबन्धं पित्तं सिताऽऽढ्या मधुना कफं च ।
वातास्रमुग्रं रुबुतैलमिश्रं शुण्ठ्यामवातं शमयेद् गुडूची ॥

२ नागवल्ली (पान) पृ० १८६

हि०—पान, नागरवेल, ताम्बूली । ब०-पान । म०-नागवेल । को०-पानवेल । ते०-तमालपाकु । ता०-वेट्रिली । मु०-नागवेल, नागवेल्य । प०-मा०-नागरवेल । गु०-नागरवेल्य, नागरवेलनां पान । क०-विल्लेदेले । द्रा०-वेत्तिलै । मला०-वेट्ट । फा०-तंबोल, वर्गतम्बोल । अ०-कान, फान ।

अं-Betel Leaf (बिटल लीफ) । ले०-Piper Bettle (पिपर बेटल) ।

व्यवहार—पत्ते, स्वरस । मात्रा-३-६ माशे ।

ताम्बूलगुणा ग्रन्थान्तरे—

ताम्बूलं कटुतिक्तमुष्णमधुरं क्षारं कषायान्वितं-वातघ्नं कफनाशनं कृमिहरं दौर्गन्ध्यदोषापहम् । स्त्रीसंभाषणभूषणं धृतिकरं कामाग्निसंदीपनं-ताम्बूलस्य सखे ! त्रयोदश गुणाः स्वर्गेऽप्यमी दुर्लभाः ॥

श्रीवाटी-अम्लवाटी-सातसी-मालवोद्भवाङ्गरा-अन्ध्रदेशोद्भवपटुलिका-हेसणोयाह्वानां ताम्बूलीनां पर्णगुणाः—

श्रीवाटी मधुरा तीक्ष्णा वातपित्तकफापहा ।
रसाढ्या सुरसा रुच्या विपाके शिशिरा स्मृता ॥

स्यादम्लवाटी कटुकाम्लतिक्ता तीक्ष्णा तथोष्णा मुखपाककर्त्री
विदाहपित्तास्रविकोपनी च विष्टम्भदा वातनिबर्हिणी च ॥

सातसी मधुरा तीक्ष्णा कटुरुष्णा च पाचनी ।
गुल्मोदराध्मानहरा रुचिकृद्दीपनी परा ॥

नाम्नाऽन्याऽङ्गरया सुतीक्ष्णमधुरा रुच्या हिमा दाहनुत्-
पित्तोद्रेकहरा सुदीपनकरी बल्या मुखामोदिनी ।
स्त्रीसौभाग्यविवर्द्धनी मदकरी राज्ञां सदा वल्लभा-
गुल्माध्मानविबन्धजिच्च कथिता सा मालवे तु स्थिता ॥

अन्ध्रे पटुलिका नाम कषायोष्णा कटुस्तथा ।
मलापकर्षा कण्ठस्य पित्तकृद्वातनाशिनी ॥

हेसणीया कटुस्तीक्ष्णा हृद्या दीर्घदला च सा ।
कफवातहरा रुच्या कटुर्दीपनपाचनी ॥

नवानप्राचीनपर्णगुणाः—

सद्यस्त्रोटितभक्षितं मुखरुजाजाड्यापहं दोषकृद्-दाहारोचकरक्तदायि मलकृद् विष्टम्भि वान्तिप्रदम् । यद्भूयो जलपानपोषितरसं तच्चेच्चिरात् त्रोटितं-ताम्बूलीदलमुत्तमं च रुचिकृद्वर्ण्यं त्रिदोषार्त्तिनुत् ।

कृष्णशुभ्रपर्णगुणाः—

कृष्णं पर्णं तिक्तमुष्णं कषायं-धत्ते दाहं वक्त्रजाड्यं मलं च ।
शुभ्रं पर्णं श्लेष्मवातामयघ्नं-पथ्यं रुच्यं दीपनं पाचनं च ।

ताम्बूलीपर्णशिराऽऽदिगुणाः—

शिरा पर्णस्य शैथिल्यं कुर्यात्तस्यास्त्रहृद्रसः । शीर्णं त्वग्दोषदन्तास्यरोगकृत्तु सितासितम् ॥ पर्णमूले भवेद्व्याधिः पर्णाग्रे पापसंचयः । चूर्णपर्णं हरेदायुः शिरा बुद्धिविनाशिनी ॥ आयुरग्रे यशो मूले मध्ये लक्ष्मीर्व्यवस्थिता । तस्मादग्रं च मूलं च मध्यं पर्णस्य वर्जयेत् ॥

नागवल्लीमूलफलगुणाः—

ताम्बूलवल्लीमूलं तु रूक्षोष्णं कफनाशनम् । तीक्ष्णं बल्यं च वातघ्नं पौष्टिकं दीपनं सरम् । श्लेष्मघ्नं पित्तजनकं बृद्धानां चापि शस्यते ॥

नागवल्लीफलं हृद्यं सुगन्धि कफवातजित् ॥ आ० सं० ॥

पर्णभक्षणनिषेधः—

न नेत्ररोगे न च रक्तपित्ते-क्षते न वाते न विषे न शोषे ।

मदात्ययै नापि च मोहमूर्च्छाश्वासेषु ताम्बूलमुशन्ति वैद्याः ॥ सुषेणदेवः॥

३ बिल्वः (बेल) पृ० १८६

हि०-बेल, श्रीफल। ब०-प०-म०-बेल। गु०-बिलि, बिलु, बिलो। क०-बेल्लवन, बेललु, बिलपत्री। ते०-मारडु, मारेडु, पंडुबिल्व, ता०-बिल्व। मा०-बील, बीलो। द्रा०-बिल्वं। सिन्ध०-बिला, कटोरी। कोल०-लोरगसी। गोंड०-मैका महका। अं०-The Bengal Quince (दि बेंगाल क्युन्स)। ले०-Aegle Marmelos (एगल मार्मेलोस)।

व्यवहार—सूखी गूदी। मात्रा—१-२ तोले।

बालं बिल्वफलं स्निग्धं गुरु रुच्यं च दीपनम् ।
ग्राहकं पाचकं तिक्तं लघु चोष्णं च तूवरम् ॥
शूलामवातग्रहणीकफातीसारनाशनम् ।
तरुणं तु फलं बैल्वं ग्राहि तूवरमम्लकम् ॥
स्निग्धं च कटु तीक्ष्णं च उष्णं च लघु दीपनम् ।
पाचकं कफवाय्वोश्च नाशकं हृदयप्रियम् ॥
पक्वं बैल्वं दाहकरं मधुरं गुरु तूवरम् ।
विष्टम्भकारि तिक्तोष्णं ग्राहकं कटु दोषलम् ॥
दुर्जरं वातलं चाग्निमान्द्यकृद् ऋषिभिर्मतम् ।

बिल्वमूलं तु मधुरं त्रिदोषच्छर्दिशूलनुत् ॥
लघु कृच्छ्रहरं वातकफपित्तस्य नाशकम् ।
पर्णानि ग्राहकाणि स्युर्वातनाशकराणि च ॥ नि० र० ॥

अन्ये च पत्रगुणाः—

तत्पत्रं कफवातामशूलघ्नं ग्राहि राचनम् ॥

अस्य पुष्पगुणाः—

निहन्याद् बिल्वजं पुष्पमतिसारं तृषां वमिम् ।

बिल्वमज्जाभवतैलगुणाः—

बिल्वमज्जाभवं तैलमुष्णं वातहरं परम् ।

बिल्वपेशिकागुणाः—

कफवातामशूलघ्नी ग्राहिणी बिल्वपेशिका ॥

काञ्जिकस्थितबिल्वगुणाः—

काञ्जिके संस्थितं बिल्वमग्निसंदीपनं परम् ।
हृद्यं रुचिकरं प्रोक्तमामवातविनाशनम् ॥

४ गाम्भारी (खम्भारि) पृ० १८६

हि०-गम्भारि, कुम्भरे, खंभारि, कंभार, खुमरे, गंभार, गम्हार, कुम्हार । पं-गामारगाछ । गम्बार (गम्हार) । म०-शीवण गंभारी । क०-सीवनी । गु०-सीवन, शवन । ते०-साल्लांगु बुटीचेट्टु, गंभारि पेग्गु मुड्डा। प०-काकोदुम्बरी । आसाम०-गोमरी । गरो०-बोल्को बक । ता०-गुमडी, कुम्भी । गोंड०-कुरसे, । मा०-शेवण, शिवण, कुम्भरेन ।

ले०-Gmelina Arborea (मिलाइन आर्बोरिया)

व्यवहार-छाल । मात्रा-६ माशे से २ तोले तक ।

अस्याः पुष्पगुणाः—

तत्पुष्पं मधुरं शीतं तिक्तं संग्राहि वातलम् ।
कषायं मधुरं पाके पित्तास्रासृग्गदापहम् ॥ शो० नि० ॥

अस्या मूलगुणाः—

गाम्भारी मूलमत्युष्णमहितं मानुषेषु तत् ॥ रा० व० ॥

५ पाटला (पाढ़ल) पृ० १८७

हि०-पाढ़ल, पाढ़र, पाडर, पार्डार, पाढ़रि, पारल, पडरिया, पारुल ।

बं०-पारुलगाछ, पाढ़ल, परलु। म०-पाड़ल, पड़लि, रक्तपाडल। गु०-काकच, रातफुलना पाढ़ल। क०-हादरी। ते०-कलगोरु, कलिगोट्टु-चेट्टु। ता०-पद्रि, पड्री, पादरि। उ०-पाटुड़ि, पटुली। प०-पाढ़ल, पाडल। म०-मा०-मु०-पाडल। कोल०-कंडियोर। सन्ता०-पपरी, पडरे। ने०-परैर। लि०-सिंगियन। गोंड०-उन्तकार, पड्र। भील०-पन, डन,। मा०-पाडल, पडियालु। ले०-(स्टेरिओसपरमम स्वेवियोलेन्स) Stereospermum Suaveolens।

व्यवहार—छाल। मात्रा-१-२ से १॥ तोले तक।

६ घण्टापाटलिः (सफेद पाढ़ल या घंटापाढ़ल) पृ० १८७।

हि०-सफेदपाढ़ल, (पाडर) इत्यादि। घंटापाढ़र, कठपाडर। बं०-घंटा-पारुल। म०-मोखा, मोखाड़ा। गु०-मरखो। क०-मोखदलाई, बीलीय-हादरी। ते०-मोकपु चेट्टु, मुष्कं तुंडु चेट्टु। कोल०-कंडियोर। ने०-प-ररी। भील०-पडुरनी। ले०-(स्टेरिओसपरमम शेलोनियोडिस) Stereospermum Cheloniodes।

व्यवहार-छाल। मात्रा-१ से १॥ तो०

भूमिपाटला-क्षुद्रपाटला-वल्लीपाटलानां गुणाः—

भूपाटला कटूष्णा च बल्या वीर्यविवर्धिनी।
क्षुद्रा तु पाटला श्वेता स्निग्धा च व्रणशोधिनी॥
कफमेदःकुष्ठविषमण्डलानि विनाशयेत्॥
वल्ली पाटलिका चोष्णा वातारोचकपित्तहा।
रक्तदोषं च शोफं च नाशयेदिति कीर्त्तिता॥

७ अग्निमन्थः (अरनी) पृ० १८७

हि०-अरनी, अरणी, अगेथु, गणियारी, गनियार, गनियारी, गनि-यल, गनियाल, अगेथ। ब०-गनिर, गनियारि, गनिरि, आगगाछ, भूतबि-रखी। मा०-अरणी। म०-टाकला, टांकली, थोरएरण। प०-अगेथु, ग-नियार। गु०-अरणी, एरण। क०-वन्निमर, नरुवल। द्रा० तलुताले, वन्हिमरम। फा०-गनियार। अवध०-गन्नियारी। गढ़वाल०-बकरचा।

ता०-इरुमैमुल्लइ, मुन्नै। मा०-चामारि। ते०-घेबुनेल्लि पिनु अनेल्लि, नेलीचेट्टु। मला०-अप्पेल। मु०-नरवेल। उत्क०-अगथिथ।

ले०-Premna Integrifolia (प्रिमना इण्टीग्रिफोलिया)।

व्यवहार—छाल। मात्रा-६ माशे से २ तो०।

क्षुद्राग्निमन्थगुणाः—

लघ्वग्निमन्थस्य गुणाः प्रोक्ता वृद्धाग्निमन्थवत्।
विशेषाल्लेपने चोपनाहे शोफे च कीर्त्तिताः॥

तेजोमन्थगुणाः—

तेजोमन्थगुणाः प्रोक्ताश्चाग्निमन्थसमा बुधैः।
विशेषाद्वातशोफे च प्रोक्ताः पूर्वैश्च सूरिभिः॥ नि० र०॥

८ श्योनाकः (सोनापाठा) पृ० १८८।

हि०-सोनापाठा, सोनापट्टा, शोनाक, सोनपत्ता, टेंटू, अरलु उल्लु, अरलुस। बं०-सोना, शोनागाछ, सोनालु, सोनपत्ती। म०-टेंटु, डिंडा। गु०-अरडुसो, मरस्य। क०-शोण, हेग्गु गाटे। ते०-पेद्दामानु, दुन्दिलमु, पमनिया। उ०-फणफणा, पम्पोनिया। प०-मुलिन, मिरिंगा। ता०-पन, तनतुन। ने०-करुमकन्दा, तोतिल्ल। कोल०-अरेंगो बनु। सन्ता०-बनह तक। गोंड०-धत्ते। ले०-Oroxylum Indicum (ओरोक्सिलम इण्डिकम)।

व्यवहार-छाल। मात्रा-४-१० माशे।

श्योनाकयुगलं तिक्तं शीतलं च त्रिदोषजित्।
पित्तश्लेष्मातिसारघ्नं सन्निपातज्वरापहम्॥ रा० नि०॥

९ शालिपर्णी (सरिवन) पृ० १८८

हि०-सरिवन, गोरीसर, दिन्थरौथ, सालवन। ब०-शालपान, शालपानि, छालानी। म०-शालवण, सालवण डाव। प०-सरिवन, समरे। क०-भुई शेवंरा, मरुवलहोने, मरुलहोन्ने, काडगांजि। ते०-सप्पाकुपोव, सप्पाकपोवा, शियाकुपना, मुय्याकुपोन्ना गितानरम्। उ०-शारपाणि। मु०-सालवन।

ले०-Desmodium Gangeticum (डेसमोडियम गेञ्जेटिकम)।

व्यवहार—जड़, पञ्चाङ्ग। मात्रा—३—९ माशे।

१० पृश्निपर्णी (पिठवन) पृ० १८८

हि०-पिठवन, पिठोनी, दौला, पितवन । ब०-चाकुले, चाकुलिया । म०-सेवरा, पिठवन । प०-पिठोनी, पिठौनी । मा०-पिठवन । गु०-नहानो, समेरवो, गधा समेरवो । क०-नरियल वोने, तोरेमोर । ते०-कोल कुपोला, कोलाकुपन्ना, कोलाकोपेन्ना, कोलापोन्ना, कोलपोन्न । उ०-श्रष्टपर्णि, क्रष्टपर्णी । दे०-भद्र सेंवरा । मु०-दवला । को०-भाल, डाबला, डाबड़ा ।

ले०-Uraria Lagopoides (उरेरिया लागोपोआइडिस) ।

व्यवहार—जड, पञ्चाङ्ग । मात्रा—६ माशे से १ ॥ तो० ।

दूसरी जाति की पिठवन के नाम

हि०-पिठवन, पिठोनी, डाबड़ा, डाबरा । ब०-शंकरजटा । पं०-देतरे-दानी । म०-पृश्निपर्णी । गु०-पितवन, पिठवन ।

ले०-Uraria Picta (उरेरिया पिक्टा) ।

११ बृहती (बड़ी कटेरी) पृ० १८९

हि०-बनभंटा, बनभांटा, बडोकटाई, बड़ोकटेरी, बरहंटा, सरहंटा, बनबैगन, जंगलीबैगन । बं०-व्याकुडति बैगन. व्याकुल, बयाकुरा, तित-बेगुन । म०-डोरली, रानबाङ्गी, थोरडोरली, मोटीडोरली । गु०-उभिरि-ङ्गनी, उभिमोरिङ्गणी । मु०-डोरली विङ्गनी, रिङ्गणो, डोरली । ते०-कुक-माची, कुकुमाची, पेद्दामुलङ्गा, मुलक । ता०-चेरुचुन्ट, पप्पर मुल्ली । क०-गुल्ला, हेग्गुलु । मा०-उभी कटालो । मला०-चिरुचुन्त । प०-कंडयारी । फा०-उसागार, बादंजान् जङ्गली । अ०-बालुंजान् जङ्गली, बादंजान् बरो-दहक । ले०-Solanum Indicum (सोलेनम इण्डिकम)

व्यवहार—पञ्चाङ्ग, जड़ । मात्रा—३—६ माशे ।

अस्याः फलगुणाः—

फलानि बृहतीनां च कटुतिक्तलघूनि च ।
कण्डूकुष्ठकृमिघ्नानि कफवातहराणि च ॥

क्षुद्रबृहतिकागुणाः—

लघ्वी बृहतिका वातश्वासशूलकफापहा ।
अग्निमान्द्यं ज्वरं छर्दिं हृद्रुगामं च नाशयेत् ॥

श्वेतबृहतिकागुणाः—

श्वेता बृहतिका रुच्या कफवातविनाशिनी।
अञ्जनान्नेत्ररोगघ्नी गुणास्त्वन्ये तु पूर्ववत्॥

बृहतीभेदगुणाः—

अन्या बृहतिका तिक्ता कटवी चोष्णा च पित्तला।
रूक्षा रुच्या भेदिका च पाचिन्यग्निप्रदीपनी॥
कफवातहरा प्रोक्ता पूर्ववैद्यैर्मनीषिभिः॥ नि० र०॥

१२ कण्टकारी (भटकटैया) पृ० १८९

हि०-कटेरी, लघुकटाई, कंटकारी, छोटी कटाई, भटकटैया, रेंगनी, रिंगणीकटाली, कट्याली। ब०-कटंकारी, कंटिकारी। म०-रिंगणी, भुई-रिंगनी, लघुरिंघनी। गु०-बेडी भोरिंगणी, बेटीभोरिंगणी। क०-नेल्ल-गुल्लु, मुल्लुचिरगुल, बननेल्ल गुल्ल। ते०-खेटीमुलङ्ग, ब्राकुडिचेट्टु। उ०-कंटमारिष। मा०-कंटाळी। प०-कंडचाली, महोकरी, छमकन बोली, ममोली कटेरी, वरुम्ब। द्रा०-कनकत्तरि। ता०-चुन्दुनघटरी, कन्दनकट्टोरी। मु०—भूरिंगणी। यू०-कटीला, रिंगनी।

ले०- Solanum xanthocarpum (सोलेनम ज़ानथोकार्पम्)

व्यवहार—जड़, पञ्चाङ्ग। मात्रा—२—६ माशे।

चंद्रपुष्पा **सफेद कण्टकारी।** प्रियंकरी, लक्ष्मणा, चन्द्री, चंद्रभा, चन्द्रहासी, श्वेतक्षुद्रा, गर्दभा

हि०-सफेद कण्टकारी, (कंटाई, रेंगनी इत्यादि) बं०-श्वेतकंटकारी। म०-श्वेतरिंगणी) क०-विलिय नेल्ल गुल्लु।

व्यवहार—मूल, फल। मात्रा—१ माशा।

१३ गोक्षुरः (गोखरू) पृ० १९०

हि०-गोखरु, गोखलु, गोखुला, गोखुरु, हरचिकार, हाथीचिकार। ब०-गोक्षुरी, गोखुरी। म०-सराटे, वेडिली। क०-दोड्डुनेग्गिलु, वेडिती-सराटी, नेग्गुलु। गु०-गोखर। ते०—परेरु, पल्लेरु मुल्लु। उ०-गोखरा, गोखुरा। मा०-नेरिंजिल। प०-भकड़ा, मकड़ा, जमोया, भसखड़ा, भखर। द०-कांटेघोखरु। ता०-नेरुंजी। फा०-खरेखसक, तुख्मेखारखस्क, तुख्म-खारखसक। अ०-बज़रउल खलक, बजरुल खस्क।

ले०-Tribulus Terrestris (ट्रिब्युलस टेरेस्ट्रीस)

व्यवहार—पञ्चाङ्ग, फल । मात्रा—६ माशे से १ तोला ।

छोटा गोखरु (गोखुला)

हि०-छोटागोखरु, देशी गोखरु, हाथी चिकार । बं०-छोट गोखरी । म०-सराटे । मा०-गोखरू कांटी । गु०-बेठी गोखरु । ते०-नेग्गिलु । क०-नेजुलमुल्लु । द्रा०-शेप्पु नेरिंजिल ।

बड़ा गोखरू ।

हि०-बड़ागोखरू, बनसिंघाड़ा, दक्षिणी गोखरू, दखिनोगोखरू, पुहाड़ी-गोखरू इत्यादि नाम हैं ।

द्विविधगोक्षुरगुणाः—

स्यातामुभौ गोक्षुरकौ सुशीतलौ बलप्रदौ तौ मधुरौ च बृंहणौ ।
कृच्छ्राश्मरीमेहविदाहनाशनौ रसायनौ तत्र बृहद् गुणोत्तरः ॥रा०नि०॥

अस्य शाकगुणाः—

तिक्तं गोक्षुरकं वृष्यं शाकं स्रोतोविशोधनम् ॥ रा० व० ॥

अस्य बीजगुणाः—

बीजं गोक्षुरकं शीतं मूत्रलं शोथवारणम् ।
वृष्यमायुष्करं शुक्रमेहनुत् कृच्छ्रनाशनम् ॥ आ० सं० ॥

अस्य क्षारगुणाः—

क्षारस्तु गोक्षुराणां तु मधुरः शीतलो मतः ।
स्रोतोविशोधनश्चैव वातघ्नो वृष्य एव च ॥ नि० र० ॥

१४ जीवन्ती । पृ० १९०

हि०-जीवन्ती, डोडी, जीवनशाक । बं०-जीवई, जीयाती, जीवंती । म०-लहान, हरणवेल, लहाण हरन बेलि, करियदाले, करियहाले, करिय-हालि, हरणवेल । गु०-राडारुडी, वाछंटी, मोठीवरवोडी, खरखोडी । क०-होणहाले । ले०-Dendrobium Macrae (डेनड्रोबिअम मक्रेई) ।

व्यवहार—पञ्चाङ्ग । मात्रा ३-६ माशे ।

बृहज्जीवन्तीनामानि—

जीवन्त्यन्या बृहत्पूर्वा पुत्रभद्रा प्रियङ्करी ।
मधुरा जीवपुष्पा च बृहज्जीवा यशस्करी ॥ रा० नि० ॥

हि०-बड़ी जीवन्ती । बं०-भडजीवइ । गु०-मोटी खरखोडी, तृणधारनी । क०-किरियहाले । अं०-Sarsa Parila (शार्शा परेला) ।

अस्या गुणाः—

एवमेव बृहत्पूर्वा रसवीर्यबलान्विता ।
भूतविद्राविणी ज्ञेया वेगाद्रसनियामिका ॥ रा० नि० ॥

स्वर्णजीवन्ती ।

हि०-पीली जीवन्ती, सुनहरी जीवन्ती । म०-हरणवेलो, हेमहरनवेली । गु०-मीठी खरखोटी । क०-होणहाले । ले०-डेनड्राबियम मक्रेई । पटना०-मैनी की टांग ।

अस्याः संस्कृतनामानि—

हेमपुष्पी स्वर्णलता स्वर्णजोवन्तिका च सा ।
हेमवल्ली हेमलता हेमक्षीरी सुमङ्गला ॥ रा० नि० ॥

अस्या गुणाः —

स्वर्णजीवन्तिका वृष्या चक्षुष्या मधुरा तथा ।
शिशिरा वातपित्तासृग्दाहजिद् बलवर्धिनी ॥ रा० नि० ॥

तिक्तजीवन्तीनामानि—

तिक्तजीवन्तिका तिक्ता भद्रा तिक्तप्रियङ्करी ॥

हि०-डोडी । म०-विषदोडी । गु०-कडवो खरखोडो । क०-दोडीकर्गसगे ।

अस्या गुणाः—

तिक्तजीवन्तिका वातकफाजीर्णज्वरापहा ।
शोफघ्नी विषहन्त्री च लेपादाखुविषापहा ॥

१९ मुद्गपर्णी (मुगवन) पृ० १९०

हि०-मुगवन, बनमूंग, जंगली मूंग, रखाल कलमी । बं०-मुगानी । म०-रानमुग, राणमुग । गु०-जंगलोमग, अड़वाड़ मगवेल्य । क०-कोहसरु, काहेसरु । ते०-कारुपेसारा, पिल्लपेसरचेट्टु, पिल्लिये उसरा । प०-मुगवन । द्रा०-सीरपयर । ता०-पानोप्यारे । मु०-अर्कमुत, जङ्गलीमाण्य ।

ले०-Phaseolus Trilobus (फेसिओलस ट्रिलोबस) ।

व्यवहार—पञ्चाङ्ग । मात्रा—६ माशे से १ तोला ।

१६ माषपर्णी (मषवन) पृ० १११

हि०-मषवन, माषोनो, बनउड़दी, जंगली उड़द, बनउर्दी, बनउड़द । बं०-माषाणी, माषानी, वनमाष, मासवनी । म०-रानउड़दी, राणउड़िद । गु०-जंगली अड़द, अड़वाड़, अड़दवेल । क०-रालोडिडु, काऊट्टु, काडुलंद । ते०-रानोडिंडु, कारुमिनुरु, कारुमिनसु ।

ले०-Teramnus Labialis (टिराम्नस लाबियलिस) ।

व्यवहार—पञ्चाङ्ग । मात्रा—३—७ माशे ।

१७-१८ शुक्लरक्तैरण्डौ (सफेदएरण्ड, लालएरण्ड) पृ० १११

एरण्डः (एरण्ड)

हि०-अरंड, एरंड, एरंडी, अंड, अंडी, अंटी, रेड़ी, रेंरी, लेड़ी, भेडा। बं०-भेरेंडा, भेरेंडा, भेरांडा । म०-एरंड । गु०-एरडो, एरंडु, आंडलके । ते०-आमिदपुचेट्टु, आमुडामु । तु०-करचक । क०-एरडु, आंडकले । फा०-बेदंजीर, तुख्मेबेदंजीर । अ०-खिरवा, हकब्बुल खिरवा ॥

ले०-Ricinus Communis (रिसिनस् काम्युनिस्) ।

व्यवहार— जड़ । मात्रा—६ माशे से २ तोला ।
बीज । „—२ से ७ दाने ।
तेल । „—६ माशे से १॥ तोला ।

एरण्डमूलगुणाः—

एरण्डमूलं शूलघ्नं वृष्यं वातकफापहम् ॥ शो० नि० ॥

एरण्डपुष्पगुणाः—

पुष्पं हन्त्यस्य बध्मानिलकफगुदजान् गुल्मशूलोर्ध्ववातान् ॥

एरण्डतैलगुणाः—

एरण्डतैलं मधुरं गुरु श्लेष्माभिवर्धनम् ।
वातासृग्गुल्महृद्रोगजीर्णज्वरहरं परम् ॥ रा० व० ॥

। सफेद एरण्ड

हि०-सफेद अरंड (एरण्ड) इत्यादि । बं०-शादारेड़ी, श्वेत भेरेण्डा । म०-पारस मोठ्या, पाढरा एरण्ड । गु०-धोलो एरंडो, धोळ एरंडो ।

अस्य भेदो बृहत्स्थूलो रसे पाके गुणाधिकः ॥

लाल एरण्ड ।

हि०-लाल अरंड (एरंड) इत्यादि । बं०-लाल भेंडा, लोहित एरंड । म०-चाणाबारीक । गु०-रातो एरंडो । ते०-आमिदपुचेट्टु ।

अतः परं कचिदाकारकरभस्यापि गुणविवेचनम् ,

तद् यथा—

आकारकरभश्चैव कल्लकोऽथ ह्यकल्लकः ।
अकल्लकोष्णो वीर्येण बलकृत्कटुको मतः ।
प्रतिश्यायं च शोथं च वातं चैव विनाशयेत् ॥

हि०-अकरकरा । बं०-अकोरकोरा । म०-अक्कलकरा । गु०-अक्कलकरो । क०-अक्कलकरा । अं०-Pallatory root (पेलेटरी रूट्) ।

ले०-Anacy Cluspere thrum (एनेसाई क्लसपेरे थ्रूम) । अ०-आकरकरहा ।

व्यवहार—जड़ । मात्रा—३ माशे ।

१९-२० शुक्लरक्तार्कौ (सफेद आक, लाल आक) पृ० १९२

अर्कः (आक)

हि०-आक, अर्क, अकाव, अकवन, अकौआ, मदार, आग, आकोन्द, आकन । बं०-आकन्द, आकन्दा । म०-मादार, रूई । गु०-आकड़ा, आकदामु । क०-अक्के, यक्कदगिड । प०-आक । मा०-आकड़ो, आकन्द । ते०-जिल्लेडु, मान्दारमु । द्रा०-योरिक्कं । फा०-ख़रक, ख़ुर्ग । अ०-उशर । सन्ता०-अहुडना । ने०-औक । मु०-अकर, रूई, अकन्दा, ता०-यरकम, एरुकम ।

ले०-(१) Calotropis Gigantia (केलोट्रोपिस जाइगेंटिया)
,,-(२) Calotropis Procera (केलोट्रोपिस प्रोसिरा)

व्यवहार—जड़की छाल, फूल । मात्रा—१ माशा से ३ माशे ।

अर्कमूलत्वग्गुणाः—

अर्कमूलत्वचा स्वेदकरी श्वासनिबर्हणी ।
उष्णा च वामिका चैव ह्यपदंशविनाशिनी ॥

लाल आक

हि०-आक, अकवन, अकौआ, लाल आक, मदार, इत्यादि । बं०-लाल आकन्द, गौर आकन्द । गु०-रातोमदार । ते०-नीलजिल्लडै घोली । म०-रूई । क०-मांदार अक्के ।

लै०- Calotropis Gigantia (केलोट्रोपिस जाइगेंटिआ).

सफेद आक

हि०-सफेद आक, (मदार) इत्यादि । बं०-श्वेताकंद, श्वेतआकन्द । म०-पांढरी रूई । क०-मंदार यक्के, विलियक्कदगिड़ । गु०-धोलो आकड़ो । ते०-जिल्लेट्टु चेट्टु, नेल्लजिल्लेड्डु । मा०-धोलो आकड़ो । द्रा०-वल्लेरिक्कं ॥

लै०-Calotropis Procera (केलोट्रोपिस प्रोसिरा)

२१ सेहुण्डः (थूहर) पृ० १९२

हि०-थूहर, सेंहुड, सेंहुर, सेंड, मुठरियासीज, मुठियासीज, सीज, सीझ, थोहर । बं०-मनसागाछ, सिजवृक्ष । म०-निवडुङ्ग, सावरनिवडुंग, कांटे निवडुंग, फणीचे निवडुंग, विकांडी । क०-निवडुंगु । ते०-चेंमुडु, चमुड़चेट्टु । गु०-थोर, कटाली, कंटालो, थोरदांड़लियो, हाथ लोत्तरधारी, नानोपरदेशी, खुरासानी थोर । ता०-एलाकुल्लि । फा०-लादनाम्, अ०-ज़कुमफर्ख्युग्न ।

अं०- Milks Hedge (मिल्क्स् हेज) ।

,,-Prickly Pear (प्रिक्ली पियर) ।

लै०- Euphorbia Neriifolia (युफोर्बिया नेराइफोलिया)

व्यवहार—दूध । मात्रा—२—६ रत्ती ।

अस्य पत्रगुणाः—

सेहुण्डस्य दलं तीक्ष्णं दीपनं रेचनं हरेत् ।
आध्मानाष्ठीलिकागुल्मशूलशोथोदराणि च ॥

थूहर भेद ।

हि०-थोहर, थूहर, सेहुंड़, झलरिया सीज । बं०-लंकासिज । गु०-थोरदंदलियो । ता०-तिरुकल्लि, कोम्बुकल्लि । ते०-जेमुद ।

ले०–Euphorbia Tirucalli (युफोर्बिया टिरुकल्लि) ।

२२ शातला पृ० १९३

हि०–सातला, थूहरभेद, पीलेदूधका थूहर । बं०–सिजविशेष, मनसाविशेष । म०–निवडुङ्गाचे भेद, पीतनिवडुङ्ग । मु०–वडिल सोनुली । गु०–सीकेकाई, चीकाबोई, साथेरं । द०–शिकेकाई । को०–शेरवृत्त । क०–विडिलसोनुली, हिरिय चटक नख । ते०–सम्बरेनु । फा०–एशन, । अ०–सातर ।

कोई श्रीवल्ली (सिकाकाई) के सातला मानते हैं । कोई २ निघंटुकार इसका लेटिन नाम (ओरिगेनम वलगेरिस) Origanum Vulgaris बतलाया है, किन्तु भ्रमात्मक जान पड़ता है ।

२३ कलिहारी पृ० १९३

हि०–कलिहारी, कलिकारी, करियारी, कलीहंस, कलारी, लांगुली, करिहारी, नाटका बच्छनाग । बं०–ईशलाङ्गला, विषलाङ्गला, विषलाङ्गुली । म०–कललावी, बागचवका, खड्यानाग, बागचपका, नागकरिया । गु०–कलगारी, दुधियो बछनाग । क०–लाङ्गलिके, राडागारी, लांगुली । को०–कलवी, खडियानाग । प०–कलेसर, करियारी । मा०–राजाराड । ते०–पेन्नवेदुरु, अग्निशिखा, अडविनामी । ता०–कलई पेकि शंगु ।

ले–Gloriosa Superba (ग्लोरीओष्मा सुपर्बा)

व्यवहार–जड़ (विष) । मात्रा–१–४ रत्ती ।

अस्य शुद्धिप्रकारः–

लाङ्गली शुद्धिमायाति दिनं गोमूत्रसंस्थिता । (बृ० यो० त०)

२४–२५ श्वेतरक्तकरवीरौ (सफेदकनेर-लालकनेर) पृ० १९३

करवीरः (कनेर)

हि०–कनेर, कनइल, कनैल, कनेल, करबीर । बं०–करवी । म०–कणेर, कण्हेर फुलांची, हयमार । क०–वाकणलिंगे, फणिगदगिड़ । ते०–गन्नेरु, कनेरचेट्टु । गु०–कणेर । प०–कनिर, कनेर, गन्हीर । ता०–अलरी । मा०–अलरी । फा०–खरजह राह, खरज़ोहरा । अ०–सुमुल, हिमारकदली, बकलो सुम्मुल् हिमार ।

ले०–Nerium Odorum (नेरियम ओडोरम्)

हयारिः पञ्चधा प्रोक्तः श्वेतो रक्तश्च पाटलः । पीतः कृष्णः समुद्दिष्टः ।

व्यवहार—जड़ (विषैला) । ६ रत्ती से २ माशे ।

लाल कनेर ।

हि०—लाल (कनेर, कनइल) इत्यादि । बं०—लालकरवी, रक्तकरवी । म०—रक्तफुलांची, तावड़ी कण्हेर । क०—कोगग लिङ्गे । गु०—रातोकनेर, रातफुलनी कनेर ।

सफेद कनेर ।

हि०—सफेद (कनेर, कनइल) इत्यादि । बं०—श्वेतकरवी । म०—श्वेतकणेर, श्वेतफुलांची पांढ़री कण्हेर । क०—वाकण लिंगे । गु०—धोलीकनेर, धोळा कणेर, धोलाफूलनी ।

२६ धत्तूरः । (धतूरा) पृ० १९४

हि०—धतूर, धतूरा, धातूर, धातूरा । बं०—धुतुरा, धुत्तूरा । म०—धोत्रा, धोतरा । गु०—धन्तुरो । क०—मदकुणिके, मदकुणिगे । ते०—उम्मेत्त चेट्टु, उम्मेत्तचेट्टु, नल्लउन्मेत् चेट्टु, नाल्ला उम्मीतो । ता०—कारुउमते, कारुउभते, उमतताई । फा०—तातूरह, तातूरा । अ०—जोज़ मासील, जोजुल मासले ।

ले०—Datura Stramonium (डाटुरा स्ट्रामोनियम) ।

,,–Datura Alba (डाटुरा एल्बा) ।

,,–Datura Festuosa (डाटुरा फेस्टुओसा) ।

,,–Datura Metal (डाटुरा मेटल) ।

व्यवहार—शुद्धबीज । मात्रा—½ से २ रत्ती ।

सितनीलकृष्णलोहितपीतप्रसवाश्च सन्ति धत्तूराः । सामान्यगुणोपेतास्तेषु गुणाढ्यस्तु कृष्णकुसुमः स्यात् ॥ धत्तूरकौ च सविषौ तिक्तोष्णौ मोहकारकौ । कुष्ठदुष्टव्रणहरौ कामलाऽर्शोविषापहौ ॥ ग० नि० ॥

कृष्णधत्तूरकनामानि—

कृष्णधत्तूरकः सिद्धः कनकः सचिवः शिवः ।
कृष्णपुष्पो विषारातिः क्रूरधूर्त्तश्च कीर्त्तितः ॥ रा० व० ॥

राजधत्तूरनामानि—

राजधत्तूरकश्चान्यो राजधूर्त्तो महाशठः ।
निस्त्रैणिपुष्पको भ्रान्तो राजस्वर्णः षडाह्वयः ॥

अस्य शोधनविधिः—

धत्तूरबीजं गोमूत्रे चतुर्धा प्रोषितं पुनः ।
कण्डितं निस्तुषं कृत्वा योगेषु विनियोजयेत् ॥ बृ० यो० त० ॥

२७ आटरूषः (अडूसा) पृ० १९४

हि०-अडूसा, अडुस, अरुस, बाकस, विसोंटा, रूसा, अरूशा । बं०-वासक, बाकस । म०-अडुलसा, अडूळसा । मा०-अडुसो । द्रा०-आड़ादोडे । गु०-अरडुसी । क०-आडसोगे, आडुसोगे । ते०-आडासारं, अड्डसरमु अड्सर, आडापाकु । ता०-अधडोडे, आडाडोडाइ । प०-बासा । मु०-अडुलसा, अडुलसो । फा०-बंस । अ०-हूकारिन । मला०-अटालोटकम्, आधाटोड वासीका ।

ले०-Adhatoda Vasika (आधाटोडा वासिका) ।

व्यवहार—जड़ की छाल, पत्ते । मात्रा—१-४ माशे ।

२८ पर्पटः (पित्तपापड़ा) पृ० १९४

हि०-पित्तपापड़ा (रा), दवनपापड़ (र), दवनपापड़ा (रा), दोनपापड़ा, शाहतरा, धनपप्पड़ । बं०-क्षेतपापड़ा, सेतपापड़ा, श्वेतपापड़ा, वनसुलफा । म०-सिरपटी । सिन्ध०-शात्रा । को०-धरमरे । ता०-तुरा । गु०-पित्तपापड़ो, खड़सलियो, पीठपापड़ो, क्षेत्रपर्पट । क०-पर्पाटक, कल्लु सब्ब सिग्गे । उ०-जड़पांपुड़ा । ते०-चतरसी । फा०-शाहतराह, श्याहतरा । अ०-शाहतरज, बकलतल मलीज ।

ले०-Fumaria Parviflora (फमेरिया परवीफ्लोरा ।

व्यवहार—पञ्चाङ्ग । मात्रा-६-९ माशे ।

अस्य शाकगुणाः—

अस्य शाका तु संग्राही शीता वातकरा लघुः ।
तिक्ता रक्तरुजं पित्तं ज्वरं तृष्णां च नाशयेत् ।
कफं भ्रमं च दाहं च नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥ नि० र० ॥

२९ निम्बः (नीम) पृ० १९४

हि०- नीम । बं०-निम, निम गाछ । म०-निंब, लिंब, कडुनिंब । गु०-लिंबड़ा, लिम्ब । क०-बेउ बेड । ते०-वेया, होयचेट्टु, वेप्पचेट्टु,

येप्पचेट्टु । ता०-वेपुम् मरम, वेहुम मरम, वेम्बु वेप्पम । को०-बालंत निंब । म०-वेप्प । सिंहली०-कोहुम्बा । ब्रह्मी०-तामाविन । फा०-नीब । अ०-आज़ाद् दरख्त । अं०-Margosa (मार्गोसा) ।

ले०-Melia Azadirachta (मेलिआ आज़ाडीराक्टा)

व्यवहार-छाल, पत्ते, फूल, फल । मात्रा-३ माशे से १ तोला ।

अस्य कोमलपल्लवगुणाः—

कोमलः पल्लवश्चास्य ग्राहको वातकारकः ।
रक्तपित्तं नेत्ररोगं कुष्ठं चैव विनाशयेत् ॥ नि० र० ।

अस्य जीर्णपत्रगुणाः—

जीर्णपर्णं विशेषेण वणनाशकरं मतम् ॥ नि०-र० ॥

अस्य पुष्पगुणाः—

निम्बवृक्षस्य पुष्पाणि पित्तघ्नानि विशेषतः ।
तिक्तानि च कृमिघ्नानि तथा कफहराणि च ॥

अस्य सूक्ष्मशाखादिगुणाः—

निम्बस्य सूक्ष्मशाखा तु कासश्वासार्शगुल्महा ।
कृमिमेहहरा प्रोक्ता फलं चामं लघु स्मृतम् ।
स्निग्धं च भेदकं चोष्णं मेहकुष्ठविनाशकम् ॥

अस्य पक्वफलगुणाः—

निम्बस्य पक्वं मधुरं सुतिक्तं स्निग्धं फलं शोणितपित्तरोगे ।
कफे प्रशस्तं नयनामयघ्नं क्षतक्षयघ्नं गुरु पिच्छिलं च ॥

अस्य बीजस्य मज्जागुणास्तैलगुणाश्च—

निम्बबीजस्य मज्जा तु कुष्ठघ्नी कृमिनाशिनी ।
निम्बतैलं तु कुष्ठघ्नं तिक्तं कृमिहरं परम ॥

अस्य पञ्चाङ्गगुणाः—

निम्बवृक्षस्य पञ्चाङ्गं रक्तदोषहरं मतम् ।
पित्तं कण्डूं व्रणं दाहं कुष्ठं चैव विनाशयेत् ॥

३० महानिम्बः (बकायन) पृ० १९९

हि०-बकायन, बकाइन, महानीम । बं०-घोड़ानिम, महानिम, बन-निम । म०-कडुनिंब, कवडया निंबंचा झाड़, बकाणनिंब, बकाणीनिंब,

लिंबरा। गु०-बकान, बकान्य। क०-महाबेड, वेट्टदवेउ। ते०-पेद्दबेया, गंगाराविचेट्टु, तुरक वयक, कांडवेया, पेद्द वेप्प चेट्टु, तुरक वेप्प। ता०-मलाइ वेतु वावेप्पम। प०-धेक, बकइन। द्रा०-पिरुम्मरं। कोल०-गरनिम। आसाम०-थमगा। ने०-बकैनु। सिन्ध०-बकयुन, ड्रेक। द०-गौरीनीम। मु०-महालिम्बो, ड्रेक। फा०-आज़ाद दरख्त। अ०-बान्।

अं०-Persian Lilac (पर्सियन लिलाक)

„-Indian Lilac (इण्डियन लिलाक)

ले०-Melia Azadarach (मेलिया एज़ेडेरक)

व्यवहार-छाल, बीज। मात्रा-६ माशे से १ तोला।

महानिम्बभेदकैडर्यस्य नामानि—

कैडर्योऽन्यो महानिम्बो रामणो रमणस्तथा।
गिरिनिम्बो महारिष्टः शुक्लसारोऽलकाह्वयः॥

हि -मीठानीम, कृष्णनिम्ब, वरसंग। बं०-घोड़ानिमविशेष। म०-कढ्यानिंब, घाणेरानिंब। गु०-मीठो लिंबड़ो। क०-कयाहैवेड। तै०-कारीवेया। लै०-Murya Korniji (मारेया कोर्निजिआई)।

अस्य गुणाः—

कैडर्यः कटुकस्तिक्तः कषायः शीतला लघुः।
सन्तापशोषकुष्ठास्रकृमिभूतविषापहः। रा० नि०॥

३१ पारिभद्रः (फरहद) पृ० १९६

हि०-फरहद, जलनीम, पंजीरा, फर्द। बं०-पलित मान्दार, पालोदामादार, पालीथा। म०-पांगरा, पानरो, पंजीर, पांगरो। को०-पारिंगा। गु०-पांडेरवो, पनरवेस। क०-हरिवाल, भरुकमरम्, हलि वाणद मर। ते०-मोदुगु, वरिदेचेट्टु, वारिजमु, मुळमोति चेटटु। द्रा०-पंजीर, कल्याणमुरंगे। ता०-मुराक, मुरुककरम। मा०-फरहद। कोल०-वरसिंग।

ले०-Erythrina Indica (एरिथ्रिना इण्डिका)।

व्यवहार-छाल, पत्ते, फूल। मात्रा-२ माशे।

अस्य पुष्पगुणाः—

पुष्पं पित्तरुजं हन्ति कर्णव्याधिं विनाशयेत् ।

३२-३३ काञ्चनारो रक्तकाञ्चनारश्च (सफेद कचनार, लालकचनार) पृ० ११९

हि०-कचनार, कंचनार, कचनाल, कोलियार । बं०-कांचन, कांचनार । म०-कोरल, कांचनी । गु०-कोचली, चंपाकाटी । क०-कंचनाल, कोचाले । ते०-देवकांचन, देवकांचनमु । को०-कोचाले । कोल०-सिंग्य । सन्ता०-जिग्य । ने०-टकी । मु०-कोविदार । ता०-सेगपु मुंथरी ।

ले०-Bauhinia Variegata (बौहिनीया वेरीगेट)

व्यवहार-छाल । मात्रा-६ माशे से २ तोले ।

काञ्चनारस्त्रिविधः श्वेतपुष्पः, रक्तपुष्पः, पीतपुष्पश्चेतिभेदात् ।

श्वेतपुष्पकाञ्चनारगुणाः—

श्वेतस्तु काञ्चनो ग्राही तुवरो मधुरः स्मृतः ।
रुच्यो रूक्षः श्वासकासपित्तरक्तविकारहा ॥
क्षतप्रदरनुत् प्रोक्तो गुणाश्चान्ये तु रक्तवत् ।

पीतपुष्पकाञ्चनारगुणाः—

पीतस्तु काञ्चनो ग्राही दीपनो व्रणरोपणः ।
तुवरो मूत्रकृच्छ्रस्य कफवाय्वोश्च नाशनः ॥

काञ्चन्याः (छोटे कचनारके) गुणाः—

काञ्चन्युक्ता शीर्षरुजं त्रिदोषं च विनाशयेत् ।
स्तन्यस्य बर्धनकरी ऋषिभिः सूक्ष्मदर्शिभिः ॥ नि० र० ॥

३४ शोभाञ्जनः (सहिंजना) पृ० ११६

हि०-सहिंजना, सहिंजन, सहिजन, सैंयन, सहजन, सहजना, सैजिन, सैजिना, मुगना, मुनगा, सुरजना । बं०-सजिना, सजिनेरना, सजड़ो । म०-शेवगा, कालाशेवगा शेगट । मा०-सहिंजनो, सहिंजणो । को०-शेगवा । क०-करियनुगि, विलियतुग्गि, कम्पनेयनुगी नुग्गे, देलीयनुगी । ते०-मुनगा, मुलंगा, मुनग, सुतुगचेट्टु । गु०-सरगवा, सरगवो । ता०-मोरंग, मोरुङ्ग, मोरुङ्गा । मु०-शेगव, शेगवा । द्रा०-मुरंगे । प०-सोहञ्जना । मला०-मुरिङ्ञा । ब्राह्मी०-डोंडलो । यू०-सिनोह । फा०-सर्वकोही ।

अं०-Horse Radish Tree (हार्स रेडिश ट्री)।
,,-Drum Stick (ड्रम स्टिक)।

ले०-Moringa Pterygosperma (मोरिङ्गा पटेरीगासपरमा)।
व्यवहार—छाल, बीज । मात्रा—३—६ माशे ।

शोभाञ्जनस्त्रिविधः, श्यामश्वेतरक्तपुष्पभेदाद्, एषु श्यामपुष्पः शोभाञ्जनोऽसुलभो भवति ।

शिग्रुपुष्प-फल-शाकानां गुणाः क्रमेण—

शिग्रोः पुष्पं तु कटुकं तीक्ष्णोष्णं स्नायुशोथनुत् ।
क्रमिकृत् कफवातघ्नं विद्रधिप्लीहगुल्मजित् ॥
शोभाञ्जनफलं स्वादु कषायं कफपित्तनुत् ।
शूलकुष्ठक्षयश्वासगुल्महृद्दीपनं परम् ॥
शिग्रुशाकं हिमं स्वादु चक्षुष्यं वातपित्तहृत् ।
बृंहणं शुक्रकृत् स्निग्धं रुच्यं मदक्रमिप्रणुत् ॥

३५-३६ श्वेतपुष्पा नीलपुष्पा चापराजिता (कोयल) पृ० ११६

हि०-अपराजिता, कोयल, कालीजरे, विष्णुक्रान्ती, कवाठेठी, कौआठेठी । बं०-अपराजिता । म०-गोकर्णी, सुपली । क०-गिरिकर्णिके । मु०-काजली, गोकरण । ता०-कक्कनमकोडी । प०-धनन्तर । गु०-गरनी, गरानी । ते०-दिनतन, दिनतान ।

ले०-Clitoria Ternetea (क्लीटोरिया टरनेटिया)।
व्यवहार—जड़, बीज । मात्रा—२॥ से ५ रत्ती ।

सफेद अपराजिता ।

हि०-सफेद अपराजिता, सफेद कोयल इत्यादि । बं०-श्वेतअपराजिता । म०-गोकर्णी सफेद । प०-सफेदकोयल । क०-विलियगिरिकर्णिके । म०-पांढ़री सुपली ।

नीली अपराजिता ।

हि०-नीली अपराजिता, कालीकोयल । ब०-अपराजिता । म०-गोकर्णी, नीलसुपली । गु०-गरणी । प०-कोयल । मा०-कोयली । ते०-दिंटैन-

वित्त । क०-कटलेवल्लि । द्रा०-करप्पुका कट्टान विरै । फा०-अश खोस । अ०-माज़रि यून ।

३७-३८ सेन्दुवारो निर्गुण्डो च (सम्भालू-नीलसम्भालू) पृ० १९६

हि०-सम्भालु, सम्हालु, सेन्दुआर, सेनुआर, सिनुभार, मेवड़ी, मेउड़ी, सेन्दुआरि, सिहरु, सिओली । बं०-निशिन्दा, निसिन्दा । म०-लिंगुड़, लिंगुर, निगड़ी पाढ़री निगुंडी, निर्गुडी । गु०-धोलीनगोड़, नागड्य, नगोड़ । ता०-निर्नोचा, मनजाप । मु०-निर्गुडी, हरसिंगार । द्रा०-सुम्बालि, सान्वाली, वल्लेनोचिल्ल । को०-नगूड़, निगूड़, सेन्दुवार । ते०-वविल्लि, गविलि, वंविल्ली, तेल्ल वाविली, तेलावाविली । क०-विलिय-लोके, विलियलुक्कि । प०-मा०-सम्भालु । फा०-परंगुष्ट, पञ्जंगुष्ट, पञ्जन-किस्त । अ०-असलक ।

अं०-Five Leaved Chaste Tree (फाइव लीव्ड चेस्ट ट्री) ।

ले०-Vitex Trifolia (विटेक्स ट्रिफोलिया) ।

व्यवहार—बीज । मात्रा —१-३ माशे ।

निर्गुंडी ।

हि०-निर्गुंडी, सेनुआर, मेवड़ी, मेउड़ी, सम्भालु । ब०-निशिन्दा, नील-निशिन्दा । म०-काली निर्गुडी । गु०-कालाफुलना नगोड़ । क०-करियल्लो, करलक्कि । ते०-तेला वाविलो, तेल्ल वाविलि, सिन्दुवारमु । ता०-नोच्चिली, नोच्चिचिंडुवारम् । मा०-लिंगूर । द्रा०-शांवालि । फा०-सिसवान । अ०-इसलाक ।

ले०-Vitex Negundo (विटेक्स निगुंडो) ।

व्यवहार—पत्ते, बीज । मात्रा—३-६ माशे ।

कर्त्तरीनिर्गुंडीगुणाः—

निर्गुण्डी कर्त्तरीयुक्ता कट्वी तिक्ता कफापहा ।
वातं क्षयं च शूलं च कण्डूं कुष्ठं च नाशयेत् ॥

अरण्यनिर्गुण्डीगुणाः—

प्रोक्ता चारण्यनिर्गुण्डी पथ्या पित्तज्वरं हरेत् ।
विषं च गृध्रसीवातं नाशयेद्व्रणकारिणी ॥

पर्णं चास्यास्तु कटुकं चाग्निदीप्तिकरं लघु।
कृमीन् कफं च वातं च नाशयेदिति कीर्त्तितम्॥
कटु चोष्णं पुष्पमस्याह्तिक्तं कृमिकफापहम्।
प्लीहां गुल्मं च वातं च कुष्ठं शोथं च नाशयेत्॥
अरुचेर्नाशकं प्रोक्तं कण्डूं चैव विनाशयेत्॥ नि० २०॥

३९ कुटजः (कूड़ा) पृ० ११७

हि०-कूड़ा, कोरया, कुड़ा, कोरैयां, कुरैयां। ब०-कुरचि, कुड़चि, कुटराज, करचीं। म०-कुड़ा, कवैया। गु०-कडि, कडो। क०-कोडसिगे, कोडमुरक, कोडसिगेय मरनु। ते०-अंकुडु चेट्टु, अंगिश चेट्टु, तुम्मिकचेट्टु, चंगलकुष्ठ। उ०-कुडिया। ता०-वेप्पाले, कुलप्पलइ विरै। मल०-वेनपाला। मु०-पन्ध्रकुड़ा, धौलकुड़ा। फा०-जवाने कुजस्खे तल्ख। अ०-लसनुल्लासफिरूलमुर, तिवाज।

अं०-Oval Leaved Rose Bay (ओवल लीवड रोज बे)।

ले०-Holarrhena Antidy Senterica (होलार्रहेना एण्टिडिसण्टेरिका)।

व्यवहार—छाल।। मात्रा—६ माशे से १ तोला।

अस्य पुष्पशिम्बीभवशाकयोर्गुणाः—

तत्पुष्पं शीतलं तिक्तं कषायं लघु दीपनम्।
वातलं कफपित्तास्रकुष्ठातीसारजन्तुजित्।
तस्य शिम्बीभवं शाकं व्यञ्जनं चामवातजित्।
रुच्यं कफघ्नं रक्तातीसारकुष्ठक्रिमीञ्जयेत्॥ म० नि०॥

४०-४१ करञ्जो घृतकरञ्जश्च (करञ्ज (नक्तमालः) करञ्जभेद) पृ० ११७

हि०-करञ्ज, करञ्जवा, करञ्चा, चिलविल, करुऐनी, दिठौरा। ब०-डहर करञ्ज। म०-करञ्जाचे, कणगच, कनगच, कीड़ामार, चोपड़ा करञ्ज। ते०-कंज, कानुगचेट्टु, कामुनचेट्टु क्रनुग। ता०-पंगम मरम,। मला०-पोंगम, उन्नमरम। पं०-सूकचेइन। क०-तपसीय मरन, हुलगली। गु०-कणभो।

अं०-Smooth Leaved Pongamia (स्मूथ लीव्ड् पोंगोमिया)।

ले०-Pongamia Glabra (पोंगेमिया ग्लेबरा) ।

व्यवहार—छाल, बीज । मात्रा—१—६ माशे ।

अस्य पुष्पाङ्कुरयोर्गुणाः—

पुष्पमुक्तं चोष्णवीर्यं पित्तवातकफापहम् ।
अस्याङ्कुरा रसे पाके कटुकाश्चाग्निदीपकाः ॥
पाचकाः कफवातार्शःकुष्ठक्रिमिविषापहाः ।
शोथनाशकराः प्रोक्ता ऋषिभिः सूक्ष्मदर्शिभिः ॥ नि० र० ॥

करञ्जतैलगुणाः—

करञ्जतैलं तीक्ष्णोष्णं कृमिहृद्रक्तपित्तकृत् ।
नयनामयवातार्त्तिकुष्ठकण्डूव्रणप्रणुत् ॥
वातनुत् पित्तकृत् किञ्चिल्लेपनाच्चर्मदोषनुत् ॥ आ० सं० ॥

महाकरञ्जगुणाः—

महाकरञ्जकस्तीक्ष्णः कटुश्चोष्णश्च तिक्तकः ।
कण्डूविचर्चिकाकुष्ठत्वग्दृग्विषव्रणापहः ॥

घृतकरञ्जगुणाः—

प्रोक्तो घृतकरञ्जस्तु कटुकोष्णो व्रणापहः ।
वातं च सर्वत्वग्दोषं विषं चार्शो विनाशयेत् ।
करञ्ज इव सम्प्रोक्ता गुणास्त्वन्ये भिषग्वरैः ॥

गुच्छकरञ्जगुणाः—

गुच्छनामा करञ्जः स्यादुष्णस्तिक्तः कटुः स्मृतः ।
विचर्चिकावातविषकण्डूकुष्ठार्शोनाशनः ।
त्वग्दोषनाशकश्चैव ऋषिभिः परिकीर्त्तितः ॥

पूतिकरञ्जगुणाः—

पूतिकरञ्जकः प्रोक्तो गुच्छपूर्वकरञ्जवत् ॥ नि० र० ॥

पूतिकरञ्जपत्रगुणाः—

पूतिकरञ्जजं पत्रं लघुवातकफापहम् ।
भेदनं कटुकं पाके वीर्योष्णं शोफनाशनम् ॥

करंज (कंटकरंज)

हि०-करंज, करंजवा, करंजुआ, कंटकरंज (जा), कटकरेज, कठकरेज, कंजा, करंजु, कठकलेजा, सागरगोटा । बं०-कांटा करंज, लताकरञ्ज, नाटाकरञ्ज, नटुकोरञ्जा । म०-सागरगोटा, करञ्जिका, तिरिगिच्छि । गु०-कांचका, काकचिया, काकाचिया, गाजमा, कचकी । क०-करञ्जभेदु, गजकै, गजगकगी । ते०-कचकाइ, गुच्छेपिका, गचचकाज़ा, गजीक्षय । मु०-सागरगोटा, सागरगोटी । मा०-किणगच, कणगच कुलगच । पं०-करञ्जवा, करञ्जुवा । गु०-कांकर, कांकच, काकचर्माङ्ग । ता०-कज़हर, शिक्कायकलिचि, कलीवल्ली शिक्कय, गेच्चक्केय । मला०-किनान चिक्कुरु । अवध०-कटकरोंजा । द०-गचका, गुडगोग । फा०-खायइबलीस, खायह इबलीस । अ०-अक्रमक्र ।

अं०-Bonduc Nut (बोण्डक नट)

ले०-Caesalpinia Bonducella (केसलपिनिया बोगडुसेल्ला)

कण्टकरञ्जगुणाः—

कण्टयुक्तः करञ्जस्तु पाके च तुवरः कटुः ।
ग्राहकश्चोष्णवीर्यः स्यात्तिक्तः प्रोक्तश्च मेहहा ॥
कुष्ठार्शोव्रणवातानां कृमीणां नाशनः परः ।
पुष्पं तु चोष्णवीर्यं स्यात्तिक्तं वातकफापहम् ॥

४२ करञ्जी (अरारि (उदकीर्य्य)) पृ० १९७

हि०-अरारि, अरारी, करञ्जी, करञ्जिया । म०-थोर करंज ।

४३-४४ श्वेता रक्ता च गुञ्जा (सफेदगुञ्जा, लालगुञ्जा) पृ० १९८

हि०-गुञ्जा, घुंघची, घुघुची, चिरमी, चिरमिटी, चोंटली, घुमची, करजनी, रत्ती । बं०-कुच, कुंच । म०-गुंज, माडलबेल । क०-गुलगुंजे, एरडु, गुलुगुंजे, चणाठी, चणाठो, गुलुबिन्दे, गुरुगिंजे । उ०-रुच्च । द्रा०-कुन्दमणि । प०-चमटी । ते०-गुरुगिञ्च । फा०-चश्मे खरूस । गु०-गुमची । ने०-मसपाटं । सन्ता०-कवेट । आसाम०-लटुवणी । अ०-एनुद्दीक हब ।

ले०-Abrus Precatorius (एब्रस प्रिकेटोरिअस) ।

व्यवहार—बीज (विषयुक्त) । मात्रा—४ रत्ती से १ माशे ।

गुञ्जाशोधनविधिः—

गुञ्जा च काञ्जिके स्विन्ना प्रहरं शुद्धयति ध्रुवम् । (बृ०यो०त०) ।

सफेद गुञ्जा ।

हि०-सफेद गुंजा (चिरमिटी, करजनी) इत्यादि । ब०-सादाकुञ्च, श्वेतकुञ्च । गु०-चणोठी धोली । अ०-हबसुफेद ।

लालगुञ्जा ।

हि०-लालगुंजा (लाल चोंटली, करजनी) इत्यादि । गु०-रातीचणोठी । ब०-लाल कुंच । अ०-हब सुर्ख ।

४९ कपिकच्छुः (कोंच) पृ० १९८

हि०-कवाछ, कमाच, क्रोंच, कोंच, कौंछ, केवाछ, किवाछ, किमाच । ब०-आलकुशी, आलाकुशी, शुयाशिंबी । म०-कुहिली, खाजकुहिरी, कुहिलिचेबीज । कपासकुहिरी, काचकुहिली, कवच । क०-नसुकूगुरी, नसुकूगरी । ते०-चुलगुंडी, पिल्लीअडुगु, ढुलगुंडी । को०-खाजकुहिली । ता०-पुनाइक काली, पुनैकाइ । मु०-कुहिला । द्र०-काचकुरी । ने०-कोंच, कोतच । पं०-जूनी । गु०-कवचा, कउचो, कनुचु, कौंचा ।

अं०-Cow Hege (को हेज) ।

ले०-Mucuna Pruriens (म्युक्युना प्रुरियन्स)

व्यवहार—जड़, बीज । मात्रा —६-९ माशे ।

लघुकपिकच्छुगुणाः—

कपिकच्छुर्लघुः शीता वृष्या पित्तानिलापहा ।
सिध्मातिसारहन्त्री च बन्ध्यानां चाप्यपत्यदा ॥ शो० नि० ॥

४६ मांस रोहिणी पृ० १९८

हि०-मांसरोहिणी, रोहिनी, रोहन, रक्तरोहन । बं०-मांसरोहिणी, चामरकषा, रोहन । पं०-म०-क०-गु०-मांसरोहिणी, रोहिणी । गु०-रोगय, रोहगय, रोहिना । मा०-रोहनं । म०-रुहिन, पेटर । गोंड०-सोइमि । द०-रोहन । ता०-शेममरुइन । ते०-सुमि सोमिड मौन । कोल०-रक्त रोहेन । भील०-रोयत । मु०-रोहन, रोविङ्ग । क०-सुआमी सिमेमरा सोम । फा०-अ०-बकम । सन्ता०-रुहेन ।

अं०-Red Wood Tree (रेड उड् ट्री)।
लै०-Soymide Febrifuga (सोयमिडा फेब्रीफ्युगा)।
व्यवहार—छाल। मात्रा—६-१० माशे।
रोहिणीगुणाः—
रोहिणी वातहृत्कासश्वासशोणितनाशिनी ॥ अ० भा० नि० ॥
द्विविधरोहिणीगुणाः—
रोहिणीयुगलं शीतं कषायं कृमिनाशनम्।
कण्ठशुद्धिकरं रुच्यं वातदोषनिषूदनम् ॥ रा० नि० ॥

४७ चिल्हक पृ० १९८

हि०-चिल्ह, चिल्हक, गन्धारी।

४८ टंकारी (टेकारी) पृ० १९९

हि०-टेकार, टेकारी। म०-फापटी। ब०-टेपारी।

४९ वेतसः (बेंत) पृ० १९९

हि०-बेंत, बैंत। बं०-वेत, वत्र। म०-वेत, वेडिसु। क०-वेतर, वेतसु, वेड़िमु, वेड़िसु, वेसय भेदबु। गु०-वेतर। ते०-जोतयुर कुली, जीतयुर-लुकी, पीपारुवा। पं०-बैंत। द्रा०-बांजि। फा०-बेंत, हज़ां, खिरज़ा। अ०-सीरज़ा, खलाफ, हरजां। अं०-Cane (केन)।
वेतसस्याङ्कुर-पत्र-बीजानां गुणाः—
वेतसस्याङ्कुरः प्रोक्तो लघुः क्षारो महर्षिभिः।
कटूष्णः कफवातघ्नः पर्णं भेदकरं मतम् ॥
तुवरं लघु शीतं च तिक्तं कटु च वातलम्।
रक्तदोषं कफं पित्तं नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥
वेत्रबीजं तु तुवरं स्वाद्वम्लं रूक्षपित्तलम्।
रक्तदोषं कफं चैव नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥ नि० र० ॥
बृहद्वेत्रगुणाः—
बृहद्वेत्रस्तु शीतः स्याद् भूतपित्तामकम्पहा।
अन्ये गुणाः पूर्ववेत्रसदृशाः समुदाहृताः ॥

५० जलवेतसः (जलबेंत) पृ० १९९

हि०-जलबेंत, जलबैंत। बं०-जलवेतस, वयसा, जलबेंत। म०-वांजल,

जलवेत । क०-बंजालु, वैसेयमरणु(नु)। जल जंबवा, वेतसु । गु०-जलजाबवो ।

बृहज्जलवेत्रगुणाः—

स्थूलवानीरकः शीतो रूक्षो व्रणविशोधनः ।
तिक्तस्तु तुवरो रक्तदोषपित्तकफाञ्जयेत् ॥ नि० र० ॥

९१ इज्जलः (समुद्रफल) पृ० १९९

हि०-इज्जल, इज्जर, हिञ्जल, समुद्रफल, हीजल । ब०-हिलज गाछ । गु०-जलजांबवो । क०-तोरेगणिगिले । उ०-किंचोलो, किञ्जोलो । मु०-फरेल, तिवर । म०-पर्यलु, परल, परेल । मा०-परेल । आसा०-हिंडोल । सन्ता०-हिजल । कोल०-सपरुङ्ग । ते०-बट्टा, कुर्पा । मु०-इङ्गर, इजल । कच्छ०-समुद्रफल । को०-निवार ।

ले०-Barringtonia Acutangula (बैरिङ्गटोनिया एक्युटांगुला)

व्यवहार—फल । मात्रा—¼ से ½ फल ।

९२ अङ्कोटः (अङ्कोल) पृ० १९९

हि०-अंकोल, ढेरा, टेरा, ढेला । बं०-आंकोड, आंकड, धला आंकड, धल आंकोर । म०-अंकोली, आंकुल । गु०-अंकोळ, अंकोल्य, आेंकला । क०-अंकुले, अंकोले । तै०-उडिके, वुडुगु, अंकोलमु । द०-तैल अंकुल । ता०-अलञ्जी । सन्ता०-डेला, ढेला । उ०-अंकुल ।

ले०-Alangium Lamarckii (एलांग्युम लामार्कीइ) ।

व्यवहार—छाल । मात्रा—½ से १ माशे ।

अस्य रसबीजयोगुणाः—

रसो वान्तिकरश्चास्य विषदोषकफापहः ।
वातशूलशोथकृमिग्रहपीडाऽऽमपित्तहा ॥
रक्तदोषविसर्पघ्नः श्वानाखुविषनाशनः ।
आेतोर्विषकटीशूलमतिसारं च नाशयेत् ॥
पिशाचपीडाशमनो बीजं चास्य तु शीतलम् ।
धातुवृद्धिकरं स्वादु चाग्निमान्द्यकरं गुरु ॥
रसे पाके तु मधुरं बलकृत्कफकृत्सरम् ।

स्निग्धं वृष्यं च दाहघ्नं वातपित्तक्षयापहम् ॥
रक्तदोषं कफं पित्तं विसर्पं चैव नाशयेत् ॥ नि० २० ॥

६३-६६ बलाचतुष्टयम्। पृ० ११९
१ बला (बरियारा) । २ महाबला (सहदेई) ।
३ अतिबला (ककही) ४ नागबला (गुलशकरी) ।
१ बला (बरियारा) ।

हि०-बरियार, बरियारा, बरियाल, खरेठी, खरैठी, खिरेठी, खिरैठी, वरियारी। ब०-बेडेला, बठेला, बडिला। म०-चिकणा, लघुचिकणा, खिरहंटी। गु०-बलदाणा, खरेटी, बलदाड़ा। क०-बेणे गरग, बवियारा, बेणेगरग, चिट्ट हरलुगिड। ते०-मुर्पिडी, पाचितोगे, मुत्तवपुलगमु, करिवेप्पचेट्टु, पिन्नमुत्तपवुलगमु। को०-चिकडन कड़ी। प०-खरैहटी, ओइ बोई। मा०-खरेंटी।

अं०-The Horn Bean Leaved Sida (दि हौर्न बीन लीव्ड सिडा)। ले०-Sida Cordifolia (सिडा कार्डिफोलिआ)।

व्यवहार—जड़, बीज। मात्रा—४-१० माशे।

बलाफलगुणाः—

बलाफलं स्वादु पाके कषायं मधुरं रसे।
हिमवीर्यं गुरुगुणं स्तम्भनं लेखनं भृशम् ॥
विबन्धाध्मानपवनकारि पित्तकफास्रनुत् ॥ वै० नि० ॥

बरियारा ४ प्रकारकी होती है-१ पीतबला २ श्वेतबला ३ भूमिबला ४ फणिजीविका बला इनमें श्वेतबला का क्षुप अन्यों की अपेक्षा बड़ा होता है इसके बीज को बलाबीज या बीजबन्द कहते हैं।

२ महाबला (सहदेई) ।

हि०-सहदेई, सहदेइया, सहदैया। बं०-पीतबेडेला, पीतबेलेड़ा, पीतपुष्पा बेडेला, बांजोका बेडला, पीतपुष्पी। क०-सहदेवि, वेल्लुदुर्वे, वेणेमरमभेद, पेटारी। म०-भामुंडी, महाबला, । गु०-सहदेवी। प०-सहदेवि, सहदेई, नीलकंठी। ते०-सहदेवि। यु०-सिरदेई। द्रा०-सहदेवि। मा०-सहदेई, सहदेवी।

लै०-Sida Rhombifolia (सिडा रौम्बिफालिया)।

व्यवहार—पञ्चाङ्ग। मात्रा—३-६ माशे।

महाबला द्विविधा—१ पीतपुष्पा २ रक्तपुष्पा च। अत्रोक्ता पीतपुष्पैव, रक्तपुष्पाया महाबलाया लोके नाम (बैंजनीफूलवाली सहदेई)।

बैंजनी फूलकी सहदेई।

हि०-सहदेई, सहदेइया, लालसहदेई, बैंजनीसहदेई, महदेई, महदेइया। बं०-लालबेडेला।

इसकी एक और जाति होती है जो ३ फुट तक ऊंची होती है, इसीको महदेई या महादेई कहते हैं।

३ अतिबला (कंघी)।

हि०-कंघी, ककही, ककहिया, कंगही। ब०-पीत बाकुली, पोटारी। म०-बिकंकती, आककई, कांसुली। प०-कंघी, पीलीबूटी, अति खिराति पल। गु०-खपास्य। क०-मुल्लुरदुरुवे, हरिचिट्ट, हरलुगिड्ड। द्रा०-तुवियल्लै। सिन्ध०-सिम्बुल। सन्ता०-मिरुबह। ता०-तत्ति। अ०-दरख्ते शाहनाह। मा०-डाबी। ते०-पेद्दमुत्तवनू गुवेंग। मु०-पोटारी, मदमी। गो०-पेटारी, टुवोकटी। मालवा०-उरम पेट्टका। अ०-मद्दतुल गुल।

अं०-Indian Malow (इण्डियन मालो)।

लै०-Sida Indica (सिडा इण्डिका)।

व्यवहार—जड़, जड़ की छाल, बीज। मात्रा-१-१० माशे)।

एक ककही और होती है जो "बड़ी ककही" कही जाती है।

त्रिविधबलागुणाः—

बलात्रयं स्वादु शीतं स्निग्धं वृष्यं बलप्रदम्।
आयुष्यं वातपित्तघ्नं ग्राहि मूत्रग्रहापहम्॥

४ नागबला (गंगेरन)

हि०-गंगेरन, गुलशकरी, जंगलीमेथी। बं०-गोरखचाकुले, गोरक्षचाकुले, पानसांडा, पीला बडेला। म०-नागबला, गांगेटी, गांडे धामड़ा, कांटेरी। मा०-गंगेरण। ते०-जिजिलिके चेट्टु, जिविलिके चेट्टु। क०-बट्टगरुके, जिबिलिक। गु०-कानता लोबल। फा०-शान बलिदे-

वर्री। प०-गंगेरण, गंगेरन। को०-तुपकड़ी। ता०-मइरमानिक्कम। अ०-शमलोदे दस्ती।

ले०-Sida Spinosa (सिडा स्पाइनोसा)।

व्यवहार—जड़, छाल। मात्रा—६ माशे से १ तोला।

एक प्रकार की और गंगेरन होती है, जिसके फूल गुलाबी रंग के होते हैं।

अस्याः फलगुणाः—

गाङ्गेरुकीफलं रूक्षं कषायं स्वादु वातलम्।
लेखनं स्तम्भनं शीतं विबन्धाध्मानकृद् गुरु॥ शो० नि०॥

बृहन्नागबलागुणाः—

बृहन्नागबला चाम्ला मधुरा च त्रिदोषहा।
दाहज्वरहरा प्रोक्ता पूर्ववैद्यैर्मनीषिभिः॥ नि० र०॥

९७ लक्ष्मणा पृ० २००

हि०-लक्ष्मणा, लछमना, लछुमना, लछुमनी, लछमनी। को०-हरकटा। बं०-लक्ष्मणा। गु०-हनुमान वेल। फा०-सगशिकन, मोहरेग्याह। अ०-बरो जुस्सनम, असलुल् लफाहउलूवर्री।

व्यवहार—पञ्चाङ्ग, कन्द। मात्रा—१-२ माशे।

कोई २ लक्ष्मणा और लक्ष्मणी दो जाति की एक ही वनौषधि बताते हैं, जिसका कन्द पुरुषाकार हो उसे लक्ष्मणा और स्त्री के आकार का हो तो लक्ष्मणी कहते हैं, एवं लक्ष्मणा के सेवन से पुत्र तथा लक्ष्मणी के सेवन से पुत्री पैदा होती है, ऐसा भी कहते हैं।

इसके अभाव में श्वेत कण्टकारी ली जाती है।

९८ स्वर्णवल्ली (सोनवेल) पृ० २००

हि०-सोनवल्ली, सोनवेलि, काकायु। ते०—बेक्कुडुतोगे। म०-सोनवेलि, सोनवेली, सोनुली, सोनेवेल। गु०-स्वर्णवल्ली।

९९ कार्पासी (कपास) पृ० २००

हि०-कपास, रूई, अगां, नरमाबाड़ी। म०-कापसी, कापूस, कापारकापस। बं०-कापीस, कापास, तुला। तै०-पत्तिचेट्टु क०-हति।

फा०-कुतन, पुवेदान, कुंतुन । अ०-पंबाह, हबुस कुतन । गु०-वण, कपास । ता०-परुत्ति ।

अं०-Cotton Plant (काटन प्लेण्ट)

,, Indian Cotton (इण्डियन काटन) ।

ले०-Gossy Pium Herbaccum (गौसीपियम हरबक्कम) ।

व्यवहार—मात्रा

जड़— १-२ तोले

बीज— २-६ माशे ।

एक प्रकार का और कपास होता है, जिसका फूल लाल रंग का होता है इसे लाल कपास कहते हैं, लैटिन नाम Gossy pium Arboreum (गौसीपियम आरबोरियम) है ।

पंजाब के तरफ एक प्रकार का और कपास होता है जिसकी रूई गुलाबी रंग की होती है ।

वनकार्पासीनामगुणाः—

त्रिपर्णी वनकार्पासी भारद्वाजी यशस्विनी ।
भारद्वाजी हिमा रुच्या व्रणशस्त्रक्षतापहा ॥

कालाञ्जनीनामगुणाः—

कालाञ्जनी च कृष्णाभा कृष्णाञ्जनो शिलाञ्जनी ।
कालाञ्जनी कटूष्णा स्यादम्लाऽऽमक्रिमिशोधिनी ।
अपानावर्त्तशमनी जठरामयहारिणी ॥ रा० नि० ॥

६० वंशः (बांस) पृ० २००

हि०-बांस । गु०-बांस । मु०-मंडगय, मांडगय, मंडगे । म०-बेलु, बांबू, पोकल बेलु, भरीवबेलु । ब०-बांश, बेहुर बांस । तै०-बेदुरु, वेन्ने-मुक, वेन्नुशंणि, वेत्तु, कच्चिकइ यदुरु । ता०-मनगिल । मा०-बांव । फा०-कसव, नय, नयेकूवीर । क०-विदुरू । प०-बांस । द्रा०-मूंलिग । कोल०-कंटगा । सन्ताल०-मांट । को०-कलक, पडई । द०-भांस, चांसा, बम्बू ।

अं०-Bamboo (बैम्बू) ।

ले०-Bambusa Arundinacea (बम्बूसा अरुण्डिनेसिया) ।

Syn:—Bambusa Orientales या-(बम्बूसा ओरियन्टेलिस)। एक प्रकार का और बांस होता है जिसे लैटिन में--

Bambusa Stricta (बम्बूसा एसट्रिक्टा) कहते हैं, यह दो प्रकार का होता है १ ठोस २ पोला।

अच्छिद्रसच्छिद्रवंशयोर्गुणाः—

वंशौ त्वम्लौ कषायौ च किञ्चित्तिक्तौ सुशीतलौ।
मूत्रकृच्छ्रप्रमेहार्शःपित्तदाहास्रनाशनौ॥
विशेषाद्रन्ध्रवंशस्तु दीपनोऽजीर्णनाशनः।
रुचिकृत् पाचनो हृद्यः शूलघ्नो गुल्मनाशनः॥ रा० नि०॥

६१ नलः (नरसल) पृ० २०१

हि०-नरसल, नरकुल, नरकट, नल। म०-देवनळ, देवनलु, देवनाल, नल। ब०-नल़। क०-देवनाल। फा०-ने। कच्छी०-आंची। गु०-नाळी, नड़सल। पं०-नरसल,। तै०-मुंगुडुरु, किक्कस। ता०-कोरुक्के।

अं०-Indian Tobacco (इण्डियन टुबैको)।

ले०-Lobelia Nicotianaefolia (लोबेलिया निकोटियानेफोलिया)।

नरसल-छोटे, बड़े, मोटे, पतले इन भेदों से कई प्रकार का होता है।

नलभेदस्य देवनालस्य नामानि गुणाश्च—

अन्यो महानलो वन्यो देवनालो नलोत्तमः।
स्थूलनालः स्थूलदण्डः सुरनालः सुरद्रुमः॥
देवनालोऽतिमधुरो वृष्य ईषत्कषायकः।
नलाधिकश्च वीर्ये तु शस्यते रसकर्मणि।

६२ भद्रमुञ्जः (रामसर) पृ० २०१

हि०-भद्रमुंज, रामसर, सरपत, सरपत्ता, रमसरका, भद्रमुञ्ज। क०-रामसपु, सरगोलु। तै०-मुंजगड्डी, पोनिक। बं०-रामशर, सर। म०-थोरमुंजतृण, मोल। प०-सरकर, सरजवइ, खरकान, कंडा। गु०-पानबाजरिया। सन्ता०-सर। सिन्ध०-सर।

ले०-Saccharum Arundinaceum (साकूचारम एरुण्डिनेसियम) ।

व्यवहार—जड़ । मात्रा—२—६ माशे ।

६३ मुञ्जः (मूंज) पृ० २०१

हि०-मूंज, झलसी, सिरकी, कांड़ा । ब०-मुंज, शर । तै०-मुंजगड्डि, अग्नि स्फुलिंग, तिप्परेलु । ता०-मुञ्जि । गु०-मुंज, तिरकांडा । म०-मोल, तिरकांडे । प०-सर । मा०-शरकंडा । क०-लाली कड्डि । द्रा०-बाणल ।

ले०-Saccharum Ciliare (साकूचारम सिलियेरी) ।

व्यवहार—जड़ । मात्रा—२—६ माशे ।

६४ काशः (कास) पृ० २०१

हि०-कास, कासतृण, कांसघास । ब०-केशेघास, कशाड़ । म०-कसई, लघुकसई, कासेगवग । गु०-कांसडो । क०-किरयिकागच्छ, कासलु, काडसु, कांउसु । ते०-रेलु । को०-कसार, कसाड़ । ता०-नाणल्ठ । मा०-कास ।

ले०-Saccharum Spantaneum (साकूचारम स्पाण्टेनियम) ।

व्यवहार—जड़ । मात्रा—१—२ तोले ।

६५ गुन्द्रः (गोंद पेटर) पृ० २०१

हि०-पेटर, गोंदपेटर, पटेरी, पटेरे । म०-पाणिगवत, पण्यांतीलव्हा, पानी गवत, गुद्रपटेर । गु०-पुन्द्रखड, पान्यघाडाडी । क०-आपु ।

अं०-Elephant Grass (एलेफेण्ट ग्रास) ।

ले०-Typpa Eliphantina (टाइपा एलिफण्टाइना) ।

६६ एरका (मोथीतृण) पृ० २०२

हि०-मोथीतृण, पतर रामवान, बड़ी मूंज । ब०-होगला । म०-एरका, पाणलाल ह्वाला, रामवान । गु०-एरका, घबजरिन । पं०-कुन्दर, दिव, पतिरागोंड । काश्मो०-पिन्ज, यिरा । सिन्ध०-पुन, पोल्लेन । ते०-जम्मुगड्डि इमिंगजनुम ।

ले०-Typha Angustifolia (टाइफा अंगष्टिफोलिया) ।

६७ कुशः (कुशा) पृ० २०२

हि०-कुशा, दाभ, डाभ, कूस, घास। म०-बारीकदर्भ, मोठे दर्भ, श्वेतदर्भ। गु०-कुश दाभडो, दरभ। क०-बीलीय, वुट्टशशी। तै०-कुश, दर्भोल्लु, कुशदुर्वोलु। ता०-दर्भ। को०-दाभ।

ले०-Andropogon Nardaides (एण्ड्रोपोगन नारडेइडिस्)।

व्यवहार—जड़। मात्रा—१—२ तोले।

छोटे और बड़े के भेद से यह दो प्रकार की होती है, बड़े पत्ते वाली को सफेद कुशा कहते हैं।

६८ क्षुरपत्रः (दाब) पृ० २०२

हि०-दाब, दाभ, डाब, डाभ, डाभी। बं०-कुश। प०-दाभ। मा०-दाब। म०-थोर दर्भ। क०-कुचदर्भु, कुश। द्रा०-कुशम्। तै०-दूभ। गु०-डाबडा।

ले०-Poa Cynosuroides (पोआ सिनोसुराइडिस)।

व्यवहार—जड़। मात्रा—१—२ तोले।

मूलं तस्य तु शीतलम्। रुच्यं च मधुरं रक्तज्वरतृट्श्वासकामलाम्। पित्तं च नाशयत्येवं मुनिभिः परिकीर्त्तितम्॥ नि० र०॥

दर्भौ द्वौ च गुणैस्तुल्यौ तथाऽपि च सितोऽधिकः।
यदि श्वेतकुशाऽभावस्त्वपरं योजयेद्भिषक्॥

६९ कत्तृणम् (रोहिस घास) पृ० २०२

हि०-रोहिस, सोंधिया, गन्धेजघास, रोहिष, अगिया खढ़, हरद्वारी कुश। बं०-रामकर्पूर, रामकपूर। म०-सुगन्धरोहिषतृण, लघुरोहिषगवत, रोहिस। क०-किरुगंजणी, कामंचिहुल्लु, गन्दहुच्चि खड्डी। फा०-खवाल मागून, खलाल मामून, खवालमामून। अ०-अजस्वर। तै०-कामंचि गड्डि, तूटिकुर। गु०-रौसा, रोंस। मु०-रोहिषे। प०-गांधीघास।

अं०-Rusa Oil Grass (रुसा आयल ग्रास)।

ले०-Andropogon Schoenanthus (अंड्रोपोगन स्कोनैनथस)।

व्यवहार—पञ्चाङ्ग, जड़। मात्रा—१—३ माशे।

दीर्घरौहिषस्य नामानि गुणाश्च—

अन्यद् रौहिषकं दीर्घं दृढकाण्डो दृढच्छदम् ।
यज्ञेष्टं दीर्घनालश्च तिक्तसारश्च कुत्सितम् ।
दीर्घरौहिषकं तिक्तं कटूष्णं कफवातजित् ।
भूतग्रहविषघ्नं च व्रणक्षतविरोपणम् ॥

७० भूतृणम् (भूतृण) पृ० २०२

हि०—शरबाण भूतृण, गन्धतृण, भूखड़, आगियाखढ़ । मा०—पण्या-तीलबला, सुगन्धरोहिसगवत । गु०—भूतृण, सुगन्धरोस । क०—परिमल-दगञ्जीण, परिमलदगञ्जाणि । बं०—गन्धतृण, शरबाण, रामकर्पूर, राम-कपूर । द्रा०—परिमलदगजणी । ता०—कर्पूरपुल्ल । म०—चिरवाचाह । तै०—चिप्पगड्डि, गुडुगुगड्डि ।

अं०—Lemon Grass (लिमन ग्रास) ।

लै०—Andropogon Citratus (अंड्रोपोगन सिट्रेटस) ।

व्यवहार—जड़ । मात्रा—१—२ माशे ।

सुगन्धभूतृणस्य नामानि—

सं०—रौहिषं, सुगन्धभूतृणं, भूतृणं, गोमयप्रियम् । हि०—सुगन्धभूतृण । म०—पुदनीगवत, सुगन्धगवत । क०—सुगन्धतृण । गु०—सुगन्धतृण ।

अस्य गुणाः—

गन्धतृणं सुगन्धि स्यादीषत्तिक्तं रसायनम् ।
स्निग्धं मधुरशीतं च कफपित्तभ्रमापहम् ॥

७१ नील दूर्वा (हरी दूब) पृ० २०२

हि०—हरीदूब, नीलीदूब, रामघास । ब०—नीलदूर्बा, दूर्बा । म०—नीली-दूर्बा, हरली, कालीदूर्बा । गु०—नीलोध्रो, लीलीध्रो । क०—हसुगरुको । तै०—दूर्वालु, गरिके गड्डि, हरित दुर्वालु । ता०—अरुगमपिल्लू । को०—नी-लीहरियाली । संथाल०—धोबीघास । प०—दूब , दौर्बा ।

अं—Creeping Cynodan (क्रीपिङ्ग साइनोडन) ।

लै०—Cynodon Dactylon (साइनोडन डेकटिलन)

व्यवहार—पञ्चांग । मात्रा-२-६ माशे ।

७२ श्वेतदूर्वा (सफेद दूब) पृ० २०३

हि०–सफेददूब । बं०–सादादूर्वा । म०—श्वेतदूर्वा, पांढ़री हरियाली, श्वेतहरली । गु०–धोलिध्रो । क०–विलिय करुके । ते०–गरिकेगडूडि, शुक्रदूर्वालु । मु०–पाडरि हरियाली ।

व्यवहार—पञ्चाङ्ग । मात्रा—२–६ माशे ।

सामान्यदूर्वागुणाः—

दूर्वा कषाया मधुरा च शीता पित्तं तृषाऽरोचकवान्तिहन्त्री ।
सदाहमूर्च्छाग्रहभूतशान्तिश्लेष्मश्रमध्वंसनतृप्तिदा च ॥ रा०नि० ॥

७३ गण्डदूर्वा (गांडर दूब) पृ० २०३

हि०–गांडरदूब, गण्डदूर्वा, गठीला दूब । म०–गण्डूरदूर्वा, गांठीहरली । बं०–गेंटे दूर्वा । गु०–गांठवालीध्रो, मण्डूरध्रो, गण्डूरध्रो । क०–मीनमत्ते, मीनगत्ते, होन्नगुन्दे । ते०–पोन्नगण्डी

व्यवहार—पञ्चाङ्ग । मात्रा—२–६ माशे ।

७४ वाराहीकन्दः (गेंठी) पृ० २०३

हि०–वाराही कन्द, गेंठी, भिर्बोलीकन्द, चर्मकारालुक, चमार आलु । म०–डुकरकन्द, बाराहीकन्द । गु०–सुअरिया, सालिवणावेलूय । तै०–आडदंडिचेट्टु, पाचितोके, नेलताड़ि चेट्टु । मु०–हंडि गेट्टे । बं–चामारआलु, चामालु, चुवड़ि आलु । मु० डुकरकन्द ।

लै०–DiosCorea Sativa (डियोसकोरिया सैटिभा) ।

व्यवहार—कन्द । मात्रा—३–६ माशे ।

वाराही पित्तला बल्या कटूवी तिक्ता रसायनी ।
आयुःशुक्राग्निकृन्मेहकफकुष्ठानिलापहा ॥
वाराहकन्दः कटुकस्तिक्तो बल्यश्च पित्तलः ।
रसायनः शुक्रलश्च वृष्यश्चाग्निप्रदीपकः ॥
मधुरोष्णो वर्णकरः स्वर्यश्चायुर्विवर्धनः ।
कुष्ठं मेहं त्रिदोषं च कफं वातं कृमींस्तथा ॥
मूत्रकृच्छ्रहरः प्रोक्तो वैद्यविद्याविशारदैः ॥ नि० र० ॥

वाराहीकन्द दो प्रकार का माना गया है, एक वृषणाकार काले रंग

का सूअर के बाल के समान रोम युक्त, दूसरा–गावदुम सूअर के मुख और सिर के आकार का कम रोवें वाला सुफेद रंग का । वृषणाकारवाले का लैटिन नाम—Dioscorea Bulbifura (डिओसकोरिया बलबीफेरा) है । इसे कहीं २ जमीकन्द और काठालु भी कहते हैं । इसे यूनानी हकीम (चिरैया कन्द देहलो) कहते हैं, श्वेत को हिमालय प्रान्त में "बेवरु" और कृष्ण को "गठों" नाम से कहते हैं, कृष्ण ही वाराहीकन्द मान्य है, इसके बदले में विदारीकन्द देना भूल है ।

७६ विदारीकन्द पृ० २०३

हि०–विदारीकन्द, बिलाईकन्द, बिलारीकन्द, भुंइकुम्भड़ा, (रा) पातालकोहला, पाताल कोहंड़ा । ब०–भुइ कुमड़ा, भुंइकुमड़ा । क०–नेल कुंवल, विलीनेल गुम्मड़ । म०–भुइकोहला, भुयकोहले । ते०–नेल गुबुडु, मट्टपलतिग, तेल्लनेल गुम्मुडु । गु०–भोकोलुं, फगवेलानो कन्द, भुइकखालु, भुईकखारु । मु०–भूमिकोहले । मा०–विदारीकन्द । ता०–मट्टापलति । प०–बिल्लैयाकन्द । म०–मुतालक्काता ।

ले०–Ipomea Digilata (आईपोमिया डिगिलेटा) ।

,, Puraria Tuberosa (प्युरेरिया ट्यूबरोभा) ।

व्यवहार—कन्द । मात्रा—६ माशे से १ तोले ।

विदारीनामानि—

विदारी वृष्यकन्दा च चीरशुक्ला सिता स्मृता ।
इक्षुगन्धा त्रिपर्णी च शुक्ला गजहयप्रिया ॥

क्षीरविदारीनामानि—

अन्या चीरविदारी स्यादिक्षुगन्धेक्षुवल्ल्यपि ।
चीरकन्दा चीरवल्ली चीरशुक्ला पयस्विनी ॥

संयुक्तप्रान्तीय विदारीकन्द ।

हि०–बिदारीकन्द, बिलाईकन्द, भूमि कोहंड़ा, पाताल कोहड़ा । ब०–शिमीय, वत्रजी, विदारी, भुम्ई कुमडा । म०–सुरल, सियालो । ते०–दरी, गूमोदी । राजपू०–गोरबेल, गुरबेल । मु०–दारी । गु०–करवीय नायी ।

ले०–Pueraria Tuberosa (प्युरेरिया टच्यूबरोसा) ।

,, Hedysarum Tuberosa (हेडीसरम टच्यूबरोसा) ।

बंगीय विदारीकन्द।

हि०-बिलाईकन्द, बिदारीकन्द । ब०-भूमिकुमड़ा, भुइं कुमड़ा। मु०-भुइकोहला। क०-भूम्मि चेकरी गड्डे। ते०-मतपलतिगा। माळा०-फलमोदिक्का।

ले०- Ipomoea Digitata (आइपोमोइया डीगीटाटा)।

Syn:-Convolvulus paniculata (कोन्वोल्वुलस् पानीकुलेटा)।

,, Ipomoea Paniculata (आईपोमोइया पानीकुलेटा)।

,, Batatas Paniculata (बटाटास् पानी कुलेटा।

विदारीकन्दपुष्पगुणाः—

पुष्पं वृष्यं च शीतलम्।
रसे पाके च मधुरं कफकृद्वातलं गुरु।
पित्तनाशकरं ह्येतदुक्तं मुनिवरैः पुरा।

क्षीरविदारीगुणाः—

प्रोक्ता क्षीरविदारी तु मधुराम्ला कषायका।
वृष्या च शुक्रजननी पुष्टिदुग्धप्रदा कटुः॥
रसायनी च बल्या च शीता मूत्रकफप्रदा।
स्निग्धा वर्ण्या गुरुः स्वर्या पित्तरुग्रक्तदोषहा॥
पित्तशूलहरा वातदाहजिन्मूत्रमेहजित्।
कन्दः क्षीरविदार्यास्तु स्वादुर्वृष्यो रसायनः।
मधुरो बृंहणो हृद्यः शीतवीर्योऽपि मूत्रलः॥
क्षीरकन्दो द्विधा प्रोक्तो विनालस्तु सनालकः।
विनालो रोगहर्त्ता स्याद् वयःस्तम्भी सनालकः॥

७६ मुशलीकन्दः (मूसली)

(काली मूसली) पृ० २०३

हि०-मूसली श्याम, स्याहमूसली, कालीमूसली। म०-काळी मूसली, पांढ़री मूसली। ब०-तालमूली। क०-नेल ताड़ी। तै०-निलयतलि, निलतलि गड्डलि, नेलताड़ि। गु०-मुसली, कालीमुशली। प०-स्याहमूसली। मा०-कालीमूसली। फा०-मुशली स्याह। अ०-मुसली अबियज्। गोंड०-मुसर कन्द।

ले०-Curculigoorchioides (करक्युलीगो अर्चिओइडिस)।

व्यवहार—जड़ । मात्रा—३-६ माशे ।

कृष्णाऽधिकगुणा प्रोक्ता श्वेता चाल्पगुणा मता ।

सफेद मूसली

हि०-सफेदमुसली । ब०-तालमूली । गु०-धोली मुसला । म०-पढ़-ढ़ो मूसली । मा०-मूसली । ते० नेलतारि गड्डा । क०-नेल तालम गेड्डे । फा०-मूसली सफेद ।। अ०-मूसली अबिअज् ।

ले०- Chlorophytum Arundinaceum (क्लोरोफिटम एरुंडि-नेसियम) ।

व्यवहार—जड़ । मात्रा-३-६ माशे ।

इसका क्षुप ३ प्रकार का होता है । १ लघुमूसली २ सफेद मूसली, ३ बृहत् मूसली । तीनों मूसली का जड़—सफेद भूरे रंग का होता है ।

७७ शतावरी (सतावर) पृ० २०४

हि०-सतावर, सतावरि, सतमूली, सफेदमूसली, शतावर, छोटी शा-तावर । बं०-शतमूली । म०-लघुशतावर, शतमूली, आसबली । गु०-शतावरी, एकलकंटो, नहानी शतावरी, सापना सुआ सेमुखा । क०-करीय आसडी । ते०-एट्टु मट्टी टेंडा, चल्ल गुडुलु । को०-सीताचम्बरी । मु०-शतावरी । द्रा०-तएणीर विट्टान किडंगु । फा०-गुर्जदस्ती, बुजीदा । अ०-शकाकुलमिश्री ।

ल०-Asparagus Racemosus (एसपारेगस रेसीमोसस)

व्यवहार-जड़ । मात्रा-६ माशे से १ तोला ।

शतावर्यङ्कुरगुणाः—

शतावर्या ह्यङ्कुरस्तु तिक्तो वृष्यो लघुः स्मृतः ।
हृद्यस्त्रिदोषपित्तघ्नो वातरक्तार्शसां हरः ।
क्षयसंग्रहणीरोगनाशनस्तिक्तको लघुः ।।

७८ महाशतावरी (बड़ीशतावर) पृ० २०४

हि०-सतावर बडी, बड़ीशतावर । म०-थोरशतावरी, बड़ीशतावर, सहस्रमूली । ब०-महाशतमूली । गु०-मोटीशतावरी । क०-यरडु आस

डियगुण, आषाड़ि, आषाढ़ि। तै०-पिन्न पीचर। द्रा०-तएणीर विट्टान किडंग।

लै०-Asparagus adscendens (ऐसपैरेगस ऐडसेएडेन्स)

व्यवहार-जड़। मात्रा-६ माशे से १ तोला।

द्विविधशतावरीगुणाः—

शतावरीद्वयं वृष्यं मधुरं पित्तजिद्धिमम्।

७९ अश्वगन्धा (असगन्ध) पृ० २०४

हि०-असगन्ध, अश्वगन्धा, नागोरी असगन्ध, ढोरगुञ्ज। ब०-अश्वगन्धा, असगन्ध, नागौरी असगन्ध। म०-असगन्ध, आसगन्ध। गु०-आद्घंध, आखसंधु। मा०-आसगन्ध। क०-आसोंद हरिमद्द, अङ्गरबेरू। तै०-पेन्नेरू गड्डु, पिल्ली आंड्रा, अश्वगन्धी। द्रा०-असुक रांकिडंग। फा०-बेह् मनवररी। ता०-अश्वगंडी, मळा, अमुकिरं, पिवरे।

लै०-Withania somnifera (विथेनिया सम्नीफेरा)

व्यवहार-जड़। मात्रा-३ माशे से १ तोला।

अश्वगन्धापत्रलेपो ग्रन्थिगण्डापचीन् हरेत्॥ शा० नि०॥

८० पाठा (पाढ) पृ० २०४

हि०-पाठा, पाठ, पाठी पाढ, पाढी, पुरइनपाढ़ी, पुरईन पाती। बं०-आकनादि, निमुक, निमुका, नेमुक, चक्रपाठा। म०-पहाड़, पहाड़मूल। गु०-पाड, कालीपाठ, कालीपाड, करंढीउ, करेंटीभूल, करेंढ़ियु। क०-पाठा, अगुरुसुटि, अगुलुशुटी, अगुलुशोठि। ता०-पाडा। उ०-अकान्विन्धि, पाकन्विन्धि। तु०-तिप्पले। गोवा०-पारबेल। तै०-चिरबुद्दी॥

लै०-Cissampelos Pareira (सिस्समपेलोज़ परेइरा)।

,,-Stephania Hernandifolia(स्टेफानिया हरनएडीफोलिया)

व्यवहार—जड़। मात्रा—६—९ माशे।

पाठा दो प्रकार की होती है—१ छोटी पाठा, २ बड़ीपाठा।

लघुपाठागुणाः—

लघुपाठा तिक्तरसा विषघ्नी कुष्ठकण्डुनुत्।

छर्दिहृद्रोगगरजित् त्रिदोषशमनी मता॥ रा० नि०॥

८१ श्वेता त्रिवृत् (निसोत) पृ० २०४

हि०-निसोत, निशोथ, पनिलर । ब०-तेडडी, तेड्डी, तेउड़ी, तिउड़ी, नकपतर, पिथोरो । म०-निशोतर, तेंड । क०-तिगडे, तियड़ । मु०-कुटकुवी, फुटकुरी, निशोओर। तै०-आलतेगड़ा, आलतेगड़ । ता०-शिवदइ । गु०-नशोतर । फा०-निशोत । अ०-तुर्बुद, तुरबुद ।

अं० Turbeth Root (टरवेथ रूट) ।

ले०-Ipomoea Turpethum (आईपोमोइया टरपेथम्)

व्यवहार-जड़ । मात्रा-३-९ माशे ।

निसोत-सफेद, काले, लाल फूलों के भेद से ३ प्रकार की होती है, इन में सफेद निसोत-ही उत्तम होती है अन्य निसोत साधारण होती हैं ।

श्वेतनिसोत के नाम—

हि०-सफेद निसोत (पनिलर)। बं०-श्वेततेउडी। म०-पाढण्या फुलांचा निशोतर । गु०-धोलाफूलनु नशोतर ।

मात्रा-२ मासे से ४॥ माशे पर्यन्त ।

८२ श्यामात्रिवृत् (कालो निसोत) पृ० २०९

हि०-कालानिसोत (थ), श्याम पनिलर । बं०-कालतेउडो । क०-केप्पनेयतिगडे ।

मात्रा—१—३ माशे ।

रक्तत्रिवृन्नामानि—

रक्तपुष्पा रक्तमूला कलिङ्गा परिपाकिनी ।
त्रिवृता निःसृताऽरुणा सूत्रमध्या च सा स्मृता ॥

अस्या गुणाः—

रक्ता त्रिवृत् कटुस्तिक्ता कटूष्णा रेचनी च सा ।
ग्रहणीमलविष्टम्भहारिणी हितकारिणी ॥ रा० नि० ॥

मात्रा—३—६ माशे ।

सामान्यत्रिवृद्गुणाः—

त्रिवृत्तिक्ता कटूष्णा च कृमिश्लेष्मोदरार्त्तिजित् ।
कुष्ठकण्डूव्रणान् हन्ति प्रशस्ता च विरेचनी ॥ रा० नि० ॥

८३ लघुदन्ती (दन्ती) पृ० २०९

हि०-दन्ती, छोटीदन्ती, लघुदन्ती, दातोन, दातुनी, दतुईन, तिरिफल, जमालगोटे की जड़ । म०-दान्ती, लघुदन्ती । ब०-दन्ती गाछ हकुम । तै०-दन्तिचेट्टु, दन्तोचेट्टु कोंड अमदुम । गु०-दाती, दांतएटले, नेपालनामुल, दातीमूल । मु०-जामाल गोटा । फा०-दंद, बेख बेदंजीर खताई । अ०-हबुलं मुकुल, अस्लब्बुस्सला तीन । Muell.-Arg.

ले०-Baliospermum Axillare (बालिओसपरमम एक्जीलेयर)

व्यवहार—जड़ । मात्रा—१—३ माशे । Fam. Euphorbiaceae

दन्तीगुणाः—

दन्ती कटूष्णा शूलामत्वग्दोषशमनी च सा ।
अर्शोव्रणाश्मरीशल्यशोधनी दीपनी परा ॥ रा० नि० ॥

यद्यपि जमाल गोटे को दन्तीबीज कहते हैं तथापि जमालगोटा उक्त दन्ती का बीज नहीं है ।

८४ बृहद्दन्ती (बड़ी दन्ती) पृ० २०९

हि०-दन्ती बड़ी, बड़ीदन्ती, मुगलाई अंड, वनरेड़ा, बंगरेड़ा । गु०-रतनजोत, मोटानेपाल । म०-थोरदन्ती, मोगली एरंड । फा०-शकार हजुबा । अ०-अबुखलसा । क०-एरडने दन्ती । ब०-बागवरेंडा, लालभेरेंडा । तै०-नेपलम । ता०-काट अमनक ।

ले०-Jatropha Curcas (जेट्रोफा करकास) ।

व्यवहार—जड़ । मात्रा—१—३ माशे ।

इसके बीज जमालगोटे से बड़े होते हैं । अतः वह जमालगोटा नहीं है । एक प्रकार की और बड़ी दन्ती होती है जिसका लैटिन नाम—Jatropha Glandulifera (जेट्रोफा ग्लैण्डचुलीफेरा) है । इसके भी बीज जमालगोटा नहीं हैं ।

भद्रदन्तीनामगुणाः—

भद्रदन्ती केशरुहा भिषग्भद्रा जयावहा ।
भद्रदन्ती कटूष्णा च रेचनी कृमिहा परा ।
शूलकुष्ठामदोषघ्नी तुन्दामयविनाशिनी ॥

बृहद्दन्ताबीजगुणाः—

तिक्तैरण्डस्य बीजं तु रसपाके गुरु मधु । स्निग्धं च रेचकं वृष्यं बृंहणं च बलप्रदम् । कफपित्तप्रदं चैव वामकं वातदाहकृत् ॥

८९ जयपालः (जमाल गोटा) पृ० २०९

हि०–जमालगोटा, जमलगोटा, अजेपाल । बं०–जैपाल । म०–जपाल । क०–जेपाल, नेपाल । गु०–नेपालो, नेपालनाबीज । को०–मुगलानी अंड, (अरंड), तुख्मे बेद अंजीर, तुख्मे बेदंजीर खताई । अ०–हबुस्सलातीन, हब्बसत्कीतीन । फा०–तुख्मे बेदु अन्जीर खताई ।

ले०–Croton Tiglium (क्राटन टिगलीयम)

व्यवहार—बीज (शुद्ध) । मात्रा—½—१॥ रत्ती ।

इसका क्षुप–बड़ा, बारहो मास हरा भरा रहने वाला होता है शाखा–रोमयुक्त छोटी छोटी । पत्ते–२–४ इंच लम्बे चौड़े अंडाकार किञ्चित् अनीदार नुकीले और कंगूरेदार होते हैं । फूल–रोयेंदार । बीजकोष—पौन से १ इञ्च लम्बे गोलाकार होते हैं । वस्तुतः ये ही बीज जमालगोटा कहे जाते हैं ।

उत्पत्तिस्थान—

आसाम, बंगाल, ब्रह्मा, दक्षिण की ओर मलाका और सीलोन है ।

अस्य गुणाः—

जयपालः कटुरुष्णः कृमिहारी विरेचकः ।
दीपनः कफवातघ्नो जठरामयशोधनः ॥ रा० नि० ॥

अस्य शोधनविधिः—

स्विन्नं गोमयतोये वा दुग्धे वा जयपालकम् ।
खर्परीमृदुभृष्टं तन्निःस्नेहं शुद्धिमृच्छति ॥ आ० सं० ॥

अस्य तैलगुणाः—

तैलं निकुम्भबीजोत्थमत्युग्रं रेचनं परम् ।
आनाहमुदरं हन्ति संन्यासं च शिरोगदम् ॥
धनुःस्तम्भं ज्वरोन्मादं गदमेकाङ्गसंज्ञकम् ।
आमवातं च शोथं च मर्दनात् कासनाशनम् ॥ आ० सं० ॥

९० इन्द्रवारुणी (इन्द्रायन) पृ० २०९

हि०–इनारुन, इन्द्रायण, इन्द्राय(इ)न, इन्दारून, माहुरी, माहुरो,

नारुन, इन्दोरनी, इन्द्रारन, फरफेंदु, फरफेंदुवा, गोडुम्बा। ब०-रा (र)खालशशा, राखालनाडु, माकाल, राखालताडु। म०-इन्द्रावण, कांवडल, कडुइन्द्रायण। मा०-गरडुमो, तसतूम्बो, तसतुम्बो। गु०-इन्द्रर वरणी, इन्द्रवरणु। क०-हामेक्क, हावुमेक्क, कायि। द्रा०-गड़तुम्बो, आत्ततुमाट्टे, आत्ततुम्मिड़िकाय। ते०-एतिपुच्छा, एटिपुचचा पुस्तकाय, पापर, एटिपुच्चकायि। ता०-पेयकमटी, पेयकामट्टी, टुमट्टी। पं०-तुमला, तुम्बो, तुम्बा, फरफेंदु। फा०-खुरपुजेतल्ख, हिन्दबानोहेतल्ख, शिरंग। अ०-हञ्जल, अडलकम, अलकम।

अं०-Colocynth (कोलोसिन्थ)।

ले०-Citrullus Colocynthis (सिट्रुलस कोलोसीनथीस्)।

व्यवहार—फल, जड़। मात्रा—१—३ माशे।

इन्द्रवारुणीगुणाः—

इन्द्रवारुणिका तिक्ता कटुः शीता च स्वेदनी।
गुल्मपित्तोदरश्लेष्मकृमिकुष्ठज्वरापहा॥ रा० नि०॥

८७ महेन्द्रवारुणी (बड़ी इन्द्रायण) पृ० २०६

हि०-बड़ी इन्द्रायण, बड़ीइनारुन। म०-थोड़ कांवडल, मोरीइन्द्रवारुणी, बड़िलइन्द्रवारुणी। क०-हरियहामेक्के। ब०-कुन्दुरुकी, बड़माकाल। गु०-गाब सुकनु। द्रा०-गडतुम्बो। पं०-तुम्मा। दे०-घुले इन्द्रावण।

ले०-Cucumis Trigonus (कुकुमिस ट्रीगोनस)। Roxb. Fam. Cucurbitaceae (कुकुर्बिटेसी) रामा

व्यवहार—फल, जड़। मात्रा—१—३ माशे।

पूर्वोक्त दो प्रकारकी इन्द्रवारुणी से भिन्न एक और इन्द्रवारुणी होती है जिसके फल लाल होते हैं।

३ लाली-इसका संस्कृतनाम—महाकाल, रक्तमहाकाल, रक्तेन्द्रवारुणी आदि है। भाषामें-लाल इन्द्रायण, (माहुरो-माहुरी) आदि नाम है। बं०-माकाल।

ले०-Trichosanthes Palmata (ट्रिचोसैन्थीस पामेटा) Roxb. (Fam. Cucurbitaceae कुकुर्बिटेसी) रामा

महेन्द्रवारुणीगुणाः—

अन्येन्द्रवारुणी कण्ठरुजं च श्लीपदं तथा।
नाशयेदिति संप्रोक्ता गुणाश्चान्ये तु पूर्ववत्।
रसे वीर्ये च पाके चाधिका प्रोक्ता गुणैरियम्॥ नि० र०॥

८८ नीली (नील) पृ० २०६

हि०–नील, नीलीवृक्ष, लील। म०–गुली, लघुनीली । बं०–नीलगाछ । क०–नीली, हरियनीली, हरिपनीली, निलीगिड़ । गु०–गली । तै०–नीलीचेट्टु, नलपेट्टु, गरिट, पेट्टनीली चेट्टु । प्रा०–वस्मा । द्रा०–नीली । अ०–नीलज ।

ले०–Indigofera Tinctoria (इण्डीगोफेरा टिंक्टारिआ)

अं०–Common indigo (कोमन इण्डीगो) । Fam. Leguminosae. (लेग्युमिनोसी)

व्यवहार—पञ्चाङ्ग । मात्रा— २—४ माशे ।

महानीलीनामानि—

अन्या चैव महानीली अमरा राजनीलिका ।
तुत्था श्रीफलिका मेला केशाह्वा भत्सपत्रिका ॥

हि०–बड़ानील । बं०–बडनील । म०–थोरनीली । गु०–मोटोगलो । क०–हिरीपनील ।

अस्या गुणाः—

महानीली गुणाढ्या स्याद् रङ्गश्रेष्ठा सुवीर्यदा ।
पूर्वोक्तनीलिकातस्तु सगुणा सर्वकर्मसु ॥

इसी का भेद–जंगलीनीलनी होती है ।

८९ शरपुङ्खः (सरफोंका) पृ० २०६

हि०–सरफोंका, सरफोका । बं०–बननील । म०–उन्हाली, रानटीनील, जंगली कुलटी । गु०–शरपुंखा । तै०–तेल्ल वेंपलिचेट्टु, प्रापाराचेट्टु, मुलुबेम्पली । क०–शरपुंखा, येरडुकोगिंग । मा०–शरपंखा, कोल्लुक्काय वेल्लयि, कोल्लुक्कवकेल्लपि । द्रा०–जंलि कुलथि । मु०–जंगलि कुलत्थि । प०–भटमकराती, झोजरू ।

ले०–Tephrosia Purpurea LINN (टफ्रासिया परपूरिया) । Leguminosae

व्यवहार—जड़, पंचाग, पत्ते । मात्रा—३—६ माशे ।

इसके फल रोवेंदार होते हैं । एक और भी शरफोंका होता है जिसके फल रोवेंदार नहीं होते ।

श्वेतशरपुङ्खाया नामानि गुणाश्च—

शराभिधा च पुङ्खा स्याच्छ्वेताद्या सितसायका।

सितपुंखा श्वेतपुंखा शुभ्रपुङ्खा च पञ्चधा ॥
शरपुङ्खा कटूष्णा च कृमिवातरुजापहा।
श्वेता त्वेषा गुणाढ्या स्यात् प्रशस्ता च रसायने ॥ रा० नि० ॥

कण्ठपुङ्खाया नामानि गुणाश्च—

अन्या तु कण्ठपुङ्खा स्यात् कण्ठालुः कण्ठपुङ्खिका।
कण्ठपुङ्खा कटूष्णा च कृमिशूलविनाशिनी ॥ रा० नि० ॥

इसकी मात्रा—१ माशे तक है।

१० यवासः (जवासा) पृ० २०६

हि०-जवासा, धमासाभेद। बं०-यवासा। गु०-यवासो। म०-कांटे चुवुक, तांवड़ाधमासा। क०-तोरेइंगलु, तोरेइंगुल। ते०-पिन्नरेगटि, दुल गोंडि। फा०-फराक्नुन सुतरखार। अ०-अलगुलहाज। प०-जमाहा।

ले०- Alhagi Maurorum (अलहेजी मौरोरम)।

व्यवहार—पञ्चाङ्ग। मात्रा—१—४ माशे।

फारस में उत्पन्न हुये इसके वृक्षसे "यवास शर्करा" या "तुरंजवीन" प्राप्त किया जाता है।

११ दुरालभा (धमासा) पृ० २०६

हि०-धमासा, हिंगुआ, हिंगुवा, हिगुया, हिगुना, हिगुण। बं०-दुरालाभा, दुरालभा, दुराला, धमाहार। मा०-गु०-धमासो। म०-धमासा, बेलिकामूली। क०-बल्लि दुरुबे (दुधुबे)। तै०-पिलरे गटिटुल गोड़ि पिलरे गटिदुल गांडि, दूरगोविल। प०-धमाह, धमाहा। यू०-धमाहा। फा०-बादावर्द। अ०-शुकाई।

ले०-Fagonia Arabica (फागोनिया एरेबीका)।

व्यवहार—पञ्चाङ्ग। मात्रा—१—६ माशे।

दुरालम्भा कटुस्तिक्ता सोष्णा क्षाराऽम्लिका तथा।
मधुरा वातपित्तघ्ना ज्वरगुल्मप्रमेहजित् ॥ रा० नि० ॥

१२ मुंडी (गोरखमुण्डी) पृ० २०७

हि०-मुण्डी, घुण्डी, मुरली, भरली, गोरखमुण्डी। बं०-थुलकुड़ी, भुइकदम्ब, मुडुरी, मुरमुरिया, बागलनुडी, मुडिरी। म०-धाकटीमुण्डी, बोडथरा, बरसबोडी। गु०-नहानीमुण्डी, मुण्डी। क०-कापो बोडतर,

किपेबोलतर, बेडितर। ते०-बोड सरपुचेट्टु, बोडतरमु, बोडातरपु । ता०-कोट्टक, कोट्टक करण्डई । प०-गु०-म०-गोरखमुण्डी । द्रा०-करन्दैः। मला०-मिरनगनी, अट्टकामन्नी ।

ले०-Sphaeranthus Indicus (स्फिरेन्थस इण्डिकस)

Syn:-Sphaeranthus Mollis (स्फिरेन्थस मोलिस)

व्यवहार—फल, पंचांग । मात्रा-२ माशे से १ तो० ।

९३ महामुण्डी (बड़ीमुण्डी) पृ० २०७

हि०-बड़ीमुण्डी, गोरखमुण्डी, निनाई । बं०-बड़थुलकुडि, गोरक्षमुंडी। म०-मोढ़ी मुण्डी, बोडथरा । गु०-बोडीयोकलार । क०-हरियबोलतर, हिरियबोडन्तर ।

व्यवहार—फल, पञ्चाङ्ग । मात्रा-२ माशे से १ तो० ।

अस्या गुणाः—

महामुण्डी तु मधुरा तिक्ता चोष्णा रसायनी ।
रुच्या स्वर्या प्रमेहघ्नी वातनाशकरी मता ॥
अन्ये गुणास्तु मुण्डीवज्ज्ञेया वैद्यैश्च सूरिभिः ॥ (नि० र०)

९४ अपामार्गः (चिरचिरा) पृ० २०७

हि०-लटजीरा, चिचिरी, आंधीझाड़ा, ओंगा । म०-अघाड़ा, आघीझाड़ो । बं०-आपा, आपांग । गु०-अघेडो, झंझेटा, लिपटौवा । क०-उत्तरेणी, उत्तरणो । तै०-दुच्चिणीके । मा०-आंधीझाडो, उंगा । ता०-नायुरुवि । मला०-कड़ालर्डी । ढाका०-ऊषतलेड । चटगांव०-उहितलेड़ा । रंगपुर०-चढ़चिढ़िया । काशी०-चिटचिटा । द०-झिझड़ा । नै०-अपामा । त०-नायुरुवी । प०-पुठकण्डा, पठकण्डा । यू०-ओंधा । फा०-खार वाझगूनह, खारेवाजां । अ०-अतकमह, अतकुमाह, अटकमाह ।

अं०-The Prickly Chaff Flower (दी प्रीकली चाफ फ्लावर)

ले०-Achyranthes Aspera (एचिरेन्थस एसपीरा)

व्यवहार—पञ्चाङ्ग । बीज ।

मात्रा-१-२ तो० । ३-६ मा० ।

९५ रक्तापामार्गः (लाल चिरचिरा या ओंगा) पृ० २०७

हि०-रक्तापामार्ग, लालओंगा, (चिरचिटा) । बं०-रागां अपामांग,

लाल आंपा, रक्तापांग। म०-तांबड़ा आघाड़ा, लालआगाड़ा। गु०-रातो-अघेडो, (झिपटो)। क०-कैंपिगुत्तरणे, बड़ा अघाडा। तै०-उत्तरायणी।

१६ कोकिलाक्षः (तालमखाना) पृ० २०८

हि०-तालमखाना, कैलया। बं०-कुलिया खाडा, कुलेखाड़ा, शूलमर्द्दन। म०-बिखारा, कोलसा, कालसन्द। तै०-गोलिमिडिचेट्टु, गोब्बिचेट्ट। गु०-एखरो। क०-कलुगोलिके, नीरगोल। को०-कोलिस्ता, कोळशी। उ०-कुइलिरखां, माखुरेण। ता०-निरमुल्ली। म०-तालमखाणां।
अं०-Long Leaved Barlaria (लॉङ्ग लीव्ड बारलेरिआ)।

ले०-Hygrophila Spinosa (हाइग्रोफिला स्पाइनोसा)।

व्यवहार—बीज। मात्रा-३-७ माशे।

तालमखाना छोटा और बड़ा भेद से दो प्रकार का होता है।

अस्य पत्रगुणाः—

पर्णञ्च स्वादु तिक्तं स्याच्छोथशूलविषापहम्।
आनाहवातमुदरं पाण्डुरोगञ्च नाशयेत्॥
बन्धञ्च मलमूत्राणां वातमेवं च नाशयेत्।
बृद्धस्य कोकिलाक्षस्य गुणास्त्वस्य समा मताः॥

अस्य बीजगुणाः—

कोकिलाक्षस्य बीजं तु शीतं स्वादु कषायकम्।
तिक्तं वृष्यं गुरु बल्यं ग्राहकं गर्भस्थापनम्॥
कफवातकरं चैव मलस्तम्भकरं तथा।
रक्तदोषं च दाहं च पित्तं चैव विनाशयेत्॥

१७ अस्थिसंहारः (हड़संहारी) पृ०।२०८

हि०-हड़जोड़, हड़संघारी, हड़जोड़ी, हड़जोरवा। बं०-हाड़भांगा, हाड़जोड़ा। कांडवेल, मंगरवल्ली। तै०-नाल्लरु। ता०-पेरंडै। गु०-हाड़-सांकल। पं०—हाड़जोड़। म०-हाड़संधी, कांडवेल। म०-हाडजोड़।

ले०-Vitis Quadrangularis (विटिस् कोड्रैंग्युलेरिस)

व्यवहार—पञ्चाङ्ग। मात्रा-१-२ माशे।

यह दुधारी, त्रिधारी, चौधारी भेद से ३ प्रकार की होती है।

त्रिधाराचतुर्धारयोर्गुणाः—

त्रिधारा काण्डवल्ली तु सरा लघ्व्यग्निदीपनी ।
रूक्षोष्णा मधुरा वातकृम्यर्शःकफनाशिनी ॥
चतुर्धारा काण्डवल्ली भूतोपद्रवशूलहा ।
अत्युष्णाऽऽध्मानवातांश्च तिमिरं वातरक्तकम् ॥
अपस्मारं वातरोगं नाशयेदिति कीर्त्तितम् ।

१८ कुमारी (घीकुवार) पृ० २०८

हि०–घीकुवार, घीगुआर, कुआर पाठा, घीग्वार, कारपाठी । बं०–घृतकुमारी । म०–कोरफड, कोरकांडा, कोरफांडा । गु०–कुंवार, कुवार । क०–लोयिसर, नोयिसर । ते०–पिन्नगोरिएट, कलवन्द, कालाबांडा, तावकत्तालै । अं०–मुसव्वर, सिब्रसुकुतरे, हवारा । ता०–कट्टाले । फा०–दरखते सिन्त, मुसव्बीर, दरख्ते खिन्न । तु०–नोलिसारा । मला०–कट्टावाला । यू०–फेकरा ।

ले०–Aloe Barbedense (आलाई वार्बडेन्स) ।

व्यवहार—पाठा (गूदा) । मात्रा–१–२ तोले ।

अस्या दण्डपुष्पयोर्गुणाः—

तन्मध्यदण्डो मधुरः कुमारीसदृशो गुणैः ।
विशेषात् क्रिमिपित्तघ्नः पुष्पमस्य गुरु स्मृतम् ॥
वा[illegible]पित्तं क्रमींश्चैव नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥

कुमारीसारतोद्भवस्यैलीयकस्य नामानि—

सं०–एलीयकः, कृष्णबोलः, कुमारीसारतोद्भवः । हि०–एलवा, एलुवा । म०–कालाबोल, एल्याबोल । गु०–एलियो, शिकातरी एलियो । तै०–भोलं । फा०–मुसव्बीर । यू०–फेकरा । अ०–सीबरसुकुतरे ।

अं०–सोकोट्राइन आलोज Socotrine Aloes ।

ले०–आलो सोकोट्रिना Aloe Socotrina ।

अस्य गुणाः—

कृष्णबोलः कटुः शीतो भेदको रसशोधनः ।
शूलाध्मानकफान् वातं क्रिमिगुल्मौ च नाशयेत् ॥ रा० नि० ॥

९९ श्वेतपुनर्नवा । पृ० २०८

हि०-सफेदपुनर्नवा, विषखपरा, सफेदसांठ, सफेदगदपुरना । बं०-श्वेतगांदावन्ने, श्वेतपुण्या । म०-पाढरी घेटुली, श्वेतपण्या । गु०-धोली साटोडी । विलीय दुबेल्लड किलु । तै०-गालजेरू, अति कम्मेदि । ता०-मूकरत्तैकीरै । अ०-हन्दकूकी, जन्दकोका । प०-इटसीट्, अट्सट् । फा०-दल्बअस्पत ।

ले०-Trianthema Pentandra (ट्रीयनथमा पेनटेण्ड्रा)

व्यवहार—जड़ । मात्रा—६ माशे से १॥ तोला ।

घृतेन मूलकं चास्या ह्यञ्जितं हन्ति पुष्पकम् ।
मधुना सह मूलं तु ह्यञ्जितं स्रावनाशकम् ॥
अञ्जितं मार्कवरसैर्नेत्रकण्डूनिवारणम् ।
केवलेन जलेनैव ह्यञ्जितं तिमिरापहम् ॥
जलेन गोशकृता च पिप्पल्या चाञ्जितं यदा ।
रात्र्यान्ध्यं नश्यते तेन चोष्णः पर्णरसः स्मृतः ॥ नि० र० ॥

अस्याः पत्रशाकगुणाः—

पौनर्नवी पत्रशाका चातिरूक्षा कफापहा ।
वाताग्निमान्द्यगुल्मघ्नी प्लीहाशूलविनाशिका ॥ (नि० र०) ।

१०० रक्तपुनर्नवा (गदहपुर्ना) पृ० २०९

हि०-लालपुनर्नवा, लालविषखपरा, लालसांठ, गदहपुर्ना । बं०-रक्तगांदावन्ने । म०-तांबडीघेंटुली, रक्तवसु । गु०-रातां फूलनी साटोडी, रातीसाटोडी । क०-केम्प नेल्लड किलु, कडियगणजिरे । ते०-तेल्ला अटाता मामिडि, अतिमुदी । प०-खट्टन । ता०-मुक्कीराटे, मलायलभ, ताभिलाभा । फा०-इस्पिस्त सहराई । अ०-रतेन्ना ।

ले०-Boerhaavia Diffusa (बोयरहावीया डिफ्यूसा)

व्यवहार—जड़ । मात्रा-६ माशे से १॥ तोले ।

एक प्रकारको नीले फूलको भी पुनर्नवा होती है ।

जिसके गुण—

नीला पुनर्नवा तिक्ता कटूष्णा च रसायनी ।
हृद्रोगपाण्डुश्वयथुश्वासवातकफापहा ॥ रा० नि० ॥

१०१ गन्धप्रसारिणी (पसरन) पृ० २०९

हि०-प्रसारणी, प्रसारनी, पसरन, गन्धप्रसारणी गन्दप्रसारनी, गन्धाली, गन्दाली, खीप । बं०-गन्धभादुले, गन्धमादुलिया, गन्धाली, गन्धमादला, गन्धभादुली । म०-चान्दवेल, चान्दबेलि, हिरनबेल, नित्तणबेलि । गु०-प्रसारणवेल, नारी । क०-हेसरणे, सोरेणेगिड़ । तै०-गोन्तेमगोरूचेट्टु, सविरलेचेट्टु । प०-खींप । मु०-प्रसारन, प्रसारम । आसाम०-बेडोली सुट्टा । लिपचा०-तकपोड़िक । सिक्कम०-पदेबिरी ।

ले०-Paederia Foetida (पाडेरीया फूटीडा) ।

व्यवहार—पञ्चांग । मात्रा १-२ तोले ।

१०२ कृष्णशारिवा (काली अनन्त मूल या करिया सांबां) पृ० २०९

हि०-कालीसर, करियांसाऊ, सालसा, कालीसांबा । बं०-कृष्णअनन्तमूल, श्यामालता । म०-काली उपलसरी । गु०-कालाफूलवाली उपलसरी, कांडडियाकुठेर । क०-सारिवा, नीलतिगा । तै०-नीलतिग । यू०-कालीसुर । को०-उपरसुली । मरा०-कालीउपरसरी, काली कावली । मा०-कालीसर, कृष्णसरवा । प०-कारिय्या साउ । खा०-गौरब्बो बल्ली । ते०-नलतिग । ले०-Ichnocarpus Frutescens (इचनोकार्पस फ्रूटेस्सेन्स)

व्यवहार—जड़ । मात्रा—३ माशे से १ तोला ।

[illegible]ष्णा तु शारिवा शीता वृष्या च मधुरा मता ।
[illegible]ी चैव संप्रोक्ता गुणाश्चान्ये तु पूर्ववत् ।। नि० र० ।।

[illegible]०३ श्वेतशारिवा (श्वेत अनन्त मूल) पृ० २०९

हि०-गौरा[illegible]र, गौड़ीया साउ, गौड़ीसांब, कपुरी, सालसा । बं०-अनन्तमूल । म०-श्वेतउपलसरी । गु०-श्वेतउपलसरी, डोली उपलसरी । ते०-पलासगन्धी, पालचुक्कनीडेरू, पालसुगन्धी । ता०-नन्नारी । क०-करिवंट । मु०-उपलसार ।

अं०-Indian Sarsa parilla (इण्डियन सारसा पारिला) ।

ले०-Hemidesmus Indicus (हेमीडीसमस इण्डिकस) ।

व्यवहार—जड़ । मात्रा—३ माशे से १ तोला ।

श्वेता तु सारिवा शीता मधुरा शुक्रला गुरुः ।
स्निग्धा तिक्ता सुगन्धिश्च कुष्ठकण्डूज्वरापहा ।।

देहदौर्गन्ध्याग्निमान्द्यश्वासकासारुचीहरा ।
आमत्रिदोषविषहृद्रक्तकुष्ठप्रदरापहा ॥
कफातिसारतृड्दाहरक्तपित्तहरा परा ।
वातनाशकरी प्रोक्ता ऋषिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ रा० नि० ॥

१०४ भृङ्गराजः (भांगरा) पृ० २१०

हि०-भांगरा, भंगरा, भेंगरिया, भंगरैया, घमिरा । बं०-भीमराज । म०-माका, मांका । गु०-भांगरो । क०-गरुग, गरुग मुरु । ते०-गुंटकलगरुचेट्टु, भृंगराजपुचेट्टु । मु०-पिवलभांरा । उ०-कालाकेशदुरा । फा०-जमर्जर । अ०-हजीज । ले०-Eclipta Alba (इकलिप्टा एलबा)

व्यवहार—पञ्चांग । मात्रा—६ माशे से १ तोला ।

भांगरा-सफेद, काले, पीले, फूलों के भेद से तीन प्रकार का होता है । उनमें पीलेफूल भांगरे का लैटिन नाम-Wedelia Calendulacea (वेडिलिया कालेण्डुलेसिया) है काले फूल का भांगरा प्रायः नहीं मिलता है ।

१०५ शणपुष्पी (पटसन) पृ० २१०

हि०-शनपुष्पी, शणहुली, सनई, बनसन, पटसन, घागही, झुनझुनिया । बं०-वनशणई । म०-शणताग, शनताग, खुलखुला । गु०-शणपुष्पो । क०-गिलुगिच्चि, चिक्कगिलु, कुलकुला । ते०-शणमतुत्रेड्ड, [illegible]न पनर । ता०-जेनष्पनर । फा०-लादना । मा०-बनशण । प०-छोटा[illegible] ।

ले०-Crotalaria Verrucosa (क्रोटेलेरिया वे[illegible]सा)

इसके दो और भेद होते हैं उनके संस्कृत नाम क्रमसे ये[illegible]—

द्वितीयाऽन्या सूक्ष्मपुष्पा स्यात् क्षुद्रशणपुष्पिका ।
विष्टिका सूक्ष्मपर्णी च बाणाह्वा सूक्ष्मघण्टिका ॥
तृतीयाऽन्या वृत्तपर्णी श्वेतपुष्पा महासिता ।
सा महाश्वेतघण्टी च सा महाशणपुष्पिका ॥

एतयोर्गुणाश्च—

शणपुष्पी क्षुद्रतिक्ता वम्या रसनियामिका (रा० नि०)
महाश्वेता तु तुवरा चोष्णा सूतनियामिका ।
मोहने स्तम्भने चैव प्रशस्ता ऋषिभिः स्मृता ॥ नि० र० ॥

शणस्य नामानि गुणाश्च—

शणस्तु माल्यपुष्पः स्याद्वामकः कटुतिक्तकः ।
निशाद्नो दीर्घशाखस्त्वक्सारो दीर्घपल्लवः ॥
शणस्त्वम्लः कषायश्च मलपातकरो मतः ।
गर्भपातं रक्तपातं वान्तिकृच्चामपातकृत् ॥
उष्णो वातकफघ्नश्च अङ्गमर्दरुजापहः ।
अस्य प्रसूनं प्रदररक्तदोषहरं स्मृतम् ॥ नि० र० ॥

तद्बीजगुणाः—

शीतलं शणबीजं स्याद् ग्राहकं च गुरु स्मृतम् ।
इतरे तु गुणाः सर्वे शणवत् परिकीर्त्तिताः ॥ (नि० र०)

१०६ त्रायमाणा (त्रायमान) पृ० २१०

हि०—त्रायमाण, त्रायमान, परवुर । बं०—वलाडुमुर, बालाडुमर, वनभादुलिया, वलालता, गौरीशिवर । म०—त्रायमाण । गु०—त्राहिमान । क०—त्रायमाणा, हिमवती, निरामेवल्लि । फा०—अस्प्रका, असफाक । गु०—त्रायमाण । मा०—दत्री । तै०—कलुगानमु, बुरोनी । प०—देवबला । मालवा०—वल्लितेरगमा । लै०—(१) Ficus Heterophylla (फिकस हेट्रोफीला) लै०—(२) Thalictrum Faliolosum (थालिकट्रम फेलिओलोजम)

व्यवह[illegible]ांग । मात्रा—२-६ माशे ।

[illegible] मूर्वा (चुरनहार) पृ० २१०

हि०—मू[illegible]महार, मुरहरी, मडोर फली, चूरनिहार, मुहरी । बं०—मूर्वा, मुरहर, [illegible]चमुखो, वेड़ावक्र । क०—मुहुरसि, मोरहरी, इग्गोरीटेग । म०—मोरवेल, महुरसी, गोनस पत्रा । गु०—मोरबेल, भुई पीलुडो । तै०—सांगा, चागचेट्टु, सग, सांग, षागचेटटु । ता०—मरुल । मु०—मोरवेल । पं०—चूरनहार । मा०—मुरायली । द्रा०—वेल्लिपरिति ।

अं०—(१) Bow String Hemp (बो स्ट्रिङ्ग हेम्प) ।
,, —(२) Swet Marjoran (स्वीट मारजोरन) ।
लै०—(१) Cleinates Triloba (क्लेइनेटीस ट्रीलोबा)
,, —(२) Sansevicria Roxburghiana सैन्सीवीक्रिया रौक्सबरघाइना ।

,, –(३) Sansevicria Zeylanica (सैन्सेवीक्रिया जेलनीका)। बंगाल के कविराज सैन्सेवीक्रिया रौक्सबर्घाइना को ही मूर्वा मानते हैं।

व्यवहार—पंचांग । मात्रा—६-७ माशे ।

अस्याः कन्दगुणाः—

कन्दोऽस्याः कृमिनाशकः । कृमिकीलकरोगं च विषदोषं च नाशयेत् ॥

१०८ काकमाची (मकोय) पृ० २१०

हि०-मकोय, कवैयानी, कवैया, भटकोआं, भटकोइयां। बं०-काकमाची, गुडकामाई, मदनमधुनी। म०-कागोणी, लघुकावली, कामोनी, कांगोरणी। गु०-पीलुडी नी जात। क०-कवईकाके, काके, कपाया। फा०-रेवा तरीख, रोवाहतरीख। अ०-एनवुस्सालन, अम्बुसअलव, अनवुस्साल।

लै०-Solanum Nigrum (सोलेनम निग्रम)।

व्यवहार—फल । मात्रा—६-९ माशे ।

१०९ काकनासा (कौआठोढ़ी) पृ० २११

हि०-कौआठोढ़ी। बं०-केउयाठुटी, काकठुटी। म०-थारकावली, श्वेतकावली। क०-हिरिय कागे दोठे, त्रिडिलो कद्गुरलो। तै०-वेलुम सन्दिचेट्टु, कोकि दोंड चेट्टु, पुसगुलि बिन्द चेट्ट। गु०-काकनासा।

लै०-(१) Solanum Indicum (सोलेनम इण्डिकम)

,, –(२) Gymurdma Sylvestre (जीमेरड[illegible]लभेस्टरी)

,, –(३) Aselepias Curassavica (एसेलेपी[illegible]कुरेसावीका)

११० काकजङ्घा (मसी) पृ० २११

हि०-काकजङ्घा, मसी, कौआढेंगा, कौआजंघा। बं०-केउआढेंगा, केउझेका, काटागुड़काउली, काटो गुड़काउली। म०-कांगाचे झाड़, जोरो काग घाव काड़ी। गु०-अघेडी, हघड़ी, काली अघेडी कांग। क०-चिलेच, जिरी चिलेच। तै०-नाला दुची णीके। को०-घावकांडो। पे०-रान किरायता। प०-खतेल खब्बल। यू०-इतरेलाल। म०-धाउसेकी। कारालहर। ते०-वेलम सन्धि। क०-येलुवा संदि।

लै०-Peristrophe Bicalyculata (पेरिसट्रोफी बिकेलोक्युलेटा)

व्यवहार—पञ्चांग, पत्ते । मात्रा—८-९ माशे ।

१११ नागपुष्पी पृ० २११

हि०-नागपुष्पी । म०-नागाली ।

११२ मेषशृङ्गी (मेढ़ाशिंगी) पृ० २११

हि०-मेढ़ाशिङ्गी, मेढ़ासिंघी । बं०-मेढ़ाशिंगे, मेढ़शिङ्गा, छागलबेंटे, गाडलशिङ्गी । म०-मेढ़शिङ्गी । गु०-मरडाशीङ्गी, आटर्डिनो शींग । क०-उरियमारा, कुरुटगे । ता०-शिरुकुरञ्ज । ते०-चिटिमुटो, पुल्लापोड़ा । द्रा०-बट्ट तिरुप्पि । द्र०-परपटरा । फा०-किस्त । अ०-वर्किस्त ।

ले०-Gymnema Sylvestre (जिमनेमा सिल्वेस्टरी)

व्यवहार—पञ्चाङ्ग । मात्रा-३-६ माशे ।

अस्याः फलगुणाः—

फलमस्यास्तु तिक्तकम् ।
कटूष्णं दीपनं हृद्यं रुच्यं चाम्लं पटु स्मृतम् ॥
स्रंसनं कुष्ठमेहघ्नं कासक्रिमिकफप्रणुत् ।
विषदोषं व्रणं वातं नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥ (रा० नि०)

११३ हंसपदी (हंसराज) पृ० २११

हि०-हंसपदी, हंसपगी, हंसराज, गोधापदी, हंसपादी, लालरङ्गका लजालु । बं०-गोयाले लता । गु०-हंसराजा । म०-लाललजालु, बारीकलजालुभेद, लाललजालुभेद । क०-नविलडि, हंसपादि । ते०-हंसपादमु, हंसपादी, हं[illegible]दिचेट्टु । फा०-परस्याशान, परस्याउशान, परसाउशां परस्यां वशां । [illegible]-शारूलजीन, वरस्यां वशां, शारूलअर्द । मा०-हंसराज । पं०-टिमारिका [illegible] य०-हंसराज । अं०-Maiden Hair (मेडेन हेयर)

ले०-Adiantum Venustum (एडीएण्टम वेन्सेटम)

व्यवहार—पञ्चाङ्ग । मात्रा-३-६ माशे ।

११४ सोमलता पृ० २१२

हि०-सोमलता, सोमवल्ली । बं०-सोमलता । म०-थोरसोमवल्ली, सोमवल्ली । क०-गु०-सोमलता, सोमवल्ली । तै०-पल्लीटीजी, पुल्लतीगे, टिगटसुम्मुडु ।

अं०-Moon Plant (मून प्लैण्ट)

व्यवहार—पञ्चाङ्ग । मात्रा—२—६ माशे ।

यह दुष्प्राप्य ओषधि है अतः इसके अभाव में जो ली जाती है उसका लैटिन नाम—

(सारकोस्टिमा ब्रेविस्टिगमा) Sarcostemma Brevistigma है।

११५ आकाशवल्ली (अमर वेल) पृ० २१२

हि०-आकाशवेल, अमर वेल, अमरवल्लरी, अमरलता। बं०-आलोकलता, आकाशवेल, आलकलता। म०-आकाशवेल, अन्तरवेल। गु०-अमरवेल,। ते०-इन्द्रजाल। अ०-अफतिमून, कसूस। मरा०-सोनवेल। क०-नेदमुदवल्ली, वलुवल्ली, अमरवल्लि। ते०-इन्द्रजाल, पौंचफिंगा। को०-अन्तरवेल, अन्तर्वेल। द्रा०-कोहून। पं०-निराधार। फा०-वरिश, अफ्ती मून।

अं०-The Dader (दी डाडर)।

ले०-Cuscuta Reflexa (कसकुटा रेफलेक्सा)

,,- Cassytha Filiformis (कैसीथा फीलीफारमीस)।

व्यवहार—लता। मात्रा—६ माशे से १ तोला।

यह बड़ी और छोटी के भेद से दो प्रकार की होती है।

११६ पाताल गरुडी पृ० २१२

हि०-पाताल गरुड़ी, छिरेटा, छिरहिटा, छिरहटा, जलजमनी। बं०-शिलिन्दा, शलन्दा। म०-गरुडवेल, भूयमाडल, तानीचाबेल। गु०-पाताल गरुड़ी, बेवडी ओलप, गरणी। ते०-इसरतोगे। दे[illegible]ासनबेल, बासनी, बासन सड़ा। का०-निवलीचाबेल, मुइपाडर। क[illegible]-दागुडि, दागड़ी बल्लि। ता०-कात्तुक कोदी। प०-रतक, पतालगरुणी। फा०-फरीद बूटी। ल०-Coculus Villosus (कोक्युलस विलोसस)

व्यवहार—जड़। मात्रा—६—९ माशे।

११७ बन्दा पृ० २१२

हि०-बन्दा, बन्दाल, बांदा, वदाक, बदाल। ब०-परगांछा, वान्दडा, मान्दरा, परगाछा, वांदरा, वांदु। म०-वादांगुल, कामरूख, वांदे। गु०-गुन्दी, वांदो। क०-वंदणिके। तै०-वाजनीके। दे०-वधक वांद गुड़। अ०-खरकता। ले०-Viscum Album (विसकम एलबम)।

११८ वटपत्री (वडपत्री) पृ० २१२

हि०-वटपत्री, वडपत्री, वड़पत्री, पाषाणभेदी । म०-वटपत्री, वड़पती । बं०-वड पतार कुचा, वड़पाथर कुचि, पातरकुचा । तै०-पिण्डि । गु०-वडपती । ते०-पिरिड वंड चेट्टु । पं०-वटपत्री ।

ले०-Saxifrag Aligutata (सैक्सीफ्रैग एलीगुटाटा) ।

११९ हिङ्गुपत्री (हीङ्गपत्री) पृ० २१२

हि०-हींगपत्री, बहुफली । बं०-रान्दुनो, रान्धुनी । म०-वाफली, फलहिङ्गु । ते०-कोप्पू । प०-बहुफली ।

ले०-Corchorus Antichorus (कोर्कोरस एण्टीकोरस)

१२० वंशपत्री पृ० २१२

हि०-वंसपत्री, वासपाता घास । बं०-वासपाताघास । म०-वेणुपत्री गवत । क०-विदुरपेले, पथाहुल्लु ।

१२१ मत्स्याक्षी (मछेछी) पृ० २१३

हि०-मत्सी, मछेछी, मछरिया, मछैछी । गु०-मत्स्याक्षी, रंतबेलियो । म०-मत्स्याक्षी, जलब्राह्मी, जलपिपली । बं०-मत्स्याक्षी, हिंचेशाक । प०-इन्द्रानी, भटकूण्डी, भटकुण्टी ।

व्यवहार—पञ्चाङ्ग । मात्रा-१-१॥ तोले ।

१२२ सर्पाक्षी (सरहटी) पृ० २१३

हि०-सर[illegible], सरहण्टी, गण्डनी, सरहंची । म०-सर्पाक्षी । बं०-गन्धनाकुली, पान[illegible]उली । प०-सरहटी । म०-मगुस कांदा । गु०-नकुलकन्द । यु०-सिरची ।

अं०-Mongoose Plant (मङ्गूज़ प्लेण्ट)

ले०-Ophiorrhiza Mungos (ओफिओरढ़ीज़ मङ्गोज़) ।

कोई २ इसीको वह बूटी मानते हैं जिसे खाकर नेवला सांपसे बराबर युद्ध करता है । किसीके मत से यह "धवरबरुआ" है ।

१२३ शंखपुष्पी पृ० २१३

हि०-शङ्खाहुली, शंखपुष्पी, कोडिल्ला, संखावली । बं०-शंखाहुली, डानकुनी, चोरकांचकी, शंखाहुल्डर । म०-शंखोली, शंखली, शंखोना,

शंखाहुली । गु०-शंखावली, संखावली । क०-शंखपुष्पी, गुव्वचि । प०-गोरी, कौरियाली, कौड़ियाली । तै०-शंखपुष्पी ।

लै०-Canscora Decussata (कैन्सकोरा डीक्यूस्सटा)

व्यवहार—पञ्चांग । मात्रा-६ माशे से १॥ तो० ।

नीले लाल और सफेद फूलोंके भेद से यह ३ प्रकार को होता है किन्तु गुण में सब समान हैं ।

१२४ अर्कपुष्पी पृ० २१३

हि०-अर्कपुष्पी, अन्धाहुली, औंधाहुली, अर्कहुली, दधियार, हधियार । बं०-बडद्योरुई, श्वेतहड्हुडिया । म०-सूर्यफूलवल्ली, सिरडोडी । गु०-सुरजमुखी । तै०-पलकुरा, तापाले किरई ।

लै०-Holostemma Rheedii (होलोस्टेम्मा रीडीआइ)

१२५ लज्जालुः (लजारू) पृ० २१३

हि०-लज्जावन्ती, शर्मोनी, छुईमुई, लजारू, लाजवती, लजउनी । बं०-लज्जावती, लाजुक । म०-लाजाळु, लाजरी, संकोरणी, संकोरनी । गु०-रिसामणी, रिशामणी, लजामणी । क०-मुदोदरे मुरुटव, मुट्टिदरे मदुड वदु, मुट्टिद मुनिय । मा०-लजाळू ।।प०-छुईमुई । द्रा०-तोट्टा वाड़ि । तै०-मण्गुदामर । लै०-Mimosa Pudica (माईमोसा पुडीका)

यह दो प्रकार की होती है । १ कांटेवाली २ विना कांटेवाली ।

व्यवहार—जड़, पत्ते । मात्रा—६ माशे से १ तोला ।

विपरीतलज्जालुनामगुणाः—

लज्जालुर्विपरीताऽन्या अल्पक्षपबृहद्दला ।
वैपरीत्या च लज्जालुर्ह्यभिधाने प्रयोजयेत् ॥
लज्जालुर्वैपरीत्याहु: कटुरुष्ण: कफप्रणुत् ।
रसे नियामकश्चैव नानाविज्ञानकारक: ॥ रा० नि० ॥

१२६ अलम्बुषा (लज्जालुभेद) पृ० २१३

हि०-फूलसोला, अलम्बुषा, लजालुभेद, लजौनी बं०-पानीलाजकू । ता०-संदेकिरय । ते०-नीरूतलवप्पु

ले०-Neptunia oleracea (नेपटुनिया ओलरेशा) ।

१२७ दुग्धिका (दुद्धी) पृ० २१४

हि०-दुद्धी, दूधिया, दुद्धि, दूधि । बं०-दुधि, दुध्या, चीरुई, दुदूले, खिरुई । म०-लघुदुधी, थोरदुधी, दुधी, खिलकुल । गु०-नागार्जुनी, दुधेली, दुधेलीमोटी, थोरदुधेली । क०-मरिजवणीगे, दुधले । तै०-पिलपालचेट्टु, पिन्नपालचेट्टु । फा०-निशाशत । को०-दुधनी, दुधुर्ली, दादुडी । प०-दूधकबुटी ।

ले०-Euphorbia Pileliufere (युफोर्बिया पिलील्युफेरा) ।

व्यवहार—पञ्चांग । मात्रा—३ माशे से १ तो० ।

दुग्धफेनीनामगुणाः—

दुग्धफेनी पयःफेनी फेनी दुग्धा पयस्विनी ।
लूताऽरिर्व्रणकेतुश्च गोजापर्णी च सप्तधा ॥
दुग्धफेनी कटुस्तिक्ता शिशिरा विषनाशिनी ।
व्रणापसारणी रूच्या युक्त्या चैव रसायनी ॥ (रा० नि०)

ले०-Euphorbia Thymiufolia (युफोर्बिया थैमीफोलिया)

नागार्जुनीनामगुणाः—

नागार्जुनी पयोवर्षा योगिनी लघुदुग्धिका ।
नागार्जुनी तु मधुरा वृष्या रूक्षा च ग्राहिणी ॥
तिक्ता च वातला गर्भस्थापनी कटुका पटुः ।
धातुवृद्धिकरी हृद्या चोष्णा पारदबन्धिनी ।
मलस्तम्भकरी मेहकफकुष्ठक्रमान् हरेत् ॥

ले०-Euphorbia Hypericifolia (युफोर्बिया हाईपेरीसिफोलिया)

दुग्धिका ३ प्रकार की होती है । १ नोकदार लालपत्तों की, २ गोलपत्तों की, ३ मूंगों के दानों के समान छोटे २ पत्तों की ।

१२८ भूम्यामलकी (भू आमला) पृ० २१४

हि०-भुंईआमला, भूमिआंवरा, भोमिआवरा, भद्रआवला, जरआंवला । बं०-भुंईआंवली । क०-आरुनेल्लि, आरुनेल्लीचेट्टु, करिनेल्लि । तै०-नेलाउसीरीके, नेल वुसरिक । गु०-भो आमली, भोआवली । म०-भूयआंवली, भूयांवली । यू०-फूलआंवला । प०-पाताल आंवला । द्रा०-कीड़ाम् नेल्लि ।

लें०-Phyllanthus Niruri (फीलैन्थस् नीरुरी)।

व्यवहार—पञ्चांग। मात्रा—३-६ माशे।

नैपालवाले उसे "भुंईआंमला" मानते हैं कि जिसके फल छोटे आमले के बराबर "हरफरेउरी" के समान चिपटे और भूमिके अन्दर फलने वाले हों।

१२९ ब्राह्मी पृ० २१४

हि०-वरंभो, ब्रह्मी, वरमो शाक, वरमी घास, विरमी बूटी, बृह्मी। बं०-ब्राह्मी शाक, श्वेत चमनी। म०-ब्रह्म मण्डूकी। क०-ओंदेलग, ओ· देलग। ते०-शम्ब्रनी चेट्टु, अधविर्णी। ता०-वीमी। मु०-वाम। गु०-विद्याब्रह्मी। फा०-जरनव।

अं०-Assiatic Peny Wort (एस्सीयेटिक पेनी वर्ट)

लें०-Hydrocotyle Asiatica (हाईड्रोकोटाईल एसीएटिका)

व्यवहार—पञ्चाङ्ग, पत्ते। मात्रा—६ माशे से एक तोला।

१३० मण्डूकपर्णी पृ० २१४

हि०-मंडुक पानी, बरंभोभेद, श्वेतचमनी, मांडूकी, ब्रह्म मांडूकी। बं०-थुलकुंड़ी, थालकुनी, थुलकुड़ि, अधविर्णी। गु०-विद्या ब्रह्मी, खड़भ· रामी। क०-वदलगा। ते०-मण्डूकब्रह्मी, मण्डूक ब्रम्भी, मण्डुक ब्रह्म· कुण्कु। ता०-वल्लरी केरी। मु०-ब्रह्मी। म०-ब्राह्मी। पं०-मीडकी। द्रा०-वल्लरई। मा०-ब्रह्मीभेद। उ०-थालकुड़ि।

अं०-Asiatic Peny Wort (एसीयेटिक पेनी वर्ट)

लें०-Hydrocotyle Asiatica (हाइड्रोकोटाईल एसीएटिका)।

व्यवहार—पंचांग, पत्ते। मात्रा—६ माशे से १ तोला।

ब्रह्मी से मण्डूकपर्णी के पत्ते बड़े होते हैं, गुण में ब्राह्मीही अधिक है, बंगालवाले सिर्फ "जलनीम" को ब्रह्मी मानते हैं, अन्य देशवाले नहीं।

१३१ द्रोणा (गूमा) पृ० २१४

हि०-गूमा, गोम, गोमा, गुम्मा, दड़घल, दण्हली, मेढ़ापाती। बं०-घल घसिया, घलघसे, घलघसा, हलकषा, दण्डकलस, घसघस। म०-तुंबा, कुंभा, कुवा, मुढ़ापाती। गु०-कुवा, कुवो, कुबी, कुबो। क०-तुम्ब,।

तुम्बे, हेतुम्बे । प०-घटवानी, गुमा । गो०-हलकसा । मला०-तुंपा । ते०-लतुगतुम्मि, एनुगतुम्मि ।

ले०-Leucas Linifolia (ल्यूकस लीनीफोलिया) ।

व्यवहार—पञ्चांग । मात्रा—३ माशे से १ तोले ।

अस्याः पत्रगुणाः—

द्रोणपुष्पीदलं स्वादु रूक्षं गुरु च पित्तकृत् ।
भेदनं कामलाशोथमेहज्वरहरं कटु ॥

१३२ सुवर्चला (हुल हुल) पृ० २१९

हि०-हुलहुल, हुरहुर, हुलहुज, कानफुटी । बं०-हुड़हुरे, बनशलते, हुरहुरिया । प०-हुलहुल, सोंचल, सोंचली, बूगरा । सिन्ध०-कठोरो । म०-सूर्यफूल, सूर्यफूलबल्ली, सूर्यमुखी । गु०-तलवणी, सूरजमुखी, सूरजफुल, तिनमनी, तिलवन, पुवारया । क०-आदित्यभक्ति, नायिसासवे, सूर्यकान्ति । तै०-सूर्यकान्तिपु, कुक्कआवाल, कुकवोमिराट । मा०-सूरजमुखो । मु०-कानफुटी । ता०-सूर्यकान्ति, नयवयहे, नाहिकुडघू । द्रा०-नायकहुह । मला०-कटकडुघो । द०-जंगली हुलबुल, चूरई अजवानी । सिंहली०-वलअवा, रनमनिस्सा ।

अं०-Wild Mustard (वाइल्ड मस्टर्ड) ।

ले०-Cleome Viscosa (क्लिओम विस्कोसा) ।

व्यवहार—पत्ते, बीज । मात्रा—२—४ माशे ।

१३३ ब्रह्मसुवर्चला (सफेद फूलकी हुरहुर) पृ० २१९

सं०-ब्रह्मसुवर्चला, ब्रह्मसुदुर्लभा, सूर्यावर्त, अर्कपुष्पिका । हि०-ब्रह्मसोंचली, ब्रह्मसौंचली, सोंचली, हुरहुर, हुलहुल, हुलहुलभेद, करैला, चुरोता । बं०-बनशलते, हुरहुरिया, कानाला, बंसरिसा, अर्कहुली, सादादुरहुड़िया, हुड़हुड़िया । मा०-हुलहुल । सन्ताल०-सेतकटअरक, गुमा । म०-तिलवण, मावली । संयु०-प्रा०-कठलपरहर । गु०-सूर्यमुखीफुल । सिं०-किनरो । ता०-बेलर, नेरवेल्ला फडुघु । तै०-त्रामित, वेलकुरा । मला०-तैवेला, करवेला बेला ।

ले०-Gynandropsis Pentaphylla (जाइनैण्ड्रोप्सिस पेण्टेफिला)।

व्यवहार—पत्ते, बीज। मात्रा-२-४ माशे।

१३४ बन्ध्याकर्कोटकी (बनककोड़ा) पृ० २१९

हि०-बांझककोड़ा, वनककोड़ा, बांझ खखसा, बांझकांकरोल, अफल ककोड़ा। बं०-तित्कांकरोल, तित्कांकड़ी। म०-बांझकर्टोली, बांझकंटोली। गु०-बांझकंटोलो, फलबगरना। क०-वंजेमडवागुलु। मा०-बांझककोड़ो। प०-बांझ खाखसा। मु०-बंझाकंटोलो। ते०-इश्वरी।

ले०-Momordica Dioica (मोमोर्डिका डिओइका)।

१३५ मार्कण्डिका (भूइं खखसा) पृ० २१९

हि०-मुइं खखसा, मुइंखेकसा, मुइंखखसा बली, देशी सनाय। बं०-कांकरोलभेद, कांकरोल। म०-मुईतरवड। गु०-धोली मीढी आवर, मींठी आवल्य। क०-तलाड़ वल्ली, तलड़ वल्ली। ते०-नेलतांघेड़ी, नेळतंघड़ी। म०-द०-सोनामुखी। दे०-आहुली, तगड़बल्ली। मु०-मुइं तरवड, अ०-सना।

अं०-Country Senna (कण्ट्री सेना)।

ले०-Cassia Obovata (केसिया ओबोवेटा)।

१३६ देवदाली पीतदेवदाली च पृ० २१९

हि०-देवदाली, सनैया, सौनैया, वन्दाल, विदाली, घघरबेल, घुसरान, देवदाल। बं०-घोषक, घोषकलता, घोषा, देवताड़ा, पीतघोषा, देयाताड़। म०-देवडंगरी, देवडंगरीफल, देवदाली, देवदागरी, काटेइन्द्रावन, घुले इन्द्रावण। गु०-कुकड़वेल, कुकड़वेल्य, वाउपल। ते०-डाळरगंडी, डातरगंडी, देवळी, डाउरडंगि, लता विशेषमु, डानरगंडि। क०-देवडंगर, देवताल। को०-डंगर, डंगरी। मु०-कुकरवेल। प०-सोनैया मा०-बिन्दाल। सिन्ध०-जंगथोरी, जुंगथोरी।

अं०-Bristly Luffa (ब्रिस्टलि ल्युफा)।

ले०-Luffa Echivata (ल्युफा एकिवेटा)।

व्यवहार—फल। मात्रा—१—३ माशे।

यह सफेद, पीले और लाल फूलों से ३ प्रकार की होती है ।

देवदालीत्रयं श्वासज्वरकासकफापहम् ।
आखोर्विषं निहन्त्याशु वामकञ्च विरेचकम् ॥
श्वेता रक्ता च पीता च देवदाली गुणैः समा ॥ शो० नि० ॥
देवदालीकषायेण शौचमाचरतां नृणाम् ।
किंवा तद्धूमसेकाद्भिः कुतः स्युर्गुदजाङ्कुराः ॥

१३७ जलपिप्पली (जलपीपल) पृ० २१६

हि०–जलपीपल, पनिसिगा, गंगतिरिया, बुकन, मोकना । बं०–कांचड़ा-घास, काचड़ा, श्वेतकाचड़ा । म०–जलपिंपळी, जलपीपल । गु०–रतबेलियो, रतबेलिया । क०–होमुगुलु । फा०–पीपल आबी । अ०–फिलफिलमाय, फिलफिलुल्माय ।

अं०–Purple Lippa (पर्पल लिप्पा) ।

ले०–Lippa Nodiflora (लिप्पा नोडिफ्लोरा) ।

१३८ गोजिह्वा (गोभी) पृ० २१६

हि०–गोभी, गोजिया, गोभी जंगली, भातज्ञ, भत्कल, बनगोभी । बं०–दाड़िशाक, गोजिया, दाड़शाक । म०–पाथरी, भुइपथरी । तै०–येदुना-लुक्चेट्टु, भरिलिकचेट्टु । गु०–भोपाथरी, गलजिभी, भुइपात्रा । क०–य-लुनागले । फा०–कलमरूभी । को०–घाउन । प०–थब्बल, अलमिरो । विहार०–तेतार, तितली ।

ले०–Elephantopsus Scaber (एलीफैण्टोप्सस स्केबर)

१३९ नागदमनी (नागदवन) पृ० २१६

हि०–नागदवन, नागदोन, नागदौन, नागदवना, मटजरी, मस्तरूदोना, बरियारा । बं०–नागदना, नागदोना । म०–नागदवण । गु०–नागदमनी, नागडमण, नागदोणभीपटो । क०–नागदमनी । प०–नागदौन, ततउर, त-तोर, पुंजन, वनजीरु चम्बरा, ऊवुशा, तर्खा । तै०–ईश्वरीचेट्टु, दरणम, दरणमु, दवनमु । ता०–माचिपत्री, माचीपत्री, मरइकरोंदु । नै०–तितापा-त । फा०–मारचोबह, नारचोबह । अ०–हलियून, ऊदुल हय्यतो ।

अं०–Indian Worm Wood (इण्डियन वर्म उड)

ले०-Artemesia Vulgaris (आर्टीमेसिया वलगरीस)।

व्यवहार—पंचांग। मात्रा—२-६ माशे।

१४० वीरतरुः (बरवेल) पृ० २१६

हि०-वेलन्तर, बिल्वान्तर, वारतरु, बरबेल, बरतुली। बं०-ओंडउ तै०-वेणुतुरुचेट्टु। मा०-खड़ी, कंलई, कुंरात, खेरी। अजमेर०-खेड़ो। राजपूताना०-खेन। गोंड०-सेगुमकाटी। ता०-वड़तल्ल, वडतर। तेलगू०-बेतरू, येलतु।

ले०-Dichrostachys Cinerea (डिक्रासटेचीस सिनेरीया)।

१४१ छिक्कनी (नकछिकनी) पृ० २१७

हि०-नकछिकनी, छिकनी। बं०-हांचुटी, छिकनी, हेंचेता गाछ, हांचोटी। म०-नाकशिकणी। गु०-नाकछीकणा, नाकछिकनी। प०-नसवार। मु०-नाकशिकनो, हरन्दोरी। फा०-बेरगाउजवां, बेखगाउजुवां। अ०-उफ़रककुदुश, कुंदश, ऊदुल अत्तास।

ले०-Centipeda Orbicularis (सेण्टिपेडा ऑर्बिक्युलरिस)

वर्वरी—

वर्वरी कवरी तुङ्गी खरपुष्पाऽजगन्धिका।
वर्वरी तु लघू रुच्या हृद्या च कफवातहृत्॥

कस्मिंश्चित् पुस्तकेऽस्या उल्लेखो लभ्यते, तदनुरोधादत्र लिखितः।

१४२ कुकुन्दरः (कुकुरवँदा) पृ० २१७

हि०-कुकरोंदा, कुकुरवँदा, कुकरौंधा। बं०-कुकुरमुता, कुकुरशोंका, कुकूसिमा। म०-कुकुरवन्दा। गु०-बोडियाकेलार, कोकरुंदा। प०-भकुमर, कुकरछिद्दी। फा०-किमाकिसूस, कमाकोतूस। अ०-सनोबरुल् अर्द। ता०-नारककरंदइ।

ले०-Blumea Lacera (ब्लुमिया लासेरा)।

व्यवहार—पत्ते, जड़। मात्रा—६—९ माशे।

अस्यार्द्रमूलं च मुखे धारितं मुखदोषनुत। (नि० र०)

१४३ सुदर्शना (सुदर्शन) पृ० २१७

हि०-सुदर्शन, मदनमस्त, मदनमस्तु। बं०-सुदर्शन गुलंच, पद्म गुलंच। गु०-सुदर्शना।

ले०-Tinospora Tomentosa (टिनोसपोरा टोमेंटोसा)

१४४ आखुकर्णी (मूसाकर्णी) पृ० २१७

हि०-मूसाकानी, मूषाकरनी, चूहाकन्नी, चूहाकानी, मूसाकर्णी । बं०-इन्दुरकानी, इन्दुरकार्णी, पाना, मूषकानी । म०-उन्दिरकानी । गु०-उन्दुरकानी, उदरकानी, उन्दरी, उन्दरडी, उन्दरकनी । क०-वल्लिहरूहे, वल्लिहुहै । ते०-एलुक चेविचेट्टु, एलुक चवि चेट्ट, तोइनबतर्ला । ता०-पोरितोय विरेञ । प०-मूंसाकन्नो । मु०-उन्दिरकानी । फा०-गोरोमुषर शर्तर, गोशमूष । अ०-अजानुलफ़ार, आनुलफ़ार । यू०-शरदम ।

ले०-Ipomea Reniformis (आईपोमिया रेनीफारमोस)

व्यवहार—सर्वाङ्ग । मात्रा—२—३ माशे ।

एषा द्विधा-लघ्वी बृहती च ।

बृहत्याखुकर्णीगुणाः—

आखुकर्णी बृहत्युक्ता शीतला मधुरा स्मृता ।
रसबन्धकरी नेत्र्या रसायन्यथ शूलनुत् ।
ज्वरं क्रृमीन् व्रणं चाखुविषं चैव विनाशयेत् ॥ नि० र० ॥

१४५ मयूरशिखा (मोरशिखा) पृ० २१७

हिं०-मोरशिखा, मोरशखा, लालमुगी, सफेदमुगी । बं-मयूरशिखा, लालमोरगफुल । म०-मयारशिखा, मोराचीशेंडी । गु०-मोरशिखा । क०-होरये सुवुव । ते०-मयूरशिखिने, मयूरशिखियने । मा०-प०-मोरशिखा । फा०-असनाने, असनान, हवक ।

ले०-Celosia cristata (सिलोसिया क्रिस्टाटा) ।

इति गुडूच्यादिवर्गः ॥ ४ ॥

अथ पुष्पवर्गः ५ ।

१ कमलम् (कमलं) पृ० २१८

हिं०-कमल, पुरइन । बं०-पद्म । म०-गु०-कमल । क०-विलिया तावरे । ते०-कलावा, तम्मिपुव्बु । ता०-तामरै, अम्बल । अ०-करंबुलमा ।

उडि०-पद्म। प०-पब्बन। सिन्ध०-निलोफर। मु०-कमलकंकड़ी। मला०-नमर। सिलोन०-तमरई। अं०-Lotus (लोटस)

ले०-Nelumbium Speciosum (नीलंबियम स्पेसिओज़म)

,,—Nelumbium Carruleum (नीलंबियम केरुलियम्)

,,—Nelumbium Pubeseins (नीलंबियम प्युबेसिन्स)

सफेद, लाल, और नीले फूलों के भेद से कमल तीन प्रकार का होता है-इन्हों के नाम संस्कृतादि में ये हैं-

सं०-पुण्डरीक, रक्तपद्म, नीलपद्म, नीलोत्पल। हि०-सफेद्कमल, लालकमल, नीलकमल, नीलकमोदिनी। बं०-श्वेतपद्म, रक्तपद्म, नीलपद्म, नीलसुन्दि। म०-पांढरेकमल, तांबडेकमल, नीलेकमल। गु०-धोलाकमल, रांतना ऊघेडे ते रातां कमल जेना नालमां कांटा होय, नीलककमल, सुगन्धि ने ताना। क०-केद्‌ावरे, करियतावरे, नेइदिलु। तै०-नालांकालावा, एराकालावा, नेल्लनामर, नल्लकुलवु। फा०-नीलुफर, गुलनीलोफर। अ०-बद्नीलोफर।

श्वतेकमलनामानि—

पुण्डरीकं महापद्मं श्वेतपद्मं सिताम्बुजम्।
दशोपमं हरिनेत्रं शारदं शम्भुवल्लभम्॥

रक्तकमलस्य नामानि गुणाश्च—

रक्तोत्पलं कोकनदं रक्तवर्णं रविप्रियम्।
कोकनदं कटु तिक्तं मधुरं शिशिरं च रक्तदोषहरम्।
पित्तकफवातशमनं सन्तर्पणकारणं वृष्यम्॥ रा० नि०॥

नीलकमलस्य नामानि गुणाश्च—

नीलाम्बुजन्म नीलाब्जं नीलपद्मं मृदूत्पलम्।
नीलाब्जं शीतलं स्वादु सुगन्धि पित्तनाशकृत्।
रुच्यं रसायने श्रेष्ठं केश्यं च देहदाढर्यकृत्॥ रा० नि०॥

नीलोत्पलस्य नामानि गुणाश्च—

इन्दीवरं कुवलयं कन्दोटं नीलपत्रकम्।
नीलोत्पलमतिस्वादु शीतं सुरभि सौख्यकृत्।
पाके तु तिक्तमत्यन्तं रक्तपित्तापहारकम्॥ रा० नि०॥

पद्मबीजस्य नामानि गुणाश्च—

फलवर्गेऽग्रे द्रष्टव्यानि ।

कमलका व्यवहार-बीज, फूल, जड़ । मात्रा—३—९ माशे ।

२ पद्मिनी—(कमलिनी) पृ० २१८

पद्मिनीपत्रगुणाः—

कमलिन्याश्छदः शीतस्तुवरो मधुरो मतः ।
तिक्तः पाकेऽतिकटुको लघुर्वै ग्राहको मतः ।
वातकृत्कफपित्तानां नाशको मुनिभिः स्मृतः ॥ नि० र० ॥

३ नवपत्रादि पृ० २१८

मकरन्द-पद्ममधु-गुणाः—

अरविन्दहृतः शीतो मकरन्दोऽतिबृंहणः ।
त्रिदोषशमनः सर्वनेत्रामयनिषूदनः ॥ आ० सं० ॥

४—५—मृणालं, शालूकञ्च (कमलकी नाल, कमलन्द) पृ० २१९

मृणालस्य नामानि—

सं०—मृणालं पद्मनालं च कोमलं बिसिनी बिसम् ।

हि०-कमल की नाल, कमल की दण्डी । बं०-पद्मेर डांटा । म०-कमलां चा देंठ । क०-कमलदनूलु । तै०-तामरतुण्ड, तामरतोंगे ।

शालूकस्य नामानि गुणाश्च—

पद्मादिकन्दः शालूकं करहाटश्च कथ्यते ।
मृणालमूलं भिस्साण्डं जालालूकं च कथ्यते ॥

सं०-पद्मकन्द, भिस्साण्ड । हि०-कमलकन्द, भसीडा । बं०-पद्मेर-गेंडो, शालुक । तै०-जाजिकाय ।

शालूकं कटु विष्टम्भि रूक्षं रुच्यं कफापहम् ।
कषायं कासपित्तघ्नं तृष्णादाहनिवारणम् ॥ रा० नि० ॥

६ पद्मचारिणी (स्थलकमल) पृ० २१९

हि०-स्थलकमल, स्थलपद्म, वेंटतामर । ब०-स्थलपद्म । म०-स्थलकमलिनी । क०-कलुदावरे । ते०-स्थलपद्म मने पुष्पमु । मु०-रत-नपरास । ता०-ओरीलै हमरय ।

ले०-Ionidium suffruticosum (आइयोनिडियम सफ्फरुटिकोज़म)

७-८ कुमुदं कुमुदिनी च (कुमुद, कुमुदिनी) पृ० २१९

हि०-कुमुद, बबूला, कमोदनी, कोईं, घंघोल, कुइ । बं०-हेलाफुल, नालिफूल, सुंदी । म०-पांढ़रे कमल, पाढरे उत्पल । क०-विलियनेइदिलु, विलियनेइटिरु । गु०-पोयना । फा०-नीलोफर, नीलोफल । अ०-करनबुलमाय । ते०-कोद्दिगायर गाबुंडी ।

ले०-Nymphaea Lotus (निम्फेइया लोटस) ।

व्यवहार—	मात्रा ।
फूल—	६-१० माशे ।
बीज—	५-६ माशे ।

यह—नीले, लाल, सफेद फूलों के भेद से ३ प्रकारका होता है ।

अस्य बीजगुणाः फलवर्गे द्रष्टव्याः ।

उत्पलस्य नामानि गुणाश्च—

अनुष्णं चोत्पलं चैव रात्रिपुष्पं जलाह्वयम् ।
हिमाब्जं शीतजलजं निशाफुल्लं च सप्तधा ॥
उत्पलं शिशिरं स्वादु पित्तरक्तार्त्तिदोषनुत् ।
दाहश्रमवमिभ्रान्तिकृमिज्वरहरं परम् ॥

कुमुदिनीनामगुणाः—

उत्पलिनी कैरविणी कुमुद्वती कुमुदिनी च चन्द्रेष्टा ।
कुवलयिनीन्दीवरिणी नीलोत्पलिनी च विज्ञेया ॥
उत्पलिनी हिमा तिक्ता रक्तामयहारिणी च पित्तघ्नी ।
तापकफकासतृष्णाश्रमवमिशमनी च विज्ञेया ॥ रा० नि० ॥

९ वारिपर्णी (जलकुम्भी) पृ० २२०

हि०-कुम्भी, जलकुम्भी, काईं । बं०-पानीटोका, पाना । म०-जलमण्डवी । गु०-जलऊपर.ना वेलां । क०-हांवला । तै०-तुटिकूर ।

अं०-The Wester Lettuce (दी वेस्टर लेट्यूज)

ले०-Pistia Stratiotes (पीस्टीया एस्ट्रेटीयोटीस)

यह दो प्रकार की होती है। बड़ी और छोटी, बड़ी को–जलकुंभा। छोटी को–जलकुम्भी कहते हैं।

१० शैवालम् (सिवार) पृ० २२०

हि०–सिवार, सेवार, काइ। बं०–शेहला, शेओयाला। म०–शेवाल, शेवाले। गु०–शेवाल, छील, शेवाळ। पं०–काई। ते०–नासु। मा०–काई, कांजी। फा०–तुहिल, जंबाल, चश्मदुज़ग। अ०–तुहलब।

सं०–शैवालं जलनीली स्याच्छैवलं जलजं च तत्।

ले०–Serratophyllum Submersum (सिर्रेटोफिलम सबमर्सम)

११ शतपत्री (सेवती गुलाब) पृ० २२०

गुलाब

हि०–गुलाब, गुलाबफूल–वृक्ष, गूलाब। बं०–गोलाप। म०–गुलाबाचें फूल। गु०–मोशमी गुलाब। क०–चेवड़े, गुलाबि। ते०–गुलाबीपुवु, चेमडिचेटट्टु, रोजा पुष्पमु। फा०–गुले सुर्ख, गुलगुले सुर्ख। अ०–जरंजबीन, विर्द एह्मर, वर्द अह्मर, नसरीन, मउलमर्द। द्रा०–रोजापुष्पं।

ले०–Rosa Damascena (रोजा डमस्सिना)

सेवती।

हि०–सेवती, सदागुलाब, सफेदगुलाब, गुलचीनि। बं०–श्वेतगोलाप, सेउती, सेउती गुलाब। म०–शेवती, शेवन्ती। गु०–शेवती, कांटेसेवती। क०–शेवतिंगे, चेवड़े, शामन्ती हुब्बु। तै०–चामन्तो, चामन्तिपुव्वु। ता०–सामन्तिप्पु। द्रा०–शामन्तिष्पु। बु०–गुलदन्ती। फा०–गुल मुश्की। अ०–दुर्वसीनी, नसरी, नसरीन।

ले०–Rosa Alba (रोजा एलबा)

व्यवहार—फूल। मात्रा—६ माशे से १॥ तो०।

यह प्राचीन तथा प्रसिद्ध फल है, इसके पत्ते और फूलों के दल गुलाब से बहुत मिलते जुलते हैं। इसके भी डालों पर कांटे होते हैं। फूल–सफेद रङ्ग के प्रायः होते हैं, गन्ध–गुलाब सा होता है। छोटे, बडे, सफेद, पीले तथा नारञ्जी रङ्ग इत्यादि भेदों से यह कई प्रकार का होता है।

१२ वासन्ती (नेवारी) पृ० २२०

हि०–नेवारी, वासन्ती, बसन्ती नेवारी, निवाड़ी। बं०–नेपाळी, नेओ-

यार, नवमल्लिका। म०-नेवाली, रायनेवाली, रोमाली, वीखन्ती। गु०-वट-मोगरा। क०-विरवंतिगे, विरवन्ति भेद। मु०-मोगरा। फा०-गुलनिवारी। ले०-Jasminum Arberescena (जासमिनम आरबेरेस्सिना)।

१३ वार्षिकी (बेला) पृ० २२०

हि०-वेलवार्षिकी, वेला, रायवेल। म०-साटई मोगरी, रांग मोगरी। मु०-लवारो, चिखलियो, जंगली वेल्य, लवारा। क०-काड मल्लिगे। ता०-काट्टुमल्लि। बं०-वेलफुल, मल्लिकाफुल। तै०-कुलकान्ता चेट्टु, कुलवक्रान्त चेट्टु।

ले०-Jasminum Sambac (जासमिनम समबक्)।

वार्षिकी—मल्लिका—मुद्गर-नामानि।

वार्षिकी शीतभीरुश्च मदयन्ती प्रमोदिनी।
भद्रवल्ली प्रिया सौम्या मल्लिका वनचन्द्रिका।
मुद्गरको गन्धराजः सप्तपत्रश्च विट्प्रियः॥

मुद्गरगुणाः—

मुद्गरो मधुरः शीतः सुरभिः सौख्यदायकः।
मनोजमधुपानन्दकारी पित्तप्रकोपहृत्॥ रा० नि०॥

१४-१५ मालती स्वर्णजाती च (जाई-पीलीजाई) पृ० २२०

हि०-चमेली, चंबेली। बं०-चामिली, जाति। म०-मोगर्याचा भेद, चम्बेली, जाई। क०-मोगराचा भेदु, जाजी। फ०-जाई। तै०-जाजि। क०-जातिपुष्पम्। फा०-यासमोन, यासमी, गुले हास्यम। अ०-यासमन।

ले०-Jasminum Grandiflorum (जासमिनम ग्रेण्डीफ्लोरम)

अं०-Spanish Jasmine (स्पनिश जास्मीन)।

जाइ—पीलीजाई।

सं०-जाती, स्वर्णजाती। हि०-जाई (चमेली), पीली जाई। बं०-जाती (चामिली), स्वर्णजाती। म०-पांढरी जाई, पिंबलीजाई। क०-जाजी। तै०-जाई पुष्पालु। तु०-जाजिपु।

अं०-Jasmine (जैस्मीन)।

ले०-Jasminum Flexylis (जैस्मिनम फ्लेक्साइलिस)।

जात्याः कलिकापुष्पयोर्गुणाः—

कलिकाऽस्या व्रणापहा ।
विस्फोटनेत्ररुक्कुष्ठनाशिनीति बुधा जगुः ।
पुष्पं सुगन्धि संप्रोक्तं मनोज्ञं कफपित्तनुत् ॥ नि० र० ॥

स्वर्णजातीगुणाः—

स्वर्णजातो च संप्रोक्ता दन्तशूलरुजाऽपहा ।
रक्तदोषं च पूयं च कर्णशूलं च नाशयेत् ।
गुणास्त्वन्ये तु जातीवत् प्रोक्ताः पूर्वमनीषिभिः ॥

उपजाति (चम्बेली) नामानि—

उपजातिः सुवर्षा च सुरूपा श्रीमती तथा ।
वर्षापुष्पा च चम्बेली बलिहासा च वेशिका ॥

अस्या गुणाः—

चम्बेली तुवरा तिक्ता व्रणकुष्ठविषास्रजित् ।
शिरोऽक्षिमुखदन्तार्त्तिहरा त्वग्दोषनाशिनी ॥

१६-१७ यूथिका पीतयूथिका च पृ० २२१

हि०—जूही, पीलीजूही । बं०—जुई, स्वर्णजुई । म०—पाढ़ढी लहान जूयी, पाढ़ढी जूयी, पिंवलीजुई । गु०—जुई जिंगरी, पीली जुई । क०—विळिश्र मल्ले, यरदध मल्ले । ते०—जुई पुष्पालु, नन्दी वट्टा । ता०—रट्टई मुल्लई । म०—श्वेत जुई, पीत जुई ।

ले०—Jasminum Aurieculatum (जैस्मिनम औरीक्युलेटम) ।

सर्वासां यूथिकानां तु रसवीर्यादिसाम्यता ।
सुरूपश्च सुगन्धाढ्यं स्वर्णयूथ्यां विशेषतः ॥ रा० नि० ॥

१८ चाम्पेयः (चम्पा) पृ० २२१

हि०—चम्पा । ब०—चांपा, चाम्पा, चाम्पा फुलेर गाछ । म०—सोन चाफां, चांफा, पिंवला चाफा । गु०—चंपो, रायचंपो, पोलोचंपो । क०—संपगे, चंपगे । तै०—चम्पागी पुवुळ, सम्पंगि । ता०—शेण बकम । फा०—फाखरह । अ०—फागरइ । मा०—चंपो । द्रा०—शम्बा ।

ले०—Michelia Champaca (मिचेलिया चम्पका) ।

अस्य पुष्पगुणाः—

चम्पकं रक्तपित्तघ्नं शीतोष्णं कफनाशनम् ॥ सु० सं० ॥

चम्पकभेदाः—

श्वेतस्तु चम्पकः प्रोक्तो नागादिश्चम्पकस्तथा।
सुल्तानचम्पकश्चान्यो नीलश्च भूमिचम्पकः ॥

सं०-१ श्वेतचम्पक (क्षुद्रचम्पक, क्षीरवृक्ष)। २ नागचम्पक (नागपुष्प, नागकेशरक)। ३ सुल्तानचम्पक। ४ नीलचम्पक (मधुगन्धि, मनोहर)। ५ भूमिचम्पक। हि०-१ सफेदचम्पा। २ नागचम्पा। ३ सुलतानचंपा। ४ नीलचम्पा। ५ मुँइचम्पा। म०-१ खुरचांफ। २ नाग चांफ। ३ सुलतान चांफ। ४ नीलाचांफा। ५ मुइं चांफा। गु०-१ धोलो चंपो। २ नागचंपो। ३ सुलतानचंपो। ४ लीलो चंपो। ५ भूचम्पो।

क०-नागचम्पगे। तै०-गणेर चेट्टु।

लै०-(१)Plumieria Acutifolia (प्ल्युमेरिया एक्युटिफोलिया)

„-(२)Mesuaferrea (मेसुआफेरिया)

„-(३)Calophyllum Inophylluu (केलोफैलम् इनोफैलम्)

अं०-(१)Sweet Cented Colophylum (स्वीट सेण्टेड केलोफिलम)

„-(२)Artabotys Odoratissima (आर्टेबोटिस ओडारेटिस्सिमा)

„-(३)Kaempheria Rotunda (केम्फेरिया रोटण्डा)

श्वेतादिचंपकगुणाः—

श्वेतस्तु चम्पकः प्रोक्तः सरस्तिक्तः कटुः स्मृतः।
तुवरोष्णः कुष्ठकण्डूव्रणशूलकफापहः ॥
वातं चोदररोगश्च आध्मानं चैव नाशयेत्।
नागनामा चम्पकस्तु वर्ण्यश्चोष्णः कटुः स्मृतः ॥
व्रणरोपणकारी च चक्षुष्यः कफवातहा।
वस्त्वन्तरस्य संयोगादग्निस्तम्भकरो मतः ॥
भूमिजश्चम्पकश्चोष्णः कटुः शोथरुजाऽपहः।
गलगण्डं व्रणं चैव नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥

१९ बकुलः (मौलसिरी) पृ० २२१

हि०–मौलसिरी, मौलेसरी, मोरसरी, मोलछरि, मौलछरि । बं०–बकुल गाछ। मा०–बकुल, बकुली, बगवलेह, बरशोली। गु०–बोलसिरी, बोलसरी। क०–बकुल, करक, पगड़ेमर, बक्कल, रंजल । ते०–पामरा, पाधरा, पोगर चेट्टु । ता०–मोगदम, मोगल मरम पाघड़ा, पोगड् चेट्टु, पोगड्-मानु । उ०–बौरकुरी । द्रा०–घोलसरी, धोलसरी, मट्टलं मरं । मु०–वकु-ली । प०–मौलसिरी ।

ले०–Memusops Elengi (मिमुसोप्स एलेञ्जी)

अं०–Surinam Medlar (सुरीनम मेडलार)

व्यवहार– छाल, फूल, फल । मात्रा–३ माशे से १ तो ।

बकुलपुष्पगुणाः–

बकुलजकुसुमं रुच्यं क्षीराढ्य सुरभि शीतलं मधुरम् ।
स्निग्धं कषायं कथितं मलसंग्रहकारकं चैव ।। रा० नि० ।।

बकुलस्य फलबीजयोर्गुणाः–

बकुलस्य फलं रूक्षं विशदं स्तम्भनं गुरु ।
कषायं मधुरं शीतं लेखनं कफपित्तहृत् ।।
दन्तदार्ढ्यकरं ग्राहि विबन्धाध्मानवातकृत् ।
तद्बीजं दन्तचालघ्नं नस्याच्छीर्षरुजाऽपहम् ।। शा० नि० ।।

२० बृहद्बकुलः (बड़ी मौलसिरी) पृ० २२१

हि०–मौलसिरी बड़ी, वनहुला, बृहन्मौलसिरी । बं०–पद्मावक । म०–थेर बकुल । गु०–मोटी बालसिरी, मोटी बोलसिरी, (वरशोली) । तै०–आविसी ।

मौलसिरी के वृक्ष–स्त्री पुरुष जाति भेद से दो प्रकार के होते हैं, जिनमें फल, फूल दोनो हों वे स्त्रीजाति के और जिनमें केवल फूल ही होते हों वे पुरुष जाति के समझने चाहिये ।

२१ कदम्बः (कदम) पृ० २२१

हि०–कदम, कदम्ब । धाराकदम्ब । बं०–कदमगाछ, केलिकदम । म०–राजकदम्ब, कलम्ब, धूलिकदंब, कलंबु, भूमिकदंब । गु०–कदम्ब, कलम।

ते०-कडिमिचेट्टु, कदम्बचेट्टु , मोगुलुकडिमि। क०-कडउ, धूलिकडउ, धारेयकडउ, भूमिकडउ, कड्वे। को०-संको। ता०-वेल्लइ कदम्ब।

ले०-Anthocephalus Cadamba (एन्थोसिफालस कडम्बा)

"—Nouclea parviflora (नोक्लिया पार्विफ्लोरा)। अ०-कदम्ब।

अस्याङ्कुरापक्वपक्वफलपुष्पाणां गुणाः—

ह्यङ्कुराश्चास्य तूवराः। शीतवीर्या दीपकाश्च लघवोऽरोचकापहाः। रक्तपित्तातिसारघ्नाः फलं रुच्यं गुरु स्मृतम्। उष्णवीर्यं कफकरं तत् पक्वं कफपित्तजित्। वातनाशकरं प्रोक्तमृषिभिस्तत्त्वदर्शिभिः॥ पुष्पं कषायं मधुरं शीतं पित्तकफास्रजित्॥

राजकदम्बगुणाः—

नीपस्तु चाम्लस्तुवरो मधुरः शीतलः स्मृतः। विषं रक्तरुजं पित्तं कफं चैव विनाशयेत्॥ फलं तु मधुरं चास्य शीतलं गुरु पित्तहृत्। रक्तदोषहरं प्रोक्तमृषिभिस्तत्त्वदर्शिभिः॥

धाराकदम्बस्य नामानि गुणाश्च—

नीपो महाकदम्बः स्याद्धाराकदम्ब इत्यपि। धाराकदम्बकस्तिक्तो वर्ण्यः शीतः कषायकः। कटुको वीर्यकृच्छोथविषपित्तकफव्रणान्। वातं नाशयतीत्येवमुक्तश्च ऋषिभिः किल॥

भूमिकदम्बस्य नामानि गुणाश्च—

भूमिकदम्बो भूनीपो भूमिजो भृङ्गवल्लभः। लघुपुष्पो वृत्तपुष्पो विषघ्नो व्रणहारकः। भूमेः कदम्बकस्तिक्तो वर्ण्यः शीतः कटुः स्मृतः। वीर्यवृद्धिकरश्चैव तुवरो विषशोथहा। पित्तं क्रमींश्च सर्वांश्च मेहान्नाशयतीरितः॥नि० र०॥

धूलीकदम्बगुणाः—

धूलीकदम्बकस्तिक्तस्तुवरः कटुको हिमः।
वीर्यवृद्धिकरो वर्ण्यो विषशोथविनाशकः।
वातं पित्तं कफं रक्तदोषं चैव विनाशयेत्॥

कदम्बिकागुणाः—

कदम्बिका तु मधुरा शीतला तुवरा गुरुः।
मलस्तम्भकरी चारा रुच्या स्तन्यकफप्रदा॥

वातला मुनिभिः प्रोक्ता फलं त्वस्यास्तु शीतलम् ।
तुवरं मधुरं पित्तरक्तदोषहरं मतम् ॥

द्विविधकदम्बस्य (कदम्ब-बड़ोकदम्ब) गुणाः—

कदम्बयुगलं वर्ण्यं विषशोथहरं हिमम् ॥

२२ कुब्जकः (कूजा) पृ० २२२

हि०-कूजा, सदागुलाब । बं०-श्वेतगोलाप । म०-कांटे सेवती । गु०-कुजड़ो, कुंजड़ा । अ०-वर्दवर्री ।

अस्य पुष्पगुणाः—

पुष्पं तु शीतलं वर्ण्यं दाहघ्नं वातपित्तजित् ॥ रा० नि० ॥

रक्तकुब्जकगुणाः—

रक्तस्तु कुब्जको रक्तविकृतेर्नाशको मतः ।
वृश्चिकाणां विषं चैव त्रिदोषं चैव नाशयेत् ।
अन्ये गुणाः समुद्दिष्टाः श्वेतकुब्जकवद् बुधैः ॥ नि० र० ॥

२३ मल्लिका (मोतियाभेद) पृ० २२२

हि०-मल्लिका, मोतियाभेद, धुघुरमोतिया, बेलमोगरा, बेलमोतिया, बेली । बं०-मल्लिकाफुल । म०-बेलमोगरा, मोगरी, बेलि मोगरा । क०-बह्लि मल्लिगे । ते०-मल्ले चेट्टु, मल्लि पुष्पालु ।

मल्लिकासम्भवं पुष्पं तिक्तं जयति मारुतम् ॥ शो० नि० ॥

२४ माधवी पृ० २२२

हि०-माधवी, वसन्ती । बं०-माधवी लता, माधवी फुलेर गाछ । म०-पीतवेल, मधु माधवी, हलदवेल । गु०-मधुमाधवी, रक्तपित्ति, माधवीलता । क०-इन्द्रगोच्चे, विरवंतिगे, गुरुविन्द । ते०-माधवतोगे, पुप्पुल गुरिविन्द, पुब्बुल गुरिविन्द । पं०-माधवी ।

अं०-Clustered Hiptage (क्लष्टर्ड हिप्टेज) ।

ले०-Hiptage Madablota (हिप्टेज मेडब्लोटा) ।

२५ केतकः (केवड़ा) पृ० २२२

हि०-केवड़ा, गगनधूल । बं०-केयागाछ । म०-पांढरा केवडा । गु०-केवडो । ते०-मुगलीपुबु, मोगलि चेट्टु । ता०-तालंपु । क०-केदगे,

ताल। प०-केउड़ा। द्रा०-ताल, तालई। मु०-केंडा। फा०-करज। अ०-कादी।

ले०-Pandanus Fascicutaris (पेण्डनस फास्सिकटेरिस)।

२६ स्वर्णकेतकी (पीलाकेवड़ा) पृ० २२२

हि०-पीलाकेवड़ा, पीलीकेतकी। बं०-सोना केया। म०-केतकी।

केतकीद्वयस्य पुष्पादीनां गुणाः—

श्वेता तु केतकी कट्वी स्वाद्वी तिक्ता लघुः स्मृता।
विषं कफं नाशयति, पुष्पमस्या लघु स्मृतम्॥
कटु तिक्तं कान्तिकरमुष्णवातकफापहम्।
केशदुर्गन्धतापघ्नं, केसरः सिध्मकण्डुहा॥
किञ्चिदुष्णं फलं स्वादु वातमेहकफापहम्।
सुवर्णकेतकी तिक्ता नेत्र्या चोष्णा लघुः स्मृता॥
कटुका मधुरा चैव विषरुक्कफनाशिनी।
अस्याः पुष्पं सुखकरं कामोद्दीपनकारकम्॥
किञ्चिदुष्णं च कटुकं तिक्तं नेत्र्यं सुगन्धिकम्।
स्तनश्चास्यातिशिशिरो देहदार्ढ्यकरः पटुः॥
बल्यो रसायनः पित्तकफस्य च विनाशकः।
फलकेशरयोश्चैव गुणाः पूर्वोक्तवन्मताः॥ नि० र०॥

२७ किंकिरातः (रामबबूर) पृ० २२२

हि०-किंकिरात, रामबबूर। म०-देव बाभूल, पीवला गोरटा। क०-होवण्द गोरटे। तै०-कोंड़गोगु। गु०-रामबावल। फा०-मधिलान। गौर०-बाणपुष्प।

२८ कर्णिकारः पृ० २२३

हि०-कर्णिकार, कनियार। म०-पांगारा।

यह भ्रमात्मक पुष्पवृक्ष है कोई इसे अमलतास का भेद (छोटा अमलतास) मानते हैं। कोई "उलटकमल" (द्रुमोत्पल) को ही "कर्णिकार" मानते हैं। कोई "कनेर" मानते हैं। अधिकांश लोग "कनकचंपे" को "कर्णिकार" कहते हैं।

२९ अशोकः (अशोगि) पृ० २२३

हि०-अशोक, अशोग, अशोगि, असोक, आसापाला । बं०-अशोक, अस्पाल । म०-अशोक । गु०-अशुपाले। । क०-अशोक, अशुङ्कर । कटक०-असेक । मु०-जासून्दी, असोक ।

ले०-Saraca Indica (सराका इण्डिका) ।

Syn:—Jonesia Asoka (जोनेसिया अशोका) ।

व्यवहार—छाल । मात्रा—१—३ तोले ।

अशोकस्य त्वचा रक्तप्रदरस्य विनाशिनी ॥ शो० नि० ॥

इसके फूल नारङ्गी रङ्ग से अत्यन्त रक्तवर्ण तक होते हैं ।

दूसरे जाति का अशोक

हि०-अशोक, असोक, देवदारी, देवदारु, देवदार । बं०-देवदारु, देवद । उड़ि०-देवदारु । मु०-असोक, असोका, असोपुल, असुपाल, आसुपाल । गु०-आसोपुलो, अशोपुले। । ते०-देवदारु, असोक, असोकम् । ता०-अस्सोथि । सिलोन०-मरइल्लु पइ । क०-अशोक पुत्रजीव ।

ले०-polyalthia Longifolia (पोलीएलथिया लोङ्गिफोलिया) ।

इसके फूल-हरापन युक्त पीले रंग अथवा पीलापन युक्त सफेद रंग के आते हैं ।

३० अम्लाटनः (बाणपुष्प) पृ० २२३

बाणपुष्प के दूसरे नाम नहीं मिलते, इसके संस्कृत नाम-अम्लात, कुरण्टक आदि "कटसरैया" के बोधक हैं, अतः "बाणपुष्प" कटसरैया का भेद जान पड़ता है ।

३१ सैरेयकः (कटसरैया) पृ० २२३

हि०-कटसरैया, सैरेयक, झांटि, पियाबांसा । बं०-झिंटी, झांटी, वांटी, कुलझांटी । म०-कोरांटा । गु०-अशेलिये।, कांटा अशेलिये। । क०-गोरंटे, गारटेगल्लु । ते०-गोरेंड । सं०-अम्लाटन ।

ले०-Barleria Prionitis (बारलेरिया प्रायोनीटिस) ।

व्यवहार—पञ्चांग, पत्ते । मात्रा—३—८ माशे ।

रक्तपुष्पः कुरबकः पीतपुष्पः कुरण्टकः ।
नीलपुष्पश्चार्त्तगलः सैरेयः श्वेतपुष्पकः ॥

सैरेयः (वकः) (सफेद कटसरैया)

हि०-सफेद फूलकी कटसरैया । बं०-कुलझांटि । म०-पांढ़रा कोरंटा। गु०-धोला फुलनो (धोलो) कांटा अशेलियो । क०-सरसुल्लगोरंटे, बिली-गोरंटे, बिलेगोरंटे।

३२ कुरण्टकः (पीलीकटसरैया) पृ० २२३

हि०-पीली कटसरैया। बं०-पीलीझिंटी, पीतझांटी । म०-पिंवला कोरंटा । गु०-पीलाफुलनो कांटा अशेलियो । क०-होबणद गोरटे ।

ले०-Barleria Prionitis (बारलेरिया प्रायोनिटिस) ।

कुरण्टकस्य नामगुणाः—

किङ्किरातः कुरुण्टश्च कनकः पीतपुष्पकः ।
पीताम्लानः सहचरः पीतसैरेयकश्च सः ॥
पीतः कुरण्टकश्चोष्णस्तिक्तश्च तुवरः स्मृतः ।
अग्निदीप्तिकरो वातकफकण्डूहरः स्मृतः ॥
शोथं रक्तविकारं च त्वग्दोषं चैव नाशयेत् ।

३३ कुरबकः (लाल कटसरैया) पृ० २२३

हि०-लाल कटसरैया । बं०-रक्तझांटि, लालझिंटी । म०-तांबडा-कोरंटा । गु०-रांताफुलनो कांटा अशेलियो । क०-बणदगिंडु ।

ले०-Barleria Cristata (बारलेरिया क्रिस्टाटा) ।

कुरबकस्य नामानि गुणाश्च—

रक्ताम्लानो रक्तपुष्पो रामालिङ्गनकामुकः ।
रागप्रसवकश्चैव सुभगः शोणझिण्टिका ॥
रक्तः कुरुण्टकस्तिक्तो वर्ण्यश्चोष्णः कटुः स्मृतः ।
शोथं ज्वरं वातरोगं कफं रक्तरुजं तथा ।
पित्तमाध्मानकं शूलं श्वासं कासं च नाशयेत् ॥ नि० र० ॥

३४ आर्त्तगलः (नीलीकटसरैया) पृ० २२३

हि०-नीली कटसरैया, नीली पायाबांसा । बं०-नीलझांटी । म०-नी-लाकोरंटा । गु०-कालाफुलनो कांटा अशेलियो । क०-करिय गोरंटे ।

ले०-Barleria Noctiflora (बारलेरिया नोक्टीफ्लोरा) ।

आर्त्तगलनामगुणाः—

नीलपुष्पी नीलझिण्टी दासी चार्त्तगलश्च सः ।
नीलझिण्टी तु कटुका तिक्ता त्वग्दोषनाशिनी ।
दन्तरोगं कफं शूलं वातं शोथं च नाशयेत् ।

३५ कुन्दम् (कुन्द) पृ० २२३

हि०-कुंद, कुन्देका वृक्ष, कुन्दपुष्पवृक्ष, कुन्द फूल, कुन्देका फूल । बं०-कुन्द । म०-कुन्द । क०-सुरागि, सुरगि । तै०-मोल्ल । गु०-डोलर, कुन्द कागडो । ले०-Jasminum Pubescens (जैसमिनम् प्युबेस्सेन्स) ।

३६ मुचुकुन्दः पृ० २२४

हि०-मुचुकुन्द, मचकन, मेकचन्द । बं०-गु०-म०-क०-मुचुकुन्द, मुचुकुन्द फूलेर गाछ, कनकचम्पा । तै०-लोलगु । ता०-तडे, टड्डी, टड्डो । उ०-बइलो ।
ले०-Pterospermum Suberfolium (पटेरोस्परमम् सुबेरफोलियम्)

३७ तिलकः (तिलक) पृ० २२४

हि०-तिलकपुष्प, तिलक, तिलपुष्पी, तिलकनाम फूलका वृक्ष । गु०-तिलक, तिलकवृक्ष । म०-तिलकवृक्ष । क०-तिलकपुष्प ।

तिलको मधुरः स्निग्धः पौष्टिको बलभेदकृत् ।
हृद्यो लघू रसेऽत्युष्णः पाके चोष्णकरः स्मृतः ॥
रसायनस्तीक्ष्णरूक्षो दन्तरुक्कृमिकुष्ठहा ।
वातपित्तकफघ्नश्च विषकण्डूव्रणापहः ॥
रक्तरुग्दुग्धरुग्वस्तिरुजां नाशकरः स्मृतः ।
तिलकः क्षारयोगेन गुल्मशूलोदरापहः ॥
त्वगस्य तुवरा चोष्णा पुंस्त्वघ्नी दन्तदोषहा ।
रक्तदोषक्रिमिव्रणशोफानां च विनाशिनी ॥ नि० र० ॥

३८ बन्धुजीवः (दुपहरिया) पृ० २२४

हि०-दुपहरिया, गेजुनिया । बं०-बान्धुली फुलेर गाछ । म०-दुपारींचे फूल, वांदुजा । गु०-बपोरियो, बपोरिया । क०-बन्दुरे । तै०-नितिमल्ली, मकिनचेट्टु, वेगसिनचेट्टु । यू०-प०-गुल दुपहरिया ।
ले०-Pentapetes phaenicea (पेण्टापिटेस् फीनीशिया) ।

यह फूलों के भेद से ४ प्रकार की होती है—१ लाल फूलकी, २ सिन्दूरी फूलकी, ३ सफेद फूलकी, ४ फीका पीले रङ्ग फूल की (दुपहरिया)।

३९ जपापुष्पम् (गुड़हर, अढ़ौल) पृ० २२४

हि०-ओड्हुल, ओड़हुल, गुड़हल, झांसी, जवाकुसुम। बं०-जवाफुलेर गाछ, जवाफुल। म०-जासबन्द, जासबिन्द। गु०-जासुद, जासुस। ते०-मन्दारपु। क०-दासनल। ता०-शप्प शुप्पु। फा०-अंघरी हिन्द।

अं०-Shoe Flower (शू फ्लावर)।

ले०-Hibiscus Rosa Sinensis (हिबिस्कस रोज़ साइनेन्सिस)

विविध प्रकार के फूलों के भेद से यह कई प्रकार का होता है। जैसे-एकहरा, दुहरा, तिहरा, लाल, पीले, सफेद आदि अनेक प्रकार के फूल वाले होते हैं।

जपापुष्पं लघु ग्राहि तिक्तं केशविवर्द्धनम्।
घृतेन भर्जितजपा स्त्र्यार्त्तवं कुरुते सुखम्॥
जपा शीता च मधुरा स्निग्धा पुष्टिप्रदा मता।
गर्भवृद्धिकरी ग्राही केश्या जन्तुप्रदा मता॥
वान्तिजन्तुकरा दाहप्रमेहार्शोविनाशिनी।
धातुरुक्प्रदरं चेन्द्रलुप्तं चैव विनाशयेत्॥ नि० र०॥

४० सिन्दूरी (सिन्दुरिया) पृ० २२४

हि०-सेन्दुरिया, जाफर, सेनुरिया, लटकन, सदा सुहागन, सदा सुहागिन। बं०-सिन्दूरपुष्पी। म०-शेन्द्री, शेंदरी। प०-लटकण, जाफर। ता०-जाफरामरम। गु०-सिन्दूरी, रातां फुलना जासुद। क०-सिन्दूरी।

अं०-Arnotoe (आर्नोटो)

ले०-Bixa Orellana (बिक्सा ओरिल्लाना)।

इसके फल-छोटे २ गोल होते हैं, और गूदा-लाल होता है, इसे जल में डालने से जल लाल हो जाता है, सफेद, लाल, गुलाबी, प्याजीरंग के फलों के भेद से यह कई प्रकार का होता है।

४१ अगस्त्यः (अगस्त) पृ० २२४

हि०-अगस्त, हथिया, अगथिया, अगस्तिया। बं०-बक, बक फुलेर

गाछ । म०–हदगा, अगस्ता । क०–अगचे । प०–हदगा, हथिया । ता०–अगति । मा०–अगस्त्यो । गु०–अगथियो । ते०–अविसी, अनिसे । द्रा०–अहती । ले०–Sesbania Grandiflore (सिसबेनिया ग्रेण्डीफ्लोरा) ।

व्यवहार—छाल, फूल । मात्रा—३-६ माशे छाल ।

अस्य पुष्प-पत्र-शिम्बीनां गुणाः—

अगस्तिकुसुमं शीतं चातुर्थिकनिवारणम् ।
नक्तान्ध्यनाशनं तिक्तं कषायं कटुपाकि च ॥
पीनसश्लेष्मपित्तघ्नं वातघ्नं मुनिभिर्मतम् ।
पर्णं तु मुनिवृक्षस्य कटु तिक्तं गुरु स्मृतम् ॥
मधुरं किञ्चिदुष्णं च स्वच्छं कृमिकफापहम् ।
कण्डूं विषं रक्तपित्तं नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥
मुनिशिम्बी सरा प्रोक्ता बुद्धिदा रुचिदा लघुः ।
पाककाले तु मधुरा तिक्ता चैव स्मृतिप्रदा ॥
त्रिदोषशूलकफहृत् पाण्डुरोगविषापनुत् ।
शोषगुल्महरा प्रोक्ता सा पक्वा रूक्षपित्तला ॥ नि० र० ॥

सफेद और लाल फूलों के भेद से यह दो प्रकार का होता है ।

४२ तुलसी पृ० २२४

हि०–तुलसी, तुलस, तुलशी, बरण्डा । बं०–तुलसी । गु०–तुलसी । म०–तुलसी चे झाड़, तुलस । क०–एरेड तुलसी । द्रा०–तुल्सी । ते०–गग्गेर चेट्टु, इ युलसी । ता०—तुलशी । फा०—रेहाँ, रेहान्, शाहसिपरम । अ०–तुलसी बदरुत, शाह सफरम ।

अं०–Holy Basil (होली बेसील)

ले०–Ocinum Sanctum (ओसिनम सेंक्टम)

व्यवहार—स्वरस, पत्ते, बीज । मात्रा—३ माशे से १ तोले ।

जिसके पत्ते-हरे सफेदी मायल होते हैं उसे सफेद तुलसी-और जिसके पत्ते तथा डंडियां कालापन युक्त हरे होते हैं उसे काली तुलसी कहते हैं । तुलसी कई प्रकार की होती है ।

कृष्णतुलसीनामानि—

कृष्णा तु कृष्णतुलसी कृष्णपर्णी करालकः ॥

४३ मरुवकः (मरुआ) पृ० २२९

हि०-मरुआ, मरुवा, गेद रेत। बं०-मरुया, गन्ध तुलसी। म०-सब्जा मरवा। गु०-मरवो। तै०-रुद्रजरई, रुद्र जार, मरवमु। क०-मरुगो पत्री, मरुआ, मरवा। प०-मरुआ। फा०-मरजन गोस, मर्ज गुस। अ०-मर्जन जोश, मर्ज जुश। यू०-आफिस्तीं।

अं०-Sweet Marjoram (स्वीट मारजोरम)

ले०-Origanum Marjorana (ओरीगनम मारजोराना)

व्यवहार—पंचांग। मात्रा—३-७ माशे।

सफेद और काले रंगों के भेद से यह दो प्रकार का होता है-सफेद ओषधि के काम में आता है और काला शिवजी के पूजन में आता है।

४४ दमनकः (दवना) पृ० २२९

हि०-दौना, दवना, धारो। बं-दोना, दना। म०-दवणा, रान दवणा। क०-चित्तरटे, दवना। ते०-सावित्र चेट्टु। ता०-दवनम। प०-दोणा, झन। गु०-डमरो। फा०-अफसंतीन।

ले०-Artemesia Vulgaris (आर्टिमेसिया वलगरिस)

अं०-Worm Wood (वर्म उड)

व्यवहार—पंचांग। मात्रा—३-७ माशे।

यह जंगली भी होता है।

वनदमनकगुणाः—

वनजो दमनः प्रोक्तो वीर्यस्तम्भनकारकः।
बलप्रदश्चामदोषनाशकः परिकीर्त्तितः ॥

अग्निदमनकगुणाः—

अग्नेर्दमनकश्चोष्णः कटू रूक्षोऽग्निदीपनः।
रुच्यो हृद्यो वातकफगुल्मप्लीहविनाशकः ॥

४९ बर्बरी (वन तुलसी) पृ० २२९

हि०—बर्बरी, बबरी, वन तुलसी, बावरी सब्जा । बं०—बाबुई तुलसी । विहा०—गठिवन, गेठिवन । म०— अजवला, आजवला, रान तुलस । क०—गर्गर, कगेरले, काम कस्तूरी, निरू तुलसी । गु०—रान तुलसी भेद, रान तुलसी । ते०—तेलगेर चेट्टु, कारू चेट्टु, रुद्र जड़े । ता०—तिरू निकु, तिरु नितरु । प०—बरूरि, बबुई तुलसी । फा०—फलञ्जु मुश्क, तुलसी जंगली, रेहां दस्तो, दवान शाह । अ०—फरञ्ज मुश्क, रेहां तुलवरी, रेहां ।

अं०—Common Sweet Basil (कॉमन स्वीट बेसील)

लै०—Ocinum Basilicum (ओसिनम बेसिलीकम)

व्यवहार—पंचांग, बीज । मात्रा—३—६ माशे ।

अर्जक—सितार्जक—कृष्णार्जकानां नामानि गुणाश्च—

अर्जकः क्षुद्रतुलसी क्षुद्रपर्णो मुखार्जकः ।
उग्रगन्धस्तु जम्बीरः कुठेरस्तु कठिञ्जरः ॥
सितार्जकस्तु वैकुण्ठो वटपत्रः कुठेरकः ।
जम्बीरो गन्धबहुलः सुमुखः कटुपत्रकः ॥
कृष्णार्जकः कालमालो मालुकः कृष्णमालुकः ।
स्यात्कृष्णा मल्लिका प्रोक्ता गरघ्नो वनबर्बरः ॥
त्रयोऽर्जकाः कटूष्णाः स्युः कफवातामयापहाः ।
नेत्रामयहरा रुच्याः सुखप्रसवकारकाः ॥ रा० नि० ।

वनबर्बरीनामानि—

वनबर्बरिकाऽन्या तु सुगन्धिः सुप्रसन्नकः ।
दोषाक्लेशी विषघ्नश्च सुमुखः सूक्ष्मपत्रकः ।
निद्रालुः शोफहारी च सुवक्त्रश्च दशाह्वयः ॥

इति पुष्पवर्गः ॥ ९ ॥

अथ वटादिवर्गः ६ ।

१ वटः (बड़) पृ० २२६

हि०-बड़, बड़गद, बर्गद। बं०-वट, वड़गाछ। क०-आल, आलद-मारा। उ०-वोरु। गु०-मा०-बड़। द्रा०-आलं, पालं। फा०-दरख्तरेशा, बड़वाई। म०-वट, बड़। ते०-मर्रिचेट्टु, मारि, पेड्डिमरि। ता०-अल। प०-बरगद। क०-आलदमर, आल। अ०-जातु, जायब।

अं०-Banyan Tree (बनियन ट्री)

ले०-Ficus Bengalensis (फिकस बेंगालेन्सिस)

व्यवहार—छाल, दूध। मात्रा—६—९ माशे

२ पिप्पलः (पीपल) पृ० २२६

हि०-पीपल वृक्ष। बं०-अश्वत्थ, अशोथा गाछ। म०-पिंपल, पिम्पले। क०-अरली। गु०-पीपलो, पीपुल, पीपुले। तै०-राई चेट्टु, कुलुजुब्बि चेट्टु। ता०-अरश मरम, अरस, अस्वरथ। फा०-दरख्त लरंजा। प०-पीपल, बोर। ते०-रैगा, रगी, रावि, कुलरावि, हस्पेथ अस्वलता, अरली। नेपाल०-पिपली। सन्ताल०-हेवक। उडि०-जारी।

अं०-Poplar Leaved Fig Tree (पोपलर लीव्ड फिग् ट्री)

ले०-Ficus Religiosa (फाइकस् रिलिजिओसा)

व्यवहार—फल। मात्रा—१—३ माशे

अस्य पक्वफलगुणाः—

फलं पक्कं च शीतलम्।
हृद्यं रक्तरुजं पित्तं विषं दोषं च नाशयेत्।
दाहं वान्ति च शोषं च ह्यरुचिं चैव नाशयेत्॥ नि० र०॥

३ पारीषः (गजदण्डसहोरा) पृ० २२६

हि०-पारिस पीपल, गज दंड, गजहुंड, परास पीपल, पारस पीपर, गजहंदुआ, गजदंडसिहारे, गजदंडसहोरा। बं०-गजशुण्डी, पलाशपिपुल, पराश पिपुल। म०-पिंपरी वृक्ष, पारस पिंपल, भेंड, परोसा पीपल। गु०-पारश पीपलो। क०-बंगरली, बूरग, बूरगा। ते०-घेल माखी, गंगरय,

गंगरेय, घेन गाखी, गेग्राणी । ता०-पोरिश, पूवरशु, मरम । फा०-येलास चेल्य । मु०-भेंदि । को०-मणेर वृत्त । द्रा०-पूवरस ।

अं०-Hibixus (हिबिक्सस)

ले०-Thespasia Populnea (थेसपेसिया पोपुलनिया)

४ नन्दीवृक्षः (बेलिया पीपल) पृ० २२६

हि०-बेलिया पीपल (र) । बं०-गया अश्वत्थ । गु०-बेलियो पीपलो । ते०-वद्दि चेट्टु, वट्टि चेट्टु । म०-क०-नन्दी वृत्त ।

५ उदुम्बरः (गूलर) पृ० २२६

हि०-गूलर, गुल्लर, गूलड़ । बं०-यज्ञ डुमुर । म०-उम्बर, उम्बराचे झाड़ । उ०-उदुम्बर । गु०-उम्बरो, ऊंमरो । क०-अत्ति । अ०-जमीज़ । ते०-अतिचेट्टु, मेड़िचेट्टु । ता०-अत्तिमरम, अट्टि । फा०-अंजीरे आदम, समरपिस्ता । ने०-डुमरी । अं०-Fig Tree (फिग ट्री)

ले०-Ficus Glomerata (फाइकस ग्लोमेराटा)

व्यवहार—फल, छाल, पत्ते । मात्रा—१-२ तोले ।

अस्य गुणाः—

उदुम्बरः शीतलः स्याद् गर्भसन्धानकारकः ।
व्रणरोपणकृद् रूक्षो मधुरस्तुवरो गुरुः ॥
अस्थिसन्धानकृद्वर्ण्यः कफपित्तातिसारकान् ।
योनिरोगं नाशयति, वल्कं चैवास्य शीतलम् ॥
दुग्धदं तुवरं गर्भ्यं व्रणनाशकरं स्मृतम् ।
कोमलं चास्य च फलं स्तम्भकृत्तुवरं मतम् ॥
हितकारि तृषापित्तकफरक्तरुजाऽपहम् ।
मध्यमं कोमलं स्वादु शीतलं तुवरं मतम् ॥
पित्ततृषामोदकरं रक्तस्रुतिवमीहरम् ।
प्रहारघ्नं समुद्दिष्टमपक्वं तुवरं मतम् ॥
रुच्यं चाम्लं दीपनं स्यान्मांसवृद्धिकरं मतम् ।
रक्तरुक्कारकं चैव दोषकारि जडं मतम् ॥

तत्पकं च कषायं स्यान्मधुरं कृमिकारकम् ।
जडं रुचिप्रदं चातिशीतलं कफकारकम् ॥
रक्तरुक्पित्तदाहक्षुत्तृषाश्रमप्रमेहहृम् ।
शोषमूर्च्छाहरं प्रोक्तं पूर्वैः स्वे स्वे निघण्टुके ॥ नि० र० ॥

नद्युदुम्बरस्य नामानि गुणाश्च—

नद्युदुम्बरिका चान्या लघुपत्रफला तथा ।
लघुहेमदुग्धा प्रोक्ता लघुपूर्वसदाफला ॥
नद्यम्बरी गुणैः सर्वैः सदृशी तु मता बुधैः ।
रसवीर्यविपाकेषु किंचिन्न्यूना च पूर्वतः ॥

६ काकोदुम्बरिका (कठूमर) पृ० २२७

हि०-कठमर, कठूम्बर, कोठाडुमर, तटमिला, कटगुलरिया, कठगूलर । बं०-काकडुमुर, मुर, काकडुमर । म०-कालाउम्बर, टेडउम्बरो । क०-काअति, काड़त्ति । ते०-ब्रह्म मेडिचेट्टु, काकिवाडिचेट्टु । प०-फगवाड़ो मा०-कठगूलर । को०-कोटङ्ग, सोसोकेरा, खर वा । ते०-पे अट्टिस । फा०-अंजीरे दस्ती । अ०-तीनबर्री, तीने बर्री ।

अं०-Kəg Tree (किग् ट्री)

लै०-Ficus Hispida (फाइकस हिस्पिडा)

,, -Ficus Opposetifolia (फाइकस् ओपोझिटिफोलिया) ।

व्यवहार—फल, छाल । मात्रा—३ माशे से १ तोला ।

अस्याः फलगुणाः—

फलमस्याः स्वादु शीतं तुवरं तृप्तिकारकम् ।
गुरु धातोर्वृद्धिकरं पाके च मधुरं स्मृतम् ॥
स्निग्धं मलस्तम्भकरं पौष्टिकं ग्राहि वातलम् ॥ नि० र० ॥

७ प्लक्षः (पाकर) पृ० २२७

हि०-पाकर, पाखर, पिलखन, पकरिया, पखरी । बं०-पाकुड़ गाछ, पांकुर । म०-पिपरीवृत्त । गु०-पीपर्य, पीपर । क०-हसुरी, बसरोमारा, बसुरी, बसरी ते०-मंगरयजुब्वि, गंगरयजुब्वि । ता०-पोरिशरावि ।

प०-पिलखन । मा०-पाकड़ । द्रा०-कल्लालेमरं ।

ले०-Ficus Infectoria (फाइकस इन्फेक्टोरिया)

व्यवहार—छाल । मात्रा—९ माशे से १॥ तोला ।

८ शिरीषः (सिरस) पृ० २२७

हि०-सिरस, सेरसा, सिरिस, शिरीष । बं०-शिरीष गाछ चटका । म०-शिरसी, शिरषी, सिरसांचे झाड़ । गु०-सरसडियो, शरशड़ो । क०-शिरसु, शिरीषमारा, बागेमर । ते०-दिरसन, शिरीषमानु, दिरसेनमु । ता०-काट्टुवाळै । पा०-ळसरीन, कलसिस । मा०-सिरस । ते०-द्रा०-काड़बाड़ई । फा०-जकरिया, दरख्ते जकरिया, दरख्त जकरिया, तुख्मे दरख्ते जकरिया । अ०-सुलतानुल असजार । हबे सुळतानुल् असजार ।

ले०-Albizzia Lebbeck (आलबीज़िया लेबेक)

व्यवहार—छाल, बीज । मात्रा—३ माशे से १ तोला ।

९ शालः (साखू) पृ० २२८

हि०-शाल, साल, साखु, सांखु, सखुआ । बं०-शालगाछ, ळताशाळ म०-लघुरालेचा वृक्ष, सजरा, राले चा वृक्ष, शालवण, लंघरालचा वृक्ष । गु०-सज्जरदामर, गलरालनुंनहानूं झाड़ । ते०-एपचेट्ट । ता०-कुंगलियम । क० सज्जर दामर, बिळीमत्ते । द्रा०-कुंगिलियम् ।

अं०-Sal Tree (साल ट्री)

ले०-Shorea Robusta (शोरिया रोबस्टा)

अस्य फलगुणाः—

फलं च मधुरं रूक्षं शीतं स्तम्भनकृद् गुरु ।
मलावष्टम्भनकरं तुवरं लेखनं मतम् ॥
आध्मानशूलवातानां कारकं पित्तनाशकम् ।
रक्तदोषतृषादाहक्षतक्षयविनाशनम् ॥ नि० र० ॥

१० सर्जकः (बड़ा शाल) पृ० २२८

हि०-बड़ा शाल, बड़ा साल । बं०-झाजीशाल । म०-सर्जवृक्ष, थोर

रालेचा वृक्ष। गु०-रालनु मोटु झाड़, राल नु झाड़। ते०-शालमु। क०-सज्जरदमर। द्रा०-वेल्ले कुन्नारेफ। प०-सजराल।

अं०-(१)Indian Copal (इण्डियन कोपाल)।

,,-(२)White Dammer (वाइट् डामर)।

ले०-Vateria Indica (वेटेरिया इण्डिका)।

११ शल्लकी (सालई) पृ० २२८

हि०-सालई, सलई, शालई, सलग, सलैया, शलग। बं०-शलई, शालविशेष, सल्लकी। म०-शालईवृक्ष, धूपशलाई। गु०-शालेडं, धूपेडो, सालेडा। क०-वदीकू, आनेव्याल। ता०-कुलि। मा०-सेलो। तै०-अंदुग।

ले०-Boswellia Serrata (बोसवेलिया सेरटा)।

अस्य फलपुष्पयोर्गुणाः—

तत्फलं कफवातार्शःकुष्ठारोचकनाशनम्।

पुष्पं चास्य कफं वातमर्शःकुष्ठारुचीर्जयेत्॥ रा० नि०॥

निर्यासोऽस्य मतो नाम्ना कुन्दुरुः सुज्ञभाषितः (नि० र०)

१२ शिंशपा (शीसम) पृ० २२८

हि०-सीसम, कपिलवर्ण शीसम, सीसो, शीशो, शीसव। बं०-शिशुगाछ, शादा शिशुगाछ, शिशु। म०-काला शिसवा, शिसवा। गु०-शिशम। क०-करीय इविडु, विडु, अगुरु गिड़। तै०-जिट्टरेगु चेट्टु, शिशुकर्र, इरुवुडु। ता०-जानुक् कुकुट्ट, पंशकेदर। अ०-आसम। द्रा०-शिंशपा। मा०-सीसम।

अं०-Black Wood Sisoo Tree (ब्लैक वुड सीसू ट्री)।

ले०-Dalbergia Sissoo (डालबेर्जीया सिस्सू)।

यह कालासीसम है।

श्वेतशिंशपाकपिलशिंशपयोर्नामानि गुणाश्च—

शिंशपाऽन्या श्वेतपत्रा सिताह्वादिश्च शिंशपा।

कपिला शिंशपा चान्या पीता कपिलशिंशपा॥

सारिणी कपिलाक्षी च भस्मगर्भा कुशिंशपा।

श्वेतादिशिंशपा तिक्ता शिशिरा पित्तदाहनुत्॥

कपिला शिंशपा तिक्ता शीतवीर्या श्रमापहा ।
वातपित्तज्वरघ्नी च छर्दिहिक्काविनाशिनी ॥

१३ ककुभः (अर्जुन-कोह) पृ० २२८

हि०–अर्जुन, कहू, कोह, अंजन । बं०–अर्जुन गाछ । गु०–अर्जुन, धोलों साजड़, साडडो, कड़ायो । पं०–कौ, कोह । क०–तारमेति, तोरेमति, सार ढोल, कम्पु मत्तो । ता०–वेल्ल मर्द, वेल्लई मरूद् मरम । म०–अर्जुन, सारढोल । ते०–यर्र मद्दि, मट्टि चेट्टु, बेरमड्डी ।

लें०–Terminalia Arjuna (टर्मिनेलिया अर्जुना)

१४ असनः (विजैसार) पृ० २२९

हि०–विजयसार, विजेसार, विजैसार, असना । बं०–पियाशाल, पियाल । गु०–वीयां, हीरा दखन, आसन । क०–केपिन्न होन्ने, होन्नेमर । मु०–अइन । मा०–विजैसार । म०–बिवला । तै०–मद्दि, वेगि । कों०–आसाणा । म०–असाणा, बिवला । फा०–कमरकस ।

अं०–Indian Kino Tree (इण्डियन किनो ट्री)

लें०–Pterocarpus Marsupium (टेरोकार्पस मार्सुपियम)

व्यवहार—छाल, लकड़ी ॥/मात्रा—३—४ माशे ।

अस्य पुष्पगुणाः

असनस्य तु पुष्पाणि विपाके मधुराणि च ।
तिक्तानि पाचनीयानि वातलानि भवन्ति हि ॥

१५ खदिरः (खैर) पृ० २२९

हि०–खैर, खयेर । बं०–खयेर गाछ, खदिर । म०–खैर । गु०–खेर, खैरियो, खैर । क०–कैंपिन खैर, कग्गलिमर । ते०–चंडचेट्टु, चंड्र । प०–खैर । द्रा०–काशुकट्टि । ता०–वोदलइ, वोदलम । आसाम०–खोइर, कोइर ।

लें०–Acasia Catechu (अकेसिया कैच्यु)

व्यवहार—छाल । कत्था ।

मात्रा—१—२ तोले । १—माशे॥

अस्य निर्यासादिगुणाः—

निर्यासस्तस्य मधुरो बल्यः शुक्रविवर्धनः ।
सारस्तु विशदो व्रण्यो मुखरोगकफास्रजित् ॥ म० नि० ॥

खदिरसारस्य नामानि गुणाश्च--

खादिरः खदिरोद्भूतस्तत्सारो रङ्गदः स्मृतः ।
खादिरस्तुवरोष्णश्च तिक्तो रुचिकरो मतः ॥
अग्निदीप्तिकरो ग्राही दन्तदार्ढ्यकरो मतः ।
कटुकः कफवातानां व्रणस्य च विनाशकः ॥
कण्ठरोगं सर्वमेहं कृमीन् मुखरुजं तथा ।
अष्टादशैव कुष्ठानि स्थौल्यं चार्शश्च नाशयेत् ॥

सं०-खदिरसार । हि०-खैरसार, कत्था । बं०-खयेर । म०-खैरा चा साड, नार, कात । गु०-खैरसार, काथो । क०-काथ । अं०-केटेच्यु Catechu । लै०-केटेच्यु एक्स्ट्राकुटं । फा०-अ०-कात ।

१६ श्वेतखदिरः (पपरिया कत्था) पृ० २२९

हि०-सफेद खैर, पपरिया खैर (कत्था) । बं०-श्वेतखदिर, पापरि-खयर गाछ । म०-पांढरा खैर । गु०-गोरड, खेर धोळा सार वालो । क०-विलिय तर्जि, विलियर्ति । ते०-तेलचंड, खासु तेलचंड ।

लै०-Mimosa Catechu (माइमोसा कैच्यू)

व्यवहार—छाल । कत्था ।

मात्रा—१—२ तोला । १—३ माशे ।

हन्ति कण्डूविषश्लेष्मकृमिकुष्ठव्रणग्रहान् ।

१७ इरिमेदः (दुर्गन्धखैर) पृ० २२९

हि०-दुर्गन्धखैर, बबुरी, गन्धाबुल, विलायती कीकर, गूकीकर । बं०-गुये बाब्ला, विटखेर, विटखयेर, गुंया बावला । म०-शेण्याखेर, गंधियो हिवर, गंधी हिंवर, घाणेरा खैर । गु०-गन्धिलो खैर, इरिमेद । क०-करर्य वेलु ।

अं०-Sponge Tree (स्पंज ट्री)

लै०-Acacia Farnesiana (अकेसिया फार्नेसियाना)

अस्य निर्यासगुणाः—

इरिमेदस्य निर्यासो मधुरस्तु बलप्रदः ।
धातुवृद्धिकरश्चैव मुनिभिः संप्रभाषितः ॥ नि० र० ॥

लघुखदिरगुणाः—

लघुस्तु खदिरः प्रोक्तस्तिक्तोष्णश्च कषायकः ।
कटुस्तीक्ष्णोऽपि चाम्लश्च रूक्षः कृमिकफापहः ॥
मुखरोगं दन्तरोगं रक्तदोषं प्रमेहकम् ।
मदं कण्डूं विसर्पञ्च वस्तिरोगं विषज्वरम् ॥
पिशाचबाधामुन्मादं कुष्ठं दाहं व्रणं तथा ।
आध्मानं नाशयत्येव फलं चास्य मधु स्मृतम् ॥
स्निग्धं कटूष्णमुक्तं च कफवातविनाशकम् ॥

वल्लीखदिरगुणाः—

वल्लीखदिरकस्तिक्तः कटुश्चोष्णः कषायकः ।
रसेऽम्लः श्वासकासघ्नः पित्तरक्तत्रिदोषजित् ॥ नि० र० ॥

१८ रोहीतकः (रोहेडा) पृ० २२९

हि०-रोहेडा, रोहिड़ा, रोहेड़ा । बं०-रोढ़ा, रयना, रोड़ा, नयना, कड़ार । म०-रक्त रोहिडा, रगत रोहिड़ा । गु०-रगत रोहीडो, मुत्तलु, रोहिडो । क०- यरडु मलु । ते०-मुलु मोदुग चेट्टु, मुलु मोटुग चेट्टु । प्रा०-रहेरा । प०-रुहेड़ा । मा०- रोहिड़ा ।

ले०-Tecoma Undulata (टेकोमा अन्डयूलेटा)

,, -Amoora Rohituka (अमुरा रोहीटका) यह सफेद फूल रोहेड़ा का नाम है ।

व्यवहार—छाल । मात्रा—६ माशे से १ तोला ।

लाल और सफेद फूलों के भेद से यह दो प्रकार का होता है ।

श्वेतरोहीतकनामानि—

सप्राह्वः श्वेतरोहीतः सितपुष्पः सिताह्वयः ।
सिताङ्गः शुक्लरोहीतो लक्ष्मीवाञ्जनवल्लभः ॥

रोहीतकद्वयगुणाः—

रोहीतकौ कटुस्निग्धौ कषायौ च सुशीतलौ ।
कृमिदोषव्रणप्लीहारक्तनेत्रामयापहौ ॥

१९ बब्बूलः (बबूर) पृ० २२९

हि०-बबूर, बबूल, कीकर, झरकट । बं०-बाबूला गाछ, बावला । मा०-बाभूल, बाभल, बाबूळ । गु०-बावल । क०-पुलई, गोब्बलि । ते०-बलवंतडु, नल्ल तुम्म, बलवंतुडु तुम्मचेट्टु । ता०-बेळमरम् । उ०-गुइड़ा । मु०-रोमकड़ि । रा०-बंबल । फा०-मुगिलां । अ०-अमुगिलां, अम्मगिळा, उम्मुगिळां । प०-क्किकर । म०-बंबल, बंल्यो । द्रा०-बेलम्मर । द०-कलिकीकर । यू०-बंबूल ।

ले०-Acacia Arabica (अकेसिया अरेबिका)

अं०-Acacia Tree (अकेसिया ट्री)

बबूर के गोंद का नाम-

ले०-Acacia Gummi (अकेसिया गम्मि)

अं०-Gum Arabic (गम आरेबिक्)

व्यवहार—छाल, पत्ते, फली । मात्रा-३-९ माशे ।

अस्य फलनिर्यासयोर्गुणाः—

बब्बूलस्य फलं रूक्षं विशदं स्तम्भनं गुरु ।
कषायं मधुरं शीतं लेखनं कफपित्तहृत् ॥
बब्बूलस्य तु निर्यासो ग्राही पित्तानिलापहः ।
रक्तातिसारपित्तास्रमेहप्रदरनाशनः ।
भग्नसंधानकः शीतः शोणितस्रुतिवारणः ॥ (आ० सं०)

२० अरिष्टकः (रीठा) पृ० २३०

हि०-रीठा । बं०-रीठेगाछ, रीटे करंज । म०-रीठा, रिठा, अरिठा । गु०-अरीठा । ते०-कुकडि, कुकुड, कुकुडु, कयलु, रीठा करञ्ज मने चेट्टु । पं०-रेठा । मु०-रिथा । अ०-बुन्दकहिन्दी । फा०-फिंदक हिन्दी । क०-कुकुटे कायि । ता०-पोन्नान कोट्टइ ।

अं०-Soap Nut Tree (सोप नट ट्री) ।

ले०-Sapindus Trifoliatus (सैपीन्डस ट्रिफोलियेटस्) ।

व्यवहार—फल, छाल । मात्रा—१-३ माशे ।

अस्य गुणाः—

अरिष्टकः कटुः पाके तीक्ष्णोष्णो लेखनो लघुः ।
दोषत्रयहरो गर्भपातनो गर्भशान्तिकृत् ॥
तज्जलं वामकं पानान्नस्याच्छीर्षरुजाऽपहम् ।
अर्धशीर्षव्यथां हन्ति वमनाद्विषनाशनम् ॥

२१ पुत्रजीवः (पितौजिया) पृ० २३०

हि०-जियापोता, पितौजिया, पतिजिया, पतजू, पितवंजिया, पतजिया, हिनाजिय । बं०-जियापुँता, पुतजिया । म०-पुत्रजीवकवृत्त, जीवनपुत्र, जीवनपुतर । गु०-पुत्रजीवक । क०-पुत्रजीव । तै०-शीश, कुँवरजुवि, कुत्रजुवि, कन्नजुवि । प्रा०-जितापुटज ।

ले०-Putranjiva Roxburghii (पुत्रञ्जीव रॉक्सबर्घाई)

२२ इङ्गुदी (हिंगोट) पृ० २३०

हि०-हिंगोट, गोंदी, गौंदी, इगुन, इंगुदी । बं०-हिंगोट, इंगुदी । म०-हिंगणबेट, हिंगणी । गु०-इंगोरिश्रो, हिंगर । क०-इंगलगिद । ते०-गाड़चेटट्टु, गरा, गारी । प०-इंगोट । द०-हिंगनबेट । ता०-ननजुन्द । अ०-हिमेलजे । अं०-Delil (डेलील)

ले०-Balanites Roxburghii (बेलेनाइटिस रॉक्सबर्घाई) ।

व्यवहार—पञ्चांग, बीजगिरी । मात्रा—१-१६ रत्ती ।

अस्य फलगुणाः—

ऐङ्गुदं स्वादु तिक्तं च स्निग्धोष्णं श्लेष्मवातजित् (शो० नि०)

अस्य पुष्पगुणाः—

अस्य पुष्पं तु मधुरं स्निग्धं चोष्णं च तिक्तकम् ।
वातं कफं नाशयतीत्येवमाचार्यभाषितम् ॥ (नि० र०)

अस्य फलमज्जगुणाः—

इङ्गुद्याः फलमज्जको जलयुतो लेपो मुखे कान्तिदः ॥ वै० जी० ॥

२३ जिंगिनी । पृ० २३०

हि०-जिंगिनी, जीयाल, जीअल । म०-मोई, मोक । गु०-जिंगिनो,

मवेडी, मोलेड्डु, मवड़ा। क०-ओरीथ, मरम। बं०-दुलदुली। प०-काली सिम्बल। तै०-गिली गिरना। मा०-जिगप्पी।

ले०-Odina Wodier (ओडिना वोडियर)

२४ तमाल। पृ० २३०

हि०-तमाल, श्यामतमाल, पसेंदु। बं०-तमालगाछ। म०-तमालवृक्ष। गु०-तमाल। क०-ह्रोंगेमरा। तै०-तमालु, कानुगचेट्टु। द्रा०-पुगंमरम।

ले०-Garcinia Morilla (गर्सिनिया मोरिल्ला)।

तमालस्य नामानि गुणाश्च—

तमाल उक्तस्तापिच्छः कालस्कन्धोऽमितद्रुमः।
लोकस्कन्धो नीलध्वजो नीलतालश्च स स्मृतः॥
कालस्कन्धश्च मधुरो बल्यो वृष्यो गुरुः स्मृतः।
धातुबृद्धिकरः शीतः श्रमदाहकफापहः।
पित्तशोथं च विस्फोटं पित्तं चैव विनाशयेत्॥ नि० र०॥

२५ तूणी (तून) पृ० २३०

हि०-तुन, तून, तूनी, महानिम। बं०-तुन्दगाछ, तूनगाछ। म०-तूनो, नांदुरखी, नांदरूख। गु०-तूणी। को०-नांदरूख। पं०-द्रवी, तुण। गु०-म०-नन्दीवृक्ष। मा०-तूण। उ०-महालिंबु। ते०-नन्दिवृक्षमु। क०-नन्द-पट्टे। अं०-The Toon (दी टून)।

"-Indian Mahogany Tree (इण्डियन मेहोगनी ट्री)

व्यवहार—छाल। मात्रा—१-२ तोला।

२६ भूर्जपत्रः (भोजपत्र) पृ० २३१

हि०-भोजपत्र, भूजपत्र, भोजपत्तर। बं०-भूर्ज्जिपत्र, भूज्जिपत्र। म०-भूर्जपत्र। प०-गु०-म०-भोजपत्र। ते०-भोजपत्रमु। क०-भुजपत्र। द्रा०-भुजपत्रं। ने०-फटक। अं०-The Birch (दी बर्च)

ले०-Betula Utilis (बेटुला यूटिलिस)।

२७ पलाशः (ढाक) पृ० २३१

हि०-ढाक, पलाश, परास, टेसू, केसू, धारा, कांकरिया, छिउल। बं०-पलाश गाछ। म०-पलश। गु०-खाखरो। मु०-खाकरो। क०-मुत्तलु,

मुत्तुलु, मदु गद गिड़ । ते०-मातुका चेट्टु, मोदुगु । ता०-परशन । उ०-पराशु । मा०-छिवरो । द्रा०-पेलाशं । पं०-पलाश । फा०-फल्हह ।

अं०-The Forest Fame (दि फारेस्ट फेम) ।

ले०-Butea Frondosa (ब्युटिया फ्राण्डोसा) ।

सफेद्फूल पलास का लैटिन नाम—

Butea Parviflora (ब्युटिया पार्वीफ्लोरा) है ।

अस्य भेदाः—

रक्तः पीतः सितो नीलः कुसुमैस्तु विभज्यते ।
किंशुकैर्गुणसाम्येऽपि सितो विज्ञानदः स्मृतः ॥

अस्य बीजनूतनपल्लवयोर्गुणाः—

फलबीजं च स्निग्धोष्णं कटु क्रिमिकफाञ्जयेत् ।
नूतनाः पल्लवाश्चास्य कृमिवातविनाशकाः ॥ नि० र० ॥

अस्य निर्यासमूलस्वरसयोर्गुणाः—

पलाशभवनिर्यासो ग्राही च त्तपयेद् ध्रुवम् ।
ग्रहणीं मुखजान् कासाञ्जयेत् स्वेदातिनिर्गमम् ॥ (आ० सं०)
पलाशमूलस्वरसो नेत्रच्छायान्ध्यपुष्पजित् ।
तद्बीजं कृमिविध्वंसि हितः काण्डो रसायने ॥ शो० नि० ॥

हस्तिकर्णपलाशस्य नामानि गुणाश्च—

तद्भेदे स्यात् किंशुलुकः किञ्चुलो हस्तिकर्णकः ।
हस्तिकर्णः परं वृष्यो मेधाऽऽयुर्बलवर्धनः ॥ रा० नि० ॥

२८ शाल्मलिः (सेमर) पृ० २३१

हि०-सेमर, सेम्हल, सेमल, शेम्बल । बं०-शिमुलगाछ, रक्तो सिमुल । म०-कांटे सावर, शेमला, शेवरी, सांवरी । गु०-शेमलो, शिमुल । ते०-रुगचेट्टट, मुन्दल बुराग चेट्टु । ता०-पुला, शानमली । मा०-शेमल, सरमलो । क०-यबल बद्मर । द्रा०-यलबंगरम् । पं०-सिम्बल ।

अं०-Silk Cotton Tree (सिल्क काटन ट्री) ।

ले०-Bombax Malabaricum (बौमबैक्स मालाबारिकम्)

व्यवहार—मुसला, छाल, फूल । मात्रा—३-९ माशे ।

अस्य त्वग्रस-पुष्प-फल-कन्दानां गुणाः—

त्वग्रसोऽस्या ग्राहकः स्यात्तुवरः कफनाशनः।
पुष्पं तु शीतलं पित्तं गुरु स्वादु कषायकम्।
वातलं ग्राहकं रूक्षं कफपित्तविनाशकम्।
रक्तदोषहरं चैव गुणा ह्येते फलस्य च॥
कन्दोऽस्य मधुरः शीतो मलस्तम्भकरो मतः।
शोफं दाहं च पित्तं च सन्तापं चैव नाशयेत्॥ नि० र०॥

२९ मोचरस। पृ० २३१

हि०-मोचरस, सेमरका गोंद। बं०-मोचरस, शिमुलेर आटा। म०-सांवरीचा डीक। गु०-शेमलानो गुन्द। क०-बूरल अंटुम्याण। ते०-बूरगुबंग। क०-यलबद्ह गिनुं। द्रा०-यलबंप शिन।

अं०-Gum Of Silk Cotton Tree (गम ऑफ् सिल्क काटन ट्री)

व्यवहार—गोंद। मात्रा—२-४ माशे।

३० कूटशाल्मलिः (कालासेमर) पृ० २३२

हि०-काला सेमल, कूटसेमर, रोहिड़ा। बं०-रक्तरोहितक। म०-रक्त रोहिरा, काली साम्बरो। गु०-रगतरोहिरा। क०-मुल्ल मुत्तल।

इसका एक भेद और होता है, जिसका फूल-सफेद होता है, फल—सेमर से छोटा होता है।

३१ धवः (धौं) पृ० २३२

हि०-धाय, धों, धव, धौं, धववृक्ष। बं०-धाउया गाछ, धाओया गाछ। म०-धावडा, धामोड़ा। गु०-धावड़ो। क०-सिरिवरु। तै०-नारिरूचचेट्टु। प०-धौं, कहुवा। मा०-धोकड़ो।

ले०-Anogeissus Latifolia (एनोजिस्सस लैटीफोलिया)।
"-Conocorpus Latifolia (कोनोकार्पस लैटोफोलिया)।

अस्य फलमूलयोर्गुणाः—

फलं चास्य हिमं स्वादु रूक्षं च तुवरं मतम्।
मलस्तम्भकरं चैव वातलं कफपित्तजित्।
मूलं कटु कषायं च पित्तकृद् दीपनं परम्॥ नि० र०॥

३२ धन्वङ्गः (धामिन) । पृ० २३२

हि०–धामिन, धामन । म०–धामणी चा वृक्ष । गु०–धामण । बं०–धामना गाछ, धाओया वृक्षभेद ।

ले०–Grewia Tiliaefolia (ग्रीविआ टीलियेफोलिया) ।

धन्वनस्य नामानि गुणाश्च—

धन्वनः पिच्छिलत्वक्च धनुर्वृक्षो महाबलः ।
धन्वनस्तुवरो वृष्यो मधुरः कटुको मतः ॥
बल्यो रूक्षो लघुश्चैव धातुवृद्धिकरो मतः ।
किञ्चिदुष्णश्च संप्रोक्तो व्रणरोपणकारकः ॥
कफवातहरो दाहशोषकण्ठरुजाऽपहः ।
रक्तरुक्पित्तकासघ्नः पीनसस्य विनाशकः ।
फलं चास्य स्वादु शीतं तुवरं कफवातहम् ॥

३३ करीरः (करील) पृ० २३२

हि०–करीर, करील, करेल, कचड़ा, सेंत । बं०–करील । म०–नेवती, नेपती, धट्ट भारंगी, कारवी । गु०–केरडो, केर, करेडी । क०–तिप्प तिगे, निष्पतिगे । तै०–कवर कुराक, एनुग दन्त मुमोदतु । फा०–कबार । पं०–पेंचू, पैंचू, टींट, कचड़ा, करीर ।

लै०–Capparis Aphylla (कैपेरिस ऐफिल्ला) ।

अं०–Caper (केपर) ।

अस्य पुष्पफलयोर्गुणाः—

तत्पुष्पं कफवातघ्नं कटु पाकरसं लघु ।
सृष्टमूत्रपुरीषं च सदा पथ्यं रुचिप्रदम् ॥
बालं चास्य फलं पाके कटुकं श्लेष्मशोथजित् ।
कषायं वातलं तिक्तं तत्पक्वं कफपित्तजित् ॥ शो० नि० ॥

३४ शाखोटः (सिहोरा) पृ० २३२

हि०–सहोरा, सिहोड़, सिहोरा (ड़ा), सिहोर । बं०–शेओड़ा, श्याओड़ा, शेउड़ा गाछ । म०–सहोड़, सागसहोड़ा, साहोड़ । गु०–साहोड़ा । तै०–भारिणिके चेट्टु, भारणिके चेट्टु । क०–आखोड़ मरण ।

ले०-Streblus Asper (स्ट्रेब्लस् अस्पर) ।

३५ वरुणः (वरना) पृ० २३३

हि०-बरुन, बरना । बं०-बरुनगाछ, वरुणगाछ । म०-बायवरणा, वायवर्णा । को०-भाटवरणा, हाडवरणा, हाटवर्णा । गु०-वरणो । क०-मद्वसले, उळिभिरी बसले । तै०-उरुमट्टि, जाजिचेट्टु, उलिमिरि चेट्टु । ता०-मरलिंगम । मु०-बायवर्णा । प०-वरना । मा०-वरणो ।

ले०-Crataeva Religiosa (क्रेटिवा रिलिजिओसा) ।

व्यवहार—छाल, पत्ते । मात्रा—४ माशे से १ तोला ।

अस्य पुष्पफलयोर्गुणाः—

पुष्पं चास्य च ग्राहकम् ।
रक्तदोषहरं चैव फलं चास्य सरं गुरु ।
पाके तु मधुरं स्वादु स्निग्धोष्णं वातनाशकम् ।
पित्तं कफं नाशयतीत्येवं च मुनिभिर्मतम् ॥ नि० र० ॥

३६ कटभी । पृ०।२३३

हि०-कटभी, करही, हरिमल, काळो कटभी । म०-वाकुम्भा । गु०-टीवरु, बापुंगा । क०-वेल्लाळ ।

अं०-Careys Tree (केरीस ट्री) ।

ले०-Carelya Arborea (केरिल्या आर्बोरिया) ।

श्वेतकटभीनामानि—

सितादिकटभी श्वेतकिणिही गिरिकर्णिका ।
शिरीषपत्री कालिन्दी शतपादा विषघ्निका ॥
महाश्वेता महाशौण्डी महादिकटभी दश ।
कटभी चेत्कटुरुष्णा गुल्मविषाध्मानशूलदोषघ्नी ।
वातकफाजीर्णरुजां शमनी श्वेता च तत्र गुणयुक्ता । (रा० नि०)

३७ मोक्षः (मोखा) पृ० २३३

हि०-मोखा, फरवाह, मोषा, कठपाढ़र, कठपाढ़ल । बं०-घण्टापारुल । म०-मोखाडा, मोकड़ी, मोखावृक्ष, मोखे, पारुल । गु०-मरखो । क०-मोख दळाई, मोक्के । तै०-मोक्कपु चेट्टु, मुष्क तुंडु चेट्टु, मोक्कमु । मा०-मोखा । पं०-घण्टापाटली ।

ले०-Schreberaswiete Nioibes (स्क्रीबीरास्वीटे निओइबिस)

मोक्षद्वयस्य गुणाः—

मुष्कक: कटुकोऽम्लश्च रोचनः पाचनः परः ।
प्लीहगुल्मोदरार्त्तिघ्नो द्विधा तुल्यगुणान्वितः ॥ रा० नि० ॥

अस्य पुष्पफलनिर्यासानां गुणाः—

पुष्पं कुष्ठहरं ज्ञेयं वातपित्तकफप्रणुत् ।
फलमग्नेर्दीप्तिकरं भेदकं रोचकं मतम् ॥
गुल्ममेहार्शःपाण्डुघ्नं शुक्रदोषोदरं जयेत् ॥ नि० र० ॥
निर्यासोऽस्य परं वृष्यः शोषपित्तानिलापहः ॥ म० नि० ॥

यह सफेद और काला भेद से दो प्रकार का होता है ।

३८ जलशिरीषिका (ढाढोन) पृ० २३३

हि०-जलसिरस, जलसिरिस, ढाढोन, टिंटिनी । म०-जलशिरसी, जलसिरिसी । गु०-जलसरसडियो ।

३९ शमी (छोंकर) पृ० २३३

हि०-छोकर, शमी, सफेदकीकर, छिकुर, छोकरा । बं०-शांई, शाई-बावला, शाईगाछ, छुंईबावला । म०-शमी, खैरी । गु०-खीजडो, खिज-ड़ी । क०-बन्नि, काबन्नि, बनि, बन्निमर । तै०-शमीचेट्टु, जम्मि । उ०-शुमि । मा०-खेजड़ी । प०-जंड, जंडी । द्रा०-वन्निमरं ।

ले०-Prosopies Spicigera (प्रोसोपिस स्पाइसीगेरा) ।

अं०-Spunge Tree (स्पञ्ज ट्री) ।

अस्याः फलगुणाः—

फलं तीक्ष्णं च पित्तलम् ।
मेध्यं गुरु स्वादु रूक्षमुष्णं केशहरं परम् ॥

४० सप्तपर्णः (सतौना) पृ० २३४

हि०-सतौना, सतवन, छेतिवन, सतिवन, छतवन, छातियान । बं०-छातिमगाछ, छेतेन, छातिम । म०-सात्विण, सातविण, सातवण । गु०-सात्विन, सप्तपर्णा, सातवीण । क०-एलेलेग, एलेलग । तै०-एडाकुल, अरिटाकु । मु०-छातविण । प०-सतोना । ता०-एभ्मिल इप्पालइ ।

लै०-Alstonia Scholaris (आल्स्टोनिया स्कोलेरिस)।

व्यवहार—छाल। मात्रा-१-२ माशे।

४१ तिनिशः (तिरिच्छ) पृ० २३४

हि०-तिनिश, तिरिच्छ, तिनसुना, जरिल, जारुल। बं०-तिनाश, सादनगाछ। म०-तिवस। गु०-हम्मो, मिणोहम्मो। क०-स्यन्दन, हुलगति। पं०-तिरिच्छा।

लै०-Lager Straemia Flod Reginae
(लाजर् स्ट्रेमिया फ्लोड रेजिने)

एक दूसरी जातिका तिरिच्छ वृक्ष होता है जिसका लैटिन नाम—
Ougeinia Dalbergia Oides (ओजीनिया डालबर्जिया ओईडिस्) है।

व्यवहार—छाल, गोंद। मात्रा-१-४ माशे।

४२ भूमीरुहः (सागोन) पृ० २३४

हि०-सागन, सागवन, सागुवान, सेगुन। बं०-सेगुनगाछ। म०-गु०-साग, सागवन, शाग, सोयें। क०-नैगु, न्याग। तै०-टेकुचेट्टु, टेंक। ता०-टेकु। फा०-फिलगोस। अ०-फिलजोश, उजनुल पिल। मा०-सागवान। लै०-Tectona Grandis (टेक्टोना ग्राण्डिस)

अं०-Indian Teak Tree (इण्डियन टीक ट्री)

अस्य पुष्पवल्कलयोर्गुणाः—

अस्य पुष्पं तु तुवरं तिक्तं च विशदं लघु।
वातप्रकोपणं रूक्षं कफपित्तप्रमेहनुत्॥
वल्कलं चास्य मधुरं रूक्षं च तुवरं मतम्।
कफनाशकरं चैव मुनिभिः परिकीर्त्तितम्॥ (नि०र०)

इति षष्ठो वटादिवर्गः॥ ६॥

अथ सप्तम आम्रफलादिवर्गः ॥ ७ ॥

१ आम्रः (आम) पृ० २३४

हि०—आम । बं०—आम्र । म०—आम्बा । गु०—आम्बो । ते०—माविडो, मामिडिकाय, मामिंडिचेट्टु । ता०—मामर, मामरं । मा०—आम्बो । क०—माविनकायि, माविनफल, मावयहरोण । द्रा०—मांगाय । फा०—आंबा, अम्बे । अ०—अम्बज । अं०—Mango Tree (मैङ्गो ट्री)

ले०—Mangifera Indica (मंगीफेरा इण्डिका)

व्यवहार—फल, छाल । ६ माशे से १ तोला ।

आम्ररसस्य दुग्धेन सह प्रयोगे गुणाः—

स वै दुग्धेन संयुक्तः कान्तिदः स्वाददः स्मृतः ।
वृष्यश्चान्ये गुणाः प्रोक्ता रसेन सदृशाः स्मृताः ॥ (नि०र०)

चोषिताम्रगुणाः—

चोषिताम्रो बलरुचिवीर्यवृद्धिकरः परः ।
लघुता शीतता शीघ्रपाकता वातपित्तनुत् ॥
मलबन्धकरश्चैव पूर्ववैद्यैरुदीरितः ।

शस्त्रच्छिन्नाम्रगुणाः—

पक्वः स्याच्छस्त्रच्छिन्नाम्रो जाड्यमाधुर्यशीतकृत् ।
रुचिकृच्चिरपाकश्च धातुवृद्धिं करोति सः ।
बलकर्त्ता वातपित्तनाशनः परिकीर्त्तितः ॥ नि० र० ॥

मधुघृतयुक्ताम्रयोर्गुणाः—

मधुना तत्क्षयप्लीहवातश्लेष्महरं परम् ।
सघृतं वातपित्तघ्नं दीपनं बलवर्णकृत् ॥ रा० व० ॥

आम्रास्थितैलगुणाः—

आम्रतैलं तु तुवरं स्वादु रूक्षं च तिक्तकम् ।
सुगन्धि मुखरोगस्य नाशनं कफवातनुत् ॥ नि० र० ॥

आम्रत्वचाऽऽदिगुणाः—

आम्रत्वचा कषाया च मूलं सौगन्धि तादृशम् ।
रुच्यं संग्राहि शिशिरं पुष्पं तु रुचिदीपनम् ॥

आम्रान्तस्त्वग्गुणाः—

आम्रान्तस्त्वग्ग्राहिणी तु तुवरा दाहकारिणी ।
पित्तमेहकफानां च नाशिनी योनिशुद्धिकृत् ॥

आम्रमूलगुणाः—

आम्रमूलं तु तुवरं ग्राहि शीतं रुचिप्रदम् ।
सुगन्धि कफवातानां नाशनं परिकीर्त्तितम् ॥

आम्रपल्लवगुणाः—

आम्रच्छदस्तु तुवरो ग्राहको रुचिकारकः ।
वातपित्तकफान् हन्तीत्येवं च परिकीर्त्तितम् ॥ (नि० र०)

२ आम्रावर्त्तः (अमावट) पृ० २३६

हि०-अमावट, आमावट, अंबावट, आमका सत्त, आम को रोटी । बं०-आम्रसत्व, आमट । म०-आंब्याचे साट ।

३ आम्रातकः (अम्बाडा) पृ० २३६

हि०-अम्बाडा, अमड़ा, अमरा, अमला, आमड़ा । बं०-आमडा, आमड़ा । म०-अंबांडा, आंबचार । गु०-जंगली आँबो, अंमेडा, अबेडा । क०-आँबोडेकायि । तै०-आमाटं, अंबालमु । पं०-अमरा, अंबड़ा ।

अं०-Hogplum (हौगप्लम)

ले०-Spondias Mangifera (स्पोण्डिअस मैङ्गोफेरा)

व्यवहार—फल, पत्ते । मात्रा-४-९ माशे ।

यह देशी व विलायती भेद से दो प्रकार का होता है ।

अस्य पर्णगुणाः—

पर्णं तु कोमलं चास्य रुच्यं ग्राह्यग्निदीपनम् ॥ (नि० र०)

४ राजाम्रः (कलमी आम) पृ० २३७

हि०-कलमी आम, मालदह । बं०-लता आम । म०-राजआम्बा । गु०-हाफुस आम्बो । क०-रायमच्चू । ते०-राच मामिडी चेट्टु ।

बालं राजफलं कफास्रपवनं।श्वासातिपित्तप्रदं·
मध्यं तादृशमेव दोषबहुलं भूयः कषायाम्लकम् ।
पक्वं चेन्मधुरं त्रिदोषशमनं तृष्णाविदाहश्रम
श्वासारोचकमोचकं गुरु हिमं वृष्याति भूपाह्वयम् ॥

५ कोशाम्रः (कोशम्भ आम) पृ० २३७

हि०–कोशंभ, छोटा आम, कोसम, कोशाम्र, क्षुद्राम्र, वनाम्र । बं०–केआंडा, जलपाइ । क०–जूरिमाचु, कोंड मामिडि । म०–कोशिंब, लाल रान आंबा । गु०–हलकी जातनो आंबो, डंगरी आंबो, कोशम । प०–कोशाम, कोशाम्र, झारी आंबा । द्रा०–वेड्ड्द मावु ।

ले०–Schleichera Trijuga (स्क्लेचेरा ट्राईजगा) ।

कोशाम्रमज्जागुणाः—

स्वादुपाकोऽग्निबलकृत् स्निग्धः पित्तानिलापहः ॥ सु० सं० ॥

अस्य तैलगुणाः—

सरं कोशाम्रजं तैलं कृमिकुष्ठव्रणापहम् ।
तिक्ताम्लमधुरं बल्यं पथ्यं रोचनपाचनम् ॥ रा० नि० ॥

६ पनसः (कटहर) पृ० २३७

हि०–कटहर, कटहल, कठैल, कठैर, पनस । बं०–कांटाल, कांठाल । म०–फणस । गु०–फनस । क०–हलसिन, हन्नु (ण्णु) । ते०–पनसकायि, पनस पांडु । ता०–पेलाकायि, पिल्ला, पिलापंजहम ।

लै०–Antiaris Toxicaria (आंटिएरिस टोक्सिकेरिया) ।

अं०–Jack Fruit Tree (जैक फ्रूट ट्री) ।

अस्य पुष्पगुणाः—

अस्य पुष्पं गुरु तिक्तं मुखशुद्धिकरं मतम् ॥ (नि० र०)

अस्य कोमलामफलगुणाः—

कोमलं तच्च मधुरं गुरु बल्यं कफप्रदम् ।
मेदोवृद्धिकरं चैव दाहवातप्रपित्तनुत् ॥ नि० र० ॥

७ लकुचः (बड़हल) पृ० २३७

हि०–बड़हल, बरहर, बरहल । बं०–डेओ, मादर, मान्दार गाछ, डेलो मान्दार, डहुया गाछ, डेयो मादार, डहुक । म०–बठार फल, क्षुद्र फणस, बटार फल । गु०–क्षुद्र पनस, लकुच । पं०–बड़हल । मा०–बड़हर ।

लै०–Antiaris Lakoocha (ऐएटीयेरिस लकुचा) ।

८ कदली (केला) पृ० २३८

हि०–केला, कदली, केरा, केदली । बं०–केला, कला । म०–केल, सोन-

केळ, मुंठेळी, लोखंडी, आवेली, चवई । गु०-केलुं, केल्य । क०-बालि, भरवाले काष्ठ, कावालेतब । तै०-अरटि, चक्राकेली, काग्रा, आरटीचेट्ट । फा०-मावज, मोज़, मोम्न । अ०-तना, मोजिद्तिला । ता०-पाजम, व्रन पिपसी । अं०-Plantain (प्लेण्टेन)

ले०-Musa Sapientum (मुसा सेपिएण्टम)

व्यवहार—स्तम्भरस । मात्रा—१-२ तोले ।

कोमलमध्यमकदलीफलयोर्गुणाः—

कोमलं कदलं शीतं मधुरं च कषायकम् ।
रुच्यमम्लं समुद्दिष्टं पित्तनाशकरं च तत् ॥
मध्यमं कदलं किंचित्तुवरं मधुरं गुरु ।
अग्निमान्द्यकरं चैव ऋषिभिः परिकीर्त्तितम् ॥

कदलीपुष्पगुणाः—

पुष्पं कदल्याः सुस्निग्धं मधुरं तुवरं गुरु ।
ग्राहि तिक्तं चाग्निदीप्तिकरं वातविनाशनम् ॥
किंचिदुष्णं च वीर्ये स्याद्रक्तपित्तं त्तयं क्रमीन् ।
पित्तं कफं नाशयतीत्येवं च ऋषिभिर्मतम् ॥ नि० र० ॥

कदलीमोचकगुणाः—

कदलीमोचकं हृद्यं कफघ्नं क्रिमिनाशनम् ।
तृष्णाप्लीहज्वरं हन्ति दीपनं वस्तिशोधनम् ॥ रा० व० ॥

कदलीजलगुणाः—

रम्भातोयं शीतलं ग्राहि तृष्णाकृच्छ्रान्मेहान्कर्णरोगातिसारान् ।
अस्रस्रावं स्फोटकान् रक्तपित्तं दाहं हन्यादस्रयोनिं च शोषान् ॥

कदलीकन्दगुणाः—

बल्यः कदल्याः कन्दः स्यात्कफपित्तहरो गुरुः ।
वातलो रक्तशमनः कषायो रूक्षशीतलः ॥
कर्णशूलरजोदोषं सोमरोगं नियच्छति ॥

कदलीसारगुणाः—

सारं कदल्याः संग्राहि चाप्रियं गुरु शीतलम् ।
तृड्दाहमूर्च्छाकृच्छ्रातिसारमेहांश्च सोमकम् ॥

अस्थिस्रावं रक्तपित्तं विस्फोटांश्चैव नाशयेत् ॥

आरण्यकदलीगुणाः—

आरण्यकदली शीता मधुरा बलवर्धिनी ।
वीर्यवृद्धिकरी रुच्या दुर्जरा च गुरुः स्मृता ॥
तृड्दाहशोषपित्तानां नाशिनी च प्रकीर्त्तिता ।
फलं तु तुवरं चास्या मधुरं च गुरु स्मृतम् ॥

काष्ठकदलीगुणाः—

काष्ठस्य कदली ग्राही हृद्या रुच्या च शीतला ।
अग्निमान्द्यकरी गुर्वी दुर्जरा चातिमाधुरी ॥
तृड्दाहमूत्रकृच्छ्राणां रक्तपित्तस्य नाशिनी ।
विस्फोटं चास्थिरोगं च नाशयेदिति कीर्त्तिता ॥

सुवर्णकदलीगुणाः—

सुवर्णकदली शीता मधुरा चाग्निदीपनी ।
बल्या वृष्या च गुर्वी च तृड्दाहकफनाशिनी ॥ नि० र० ॥

चम्पककदलीगुणाः—

तदेव चम्पकाख्यं तु वातपित्तहरं गुरु ।
वृष्यं चैवातिशीतं च मधुरं रसपाकयोः ॥ रा० व० ॥

महेन्द्रकदलीगुणाः—

महेन्द्रकदली चोष्णा वातस्य च विनाशिनी ।
प्रदरं पित्तरोगं च नाशयेदिति कीर्त्तिता ॥

कृष्णकदलीफलगुणाः—

कृष्णा तु कदली रुच्या तुवरा मधुरा लघुः ।
वायोर्धातोर्वृद्धिकरी मेहपित्ततृषाहरा ॥ नि० र० ॥

९ चिर्भिटम् (फूट) पृ० २३८

हि०–फूट, फूंट, कचरिया, सेंध, गोरख ककड़ी । बं०–फुटि, गोमुक, काकुड़ । म०–शेंदार, चिभूड़, शेंदाड़ । गु०–कोठीबा, चिभड़ा, चिभड़ू । ता०–ककरीकै । ते०–पेड्डुकै, पेड्डुदोसरै, बुरड रंग पंडु । फा०–खयार ।

ले०–Cucumis Momordica (क्युक्युमिस मोमोर्डिका)

आमशुष्कचिर्भिटफलयोर्गुणाः--

बाल्ये तिक्ता चिर्भिटा किंचिदम्ला गौल्योपेता दीपनी सा च पाके।
शुष्का रूक्षा श्लेष्मवातारुचिघ्नी जाड्यघ्नी सा रोचनी दीपनी च॥

चिर्भिटपुष्पगुणाः--

पुष्पं च चिर्भिटस्यैव दोषत्रयकरं स्मृतम्।
अपक्वं जीर्णकफकृत् पक्वं किंचिद्विशिष्यते॥ हा० सं०॥

चिर्भिटभेदमृगाक्षीनामगुणाः--

मृगाक्षी श्वेतपुष्पा च मृगेर्वारुर्मृगादनी।
चित्रवल्ली बहुफला कपिलाक्षी मृगेक्षणा॥
चित्रा चित्रफला पथ्या विचित्रा मृगचिर्भिटा।
मरुजा कुम्भसी देवी ज्ञेया चैकोनविंशतिः॥
मृगाक्षी कटुका तिक्ता पाकेऽम्ला वातनाशिनी।
पित्तकृत् पीनसहरा दीपनी रुचिकृत् परा॥ रा०नि०॥

१० नारिकेलः (नारियल) पृ० २३८

हि०-नारियल, नरियल, नरियर, खोंपड़ा, गरी, गिरी। बं०-नारिकेल, नारकोल, नारिकोल गाछ। म०-नारली, नारल, माड़। गु०-नालीएर, नालीयर, नारीयेल। ते०-टेंकाया, नारिकदम, टेंकाई चेट्टु। ता०-तेंगाई, टेन्ना, टेंगा। फा०-जोज हिन्दी नारीयल, नारगील। अ०-नारजिल। मु०-नारली। क०-नारियल, नारियल रसु, तेंगिनमर। उ०-नड़िया। मा०-नारेल। द्रा०-तेंगाई।

अं०-Coconut Palm (कोकोनट पाम)

ले०-Cocos Nucifera (कोकस न्यूसीफेरा)

व्यवहार--गिरी। मात्रा--१-१॥ तोला।

पक्वशुष्कनारिकेलफलगुणाः--

पक्वं च नारिकेलं तु दाहकं पित्तलं गुरु।
वृष्यं मलस्तम्भकरं रुचिदं मधुरं मतम्॥
दीपनं बलकृत् प्रोक्तं वीर्यस्य च विवर्धकम्।

नारिकेलफलं शुष्कं दुर्जरं दाहकं गुरु ।
स्निग्धं मलस्तम्भकरं बलवीर्यरुचिप्रदम् ॥

तरुणादिनारिकेलाम्बुगुणाः--

नारिकेलाम्बु तरुणं तृष्णाघ्नं पित्तनाशनम् ।
बालस्य नारिकेलस्य जलं प्रायो विरेचनम् ॥
शीतं वमथुमूर्च्छाघ्नं पित्तज्वरविनाशनम् ।
नारिकेलोदकं जीर्णं विष्टम्भि गुरु शीतलम् ॥ रा० व० ॥

नारिकेलपुष्पगुणाः—

नारिकेलस्य पुष्पं तु शीतं रक्तातिसारहृत् ।
रक्तपित्तं प्रमेहं च सोमरोगं च नाशयेत् ॥
मलस्तम्भकरं चापि प्रोक्तं पूर्वमनीषिभिः ॥ नि०र० ॥

नारिकेलपुष्पजलगुणाः--

नारिकेलपुष्पजलं गुरु वृष्यं प्रकीर्त्तितम् ।
तत्कालमदकृत् प्रोक्तं चातिस्निग्धमुदीरितम् ॥
तच्चेदम्लं कफकरं पित्तलं कृमिवातनुत् ॥ नि० र० ॥

नारिकेलतरुतोय (ताडी) गुणाः--

नारिकेलतरुतोयमतीव स्निग्धमाशु मदकृद् गुरु वृष्यम् ।
साम्लभावमुपयात्यपराह्णे श्लेष्मपित्तजनकं च कृमिघ्नम् ॥

नारिकेलफलतैलगुणाः--

नारिकेलफलोद्भूतं तैलं वाजीकरं गुरु ।
पोषणं क्षीणधातूनां वातपित्तप्रणाशनम् ॥
मूत्राघाते प्रमेहे च श्वासे कासे च यक्ष्मणि ।
मेधालोपे च हितदं क्षतानां भरणं तथा ॥

मधुनारिकेलगुणाः--

मोहजातीयकं नाम नारिकेलं च शीतलम् ।
मधुरं पुष्टिकृद् बल्यं रुच्यं चाग्निप्रदीपकम् ॥
कान्तिजन्तुकरं स्निग्धं कफस्यामस्य कोपनम् ।
कामवृद्धिकरं देहस्थैर्यकृद्दाहनाशनम् ॥
तृषां पित्तं श्रमं वातमतिसारं च नाशयेत् ॥

११ कालिन्दम् (तरबूज) पृ० २३९

हि०-तरबूज, तरबूजा, कालिन्द, हिनवाना, हिन्दोना । बं०-तरमुज, चेलना । म०-कालिंगड, खडुया । गु०-तड़बूच, कालिंगडु । क०-कौंडे । ते०-पुच्चकाया, तरबूजं । फा०-हिन्द्वाना, हीनवाना, हिन्दवानह । अ०-बत्तिख हिन्दी, जकी ॥

अं०-Water Melon: (वाटर मेलन)

ले०-Citrullus Vulgaris (सिट्रुलस वलगेरिस)

व्यवहार—बीज । मात्रा—६ माशे से १ तोले ।

अस्य मज्जपर्णयोर्गुणाः—

मज्जा तु मधुरो बल्यो रुचिकृद्धातुवर्धकः ।
पर्णं तिक्तं रक्तवृद्धिकरं चैव प्रकाशितम् ॥ नि० र० ॥

१२ खर्बूजम् (खरबूजा) पृ० २३९

हि०-खरबूज, खरबूजा, खर्बूजा, लालमी । बं०-खरबुजा, खरमुज । म०-खर्बुज, खरबूज । गु०-तलिया शकर टेटी, तलिया भीभड़ा । ते०-खरबूजं । क०-खढ़ज सौते, खडज सौते, षड़्भुजा । फा०-खरपुजह, खरपुजा । अ०-बितिख, खर्पुजह, खरपुजाह । अं०-Melon (मेलन) ।

ले०-Cucumis Melo (क्युक्युमिस मेलो) ।

व्यवहार—बीज । मात्रा—६-९ माशे ।

१३ त्रपुसम् (खीरा) पृ० २३९

हि०-खीरा, बालम खीरा । बं०-चीरा, शशा, शंसा, समा । म०-तासे, कांकड़ी, खिरा, कर्कटी । क०-तसेयकायि, तवसें । गु०-तांसली, तासली । ते०-दोस कइय, दोस काइ । ता०-महेबेहरी, मुल्लु वेल्लेरि । फा०-शियार खुर्द, खयार, वादरङ्ग । अ०-कंशद ।

अं०-Cucumber (क्युकम्बर)

ले०-Cucumis Sativus (क्युक्युमिस सेटिवस)

व्यवहार—बीज । मात्रा—६-९ माशे ।

एक बड़ी जाति का खीरा होता है, जिसे "बालमखीरा" कहते हैं ।

१४ गुवाकः (सुपारी) पृ० २३९

हि०–सुपारी, सोपारी, सुपाड़ी, कसेली, कसैली, कसईली । बं०–शुपारी, सुपारी, सुपारि । म०–सुपारी, पोफल । गु०–सोपारी, सुपारी, शोपारी । क०–कडिके यहेसरु, अडिके आड़िके, अढ़केय सरनु । तै०–पोकाकाया, क्रमकमु, पोक । फा०–पोपिल । अ०–फोफिल । मा०–सुपारी । द्रा०–पाक । उ०–गुया । प०–सुपारी ।

अं०–Betal Nut Palm (बेटल् नट् पाम)

ले०–Areca Catechu (एरीका कटेचू)

व्यवहार—फल । मात्रा—१-४ माशे ।

पक्वशुष्कगुवाकफलयोर्गुणाः—

पक्वं तु वातलं रूक्षं भेदनं कफनाशनम् ।
शुष्कमग्निकरं पूगं कषायं मधुरं परम् ॥
पूगमादौ विषं घोरं द्वितीये भेदि दुर्जरम् ।
तृतीयादिषु पातव्यं सुधातुल्यं रसायनम् ॥

आन्ध्रादिदेशोद्भवपूगफलगुणाः—

आन्ध्रोद्भवं पूगफलं पाके तु मधुरं मतम् ।
किंचिदम्लं च तुवरं कफवातविनाशकम् ॥
मुखजाड्यकरं चैव मुनिभिः परिकीर्त्तितम् ॥
चम्पावतीभवं पूगं पाचनं चाग्निदीपनम् ।
बलप्रदं रसाढ्यं च कफनाशकरं मतम् ॥
रोंठसंज्ञं पूगफलं रुच्यं चाग्निप्रदीपनम् ।
कटुकं तुवरं चोष्णं पित्तलं मलरोधकृत् ॥
बल्गुलग्रामजं पूगं रुच्यं चाग्निप्रदीपनम् ।
पाचनं च त्रिदोषघ्नं मलस्तम्भाम्रमेदहृत् ॥
चन्द्रापुरभवं पूगं रसे च मधुरं मतम् ।
कटुकं तुवरं रुच्यं स्वादु चाग्निप्रदीपनम् ॥
पाचनं मुनिभिः प्रोक्तं कफनाशकरं मतम् ।
गुहागरोद्भवं पूगं मधुरं तुवरं लघु ॥

कटुकं द्रावकं चैव पाचकं विशदं मतम् ।
मलस्तम्भं तथाऽऽध्मानं वातं चैव विनाशयेत् ॥
नैलवद्ग्रामसंभूतं क्रमुकं कण्ठशुद्धिकृत् ।
पाचनं मधुरं रुच्यं सरं कान्तिकरं लघु ।
त्रिदोषनाशकं चैव रसाम्लं च निगद्यते ॥

पूगवृक्षनिर्यासगुणाः—

पूगवृक्षस्य निर्यासो मोहनः शीतलो गुरुः ।
पाके चोष्णः पित्तलश्च पटुश्चाम्लः प्रकीर्त्तितः ।
वातनाशकरश्चैव मुनिभिः परिकीर्त्तितः ॥

१९ तालः (ताड़) पृ० २४०

हि०-ताड़, ताल, तार । बं०-ताल । म०-ताड़, खरताल । ता०-पनै-मरम, पनम । क०-तालिमारा, बालेमर । ते०-ताति, ताडु । गु०-तड़ । द्रा०-पानम्मरं । फा०-ताल । अ०-तार । अं०-Palm Tree (पाम ट्री) ले०-Borassus Flabelliformis (बोरेसस फ्लेबेलिफोर्मिस)

तालगुणाः—

तालवृक्षस्तु मधुरः शीतलो मदकृद् गुरुः ।
पुष्टिकृच्छुक्रकफकृन्मेदकृद्बलकारकः ।
वृष्यश्च सारकः पित्तदाहशोषविषश्रमान् ।
विषकुष्ठकृमीरक्तदोषवातांश्च नाशयेत् ॥ नि० र० ॥

अस्य फलगुणाः—

वातहा बृंहणो बल्यः क्रिमिहा कुष्ठनाशनः ।
रक्तपित्तहरः स्वादुस्तालः सप्तगुणान्वितः ॥ रा० नि० ॥

२.स्यामफलगुणाः—

आममस्य फलं प्रोक्तं स्निग्धं स्वादु गुरु स्मृतम् ।
मलावरोधकं बल्यं शीतलं धातुवर्धकम् ॥
वृष्यं तृप्तिकरं मांसकफोत्पत्तिकरं स्मृतम् ।
वातं श्वासं रक्तपित्तं व्रणं दाहं क्षतं तथा ।
पित्तक्षयं रक्तदोषं नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥

अस्थ्यार्द्रफलबीजगुणाः—

आर्द्रं तु फलबीजं च मूत्रलं शीतलं स्मृतम् ।
रसे पाके च मधुरं कफकृद्वातपित्तहृत् ॥

तालफलोद्भवजलगुणाः—

तालाम्बु पित्तजिच्छुक्रस्तन्यवृद्धिकरं गुरु । (रा० व०) ।

तालमण्डिकागुणाः—

श्लेष्मदोषकरी वृष्या वातला श्लेष्मवर्धिनी ।
कासहृल्लासविध्वंसकरणी तालमण्डिका ॥ आ० सं० ॥

तालप्रलम्बगुणाः—

तथा तालप्रलम्बं च रूक्षं क्षतरुजाऽपहम् ।

तालपञ्जरगुणाः—

तालवृक्षस्य शीर्षस्थः पञ्जरो धातुबर्धनः ।
वातपित्तहरश्चैव वस्तिशुद्धिकरः परः ॥

तालवृन्तवायुगुणाः—

तालवृन्तभवो वातस्त्रिदोषशमनो लघुः ॥ रा० व० ॥

तालमूलगुणाः—

तन्मूलं तु भवेत्स्वादु पाके च रक्तपित्तहम् ॥

श्रीतालनामानि—

श्रीतालो मधुतालश्च लक्ष्मीतालो मृदुच्छदः ।

श्रीतालगुणाः—

श्रीतालो मधुरोऽत्यन्तमीषच्चैव कषायकः ।
पित्तजित् कफकारी च वातमीषत्प्रकोपयेत् ॥

हिन्तालनामगुणाः—

हिन्तालः स्थूलतालश्च वल्कपत्रो बृहद्दलः ।
हिन्तालो मधुराम्लश्च कफकृत् पित्तदाहनुत् ।
श्रमतृष्णाऽपहारी च शिशिरो वातदोषनुत ॥ (रा० नि०) ॥

१६ बिल्वः (बेल) पृ० २४०

अस्य नामादिकं तु गुडूच्यादिवर्गे द्रष्टव्यं, पुनरुक्तिभिया नात्र लिखितम् ।

१७ कपित्थः (कैथ) पृ० २४१

हि०-कैथ, कैथा, कैंत, कइंत । बं०-कयेथ गाछ, कत्वेल, कयेत् वेल,

कयेत बेल, कयेद् गाछ । म०-कवंठ, कवट, कंवट, कविठ । गु०-कोठ, काठ, कोठु । ते०-एलांग काया, वेलगचेट्टु, एकांगा काया । यू०-कवेट । मा०-प०-कैथ । द्रा०-बलामरं । क०-बेललु, बेळडा, बलुवत, व्यालद-मर । अं०-Wood Apple (उड् एपुल्) ।

ले०-Feronia Elephantum (फेरोनिया एलिफैण्टम्) ।

अस्य बीज-बीजतैल-पुष्प-पर्णानां गुणाः—

बीजं च हृद्व्यथाऽपहम् ।
शीर्षव्यथां विषं चैव विसर्पं चैव नाशयेत् ।
बीजतैलं च तुवरं ग्राहकं स्वादु पित्तनुत् ॥
आखोर्विषं कफं चैव हिक्कां वान्तिं च नाशयेत् ।
विषनाशकरं पुष्पं पर्णं वान्त्यतिसारनुत् ।
हिक्कां नाशयतीत्येवं प्रोक्तं पूर्वमहर्षिभिः ॥ नि० र० ॥

१८ नारङ्गः (नारंगी) पृ० २४१

हि०-नारङ्गी, संतरा, संत्रा । बं०-कमलालेंबु, नारङ्गालेबु, नारङ्गीलेबु । म०-नारिंग । ते०-दयाकाया, गंजनिम्म, नारांजि चेट्टु । उ०-नारिंगो । ता०-किचिली । गु०-नारंगी लिंबु । फा०-किस्मे अज नारंज, नारंज । अ०-नारंज । क०- माधवला । अं०-Orange (आरेंज) ।

ले०-Citrus Aurantium (सिटरस औरेण्टियम्) ।

१९ तिन्दुकः (तेंदू) पृ० २४१

हि०-तेंदू, तेंदू, गाब, गाभ । बं०-गाव, तेंदू, तेद, माकडा केंद । म०-टेंभुर्णी, आयन, देम्ब रुपणी, आपन । गु०-टिंबरवो, टींबरु, टेमरू । क०-टुंबरु,रुंबुरु, रूंबरु, तुम्बर । तै०-तामिक, तुमि । ता०-तुम्बिक । फा०-अबनुसुभाड । मु०-तिम्बोरी । को०-काकटे भुर्णी, कांटेटे भुरणी । मा०-तींदू । पा०-तेदूं । अ०-अबनूस । अं०-Ebony (एबनी)

ले०-Diospyros Embryopteris (डायोस्पाईरोस एम्ब्रा-ओप्टेरिस)

व्यवहार—फल का रस । मात्रा—३-६ माशे ।

तिन्दुकाष्ठस्य सारस्तु पित्तरोगहरो मतः ॥ नि० र० ॥

२० कुपीलुः (कुचिला) पृ० २४१

हि०-कुचला, कुचिला, कोंचला । बं०-कुचिले, कूचिला । म०-काजरा, कारस्कार । गु०-झेर कोंचला (लुं) । क०-कंजिवार, हेमुष्टि, कासरकानमारा । ते०-मुष्टिगिंजा, मुसिडे, मुष्टिचेट्ट । ता०-एट्टेमारं, काकोठीं । माला०-कन्निराम । ब्रह्मी०-खाबों । फा०-इफा राकी, अझेरकी । अ०-कातिलुल् कल्क, फिल्ज़ माही, इज़राका ।

अं०-Poison Nut (पाइज़न नट)

ले०-Strychnos Nux Vomica (स्ट्रिक्नास नक्स वामिका)

व्यवहार—बीज (विष) । मात्रा—शुद्ध—१-२ रत्ती ।

कारस्करो मदकरस्तुवरो ग्राहकः स्मृतः ।
कटुस्तिक्तो लघुश्चोष्णः कुष्ठरक्तविकारहा ॥
कण्डूं कफं वातरोगं व्रणं चार्शो ज्वरं जयेत् ।
अस्य चामफलं ग्राहि तुवरं वातकृल्लघु ॥
शीतलं च समुद्दिष्टं तत्पक्वं विषदं गुरु ।
पाके च मधुरं प्रोक्तं कफं वातं प्रमेहकम् ।
पित्तं रक्तविकारं च नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥

रसरत्नप्रदीपेऽस्य शुद्धिर्यथा—

त्रिदिनं काञ्जिके क्षिप्तः शुद्धः स्याद्विषतिन्दुकः ।
किञ्चिदाज्येन भृष्टो वा ॥

२१ मर्कटतिन्दुकः (मकर तेंदुआ) पृ० २४१

हि०-मकर केंद, मकर तेंद, मकर तेंदु, मकर तेंदुआ, केंदु, तेंदु, आबनूस । बं०-तेंद, केद, माकड़ागाव, माकड़ातेंदु, आबनूस । म०-कांकटें भुर्णी । गु०-काक टिंवरवो । तै०-तुमि, तुमकी । ता०-तुम्वि । प्रा०-काकतेंदु ।

ले०-Diospyros Melanoxylon (डायोस्पाईरोस मीलेनोक्सीलन)

काकतिन्दुः कषायाम्लो गुरुर्वातविकारनुत् ।
पक्वस्तु मधुरः किंचित् कफकृत् पित्तवातहृत् ॥

२२ राजजम्बू (बड़ी जामुन) पृ० २४२

हि०-बड़ी जामुन, फरेन्द्र (न), फड़ेना, फलेन्द्रा, राज जामुन। बं०-वड़जाम। म०-रायजाम्भूल, थैार जाम्बुल। गु०-जाम्बुन, राजजाम्बु। क०-दोड्डुनिरलु, दोदुनिरली(लु)। ते०-पेद्दनेरडि, नेरडुचेट्टु। को०-राजिले।

अं०-Jambul Tree (जाम्बुल ट्री)

ले०-Eugenia Jambolana (युजिनिया जाम्बोलाना)

,, Syzyzyum Jambolanum (सिझिझियम जाम्बोलेनम्)

महाजम्ब्वा नामानि गुणाश्च—

महाजम्बू राजजम्बूः स्वर्णमाता महाफला।
शुकप्रिया कोकिलेष्टा महानीला बृहत्फला॥
राजजम्बूस्तु मधुरा चोष्णा च तुवरा मता।
स्वर्या मलस्तम्भकरी श्वासशोषश्रमापहा॥
मुखजाड्यातिसारघ्नी कफकासविनाशिनी।
फलं चास्यास्तु रुचिदं मधुरं स्तम्भकं गुरु॥
दोषनाशकरं स्वादु ऋषिभिः परिकीर्त्तितम्॥

व्यवहार—छाल। मात्रा—१-२ तोले।

जम्ब्वा नामानि गुणाश्च—

जम्बूस्तु सुरभिपत्रा नीलफला श्यामला महास्कन्धा।
राजार्हा राजफला शुकप्रिया मेघमोदिनी च नवाह्वा॥
जम्बूवृक्षस्तु तुवरो ग्राही मधुरपाचकः।
मलस्तम्भकरो रूक्षो रुचिकृत् पित्तदाहहा॥
अम्लः कण्ठ्यः कृमिश्वासशोषातीसारकासहा।
रक्तदोषं कफं चैव व्रणं चैव विनाशयेत्॥
फलं च तुवरं चाम्लं मधुरं शीतलं मतम्।
रुच्यं रूक्षं ग्राहकं च लेखनं कण्ठदूषकम्॥
मलस्तम्भकरं वातकारकं कफपित्तनुत्।
आध्मानकारकं प्रोक्तं पूर्ववैद्यैर्मनीषिभिः॥

जम्बूमज्जाऽङ्कुरयोर्गुणाः—

तन्मज्जा मधुरा ग्राही विशेषान्मधुमेहहा।

तदङ्कुरा हिमा रूक्षा ग्राहकाध्मानकारकाः ॥

२३ क्षुद्रजम्बूः (छोटी जामुन) पृ० २४२

हि०-छोटीजामुन, कठजामुन, बनजामुन । बं०-क्षुद्रेजाम, बनजाम । गु०-क्षुद्रजम्बु, डुंगरी जांबु ।

ले०-Premna Herbacea (प्रेमना हरबेसिया) ।

क्षुद्रजम्ब्वादीनां नामानि—

क्षुद्रजम्बूर्दीर्घपत्रा सूक्ष्मकृष्णफला तथा ।
काकजम्बूः काकफला नादेयी काकवल्लभा ।
भृङ्गेष्टा काकनीला च ध्वाङ्क्षजम्बूर्घनप्रिया ॥
अन्या च भूमिजम्बूर्ह्रस्वफला भृङ्गवल्लभा ह्रस्वा ।
भूजम्बूर्भ्रमरेष्टा पिकभक्षा काष्ठजम्बूश्च ॥

क्षुद्रजम्बूगुणाः—

क्षुद्रजम्बूस्तु तुवरा हृद्या च मधुरा मता ।
वीर्यप्रदा ग्राहिणी च पुष्टिकृत् कफपित्तहा ॥
हृद्रोगं कण्ठरोगं च दाहं चैव विनाशयेत् ।
अस्याः फलगुणाः प्रोक्ता राजजम्बूफलैः समाः ॥ (नि० र०)

जलजम्बूगुणाः—

जलजम्बूस्तु तुवरा शीता तिक्ता गुरुः स्मृता ।
पाके च मधुरा चाम्ला पुष्टिकृद् ग्राहिणी मता ॥
वीर्यवृद्धिकरी बल्या श्रमदाहातिसारहा ।
रक्तदोषं कफं पित्तं व्रणं चैव विनाशयेत् ॥

२४ बदरी (बेर) पृ० २४२

हि०-बैर, बेर, बइर, बेरी, बयर । बं०-कुल, बसर । म०-बोर, बोरीचे झाड़ । गु०-बोरड़ी । क०-बोरे, यरनु, यचले । ता०-रेयन्ती । ते०-रेगुचेट्टु, रेंघ गोट्टे चेट्टु । उ०-कुड़ि । मु०-बोर । मा०-बोरडी बोर । पं०-बेर । द्रा०-यलंदै । फा०-कुनार, सिदुर । अ०-सिद्रनबंक ।

अं०-Plum (प्लम) ।

ले०-*Zizy Phus Jujuba* (जिजि फस जुजुबा)

अपक्वं श्लेष्माणं विरचयति वातं वितनुते-
ततो मध्यावस्थं किमपि मधुराम्लं पवनहृत् ।
सुपक्वं पित्तघ्नं श्रममदवमिच्छेदि बलदं-
सरं तृष्णाजित्तद् गृहबदरमश्नन्ति धनिनः ॥
बदरी शीतला रूक्षा तिक्ता पित्तकफापहा ।
फलमस्यास्तु मधुरं तुवरं चाम्लमीरितम् ॥
तच्च पक्वं तु मधुरमम्लमुष्णं कफप्रदम् ।
ग्राहकं लघु रुच्यं च वाय्वतीसारशोषहृत् ।
रक्तश्रमहरं प्रोक्तं पण्डितैश्चरकादिभिः ॥ नि० र० ॥

गजकोलगुणाः—

गजकोलं दुर्जरं स्याच्छीतं स्वादु गुरु स्मृतम् ।
ग्राहकं लेखनं स्निग्धं पौष्टिकं मलबद्धकृत् ॥
आध्मानकारकं चैव पित्तवातविनाशनम् ॥ (रा० नि०)

राजबदरगुणाः—

राजबदरः सुमधुरः शिशिरो दाहार्त्तिपित्तवातहरः ।
वृष्यश्च वीर्यवृद्धिं कुरुते शोषश्रमं हरते ॥

भूबदरी (झरबेर) गुणाः—

भूबदरी मधुराऽम्ला कफवातविकारहारिणी पथ्या ।
दीपनपाचनकर्त्री किञ्चित् पित्तास्रकारिणी रुच्या ॥ (नि०र०)
इसका लेटिन नाम—(ज़िज़िफ़स न्युम्मुलेरिया)

बदरीफलमज्जगुणाः—

बदरीफलमज्जा तु तुवरा मधुरा मता ।
शुक्रदा बलदा वृष्या कासश्वासतृषाऽपहा ॥
वातघ्नी छर्दिदाहघ्नी पित्तहा मुनिभिर्मता ॥ नि० र० ॥

बदरीपत्रत्वग्बीजगुणाः—

बदरस्य पत्रलेपो ज्वरदाहविनाशनः ।
त्वचा विस्फोटशमनी बीजं नेत्रामयापहम् ॥ रा० नि० ॥

२९ प्राचीनामलकम् (पानी आमला) पृ० २४२

हि०-पानी आमला, पानी आंवड़ा (रा), पनियाला । ब०-पानि अम्ब-

रा, पानि आमला । म०-पान आंवले, पाण आवला (ली) । गु०-पाणि-आंवले, पांण आवला । ते०-प्राचीनामलकमु । ता०-ताळीसपत्री ।

ले०-Flacourtia Cataphracta (फ्लाकोर्सिया काटाफ्राक्टा) ।

पर्णामलकं मधुरं रुचिप्रदं गुरु तथैवोष्णम् ।
विषत्रिदोषशमनं कफतृष्णावातहं प्रोक्तम् ।
सुतरां तदेव पक्वं कफपित्तकरं विशेषतश्चोक्तम् ।। (नि० र०)

२६ लवली (हरफारेवड़ी) पृ० २४३

हि०-हरफारेवड़ी (री), लवली, हरफरौरी । बं०-नोयाल, नोयाड, लेयोयार, लोयाड़ । म०-राय आंवला, हरपररेवड़ी, काथ आवला । गु०-हरफारेवड़ी, खाटो, खाटो आवली । पं०-हरपा रेवड़ी ।

ले०-Phyllanthus Distichus (फिलान्थस डिस्टिकस) ।

२७ करमर्दः (करोंदा) पृ० २४३

हि०-करोंदा, करवँदा, करौंदा, करोना । बं०-करमचा, करमिया । म०-करवंद । गु०-करमदा, करमर्दू । क०-करिजिगे । ते०—वाका, करवंदे । मु०-करिन्दा । मा०-करवंदा ।

ले०-Carissa Corandas (केरिसा कोरंडास) ।

अं०-Jasmine Flowered Carisa (जास्मिन् फ्लावर्ड केरिसा)

करमर्दफलं चामं तिक्तं चाग्निप्रदीपकम् ।
गुरु पित्तकरं ग्राहि चाम्लमुष्णं रुचिप्रदम् ।।
रक्तपित्तं कफं चैव बर्धयेत्तद्विनाशकम् ।
तत्पक्वं मधुरं रुच्यं लघु शीतं च पित्तहम् ।।
रक्तपित्तं त्रिदोषं च विषं वातं च नाशयेत् ।
तच्छुष्कं पक्वसदृशं गुणैर्ज्ञेयं विचक्षणैः ।।
अत्यम्लस्य गुणाश्चैव ज्ञेया आमकराम्लवत् ।

अस्य मूलगुणाः—

तन्मूलं कृमिनुत सरम् ।। शो० नि० ।।

२८ करमर्दिका (करोंदी) पृ० २४३

हि०-करोंदी, करौंदी, करवँदी । ब०-करमची । म०-करवन्दी । गु०-करमदो । ते०-पारिकचेट्टु ।

२९ प्रियालः (चिरौंजी) पृ० २४३

हि०-चिरोंजी, चिरौंजी, चिरवँजी। बं०-चिरौंजी, पियाल, पियाशाल। म०-चारोली, चार। गु०-चारोली। क०-चारनीज,, चारबीज, मेरप्पि, मेरवे। ते०-सारुपपु, चारपप्पु। ता०-काट्टु मांगोट्टै, काटमरा। को०-चारवृक्ष बीज। उ०-चरु, चिरोली। फा०-नुकलं खाजा, नुकुल ख्वाजह। अ०-हब्बुस्समाना, हब्बुल समनह।

ले०-Buchanania Latifolia (बुचनानिया लेटिफोलिया)

अस्य मूलतैलयोर्गुणाः—

चारमूलं तु तुवरं रक्तरुक्कफपित्तहम्॥ (नि० र०)

तत्तैलं मधुरं गुरु।

किञ्चिदुष्णं कफकरं पित्तवातविनाशनम् (नि० र०)

३० राजादनः (खिरनी) पृ० २४३

हि०-खिरनी, खिर्नी, खिन्नी। बं०-क्षीर खेजूर, क्षीरणी, रांजनी, काशेरनी। म०-खिरनी, रांजनी, रायणी, रेवणे। गु०-रायण, रायणी। क०-खिरणीं मारा, खने मारिले, हालेमर। ता०-पल्ल। मु०-केर्णि। ते०-पालमानु। ले०-Mimusops Hexadra (माइमुसोप्स हेक्सेंड्रा)। अं०-Obtuse Leaved Mimusops (ओब्टयूस लीव्ड माइमुसोप्स)

३१ विकङ्कतः (कंटाई) पृ० २४४

हि०-कंटाई, किंकिणी, विकंकत, बंज, रामबबूर। बं०-बइंचिगाछ, बैंची, बोंच फल। म०-वेहकल, गुलघोंटी, पिंड रोहिणी। गु०-विकलो, बेहफल। क०-हलुमाणिका मालेगु, हल सानिका। ते०-कानवेगु चेट्टु। उ०-बइच कुड़ि। प०-कुकोया। द्रा०-बल्ल बेलम।

ले०-Flacourtia Ramontchi (फ्लेकोर्शिया रामोंची)

विकङ्कतोऽम्लमधुरः पाकेऽतिमधुरो लघुः।

दीपनः कामलाऽस्रघ्नः पाचनः पित्तनाशनः॥ (रा० नि०)

३२ पद्माक्षम् (कमल गट्टा) पृ० २४४

हि०-कमल गट्टा, कमलके बीज। बं०-पद्मवीचि। म०-कमलाक्ष, कमलाचें बीज। गु०-कमल काकड़ी। क०-तावडे बीज, पद्माक्ष। ते०-तामरकारा, तामरकाई। यू०-गुलहार। अ०-बालके कुवति।

३३ मखान्नम् (मखाना) पृ० २४४

हि०-मखाना, मखान्ना। बं०-माखाना, माख्ना, पानफल। गु०-मखाना (णा)। म०-मखाणे, मकाणे। दे०-गिलागिच। प०-मा०-फूलमखाना। उ०-कन्नपद्म।

ले०-Euryale Ferox (युर्यलि फेराक्स)

व्यवहार—भुने बीज। मात्रा—६ माशे से १ तोला।

३४ शृङ्गाटकम् (सिंघाड़ा) पृ० २४४

हि०-सिंघाड़ा (रा), सिंहाड़ा (रा)। बं०-पानीफल, सिंगाड़े, पाणिफल। म०-सिंगाड़े। गु०-सिंगोडा। क०-सिंगाडे। ते०-परिकिगड्डु, दुम्पगड्डु। फा०-सुरंजान।

ले०-Trapa Bispinosa (ट्रापा बिसपाइनोसा)

शृङ्गाटकः शोणितपित्तहारी लघुः खरो वृष्यतमो विशेषात्।
त्रिदोषतापश्रमशोफहारी रुचिप्रदो मेहनदार्ढ्यहेतुः ॥ रा० नि० ॥

३५ कैरविणीफलम् (बेरी) पृ० २४४

हि०-बेरी, कुमुदके बीज, कुमुद बीज, बेरा, घंघोल के दाने, भटबेरा, भेटबेरा। बं०-हेलाबीज, सुन्दीबीज। गु०-पोयणाना बीज। फा०-तुख्म नीलोफर। अ०-करन बुल् माय।

३६ मधूकः (महुआ) पृ० २४४

हि०- महुआ, महुया, महुवा। बं०-मौल, मउल, मोल, मोया। म०-मोहाचा वृक्ष, मोहवृक्ष, मोहोवृक्ष। गु०-महुडो, महुडा। क०-इप्पेमारा, महुइप्पे, दिप्पेमर। ते०-इपा, पिन्ना, इप्प। ता०-कट इल्लुपि, कठइल्लुपि, इलुप्पै। मु०-मोहा। प०-महुआ। मा०-महुवो। द्रा०-इलुप्पं। फा०-चकां, सफजंल, आबीविही, गुलचकां। अं०-Elloopa Tree (इलूपा ट्री)

ले०-Bassia Latifolia (बेसिया लाटिफोलिया)

मधूको मधुरः शीतः श्लेष्मलो वीर्यदः स्मृतः।
पुष्टिकृत्तुवरस्तिक्तः पित्तदाहव्रणश्रमान् ॥
कृमिदोषं च वातं च नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥

अस्य पक्वफलगुणाः—

तदेव पक्वं बलदं पित्तवातविनाशनम् ॥ नि० र० ॥

अस्य त्वक्तैलसाराणां गुणाः—

मधूकं रक्तपित्तघ्नं व्रणशोधनरोपणम् ।
मधूकतैलं मधुरं पिच्छिलं तुवरं मतम् ॥
कफपित्तज्वरं चैव दाहपित्तं च नाशयेत् ।
मधूकसारो नस्येन भूतादिकफवातजित् ॥

३७ जलमधूकः (जल महुआ) पृ० २४४

हि०-जल महुआ । म०-जलमोहा । ते०-पिन्ना । क०-जलमह्वे । बं०-जलमउल । क०-तोरेइप्पे । गु०-जलमहुडो ।

ले०-Bassia Longifolia (बेसिया लांगीफोलिया)

अस्यतद्भेदस्य च नामानि गुणाश्च—

मधूकोऽन्यो द्वितीयस्तु जलजो दीर्घपत्रकः ।
ह्रस्वपुष्पफलः स्वादुर्गौलिका स्यान्मधूलिका ॥
ज्ञेयो जलमधूकस्तु मधुरो व्रणनाशनः ।
वृष्यो वान्तिहरः शीतो बलकारी रसायनः ॥

३८ परूषकम् (फालसा) पृ० २४९

हि०-फालसा, परुषा, पेरुसा, फरुसा, फल्हुई । बं०-परुष, फलसा । म०-पर्पका, फालसा । क०-बेट्टहा, दागल, दोगली । ते०-पुटिकी, चिट्टिदु । गु०-धामण । मा०-फालस्या । फा०-पालसा, पालसह । अ०-फालसह ।

ले०-Greevia Asiatica (ग्रीविया एसियाटिका)

अस्य त्वग्गुणाः—

परूषत्वक्प्रमेहघ्नी योनिमेढ्रप्रदाहनुत् ।
मूत्रदोषप्रशमनी शीतपित्तानिलापहा ॥ आ० सं० ॥

३९ तूत पृ० २४९

हि०-सहतूत, तूत, तूंत, शाहतूत, ततरी, साहुड़ । बं०-तूँत, टूँद, पलाशपिपुल । म०-तूंते, सेंतूत, पारसापिंपल, पारिस पिंपलु । गु०-शेतूत । ते०-कम्बलिचेट्टु । ता०-मुसुक वइ चेडि । फा०-शाहतूत, तूत तूर्श । अ०-तूत, तूदहामीज । क०-बंगरलि । को०-तूतीची फले ।

अं०-Mul Berries (मल बेरिज्) ।
ले०-Morus Inbica (मोरस इण्डिका) ।
,,-Morus Nigra (मोरस निग्रा) ।
,,-Morus Alba (मोरस एलबा) ।

फलों के आकार भेद से तूत ३ प्रकार का होता है । जिसके फल—लम्बाई युक्त गोल और पकनेपर काले होते हैं उसे (मोरस इण्डिका), लालरङ्ग के फल वाले को (मोरस एलबा), और हरापन युक्त सफेद-रङ्ग के लम्बे फल वालेको (मोरस निग्रा) कहते हैं ।

४० दाड़िम (अनार) पृ० २४९

हि०-अनार, दाड़िम, धालिम । बं०-दाड़िम, डालिम गाछ । म०-डालिंब, दालिंब । गु०-दालिम, दादमनु झाड़ । क०-दालिंबा, दालिंब । ते०-डानिम्म चेट्टु, दालिंबकाया । ता०-मादलै, मडलै, मडलम, मुगिलम । मा०- दाड़म । द्रा०-मादल । अं०-Pomegranate (पोमेग्रेनेट)
ले०-Punica Granatum (प्युनिका ग्रानेटम)

व्यवहार—दाना, छिल्का । मात्रा—६ माशे से १॥ तोला ।

बल्यं पित्तानिलघ्नं लघु शिशिरमसृग्दाहमूर्च्छापिपासा-
भ्रान्तिश्रान्तिज्वरच्छर्द्यरुचिमदगदाजीर्णदौर्बल्यनाशी ।
मिष्टं विष्टम्भि शुक्रप्रदमकफकरं दडिमं चातिपक्वं-
हीनं तस्मादपक्वं तुवरमथ मरुन्माथि रुच्यं यदम्लम् ॥

अनारदाना के।गुण—

शुष्कं बालं च तत्प्रोक्तं रुच्यं च हृदयप्रियम् ।
वातानुलोमनकरं मुनिभिः परिकीर्त्तितम् ॥

दाडिमपुष्पादगुणाः—

तत्पुष्पं च पुनर्ज्ञेयं नासासृगतिनावनात् ।
दाडिमत्वक् क्रिमिघ्नी च ग्राही रक्तातिसारहा ॥ शो० नि० ॥

४१ बहुवारः (लिसोड़ा) पृ० २४९

हि०-लिसोड़ा, निसोरा, बहुवार, लभेड़ा, लसफसिया । बं०-बहुयार, चालतागाछ, बोहरी । म०-भोंकर, शेलवंट, शेलवट । गु०-गुंदी, गुंदो मोटो । क०-चेल्लु गोंदिगी, दोड चल्लु, चल्ले कायि । ते०-नाक्केरु,

नुकंकेरु, पेद्दाना क्केरु, चेन्न नक्कर। ता०-विडि। उ०-अड़, अउ। द्रा०-नरि बिली। फा०-सपिस्तां, सिपिस्तां। अ०-सपिस्तां दबक। मु०-भोंकर। मा०-लेसवो। अं०-Sebesten (सेबेस्टेन)

ले०-Cordia Myxa (कोर्डिया मिक्सा)

व्यवहार—फल। मात्रा—१५-२० दाने।

भूकर्बुदारकस्य नामानि गुणाश्च—

भूकर्बुदारकश्चान्यो लघुः श्लेष्मातकस्तथा।
क्षुद्रश्लेष्मातकं वातकोपनं मधुरं मतम्।
किंचिच्च शीतलं ज्ञेयं कृमिघ्नं स्वर्णमारकम्॥

छोटे बड़े फलों के भेद से "लिसोरा" ३ प्रकार का होता है, बड़े फल-वाले "लिसोड़ा" को (श्लेष्मातक), मध्यमफलवाले को "भूकर्बुदार" लेटिनमें Cordia Obliqua (कोर्डिया ओबलिका) तथा छोटे फल-वालेको "गोंदी" या "गोदनी" और लेटिन में-"कोर्डिया रोथाइ" कहते हैं।

४२ कतकः (निर्मली) पृ० २४६

हि०-निर्मली, पायपसारी। बं०-निर्मल फल। म०-निवळी, निर्मली, चिल्हार। गु०-निर्मली। क०-चिल्लिकायि। द०-चिलबिंज। ता०-तेत-रन कोट्टई। ते०-चिलगिन जालु। क०-चिलिगिड्ड। मा०-निर्मली, निबली।

ले०-Strychnos Potatorum (स्ट्रिकनोस पोटेटोरम)।

अं०-Nut Which Clears Water (नट् ह्विच क्लिअर्स वाटर)

व्यवहार—बीज। मात्रा—३—६ माशे।

कतकः कटुकस्तिक्तो लेखनो रुचिकृल्लघुः।
चक्षुष्यस्तुवरः शीतो विशदश्च विकासकः॥
छेदनो मधुरश्चैव तृषादाहविषापहः।
गुल्मशूलकृमीन्मेहं नेत्ररुग्जलजं मलम्॥
नाशयेदिति च प्रोक्तः फलं तस्य च कोमलम्।
चक्षुष्यं वातकृच्छीतं रक्तपित्तं तृषां विषम्॥
मोहं च नाशयत्येव तरुणं तत्तु दुर्जरम्।
रुचिदं कफपित्तघ्नं तत्पक्वं पित्तलं मतम्॥

छर्देः स्वेदस्य जनकं शोफं पाण्डुं विषं जयेत् ।
प्रतिश्यायं कामलां च नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥
कतकस्य च बीजं तु चक्षुष्यं तुवरं गुरु ।
जलप्रसादनं शीतं मधुरं चाश्मरीहरम् ॥
वातं कफं मूत्रकृच्छ्रं तृषां नेत्ररुजं विषम् ।
प्रमेहं शीर्षरोगं च नाशयेदिति कीर्त्तितम् ।
कतकस्य च मूलं तु सर्वकुष्ठहरं परम् ॥

४३ द्राक्षा (दाख) पृ० २४६

हि०-दाख, मुनक्का, मोनक्का, किसमिस, अंगूर, कालीदाख, भूरीदाख। बं०-बेदाना, मनेक्का, किसमिस, आङ्गुर। म०-बेदाणा, किसमिस, काळाद्राक्षें। गु०-धराख, द्राक्ष, किसमिस, कालोधराख। क०-बेडगण द्राक्षे, चिकुद्राक्षे। ता०-कोडिमंडी, कोडिमुंदिरी। ते०-द्राक्षा पण्डु, द्राक्षचेट्टु, किसमिस। फा०-अंगूर, मुनक्का, दानेमबीज। अ०-हबुस् सजीव, किसमिस, एनब्जबीव। अं०-Grapes (ग्रेप्स), Raisins (राइसिन्स)।
ले०-Vitis Vinifera (विटिस विनिफेरा)।

व्यवहार—फल। मात्रा—१०-१९ दाने।

द्राक्षानामानि—

द्राक्षा मधुरसा स्वाद्वी कृष्णा चारुफला रसा ।
मृद्वीका गोस्तनी चैव यक्ष्मघ्नी तापसप्रिया ॥

कपिलद्राक्षानामानि—

अन्या कपिलद्राक्षा मृद्वीका गोस्तनी च कपिलफला ।
अमृतरसा दीर्घफला मधुवल्ली मधुफला मधूलिश्च ॥
हरिता च हारहूरा सुफला मृद्वी हिमोत्तरा पथिका ।
हैमवती शतवीर्या काश्मीरी गजराजमहिगणिता ॥

काकलीद्राक्षानामानि—

अन्या सा काकली द्राक्षा जाम्बुका च फलोत्तमा ।
लघुद्राक्षा च निर्बीजा सुवृत्ता रुचिकारिणी ॥
द्राक्षाबालफलं कटूष्णविशदं पित्तास्रदोषप्रदं-
मध्यं चाम्लरसं रसान्तरगतं रुच्यातिवह्निप्रदम् ।

पक्वं चेन्मधुरं तथाऽम्लसहितं तृष्णाऽस्रपित्तापहं-
पक्वं शुष्कसमं श्रमार्त्तिशमनं सन्तर्पणं पुष्टिदम् ॥

४४ खर्जूरी (खजूर) पृ० २४६

हि०-खजूर, देशीखजूर, खिजूर । बं०-खेजूर गाछ । म०-शिन्दी, लघुशिंदी, शिंधी । क०-इचुली, इंचुलु, करि इंचुली । ते०-इंटाचेट्टु, खजूर पंडु । गु०-खजूरी । फा०-तमर रुतव, खुरमाय हिन्दी । अ०-खुरमातर, रतब हिन्दी । अं०-Wild Date (वाइल्ड डेट)

ले०-Foenix Sylvestris (फोनिक्स सिल्वेस्टरिज)

„-Foenix Montena (फोनिक्स मोण्टेना)

व्यवहार—फल । मात्रा—१-२ तोले ।

अपक्वखर्जूरफलं त्रिदोषाणां प्रकोपणम् ।
पक्वमेव हितं श्रेष्ठं त्रिदोषशमनं परम् ॥ आ० सं० ॥

खर्जूरादिमस्तकगुणाः—

गुवाकतालखर्जूरनारिकेलशिरांसि च ।
स्वादुतिक्तकषायाणि मूत्रातङ्कहराणि च ॥
बलप्राणकराण्याहुः शुक्रवृद्धिकराणि च ॥ रा० व० ॥

४५ पिण्डखर्जूरी (पिण्ड खजूर) पृ० २४६

हि०-पिण्डखजूर, पिनखजूर । बं०-पिण्डखेजूर । गु०-खजूर । क०-सिंह इंचिल । पं०-पिण्डखजूर ।

ले०-Phoenix Dactylifera (फोनिक्स डाक्टलिफेरा)

दाहघ्नी मधुराऽस्रपित्तशमनी तृष्णाऽऽर्त्तिदोषापहा-
शीतश्वासकफश्रमोदयहरा सन्तर्पणी पुष्टिदा ।
वह्नेर्मान्द्यकरी गुरुर्विषहरा हृद्या च धत्ते बलं-
स्निग्धा वीर्यविवर्धिनी च कथिता पिण्डाख्यखर्जूरिका ॥

४६ छुहारा पृ० २४६

हि०-छहारा, छोहारा । बं०-सोहारा । म०-शिंदी खजुरी । गु०-खारक । क०-इचुलु, करिइंचुली, करिइंचुलु । ते०-खजूरपुपंडु । फा०-खुर्मी, खुर्मीखुश्क । अ०-तमर । अं०-Date Palm (डेट पाम)

ले०-Phoenix Dactylifera (फोनिक्स डाक्टलिफेरा)

व्यवहार—फल । मात्रा—१-२ तोले ।

४७ पिण्डखर्जूरीभेदः-सुलेमानी खर्जूरी (सुलेमानी खजूर) पृ० २४७

सुलेमानी खजूर-पिण्डखजूर का भेद है इसे गुजराती में-'सुलेमानी' और 'मुसी खारेक' तथा मरहठी में 'खारेक' कहते हैं ।

४८ वातादः (बदाम) पृ० २४७

हि०-बादाम, बदाम । बं०-बादाम । म०-बदाम, गोडेबादाम, कडवे बादाम । गु०-बदाम । तै०-बेदम, बेदमा । ता०-नट वडुम । फा०-बदाम, बदामशीरी, बादामतल्खा । अ०-लोजल, लौज, लौजलहलु, लोजलमुर ।

अं०-Sweet Almond (स्वीट आलमण्ड)

"—Bitter Almond (बीटर आलमण्ड)

ले०-Prunus Amygdalus (प्रनस् एमिगडेलस्)

व्यवहार—तैल । मात्रा—३-६ माशे ।

वातादः सारकश्चोष्णो गुरुरम्लः कफप्रदः ।
स्निग्धः स्वादुश्च तुवरः शुक्रलो वातनाशनः ॥
उष्णवीर्य चाम्रफलं सारकं गुरु पित्तलम् ।
कफपित्तकरं चैव वातनाशकमुत्तमम् ॥
तत्पक्कं मधुरं वृष्यं सुस्निग्धं पौष्टिकं मतम् ।
शुक्रलं कफकृच्चैव रक्तपित्तं व्यपोहति ॥
शामकं वातपित्तस्य पूर्ववैद्यैरुदीरितम् ।
शुष्कं च तत्फलं प्रोक्तं मधुरं धातुबर्धकम् ॥
स्निग्धं वृष्यं च बल्यं च पौष्टिकं कफकारि च ।
वातपित्तस्य शमनं प्रोक्तं गुणविशारदैः ॥ नि० र० ॥

वातादतैलगुणाः—

वातादतैलं मृदु रेचनं स्याद्वाजीकरं मूढगदं प्रहण्यात् ।
पित्तानिलघ्नं लघु दाहनाशि लावण्यदं मेहकरं सुशीतम् ॥ (आ०सं०)

४९ सेवम् (सेव) पृ० २४७

हि०-सेब, सेव । बं०-सेऊ, सेउफल । म०-मोठेंबोर सेवफल । गु०-सेवफल । क०-सेव । फा०-सेव । अ०-तुफाह, तुफ्फाह । मा०-सेव ।

पं०-सेव । अं०-Apple (एप्पिल)

ले०-Pyrus Marus (पाइरस मेरस)

६० अमृतफलम् (नासपाती) पृ० २४८

सेब, बीह, नासपाती इन तीनों की एकही जाति है । इनमें अन्तर थोड़ा सा रहता है, जैसा कि-छुहारा, पिण्डखजूर और खजूर एक ही जाति के हैं और उनमें अन्तर रहता है ।

६१ पीलुर्बृहत्पीलुश्च (पीलू , बड़ा पीलू) पृ० २४८

हि०-पीलु, पील्लू, झल, बड़ा पील्लू । बं०-पीलुगाछ । म०-ऌघुपीलु, थोरपिलु, किकचेल्रावृक्ष । गु०-पीलु, जाल्य, खारीजाल्य, मोटीजाल्य । क०-मिरीये ऊगनि, गेनुमर, दोड्डुपीलु । तै०-गोलगुचेट्टु, पिन्नवरगोंड, वरगोगुं । ता०-कोकु, कोकू । फा०-दरखते मिस्वाक् । अ०-ईराक, अराक । पं०-पीलु । मा०-जाल ।

अं०-Mustard Tree of Scriptur (मस्टर्ड-ट्री-ऑफ् स्क्रिप्चर)

ले०-Salbadora Persica (सालबेडोरा पर्सिका)

बड़ा पीलू का लैटिन नाम—

,,-Salbadora Oleoides (सालबेडोरा ओलिओइडिस)

बृहत्पीलुनामगुणाः—

अन्यश्चैव बृहत्पीलुर्महापीलुर्महाफलः ।
राजपीलुर्महावृक्षो मधुपीलुः षडाह्वयः ॥
बृहत्पीलुस्तु मधुरो वृष्यः पित्तविषापहः ।
आमहा दीपनो रुच्यस्तैलं चास्य लघु स्मृतम् ॥
कफवातरुजं हन्ति चेति पूर्वबुधैः स्मृतम् ॥ नि० र० ॥

६२ अक्षोटः (अखरोट) पृ० २४८

हि०-अखरोट, अक्षोट, पहाड़ी पीलु । बं०-आखरोट, आकरोट, आक्रोट । पं०-अखरोट । म०-अक्रोड, अकरोड, अक्रोड । गु०-अकरोड, अखोड । तै०-अक्षोलमु, कोंडगोगुनु । द्रा०-अक्रोटु । क०-आखोट, वेट्टद गोनुमर । फा०-चारजिर्दगां, चार्तगज । अ०-जोजेहिन्दी, जोजुलहिन्द, जोज़, जोझ अक्रपम् मगज । अं०-Walnut (वाल्नट्) और

Belgaum Walnut (बेलगाम वालूनट)

लै०-Juglans Regia (जगलांस रेजीया)

व्यवहार—फल की गूदी । मात्रा—१-२ तोले ।

अखरोट दो प्रकार का होता है—१ कागजी अखरोट-इसका छिलका पतला होता है, २ मोटे छिलके वाला अखरोट-यह आप ही आप उत्पन्न होता है, पहला बोया जाता है ।

अक्षोटो मधुरः किञ्चिदम्लः स्निग्धश्च शीतलः ।
वीर्यवृद्धिकरश्चोष्णो रुचिदः कफपित्तकृत् ॥
गुरुः प्रियो बलकरः कफकृन्मलबद्धकृत् ।
वातपित्तं क्षयं वातं हृद्रोगं रक्तदोषकम् ।
रक्तवातं च दाहं च नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥ नि० र० ॥

९३ बीजपूरः (बिजोरा) पृ० २४८

हि०-बिजोरानींबु, बिजवरानीमो, बिजौरानेबू । बं०-टावालेबु । म०-महालुंग, माहुलिंग । गु०-बिजोरूंलिंबु । क०-माधवल, माधवला, महाफल, माधला । तै०-दाबाकाया, मादिफलमु, मोधोफलपु चेट्टु । उ०-कलंबा । फा०-तुरंज, तरंज । अ०-उत्तरंज, उतरज । प्रा०-महूर ।

अं०-Citrus Acida (सिट्रस ऐसिडा)

मातुलुङ्गफलं चाम्लमुष्णं कण्ठविशोधकम् ।
तीक्ष्णं लघु प्रियं चाग्निदीपकं रुचिकारकम् ॥
स्वादु जिह्वाहृदययोः शोधकं पित्तवातनुत् ।
कफश्वासतृषाकासान् हिक्कां चैव विनाशयेत् ॥
अरुचिं रक्तपित्तं च नाशयेदिति कीर्त्तितम् ।
तच्च बालं मातुलुङ्गं पित्तवातकफप्रदम् ॥
रक्तरुक्कारकं चैते मध्यमस्यापि ते गुणाः ।
पक्वं महावर्णकरं हृद्यं बल्यं च पौष्टिकम् ॥
शूलाजीर्णविबन्धघ्नं वातं श्वासं कफं जयेत् ।
अग्निमान्द्यं च शोफं च कासारोचकनाशकम् ॥
फलत्वग् दुर्जरा तिक्ता तीक्ष्णोष्णा स्निग्धिका गुरुः ।

क्रिमिवातकफान् हन्ति त्वग्द्रवः साधु शीतलम् ॥
गुरुर्धातोर्वृद्धिकरः स्निग्धः कफकरः स्मृतः।
वातपित्तहरः प्रोक्तः प्रोक्तोऽन्तर्भागको मधुः॥
वातं शूलं कफं छर्दिमरोचस्य च नाशकः।
केसरं दीपनं मेध्यं लघु ग्राहि रुचिप्रदम् ॥
गुल्मोदरश्वासकासहिक्कावातमदात्ययान्।
मदशोषविबन्धार्शोवातांश्च नाशयत्यलम् ॥
केसरस्य रसः पार्श्ववस्तिशूलकफारुचीः।
वातं च श्वासकासं च छर्दिं चैव विनाशयेत् ॥
बीजं तु मातुलुङ्गस्य गर्भदं दुर्जरं गुरु।
उष्णं तिक्तं दीपनं च बल्यमर्शोरुजाऽपहम् ॥
वातपित्तशोफकफान्नाशयेदिति कीर्त्तितम्।
फलमज्जा गुरुः शीता स्वाद्वी स्निग्धा बलप्रदा ॥
वातपित्ते नाशयेच्च मूलमर्शःक्रिमीहरम्।
विषूचीं मलबन्धं च शूलं चैव विनाशयेत् ॥
पुष्पं तु मातुलुङ्गस्य दीपनं ग्राहि शीतलम्।
लघु वातं रक्तपित्तं नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥

अस्य ऋतुपरत्वेनानुपानगुणाः—

सिन्धूत्थेन घनागमे च सितया काले शरत्संज्ञके,
हेमन्ते लवणार्द्रहिङ्गुमरिचैः सिद्धार्थतैलान्वितैः॥
एतैस्तैः शिशिरे मधावपि युतैर्ग्रीष्मे गुडेनान्वि—
तैर्वैद्यैर्भूमिप ! मातुलुङ्गमुदितं सर्वत्र साधारणम् ॥

वनबीजपूरगुणाः—

अम्लः कटूष्णो वनबीजपूरो रुचिप्रदो वातविनाशनश्च।
स्यादामदोषक्रिमिनाशकारी कफापहः श्वासनिषूदनश्च॥ (रा० नि०)

मधुरमातुलुङ्गगुणाः—

मधुरं मातुलुङ्गं तु शीतं रुचिकरं मधु।
गुरु वृष्यं दुर्जरं च स्वादिष्ठं च त्रिदोषनुत् ॥

पित्तं दाहं रक्तदोषान् विबन्धश्वासकासकान्।
क्षयं हिक्कां नाशयेच्च पूर्वैरेवमुदाहृतम्॥

१४ म कर्कटी (चकोतरा) पृ० २४८

हि०-चकोतरा, पपई, अंड काकड़ी, गलगल, गागल। ं०-बाताबिलेबु, मधुकाकड़ी, मउफुटी। म०-पोपई, एरंड पपई, पपनस, गोडमहालुंग। गु०-पोपैयो, एरंड काकड़ो। तै०-कवोप्पई। पं०-मीठानींबु। फा०-लीमुने शर्वती। अं०-Polemo (पोलेमो)
लै०-Citrus Decumana (सिट्रस डिक्युमाना)

९९ जम्बीरद्वयम् (जंमीरी नीबू-छोटी जंमीरी नीबू) पृ० २४८

हि०-जम्भीरी नीबू। बं०-जामीरलेबू, गोंड़ालेंबु। म०-ईडलिंबू। गु०-लांबा लींबु, दो डिंगा लिंबु, इड लिंबु, गधर लिंबू। क०-कनीले, कंचिले, काडलिंबे। तै०-जांभिर, निम्म, निम्म चेट्टु। फा०-लिमुने शिरी।

जम्बीरस्य फलं रसेऽम्लमधुरं वातापहं पित्तकृत्-
पथ्यं पाचनरोचनं बलकरं वह्नेर्विवृद्धिप्रदम्।
पक्वं चेन्मधुरं कफार्त्तिशमनं पित्तास्रदोषापनुद्-
वर्ण्यं वीर्यविवर्धनं रुचिकरं पुष्टिप्रदं तर्पणम्॥ (रा०नि०)

बृहज्जम्बीरगुणाः—

बृहज्जम्बीरकं चाम्लं तुवरं तिक्तकं सरम्।
उष्णं पित्तकफघ्नं च पाचनं परिकीर्त्तितम्।
ये गुणा लघुजम्बीरे ते बृह्द्वे सन्ति चाखिलाः॥

मधुकुक्कुटिका (मीठा जंभीरी नींबू) गुणाः—

मधुकुक्कुटिका शीता श्लेष्मलाऽऽस्यप्रसादनी।
रुच्या स्वादुर्गुरुः स्निग्धा वातपित्तविनाशिनी॥ (रा० व०)।

लिम्पाकगुणाः—

लिम्पाकं सुरभि स्वादु नात्यम्लं भक्तरोचनम्।
वातश्लेष्महरं हृद्यं छर्दिघ्नं नातिपित्तकृत्॥ (रा० व०)

जम्बीरपत्रगुणाः—

पत्रं जम्बीरजं तीक्ष्णं कृमिवातकफापहम्।

सुरभि दीपनं रुच्यं मुखवैशद्यकारकम्।

९६ निम्बूकम् (नींबू या कागजीनीबू) पृ० २४९

हि०-कागजीनीबु, नींबू, लेमु, नेमू, कागदी नीमो। बं०-कागजी लेंबु, पातिलेवु। म०-कागदीलिंबु, लघु इंड लिंबु, निंवे। गु०-खाटा गोल लींबु, कागदी लिंबु। क०-कचिले निंबू। तै०-निम्म पंडु। फा०-लिमु-नेतुर्श, लींबू, लीमू। अ०-लिमुने हाजिम, लमू हाजिम।

अं०-Lemon (लीमन)

लै०-Citrus Acida (सिट्रस एसिडा)

निम्बूकस्य नामानि गुणाश्च—

निम्बूकं स्यादम्लजम्बीरकाख्यं वह्निदीप्यो वह्निवीजोऽम्लसारः।
दन्ताघातः शोधनो जन्तुमारी निम्बूकः स्याद्रोचनो रुद्रसंज्ञः।

करुण (कन्ना नींबू) गुणाः—

करुणं कफवातास्रमेदोघ्नं पित्तकोपनम्॥ रा०व०॥

९७ मिष्टनिम्बूकम् (मीठा नीबू)पृ० २४९

हि०-मीठा नींबू। सरबती नींबू, कमला नींबू, केवलानीबू। बं०-कमला-लेंबू। म०-साखरलेंबू, गोदलिंबू। गु०-मीठालिंबू, मीठूं लिंबू, मोसंब्बी। क०-कनीले, कीत्तीले। फा०-लिमुनेशिरी। यू०-कवला मोसब्बी। अ०-लिमू नेहुलु। अं०-Sweet Lemons (स्वीट लीमन्स्)

९८ कर्मरङ्गम् (कम रख) पृ० २४९

हि०-कमरख। बं०-कामरांगा, कामरंगा। म०-कर्मरांचे झाड़, कर्मर। क०-कमरक। गु०-कमरक, कमरंग। मा०-कमरख। पं०-कमरख। तै०-तमर्ता। द्रा०-तम्रतं। अं०-Carambola (करम्बोला)

अं०-Goose Berry Tree (गूज़ बेरी ट्री)

लै०-Averrhoa Carambola (एवर्रहोआ कारम्बोला)

कर्मारस्य फलं चामं ग्राह्यम्लं वातनाशकम्।
उष्णं पित्तकरं चैव तत्पक्वं मधुरं मतम्॥
अम्लं च बलपुष्टीनां रुचेश्चैव तु वर्धकम्॥ नि० र०॥

९९ अम्लिका (इमली) पृ० २४९

हि०-इमला, तिन्तिडी, अम्लिका, अम्ली । पं०-इम्लो, अंबली । बं०-तेंतुल, आमरुल, तेंकल । म०-चिंच । क०-लुणिसे, हुणिसे, हुणि सेहूण । गु०-आंबलो । तैं०-चिंट, चिंताचेट्टु । उ०-कंआं । ता०-पुलि । मु०-टिंटज । फा०-तिमिर हिन्दी । मा०-आमली । द्रा०-पुलि । अ०-तमर हिन्दी । अं०-Tamarind Tree (टेमरींड ट्री)

ले०-Tamarindus Indica (टमरिण्डस इण्डिका)

व्यवहार—फल । मात्रा—१-३ तोले ।

चिञ्चावृक्षो गुरुश्चोष्णश्चाम्लः पित्तकफप्रदः ।
रक्तकोपनकारी च वातनाशकरो मतः ॥
चिञ्चापुष्पं तु तुवरं स्वाद्वम्लं च रुचिप्रदम् ।
विशदं चाग्निजनकं लघु वातकफापहम् ॥
प्रमेहघ्नं समुद्दिष्टं पर्णं शोथहरं मतम् ।
रक्तदोषहरं चैव फलं चास्य तु कोमलम् ॥
अत्यम्लं ग्राहकं चोष्णं रुच्यं चाग्निप्रदीपकम् ।
रक्तपित्तस्य पित्तस्य कफरक्तस्य कोपनम् ॥
वातनाशकरं प्रोक्तं तत्पक्वं वातलं मतम् ।
कफपित्तकरं चैव तत्पक्वं मधुरं सरम् ॥
अम्लं हृद्यं भेदकं च मलस्तम्भकरं मतम् ॥
दीपनं रुचिदं चोष्णं रूक्षं वस्तिविशोधनम् ॥
व्रणदोषं कफं वातं जन्तूंश्चैव विनाशयेत् ।
शुष्कं चिञ्चाफलं हृद्यं लघु भ्रान्तिश्रमापहम् ॥
तृषाहरं क्लमहरं क्रिमिनाशकरं मतम् ।
चिञ्चा तु नूतना वातकफस्य कारिणी मता ॥
सा वार्षिकी वातपित्तनाशिनी परिकीर्त्तिता ।
चिञ्चाक्षारश्चाग्निमान्द्यशूलनाशकरो मतः ॥
पक्वचिञ्चारसश्चाम्लो मधुरो रुचिकृन्मतः ।
व्रणनाशकरश्चैव लेपनाच्छोथपक्तिहृत् ॥

चिञ्चासारं दाहकफकारकं चाधिकाम्लकम् ।
वातनाशकरं प्रोक्तं समानशर्करायुतम् ॥
दाहं पित्तं कफं चैव नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥ नि० ८० ॥

६० अम्लवेतसः (अमलबेंत ।) पृ० २४९

हि०-अमलबेंत, अम्लबेंत । बं०-थैकर, अम्ल वेतस । म०-चुका । फा०-तुर्षक । यू०-अमलबेद । गु०-अम्लबेद ।

व्यवहार—गूदी । मात्रा-१-३माशे ।

अम्लवेतसमत्यम्लमानाहकफवातजित् ।
तदेव सिद्धं दोषघ्नं श्रमघ्नं ग्राहि गुर्वपि ॥ (रा० व०) ।

६१ वृक्षाम्लम् (कोकम) पृ० २५०

हि०-विषांबिल, कोकम, बिखाबिल, महादा । बं०-महादा, अमलकुटा, चुकातेंतुल । म०-आम सोल, कोकम, आमटै । गु०-कोकम । क०-तित्ती-ड़िक । को०-कोकंब सोल । गोवा०-विडोओ । मा०-कोकन, डांसर्या । प०-डांसरां, समाकदाना ।

अं०-Kokam Butter Tree (कोकम बटर ट्री)

ले०-Garcinia Indica (गारसिनिया इण्डिका)

व्यवहार-फल-गूदी । मात्रा-३-४ माशे ।

इति सप्तम आम्रफलादिवर्गः ॥ ७ ॥

अथाष्टमो धात्वादिवर्गः ॥ ८ ॥

१ सुवर्णम् (सोना) पृ० २५१

हि०-सोना, सुवर्ण । बं०-सोना, स्वर्ण, सुवर्ण । म०-सोने । गु०-सोना, सोनु । ते०-बंगार, बंगारमु, बंगारम, भंगार । पं०-सोन्ना । फा०-तिला, जर । मा०- सोनो । क०-स्वर्ण, चिन्न । द्रा०-तगं । अ०-जहब । अं०-Gold (गोल्ड) । ले०-Ouram (ओरम्)

व्यवहार—(धातु) शुद्धभस्म । मात्रा—½ से १ रत्ती ।

दह्यन्ते धातवो वह्नौ मणिरत्नाभ्रकादयः ।

न क्षीयते न म्रियते सुवर्णमजरामरम् ॥
अपक्वहेम संघृष्टं शिलायां जलयोगतः ।
द्रवरूपं तु तत्पेयं मधुना गुणदायकम् ॥
मध्वामलकचूर्णं च वरकश्चेति तत्त्रयम् ।
प्राश्यारिष्टगृहीतोऽपि मुच्यते प्राणसङ्कटात् ॥

२ रूप्यम् (चाँदी) पृ० २५२

हि०-चान्दी, चानो, रूपा । बं०-रूप, रूपा । म०-रूपें, चांदी । गु०-रुपुं । क०-बेल्ले । ते०-एड़ी, एडो, वेंडि । फा०-नुक़रा, सीम । अ०-फिद्दा, फिज्जाह् । अं०-Silver (सिल्वर) ।

ले०-Argentum (आर्जेण्टम) ।

व्यवहार—(धातु) शुद्धभस्म । मात्रा— ½ से १ रत्ती ।

सितया हन्ति दाहाद्यं वातपित्तं फलत्रिकात् ।
त्रिसुगन्ध्या प्रमेहादीन् रजतं हन्त्यसंशयम् ॥

३ ताम्रम् (तामा) पृ० २५३

हि०-तामा, तांबा, तम्मा । बं०-तामा । म०-तांबे । गु०-तांबु, त्रांबु । अ०-नुहास, नहास, नोहास । तै०-रागी । ता०-सेनबु, शेंनबु । क०-ताम्र । फा०-मिस । अं०-Copper (कॉपर) ।

ले०-Cuprum (क्युपरम) ।

व्यवहार—(धातु) शुद्धभस्म । मात्रा—१ चावल से १ रत्ती ।

४ वङ्गम् (रांगा) पृ० २५४

हि०-रांगा, रंगा, कलई, वंग, टीन, कथील । म०-कथील, वंग, कथीर । बं०-रांगा, वंग । क०-तवर । फा०-अरज़ाज़, अरज़ार, अखीज़ । तै०-तागारामु, वंगमु । अ०-रूसास, रसासुल, अबियज़ । द्रा०-वंग । पं०- रांगा । गु०-कलई, कथीर, खरिपारि ।

व्यवहार— शुद्धभस्म । मात्रा—१-२ रत्ती ।

क्षुरकवंग के नाम—

खुरक, खुरारांगा, खुरासानी रांगा, खुरवंग ये सब हैं । यही उत्तम होता है । हिरण्यखुरीरांगा भी नाम है ।

अं०-Tin (टिन)। ले०-Stannum (स्टेन्नम्)

कासे श्वासे च मन्दाग्नौ पीनसे विषमज्वरे ।
प्रमेहे पाण्डुरोगे च मृतं वङ्गं प्रयोजयेत् ॥

अशोधितवङ्गदोषाः—

वङ्गं विधत्ते खलु शुद्धिहीनं तथा ह्यपक्वं च किलासगुल्मौ ।
कुष्ठानि शूलं किल वातशोथं पाण्डुं प्रमेहं च भगन्दरं च ॥
विषोपमं रक्तविकारवृन्दं क्षयं च कृच्छ्राणि कफं ज्वरं च ।
मेहाश्मरीविद्रधिमुख्यरोगान्नागोऽपि कुर्यात् कथितान्विकारान् ॥
धवलं मृदुलं स्निग्धं द्रुतद्रावं सगौरवम् ।
निःशब्दं खुरवङ्गं स्यान्मिश्रकं श्यामशुभ्रकम् ॥

श्रेष्ठवङ्गलक्षणम्—

श्वेतं मृदु लघु स्वच्छं स्निग्धमुष्णसहं हिमम् ।
सूत्रपत्रकरं कान्तं त्रपु श्रेष्ठमुदाहृतम् ॥

५ यशदम् (जस्ता) पृ० २६४

हि०-जस्ता, यशदधातु, जसता । म०-जस्त । तै०-खर्पर । अ०-शवह, शिवह । पं०-जसद, जसदा । बं०-दस्ता । गु०-जसत । फा०-रुए तुतिया, रूमीतूतिया । मा०-जस्त । अं०-Zinc (ज़िङ्क) ।
ले०-Zincum (ज़िङ्कम्)

व्यवहार—शुद्धभस्म । मात्रा—१-३ रत्ती ।

६ सीसम् (शीशा) पृ० २६४

हि०-शीशा, शीसा, सीसा । बं०-सीसा, सीसे । म०-सिसें, शिसें । गु०-शीसुं । क०-सीसा । फा०-सुर्ब, सुरब, सुरब स्याह । अ०-रिसासुल्अस्वद, रिसासे अस्वद । ते०-शीश, शीषमु । द०-शीशा । पं०-शीसा । मा०-सीसो । द्रा०-करुनाहं । अं०-Lead (लेड) ।
ले०-Plumbum (प्लुम्बम्) ।

व्यवहार—(धातु) शुद्धभस्म । मात्रा—१-२ रत्ती ।

नागस्य प्रकारभेदाः—

नागं तु द्विविधं प्रोक्तं कुमारं समलं तथा ।
कुमारं सर्वकार्येषु योजनीयं गुणाधिकम् ॥

द्रुतद्रावं महाभारं छेदे कृष्णं समुज्ज्वलम् ।
पूतिगन्धं बहिःकृष्णं शुद्धसीसमतोऽन्यथा ॥

७ लोहम् (लोहा) पृ० २५५

हि०-लोह, लोहा, इस्पात, फौलाद । बं०-लौह, तिखा, इस्पात्, काल-लौह । म०-लोखण्ड, पोलाद, तिखें । गु०-लोढुं, पोलुं, गजवेल । क०-अयस्कान्त, कब्बिण । अ०-हदीद, हजरुल । ते०-इनमु, इनुमु । मा०-लोह । पं०-लोहा । द्रा०-इरुम्बु । फा०-आहन, फौलाद, संगे आहन । अं०-Iron (आइरन) । और Steel (स्टील) । ले०-Ferrum(फेरम्) ।

व्यवहार- शुद्धभस्म । मात्रा—१-२ रत्ती ।

कान्तलोहनामानि—

तीव्रं लोहमयस्कान्तं कृष्णायो लोहकान्तकम् ।

कृष्णलोहनामानि—

वर्त्तलौहं तीक्ष्णलौहं नीलिका पुटलोहकम् ॥

मुण्डलोहगुणाः—

मुण्डं रूक्षोष्णतिक्तं च वातपित्तकफप्रणुत् ।
तीक्ष्णं पाण्डुहरं तच्च शूलमेहनिवारणम् ॥

लोहसेविनां कार्याणि—

गुञ्जामेकां समारभ्य यावत्स्युर्नवरक्तिकाः ।
तावल्लोहं समश्नीयाद् यथादोषबलं नरः ॥

लोह के भेद—

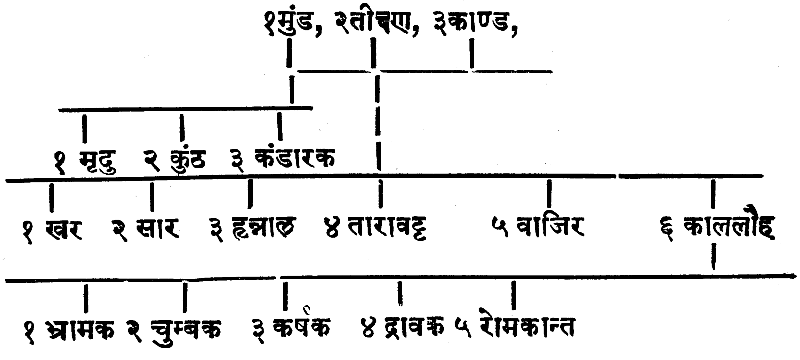

८ (किट्टी) मंडूरम् (मंडूर) पृ० २९६

हि०-मंडुर, कीट, कीटी, किट्टी, लोहेका मैल, मनूर । फा०-चर्क आहन, अरेम आहन ।

व्यवहार—शुद्धभस्म । मात्रा-१-३-रत्ती ।

मण्डूरभेदाः—

शतोर्ध्वमुत्तमं किट्टं मध्यं चाशीतिवार्षिकम् ।
अधमं षष्टिवर्षीयं ततो हीनं विषोपमम् ॥

जो मण्डूर-तौल में भारी, छूने में चिकना, तोड़ने में ठोस और अञ्जन के समान तथा जिसमें बहुत गड्ढे न हों वह उत्तम समझा जाता है। 'देखने में काले रंग का, वजन में भारी, स्वाद में कसेला' यह साधारण मण्डूर का लक्षण है।

अथोपधातवः ।

९ स्वर्णमाक्षिकम् (सोनामाखी) पृ० २९६

हि०-सोनामाखी, सोनामक्खी । बं०-स्वर्णमाक्षिक । म०-सुवर्णमाक्षिक, दगड़ी, सोनामखी, सोनामुखी । मा०-सोनामक्खी । गु०-सोनामाखी । तै०-स्वर्णमाखी । पं०-सन्नेमखी । क०-धातुमाक्षिक । फा०-चर्कतिला । अ०-मुर्क शीशा जड़वी, मरक शाशा, सब सज्जहब ।

अं०-Iron Sulphide (आयरन सल्फाइड) ।

लै०-Ferry Sulphuretum (फेरि सल्फरेटम्)

व्यवहार-शुद्धभस्म । मात्रा-१-३ रत्ती ।

उत्तम सोनामाखी—सुवर्णका सा वर्णवाला, भारी, चिकना, किंचित् नीलछवि-युक्त, कसौटी पर कसने से सोनेके समान झलक देनेवाला समझना चाहिये ।

१० तारमाक्षिकम् (रूपामाखी) पृ० २९७

हि०-रूपामाखी, रूपामक्खी, तारामुखी । बं०-तारमाक्षिक, रौप्यमाक्षिक । म०-रौप्यमाक्षी । गु०-रूपामाखी ॥ क०- यरडुमाक्षिक । तै०-रूपा माखी । फा०-चिर्क नुकरह । अ०-अकली मायफिज्जह, खब्सुल फिज्जह, मुर्क शीशा फिद्दा ।

व्यवहार-शुद्धभस्म । मात्रा-१-३ रत्ती ।

११ तुत्थम् (तूतिया) पृ० २५७

हि०-तूतिया, तूंतिया, तुतिआ, नीलाथोथा, लीलाथोथा। बं०-तुते, तुतिया। म०-मोरचूत, मोरचूक, मोरचूद। गु०-मोरथुथु। क०-मयूरतुत्थ, मैलतुत्त। तै०-मेलतुतु, मेलततु। फा०-तूंदिया, तूतियासब्ज। अ०-तूतिया अक्जर, तूतिया अखजर, तूतियाहिन्दी। द्रा०-मैलतुत्तं।

अं०-Sulphate of Copper (सल्फेट ऑफ् कापर)

"- Blue Stone (ब्ल्यू स्टोन)

लै०-Cuprea Sulphus (क्युप्रिया सल्फस)

व्यवहार—शुद्ध भस्म। मात्रा— ॥ से १ रत्ती।

वमने मण्डले दद्रौ विषे चैव प्रशस्यते।

१२ कांस्यम् (कांसा) पृ० २५८

हि०-कासा, कांसो, काम्य। म०-कांसे। गु०-कांसु, कंचु। तै०-कंचु। फा०-रोई, रोइन्। अ०-तालिकून। वंगलं। बं०-कांसा।

अं०-White Copper (ह्वाइट कौपर)

,, White Brass (ह्वाइट ब्रास)

लै०-Bronze (ब्रान्ज़ि)

१ फूल और २ तेलक भेदों से कांसा दो प्रकार का होता है। फूलकांसा-श्वेतवर्ण अत एव उत्तम है, तैलक कांसा-निकृष्ट।

जो कांसा-सफेद वर्ण, प्रकाशवान् , नरम, उज्ज्वल, शब्द करनेवाला चिकना, निर्मल, घनकी चोट सहने वाला, और लकीरदार हो वह श्रेष्ठ है।

घृतमेकं विना चान्यत् सर्वं कांस्यगतं नृणाम्।
उक्तमारोग्यसुखदं हितं सात्म्यकरं तथा॥

१३ आरकूटम् (पीतल) पृ० २५८

हि०-पित्तल (र), पीतल (र)। बं०-पितल। क०-पित्ताले यरडु। तै०-इत्तडी। फा०-बिरंज। अ०-ब्रास। म०-पितल। गु०-पीतल।

अं०-Brass (ब्रास)

व्यवहार—शुद्धभस्म। मात्रा—१-२ रत्ती।

पीतल दो प्रकार का होता है-(१)राजरीति। (२) काकतुण्डी।

राजरीति—यह पीतल अग्नि में तपाकर कांजी में बुझाने से तांबे

के समान लाल हो जाता है।

काकतुण्डी—यह बुझाने पर काला हो जाता है।

१४ सिन्दूरम् (सिन्दूर) पृ० २९८

हि०-सिन्दूर, सेनूर, सेंदुर। बं०-सिन्दूर, सिन्दुर। म०-शेंदूर, शेंदुर। ते०-सिन्दुरमु, चेन्दिरमु। द्रा०-सिम्दूरं। ता०-चेन्दूरम्। क०-सिन्दूर:। मा०-गु०-प०-सिन्दूर। फा०-सिरिंज। अ०-असरंज। अं०-Red Lead (रेड लेड)

१५ शिलाजतु (शिलाजीत) पृ० २९९

हि०-शिलाजित, शिलाजीत, सिलाजीत। बं०-शिलाजतु। बं०-म०-गु०-द्र०-शिलाजित। क०-कुलुबेचलु, कलुबेचरु। मा०-सलाशीत, शलाजीत। पं०-शिलाजीत। ते०-शिलाजतु। क०-सिलाजितु। य०-शिलाजीत का सत्त, सत्त शिलाजीत। अं०-Jew,s Pitch (ज्युस् पिच)
,,—Aspholt (आस्फाल्ट)

ले०-Asphaltum Punjabinum (आस्फाल्टम पंजाबिनम्)

व्यवहार—शुद्ध। मात्रा—१ रत्ती से १ माशा।

श्रेष्ठशिलाजतुलक्षणम्—

गोमूत्रगन्धवत्कृष्णं स्निग्धं मृदु तथा गुरु।
तिक्तं कषायं शीतञ्च सर्वश्रेष्ठं तदायसम्॥
शिलाजं कफवातघ्नं तिक्तोष्णं क्षयरोगनुत्।
वह्नौ क्षिप्तं भवेद् यत्तल्लिङ्गाकारमधूमकम्॥

अशुद्धशिलाजतुदोषाः—

अशुद्धं दाहमूर्च्छायभ्रमपित्तास्रशोणितम्।
शिलाजतु प्रकुरुते मान्द्यमग्नेश्च विड्ग्रहम्॥

अथ रसः।

१६ पारदः (पारा) पृ २९९

हि०-पारा। बं०-म०-पं०-पारा। मा०-गु०-मारो। क०-पारदरस। ते०-पारदरसं, पारदमु। द्रा०-पारदरसं। फा०-सिमाव। अ०-जविक,

जीवक । अं०-Mercury (मर्क्युरी)

लै०-Hydrargyrum (हैड्रार्जिरम)

व्यवहार—(शुद्ध) भस्म । मात्रा— ½ से २ रत्ती ।

पारदे पथ्यानि—

हितं मुद्गान्नदुग्धाजशाल्यन्नानि सदा ततः ।
शाके पुनर्नवा देवि ! मेघनादं सवास्तुकम् ॥
सैन्धवं नागरं मुस्ता मूलकानि च भक्षयेत् ।
आत्मज्ञानं कथा पूजा शिवस्य च विशेषतः ॥
एतांस्तु समयान् भद्रे ! न लङ्घेद् रसभक्षकः (नि० र०)

पारदप्रशंसा—

मृदः कोटिगुणं स्वर्णं स्वर्णात् कोटिगुणं मणिः ।
मणेः कोटिगुणं बाणो बाणात् कोटिगुणं रसः ॥
रसात्परतरं लिङ्गं न भूतं न भविष्यति ॥ नि० र० ॥

अथोपरसाः ।

१७ हिङ्गुलम् (सिंगरफ) पृ० २६१

हि०-सिंगर(रि) फ, सिम (मि) रख, हिंगुल, इंगुर । बं०-हिंगुल । म०-हिंगूल । गु०-हिंगळो । क०-इंगुळियक । ते०-हिंगिळाकामु, इंगली-कमु । मा०-हिंगलू । पं०-शिंगरफ । द्रा०-जाविलिंग । यू०-ईंगुर । फा०-सिंग्रफ, शंगरफ । अ०-जंजफर, शंजरफ ।

अं०-Sulphuret of Mercury (सल्फरेट ऑफ् मर्क्युरी)

लै०—Sulphuretum Hydrargyri (सल्फ्युरेटम हाइड्रार्जिरी)

व्यवहार—भस्म । मात्रा—½-२रत्ती ।

हिङ्गुलनिर्माणविधिः—

अशुद्धपारदं भागं चतुर्भागं तु गन्धकम् ।
उभौ क्षिप्त्वा लोहपात्रे क्षणं मृद्वग्निना पचेत् ॥
कृत्वाऽथ खण्डशस्तत्र काचकूप्यां निरुद्धय च ।
वस्त्रमृत्तिकया सम्यक् काचकूपीं प्रलेपयेत् ॥

सर्वतोऽङ्गुलमानेन छायाशुष्कं तु कारयेत्।
बालुकायन्त्रगर्भे तु दिनं मृद्वग्निना पचेत् ॥
क्रमवृद्धयाऽग्निना पश्चात् पचेद्दिवसपञ्चकम्।
सप्ताहं तु समुद्धृत्य हिङ्गुलः स्यान्मनोहरः ॥

१८ गन्धकः (गन्धक) पृ० २६१

हि०-गन्धक, गन्हक। बं०-म०-क०-गु०-गन्धक। ते०-गन्धकमु। फा०-गागिर्द। अ०-किब्रित। अं०-Sulphur (सल्फर)
लै०-सल्फर।

व्यवहार—शुद्ध। मात्रा—१-७ माशे।

श्रेष्ठगन्धकलक्षणम्—

शुकपञ्चसमच्छायो नवनीतसमप्रभः।
मसृणः कठिनः स्निग्धः श्रेष्ठगन्धक उच्यते ॥

१९ अभ्रकम् (अबरक) पृ० २६२

हि०-अबरक, अभरक। बं०-अभ्र। गु०-अभरख। मा०-भोंडल। फा०-सितारये जमीन्। अ०-तल्लक, तल्क। क०-अभ्रक। ते०-अभ्रकम्।
लै०-Mica (मिका)
अं०-Talc (टाल्क)
,, Glimmer (ग्लिमर)

व्यवहार—भस्म। मात्रा—१-३ रत्ती।

अभ्रकसेवनेऽपथ्यानि—

क्षाराम्लं द्विदलं चैव कर्कटीं कारवेल्लकम्।
वृन्ताकं च करीरं च तैलं चाभ्रे विवर्जयेत् ॥

२० हरितालम् (हरताल) पृ० २६३

हि०-हरताल, हरिताल। बं०-हरिताल, हत्तेल। म०-हरताळ। गु०-हड़ताल। पं०-हडताळ। मा०-हरताल। ते०-हरिदलमु, हरितालामु। द्रा०-अरिदलम्। क०-हरिदाळ। अ०-अरनीख, ज़रीख अस्फर।
अं०-Orpiment (ऑर्पिमेण्ट)।
,,-Yellow Arsenic (यलो आर्सेनिक)

व्यवहार—(शुद्ध) भस्म। मात्रा—½-२ रत्ती।

पिंजरं पित्तलं तालं मनोज्ञं हरितालकम् ।
छत्राङ्ककाञ्चनरसं गोदन्तं नरमण्डनम् ॥
तालकस्यैव भेदोऽस्ति मनागेव तदन्तरम् ।
तालकं चातिपीतं स्याद्भवेद्रक्ता मनःशिला ।
हरितालोऽष्टधा प्रोक्तो गोदन्तः सर्वतोऽधिकः।
तदभावे तु पत्राख्यो वयसः स्थापनः परः ॥

हरितालभस्मानुपानम्—

सर्वरक्तविकारेषु देयमाम्रहरिद्रया ।
सुहालाहलजोराभ्यामपस्मारहरं परम् ॥
समुद्रफलयोगेन जलोदरविनाशनम् ।
देवदालिरसैर्युक्तं भगन्दरहरं परम् ॥
फिरङ्गदोषजं रोगं जातं हन्ति सुदुस्तरम् ।
विसर्पमण्डलं कण्डूपामाविस्फोटकं तथा ॥
वातरक्तकृतान् रोगानन्यानपि विनाशयेत् ।

हरितालसेवने नियमाः—

क्षाराम्लौ च कटुं त्यक्त्वा मिष्टभोजनमाचरेत् ।

हरताल के प्रचलितभेद—

१ पिण्डाख्य (पिण्डहरताल, गोबरिया हरताल)
२ पत्रसंज्ञक हरताल (पत्र हरताल, तावकी हरताल, तवकिया हरताल,
३ गोदन्ती हरताल ।
४ बकदाली हरताल (बदकाली, बगदादी हरताल)

२१ मनःशिला (मैनशिल) पृ० २६४

हि०–मयनसिल, मनसिल, मैनसिल । बं०–मनछाल, मनछल । म०–मनशाळ । गु०–मणशल । क०–मनशिले । मणिशिले । ते०–मानुशिला । अ०–जरनेख, एहमर । ॅ०–Realgar (रील गार) ।
लै०–आर्सेनिक सल्फैडम् ।

व्यवहार—(विषयुक्त) शुद्ध । मात्रा—१–४ रत्ती ।

यह ३ प्रकार की होती है, १ श्यामाङ्गी, २ कणवीरका ३ खण्डाख्या इनमें उत्तरोत्तर उत्तम होती हैं ।

२२ स्रोतोऽञ्जनम् (अञ्जनम्-सुरमा) काला सुरमा पृ० २६४

हि०-सुरमा, सुर्मा, काला सुरमा, शुर्म्मा, अंजन, आंजन। बं०-नील-शुर्म्मा, नीलाञ्जन, कालसुर्मा। म०-काला सुरमा। मा०-सुरमो, कालो-सुरमो। गु०-सुरमो, कालो सुरमो। क०-स्रोतोऽञ्जन, अञ्जनद् कल्लु। द्रा०-अञ्जनक्कल्। पं०-सुरमा। ते०-अञ्जनमु। फा०-सूर्मे अस्फहानी। अ०-कुह्ल इस्मुद।

अं०-Black Antimony (ब्लेक एण्टीमनी)।

ले०-Antimonium Sulphuratum (एण्टिमोनियम सल्फ्युरेटम्)।

"सुरमा इस्पहानि" के नाम से जो सुरमा बम्बई में मिलता है वह उत्तम होता है। किंचिद् धूसरश्याम वर्ण का दानेदार चूर्णवाला सुरमा सर्वोत्तम होता है।

कन्धारी सुरमे का लैटिन नाम-Galena (गैलेना) या Sulphuret of Iead (सल्फ्युरेट ऑफ् लेड) है। यह नकली सुरमा है। एक काले सुरमे का भेद "सुरमी" होती है।

२३ सौवीरम् (सफेद सुरमा) पृ० २६४

हि०-सफेद सुरमा। बं०-श्वेत सुर्मा। म०-लाल सुरमा, पांढरा सुरमा। गु०-लाल सुरमो।

लक्षणों में "स्रोतोऽञ्जन" के समान परन्तु कुछ पीले रङ्ग का जो हो उसे वास्तव में "सौवीराञ्जन" समझना चाहिये, बाजारों में जो प्रायः मिलता है वह संगमर्मर का एक भेद है नकि "सफेद सुरमा"।

सौवी ' मधुरं शीतं कषायं स्निग्धलेखनम्।
रक्तपित्तविषच्छर्दिहिक्काघ्नं दृक्प्रसादनम्॥

पुष्पाञ्जनस्य नामानि गुणाश्च-

सं०-पुष्पाञ्जनं तु कौसुम्भं रीतिकं कुसुमाञ्जनम्। हिं०-बं०-पुष्पा-ञ्जन। म०-तितलें चे कोट, पुष्पाञ्जन। गु०-कसांजण। क०-पुष्पांजन। तै०-पुष्पांजनमु। अं०-Z nc Oxide (झिंक आक्साइड)।

लै०-Zinci Oxidum (झिन्साई आक्सिडम)

पुष्पाञ्जनं हिमं प्रोक्तं पित्तहिक्काप्रदाहनुत् ।
नाशयेद्विषकासार्त्तिं सर्वनेत्रामयापहम् ॥ रा० नि० ॥

२४ टङ्कणः (सोहागा) पृ० २६४

हि०-सोहागा, सुहागा, सोहग्गा । बं०-सोहागा । म०-टङ्कणखार, स्वांगी खार, स्वागी । मा०-सोगी । गु०-टंकण, टंकण पाढ़ियो, टंकण-फुलियो, टंकण खार । क०-टंकण खारु, बिलिय टंकणु, बेलगार, एलिगारं, बेलिगारमु । पं०-सुहागा । द्रा०-बणगारं । फा०-तीगार, तनकार, तन्का-र । अ०-बुरग, जबदुल, बूरग । अं०-Borax (बोरेक्स) या Bibo-rate Of Soda (बायबारेट् ऑफ् सोडा) ।

लै०-Sodas Biboras (सोडास् बाइबोरास्)

व्यवहार-श्वेतपिण्ड शुद्ध । मात्रा १-३ माशे ।

सुहागा के दे। भेद हैं-१ पिण्डाकार सुहागा-यह धातुओं के गलाने के काम में आता है । २ चौकिया सुहागा-यह औषध के योग्य होता है ।

२५ स्फटिका (फटकरी) पृ० २६५

हि०-फिटकिरी, फटकरी, फटकिरी । बं०-फटकिरी । म०-तुर्टी, फटकड़ी, तुरटी । मा०-गु०-क०-फटकी । ते०-फाटिका, पाटिकारमु । द्रा०-पटिकारं । फा०-ज़ाक सफेद । अ०-ज़ाज़ अबियज़ । अं०-Alum (एलम)

लै०-Potassium Aluminium Sulphati (पोटास्सियम एल्युमि-नियम सल्फेटी ।

व्यवहार-पिण्ड शुद्ध । मात्रा-½ से १ मासे ।

स्फटिका नामक सौराष्ट्रदेश की मिट्टी गोपीचन्दन Bouxite बोक्सा-इट में $H_2 SO_4$ डाल छान छने द्रव का गाढ़ा कर 'पोटासियम सल्फेट' या 'अमोनियम सल्फेट' को मिला कर गाढ़ाकर एकान्त में रखदेने से फिटकिरी बन जाती है ।

२६ राजावर्त्तः (रेवटी) पृ० २६५

हि०-रेवटी, रावटी, लाजवर्द । बं०-राजावर्त्त । म०-क०-गु०-रा-जावर्त्तमणि । मा०-प०-लाजवर्द । अं०-Lapis Lazuli (लेपिस लेजुली) ।

यह उपरत्न है । कुछ २ लाल और अधिक नीला मिश्रित, तौल में भारी, चिकना, चकचकाहट युक्त जो लाजवर्द हो उसे उत्तम समझना चाहिये ।

२७ चुम्बकः । पृ० ५६९

हि०-चुम्बक, लोहचुम्बक । यू०-सङ्गचुम्बक । फा०-सङ्गचकमाग, सङ्गआतीस, सङ्गआहन रूवा । अ०-हजरुलनार, हजरमिकना तीस, मीकनातीस । म०-लोहचुम्बक । गु०-चमक ।

चुम्बक भूरे तथा काले रङ्ग का एक प्रसिद्ध पत्थर है इसे फोलाद के साथ रगड़ने से आग उत्पन्न होती है ।

२८ गैरिकम् (गेरू) पृ० २६९

हि०-गेरू, गेरमाटी, गेरुमट्टी । ब०-गिरिमाटा, गेरिमाटि । ते०-जाजु । पं०-गेरी । यू०-गवरूरा । फा०-गिलेसुर्ख मिश्री । अ०-तीनुल एहमर मग़रबी । अं०-Red Chalk (रेड चाक) या Oker (ओकर)

ले०-Bole Rubra (बोल रुब्रा)

यह पत्थर के समान कठिन और तामे के समान लाल होने से "पत्थर गेरू" कहा जाता है ।

२९ स्वर्णगैरिकम् (सोनागेरू) पृ० २६९

हि०-सोन (ना) गेरू, पीतगेरू, सोनगेर, गजनो । बं०-लालगिरीमाटी । म०-ताम्बेगेरू, सोनगेरू । गु०-पोनागेरू, सोनागेरू । क०-होजाथु ।

सुवर्णगैरिकं स्निग्धं मधुरं तुवरं मतम् ।
चक्षुष्यं शीतलं बल्यं व्रणरोपणकारकम् ॥
विशदं कान्तिकृत् प्रोक्तं दाहं पित्तं कफं जयेत् ।
हिक्कां रक्तरुजं जूर्त्तिं विषं विस्फोटकं वमिम् ।
अग्निदग्धव्रणं चार्शो रक्तपित्तं च नाशयेत् ॥

३० खटिका (खड़िया या तेलिया खड़ी) पृ० २६९

हि०-खरिया, खड़ो, खड़िया, खल्ली, खड़िया मट्टी । बं०-खड़ि माटी, चाखड़ी, खड़ो, रामखड़ो । म०-खडू । गु०-खडी । क०-बेणेब्रहु । य०-मिट्टीखरिया । फा०-गिले, खड़िया । अ०-तिने अवोयद । अं०-Chalk

(चाक) या Pipe Clay (पाइप क्ले)

ले०-Carbonate Of Calcum (कार्बोनेट ऑफ् काल्कम)

यह लालिमा लिये सफेद और कठिन होती है ।

३१ गौरखटिका (सफेद खड़ी) पृ० २६५

हि०-सफेद खड़ा (खरी, खारिया इत्यादि) बं०-गौरखड़ी । फा०-गिले सुफेद ।

यह दूधकी भांति श्वेतवर्ण, स्पर्श में चिकनी, और कोमल होती है ।

३२ बालुका (बालू) पृ० २६६

हि०-बालू, बालु, रेत, रेता, रेती । बं०-बालि, बाली । म०-बालु । गु०-रेती, बेलु । क०-मललु, हालुल । ते०-विशिका । फा०-रेग । अ०-रमल । अं०-Sand (सैण्ड) । लै०-Silica (सिलिका)

सिकता मधुरा शीता लेखनी तापनाशिनी ।
अग्निदग्धव्रणं चैव व्रणोरःक्षतनाशिनी ॥
श्रमकुष्ठहरी चास्याः स्वेदनं वातनाशनम् ॥ (र०)

३३ खर्परी (खपरिया) पृ० २६६

हि०—खपरिया, संगबसरी, थोथा, खर्परिया । बं०-खापर । म०-कलखापरी । गु०-खपरियुं, खापरियूं । क०-खर्परी । ते०-खर्पर । यू०-खमरिया, खमरिआ । फा०-संगबसरी । अ०-तूतिया किरमानी, तुतिया मकसुल, तुतिया फिरमानी । पं०-खपरिट्टा । मा०-खर्पयो । अं०-Black jack (ब्लेक जाक) । ले०-Zinci Sulphidum (ज़िङ्की सल्फाइडम)

व्यवहार-शुद्धभस्म । मात्रा-१-४ रत्ती ।

यह लवणके समान खानिज उपधातु, सफेद तथा भूरे रंगकी होती है । तथा सदल-निर्दल भेद से २ प्रकार की होती है । इनमें सदल को "दर्दुर" और निर्दल को "कारबेल्लक" कहते हैं, यही श्रेष्ठ भी है ।

३४ काशीशम् (कसीस) पृ० २६६

हि०-कसीस, काशीस, हीरा का (क)सीस । पुष्पकासीस । बं०-धातु-कासीस, हीराकस, धातु कसीस, पुष्पकासीस । म०-हीराकस, श्वेतनीली । क०-कासीसे, कासीस, कसीस । गु०-हीराकसा । बे जातना छी नीली तथा धोली । फा०-ज़ाके सब्ज, ज़ाकज़र्द । अ०-जाजे अखदुर, जाजे

अस्रूर । अं०-Sulphate of Iron (सल्फेट ऑफ् आयरन)
लै०-Ferry Sulphas (फेरी सल्फाज़) ।

काशीशलक्षणम्—

भस्मवन्मृत्तिकाऽम्लं च काशीशं धातुरित्यपि ।
तदेव किंचित्पीतं तु पुष्पकाशीशमुच्यते ॥
पुष्पकाशीशकं तिक्तं शीतं नेत्रामयापहम् ।
लेपेन पामाकुष्ठादिनानात्वग्दोषनाशनम् ॥

पुष्पकाशीशनामानि—

द्वितीयं पुष्पकाशीशं वत्सकं च मलीमसम् ।
ह्रस्वं नेत्रौषधे योज्यं विशदं नीलमृत्तिका ॥

कासीस को "प्रोटो सल्फेट ऑफ् आयरन" भी कहते हैं ।

३९ सौराष्ट्री मृत्तिका (गोपी चन्दन—सोरठा माटी) पृ० २६६

हि०-गोपीचन्दन, सोरठ की मट्टी, सोरठी माटी, सोरठी मिट्टी । म०-सोरठ माती । क०-तुरब्रीयमणु । गु०-सोरठी माटी । अं०-Silicate of Alumina (सिलिकेट ऑफ् एल्युमीना)

यह सोरठदेश (काठियावाड़ के समीप का देश) की मिट्टी है-इसे तुवरी या गोपीचन्दन कहते हैं-यह दो प्रकार की होती है ।

१ स्फटिका २ छिल्लिका ।

स्फटिका-किंचित् पीली, भारी और चिकनी होती है ।

छिल्लिका-भारी, सफेद, चिकनी और खट्टा होती है ।

उत्तम गोपीचन्दन-वही है जो सफेद वस्त्र पर मंजीठ के समान रंग दे ।

गोपीचन्दनं शीतं दाहव्रणविषापहम् ।
विसर्पशमकं लेपात्पतद्गर्भस्थिरीकरम् ॥

३६ कृष्णमृत्तिका (काली मिट्टी) पृ० २६६

हि०-काली मिट्टी, मिट्टी, कृष्णमृत्तिका, करियामाटी । बं०-माटी, कालमाटी । म०-कालीमाती । गु०-कालीमाटी । तै०-नोबुलु ।

यह चिकनी, लसदार और काले रङ्ग की होती है ।

प्रलेपाद्विनिहन्त्येषा शोथं भल्लातसंभवम् ॥

३७ कर्दमः (कीचे) पृ० २६६

हि०-कींच, गारा मिट्टी, कादो, पांकी । ब०-कादा, माटी, कालमाटी । म०-चिखल, माती । गु०-गारो, कालीमाटी, कादव । तै०-नोबुलु । अं०-Mud (मड), Black Clay (ब्लैक क्ले)

पङ्कस्तु जलकल्कश्च चुलुकः कर्दमो मलः ।
चिकिलः पलितो द्रापः पललश्च निषद्वरः ॥

३८ कपर्दकः (कौड़ी) पृ० २६६

हि०-कौड़ी, कौरी, कवड़ी (री) । सं०-कपर्दकः, वराटः, कपर्दी, वराटिका । क०-म०-कवड़ी । फा०-खरमोहरह, खरमोहरा । बं०-कड़ि । गु०-कोड़ो । अ०-दोअ । अं०-Covries (कोवरीज़)

अस्य गुणा भेदादयश्च—

कपर्दः कटुतिक्तोष्णः कर्णशूलव्रणापहः ।
शूलगुल्मामयघ्नश्च नेत्रदोषनिकृन्तनः ॥
वराटिका त्रिधा प्रोक्ता श्वेता शोणा त्रिधा परा ।
पीता च तीक्ष्णा चक्षुष्या श्वेता शोणा हिमा व्रणा ॥
अतिबिन्दुभिरश्वेतैर्लाञ्छिता रेखयाऽथवा ।
बालग्रहहरा नानाकौतुकेषु च पूजिता ॥
पीता गुल्मयुता पृष्ठे रसयोगेषु योजयेत् ।
सार्धनिष्कप्रमाणाऽसौ श्रेष्ठा योगेषु योजयेत् ॥
निष्कप्रमाणा मध्या सा हीना पादोननिष्किका ॥

३९ शङ्खः (शंख) पृ० २६७

हि०-संख, शंख । सं०-शङ्खः । प०-क०-मा०-गु०-शंख । म०-शंखो । बं०-शंख, शांक । द्रा०-शंखं । ते०-शंखमु । अं०-Cönch (कोंच) ।

व्यवहार-भस्म । मात्रा-३ रत्ती से १ माशा ।

अस्य गुणाः प्रकारभेदाश्च—

शङ्खस्तु पौष्टिको बल्यो रसकाले कटुः स्मृतः ।
पटुः शीतो ग्राहकश्च चक्षुष्यो वर्णकृन्मतः ॥
नेत्रपुष्पं पक्तिशूलं गुल्मं संग्रहणीं हरेत् ।
तारुण्यपिटिकागुल्मशूलश्वासहरः स्मृतः ॥

दक्षिणावर्त्तशङ्खस्तु त्रिदोषकामलाऽपहः ।
विषदोषक्षयनेत्रग्रहपीडाविनाशकः ॥ (रत्नाकरे) ॥
द्विधा स दक्षिणावर्त्तिर्वामावर्त्तिस्तु भेदतः ।
दक्षिणावर्त्तशङ्खस्तु पुण्ययोगादवाप्यते ॥
यद्गृहे तिष्ठति स वै स लक्ष्म्या भाजनं भवेत् ॥

श्रेष्ठशङ्खस्य लक्षणम्—

शङ्खस्तु विमलः श्रेष्ठश्चन्द्रकान्तिसमप्रभः ।
अशुद्धो गुणदो नैव शुद्धस्तु सुगुणप्रदः ॥

कृमिशङ्खस्य नामानि गुणाश्च—

कृमिशङ्खः कृमिजलजः कृमिवारिश्च जन्तुकम्बुश्च ।
कथितो रसवीर्याद्यैः कृतनिधिभिः शङ्खसदृशोऽयम् ॥

४० बोलम् (बोल) पृ० २६७

हि०-बोल, गन्धरस, हीराबोल, बीजाबोल, रक्ताबोल , खून खरबा । बं०-गन्धबोल, हिराबोल, खुनखरापी, गंधरस । म०-क०-गु०-बोल । ते०-बालिम् , त्रोपोलम् , बोलमु । ता०-बेल्लरप्पालम, बेल्ल इप्प पोलम । मु०-रक्त्याबोल । प०-मा०-बीजाबोल । गु०-हीराबोल । क० मुसाम्बर, बोल । द्रा०-करियपोलम् । फा०-मुर, मिर, मरमकी । अ०-मुरमकी, मुरसाफ़, मुर । मा०-बालंतबोल । अं०-Myrrha (मिर्हा)

ले०-Balsa Mondendron Myrrha (बालसा मोण्डेण्ड्रन मिर्हा)

१ काला २ लाल और ३ मनुष्यज इन भेदों से बोल ३ प्रकार का होता है । इनमें—

१ कालाबोल—को मुसब्बर,

२ मनुष्यजबोल—को मिमियाई या मोमियाई कहते हैं ।

३ लालबोल-एक वृक्ष का लालरंग का गोंद है ।

यह स्वाद में फीका और कड़वा होता है ।

४१ कङ्कुष्ठः (मुरदा संग) पृ० २६७

हि०-मुरदासंग, मुरदासिंग, मुरदारसंग, मुरदाशंख, कंकोठ । बं०-पर्वतीय मृत्तिका विशेष । म०-कंकुष्ठ, मुरदारसिंग । गु०-पीलिया ।

फा०–मुरदार संग ।

व्यवहार–खनिज शुद्ध । मात्रा–४ रत्ती से १ माशा ।

कङ्कुष्ठं पित्तकृद् भेदि विबन्धकफगुल्मनुत् ।
भजेदेनं विरेकार्थं ग्राहिभिर्यवमात्रया ॥
नाशयेदामपूतिं च विरेच्यं त्रणमात्रतः ।
सुभक्षितं च ताम्बूलं विरेकं त विनाशयेत् ॥

वैज्ञानिकों का मत है कि—Garcinia Morcella (गारसिनिया मोरसेल्ला) नामक वृक्ष के गोंद Gambage (गेमबेज) को कंकुष्ठ कहते हैं, उक्त वृक्ष के रस को नलिकाओं में रखने से जो बनता है उसे "नलिकाख्य" और अन्यान्य पात्रों में रखने से जो खण्ड २ रहता है उसे "रेणुक" कहते हैं ।

अथ रत्नानि ।

४२ हीरकः (हीरा) पृ० २६८

हि०–हीरा, हीर । बं०–हीरे, हीरक । म०–हिरा । गु०–हिरो । फा०–इल्माश । मा०–हारो । प०–हीरा । क०–वज्र । ते०–वज्रं । अ०–मास, अल्मास । अं०–Diamond (डायमण्ड) ।

ले०–Pure Carbon Adams (प्योर कार्बन एडम्स)

हीरा का रंग रूप—

हमारे देश की प्राचीन खानों से प्राप्त होने वाले हीरे प्रायः स्फटिकवत् स्वच्छ हुआ करते थे, कहीं २ के हीरे कुछ वर्णयुक्त जैसे–नीले, भूरे, श्याम, बैंगनी, सरदई, पिङ्गल, कपिल और अरुण आदि अनेक रङ्ग के भी देखे गये हैं ।

४३ गारुत्मतम् (पन्ना) पृ० २६९

हि०–पन्ना । बं०–पाना, पान्ना । पं०–पन्ना । क०–पाचिपच्चे । म०–पांचरत्न, पाचूरत्न, पन्नो । गु०–पाना, पानु, लीलुं । फा०–जमुरद, जमुर्रद । ते०–नालम ।

अं०–Emerald (इमरल्ड) । ले०–Smaragolus (स्मेरेगोलस)

मरकतगुणाः—

पाचिका शीतला रुच्या रसकाले मधु स्मृता ।
पुष्टिकृद्विषहा वृष्या भूतबाधाऽम्लपित्तहा ॥
ज्वरच्छर्दिविषश्वाससन्तापाग्नेयमान्द्यनुत् ।
दुर्नामपाण्डुशोफघ्नं तार्क्ष्यमोजोविवर्द्धनम् ॥

मरकतमणिपरीक्षा—

स्वच्छं गुरु स्निग्धगात्रं च मार्दवसमेतं व्यङ्गं बहुरङ्गम् ।
शृङ्गारी मरकतं बिभृयात् ।
शर्करिलं रूक्षं मलिनं लघु हीनकान्ति कल्मषं त्रासयुतं विकृताङ्गं मरकतममरोऽपि नोपयुञ्जीत ।

४४ माणिक्यम् (मानिक्य-चुन्नी) पृ० २६१

हि०-मानिक, चुन्नी, लाल । ब०-माणिक । म०-माणिक । गु०-माण्यक, चुनी । क०-माणक । ते०-माणिक्यं । पं०-लाल । मा०-माणक । फा०-यांकूत । अ०-लाल बदख्शां । अं०-Ruby (रूबी)
ले०-Rubinus (रुबिनस)

यह दो प्रकार का होता है, १ रक्तवर्ण का, २ कुछ नीलापन युक्त, ये दोनों क्रम से लाल कमल और नीले कमल के समान एक लाल दूसरा कुछ नीलेरंग का होता है ।

माणिक्यगुणाः—

माणिक्यं लेखनं शीतं कषायं मधुरं सरम् ॥
चक्षुष्यं मङ्गलं दाहदुष्टग्रहविषापहम् ॥

माणिक्यभेदवर्णाः—

सिंहले तु भवेद्रक्तं पद्मरागमनुत्तमम् ।
पीतं काणपुरोद्भूतं कुरुविन्दमिति स्मृतम् ॥
अशोकपल्लवच्छायमिदं सौगन्धिकं विदुः ।
तुम्बुरुच्छायमानीलं नीलगन्धि प्रकीर्त्तितम् ॥
उत्तमं सिंहलोद्भूत निकृष्टं तुम्बुरूद्भवम् ।
मध्यमं मध्यमं ज्ञेयं माणिक्यं क्षेत्रभेदतः ॥

बहुमूल्यमाणिक्यगुणाः—

बन्धूकगुञ्जाशकलेन्द्रगोपाजपासुमासृक्समवर्णशोभाः ।
भ्राजिष्णवो दाडिमबीजवर्णास्तथाऽपरे किंशुकपुष्पभासः ॥
सिन्दूरपद्मोत्पलकुङ्कुमानां लाक्षारसस्यापि समानवर्णाः ।
चकोरपुंस्कोकिलसारसानां नेत्रावभासश्च भवन्ति केचित् ॥
क्वचित्तु स्फाटिकोत्थानां देशे तुवरसंज्ञके ।
सधर्माणः प्रजायन्ते स्वल्पमूल्या हि ते स्मृताः ॥
वर्णानुयायिनस्तेषां रन्ध्रदेशे तथाऽपरे ।
यज्जायन्ते तु ते केचिन्मौल्यलेशमवाप्नुयुः ॥
शोभाद्वितयवन्तो ये मणयः क्षतिकारकाः ।
उभयत्र पदं येषां तेन च स्यात् पराभवः ॥

अथ प्रमाणम्—

गुञ्जाफलप्रमाणस्तु दशसप्तकगुञ्जकात् ।
पद्मरागस्तुलयति यथापूर्वमह गुणः ॥
बिम्बीफलसमाकारः षडष्टदशतोलकः ।
पद्मरागस्तुलयति यथोत्तरमहागुणः ॥
अतः परं प्रमाणेन मानेन न च लक्ष्यते ॥

अथ मूल्यम्—

षट्त्रिंशतिसहस्राण्येकमणेः पलप्रमाणस्य ।
कर्षत्रयस्य विंशतिरुपरिष्टात् पद्मरागस्य ॥
अर्धपलस्य द्वादश कर्षस्यैव षट् सहस्राणि ।
यच्चाष्टमाषकमितं तस्य सहस्रत्रयं मौल्यम् ॥
माषचतुष्टयं यत् स्यात्तस्य दशशतं मौल्यम् ।
माषद्वयमितो यस्तु पद्मरागः सुनिर्मलः ॥
तस्य पञ्चशतं मौल्यं रौप्यं कर्षस्य चेरितम् ।
माषकैकमितो यस्तु पद्मरागो गुणान्वितः ।
शतैकसंमितं वाच्यं मौल्यं तस्य विचक्षणैः ।
अतो न्यूनप्रमाणास्तु पद्मरागा गुणोत्तराः ।

स्वर्णाद् द्विगुणमौल्येन मूल्यं तेषां प्रकल्पयेत् ।
व्रणे तु मूल्यं चार्द्धं तेजोहीनस्य मूल्यमष्टांशः ॥
अल्पगुणो बहुदोषो मूल्यं नाप्नोति विंशांशम् ॥

रत्नपरीक्षा—

बालार्ककरसंस्पर्शाद्यः शिखां लोहितां वमेत् ।
रञ्जयेदाश्रयं वाऽपि स महागुण उच्यते ॥
दुग्धे शतगुणे क्षिप्तो रञ्जयेद् यः समन्ततः ।
वमेच्छिखां लोहितां वा पद्मरागः स उत्तमः ॥
अन्धकारे महाघोरे यो न्यस्तः सन्महामणिः ।
प्रकाशयति सूर्याभः स श्रेष्ठः पद्मरागकः ॥
पद्मकोशेषु यो न्यस्तः प्रकाशयति तत्क्षणात् ।
पद्मरागवरो ह्येष देवानामपि दुर्लभः ॥
सर्वारिष्टप्रशमनं सर्वसंपत्तिदायकः ।
बालार्काभिमुखं कृत्वा दर्पणे धारयेन्मणिम् ॥
तत्र कान्तिविभागेन छायाभागं विनिर्दिशेत् ।
अप्रणश्यति सन्देहे शिलायां परिघर्षयेत् ॥
घृष्टो योऽत्यन्तशोभावान् परिमाणं न मुञ्चति ।
स ज्ञेयः शुद्धजातीयो ज्ञेयाश्चान्ये विजातयः ॥
अत्यन्तलोहितो यश्च पद्मरागः स उच्यते ॥

४९ पुष्परागः (पुखराज) पृ० २६९

हि०-पुखराज, पोखराज । बं०-पोखराज, पुष्पराज । म०-पुष्कराज । गु०-पीलुरत्न, पुखराज । क०-पुष्पराग । ते०-पुष्परागं ।

अं०-Topag (टोपाज़) ।

ले०-Topagio (टोपाजियो) ।

पुष्परागगुणाः—

पुष्परागोऽम्लः शीतः स्याद्वातलोऽग्नेश्च दीपनः ।
वृष्यो वयःस्थापकश्च प्रज्ञाबुद्धिविवर्द्धनः ॥
वातनाशकरः प्रोक्तो मुनिभिः पारदर्शिभिः ।

पुष्परागलक्षणम्—

पुष्परागं गुरु स्निग्धं स्वच्छं स्थूलं समं मृदु ।
कर्णिकारप्रसूनाभं मसृणं शुभमष्टधा ॥
कृष्णं विद्धाङ्कितं व्यङ्गं धवलं मलिनं लघु ।
विच्छायं शर्कराभागं पुष्परागं सदोषलम् ।

४६ नीलम् (नीलम) पृ० २६९

हि०-नीलम, नीलमणि, नीलमनि । बं०-इन्द्रनील, नीलमणि । म०-नीलरत्न । गु०-नीलम्, कालुनंग । क०-नील । ते०-नीलं । फा०-याक़ूत । अ०-याक़ूत कबूद । अं०-Saffire (सेफायर) । ले०-Saffirus (सेफायरस)

नीलगुणाः—

श्वासकासहरं वृष्यं त्रिदोषघ्नं सुदीपनम् ।
विषमज्वरदुर्नामपापघ्नं नीलमीरितम् ॥
नीलः सतिक्तकोष्णश्च कफपित्तानिलापहः ।
यो दधाति शरीरे च सौरिमर्दनदो भवेत् ॥

नीलस्य वर्णभेदाः—

सितशोणपीतकृष्णच्छाया नीलाः क्रमादिमे कथिताः ।
विप्रादिवर्णसिद्ध्यै धारणमस्यापि वज्रवत् फलदम् ॥

यह दो प्रकार का मिलता है । १ इन्द्रनील । २ जलनील । इनमें से प्रथम उत्तम होता है ।

४७ (गोमेदः) पृ० २६९

हि०-गोमेदमणि, राहुरत्न, जवाहर । बं०-गोमेदमणि, लोहितमणि । ते०-गोमेदकं । क०-गोमेद । म०-गोमेदमणि । गु०-गोमूत्रजेवुं पीला रङ्गनुं । अं०-Onyx (ओनिक्स) । लै०-Onyx (ओनिक्स) ।

गोमेदनामानि—

पिङ्गस्फटिको गोमेदोऽगस्तिसत्त्वं तमोमणिः ।

अस्य गुणाः—

गोमेदकोऽम्लश्चोष्णश्च वातकोपविकारनुत् ।
दीपनः पाचनश्चैव धृतोऽयं पापनाशनः ॥

अस्य परीक्षा—

हिमालये वा सिन्धौ वा गोमेदमणिसम्भवः।
स्वच्छकान्तिगुरुः स्निग्धो वर्णाढ्यो दीप्तिमानपि ॥
वलक्षः पिञ्जरो धन्यो गोमेद इति कीर्त्तितः।
चतुर्धा जातिभेदस्तु गोमेदोऽपि प्रशस्यते ॥
ब्राह्मणः शुक्लवर्णः स्यात्क्षत्रियो रक्त उच्यते।
आपीतो वैश्यजातिस्तु शूद्रस्तु नील उच्यते ॥
छाया चतुर्विधा श्वेता रक्ता पीताऽसिता तथा।
गुरुप्रभाऽऽढ्यः सितवर्णरूपः स्निग्धो मृदुर्वाऽतिमहापुराणः।
स्वच्छस्तु गोमेदमणिर्धृतोऽयं करोति लक्ष्मीं धनधान्यवृद्धिम् ॥
लघुविरूपोऽतिखरोऽन्यमानः स्नेहोपलिप्तो मलिनः खरोऽपि।
करोति गोमेदमणिर्विनाशं सम्पत्तिभोगाबलवीर्यराशेः ॥
ये दोषा हीरके ज्ञेयास्ते गोमेदमणावपि।
परीक्षा वह्नितः कार्या शाणे वा बहुकोविदैः।
स्फटिकेनैव कुर्वन्ति गोमेदप्रतिरूपिणम्।
शुद्धस्य गोमेदमणेस्तु मूल्यं सुवर्णतो द्विगुणमाहुरेके।
अन्ये तथा विद्रुमतुल्यमूल्यं तथाऽपरे चामरतुल्यमाहुः ॥
चतुर्विधानामेषां तु धारणं परिसम्मतम्। युक्तिकल्पतरुः ॥

४८ वैदूर्यम् (वैदूर्य्यमणि—लहसुनिया) पृ० २६९

हि०—वैडूर्यमणि, लहसुनिया। बं०—वैदूर्य। म०—वैडूर्य्य रत्न। गु०—लसणियो। क०-वैडूर्य। अं०-Cats Eye (कैट्स् आइ)

अस्य गुणाः—

वैदूर्यमुष्णमम्लञ्च कफमारुतनाशनम्।
गुल्मादिदोषशमनम् भूषितञ्च शुभावहम् ॥ रा० नि० ॥

उत्तमवैदूर्यलक्षणम्—

वैदूर्यं श्यामशुभ्राभं समस्वच्छं गुरु स्फुटम्।
अमच्छुभ्रान्तरीयेण गर्भितं शुभमीरितम् ॥

४९ मौक्तिकम् (मोती) पृ० २७०

हि०—मोती। बं०—मुक्ता। गु०—मोती। तै०—मोत्यालु, मात्यालु

म०-मोती। क०-मौक्तिक। फा०-मरवारिद, मूर्वारीद, दुर। अ०-लोलो, लुलु। अं०-Pearl (पर्ल)। ले०-Margarita (मार्गारिटा)।

अस्य गुणाः—

मौक्तिकं सुमधुरं सुशीतलं दृष्टिरोगशमनं विषापहम्॥
राजयक्ष्मपरिकोपनाशनं क्षीणवीर्यबलपुष्टिवर्द्धनम्॥
कफपित्तक्षयध्वंसि कासश्वासाग्निमान्द्यजित्।
पुष्टिदं वृष्यमायुष्यं दाहघ्नं मौक्तिकं मतम्॥
मुक्तानां हारविधृतिर्दाहपित्तविनाशिनी।
कान्तिं हर्षं नेत्रसुखं ददातीति प्रकीर्त्तितम्॥ नि० र०॥

शुक्तिमौक्तिकम्—

षट्स्वेतेष्वपि रुक्मिणीव जगति ख्यातिं गता रुक्मिणी-
नाम्ना शुक्तिरतीव चोत्तमगुणा सिन्धौ समुज्जृम्भते।
तस्या गर्भभवन्तु कुङ्कुमनिभं जातीफलाकारकं-
स्थूलं स्निग्धमतीव निर्मलतमं भूमौ प्रकाशं सदा॥

शङ्खमौक्तिकम्—

शङ्खस्याच्युतहारिणो जलनिधौ ये वंशजाः कम्बुका-
स्तेष्वन्तः किल मौक्तिकं भवति वै तच्छुक्रतारानिभम्।
कापोताण्डसमं सुवृत्तमसकृच्छ्रीकं सरूपं लघु-
स्निग्धं स्पर्शकृतं हि तच्च न पुनर्मर्त्यैस्तदासाद्यते॥

गजमौक्तिकम्—

यद्दन्तावलकुम्भसम्भवमदः पीतारुणं मन्दरुग्।
धात्रीदघ्नतयाऽत्र रत्नमधमं काम्बोजकुम्भोद्भवम्॥

वाराहमौक्तिम्—

एकाकी ससुखेन निःस्पृहतया यः काननं गाहते
तस्यैवादिवराहवंशजनुषः कोलस्य मूर्ध्नि स्थितम्।
कङ्कोलाकृतिमिन्दुवत्सुधवलं दैवादवाप्नोति तद्-
यस्तं धारयते भवेत्स निधिभिर्मर्त्यो धनाधीशवत्॥

सर्पजमौक्तिकम्—

शेषस्यान्वयिनां फणासु फणिनां यन्मौक्तिकं जायते-
वृत्तं निर्मलमुज्ज्वलं शशिरुचि श्यामच्छवि श्रीकरम् ।
कङ्कोलाकृति कोऽपि कोटिसुकृतैः प्राप्नोति चेन्मानवः-
स स्याद्वाजिगजाधिको नृपसमो जातोऽपि नीचे कुले ॥
आस्ते सद्मनि चेत्स पन्नगमणिस्तं यातुधानामरा-
हर्तुं रन्ध्रमवेक्षते इतरतः कुर्यान्महाशान्तिकम् ।

मत्स्यजमौक्तिकम्—

प्रोष्ठीगर्भगतस्तु मौक्तिकमणिर्गोजैः समः पाटली-
पुष्पाभः स न लक्ष्यते भुवि जनैरस्मिन् कलौ पापिभिः ॥

दर्दुरमौक्तिकम्—

यन्मेघोदरसंभवं तदवनीमप्राप्तमेवामरै-
र्व्योमस्थैरपनीयते विनियतं वर्षासु मुक्ताफलम् ।
तिग्मांशोरपि दुर्निरीक्ष्यमकृशं सौदामिनीसंनिभम् ।
देवानामपि दुर्लभं न मनुजस्यैतस्य लाभः पुनः ॥

वेणुमौक्तिकम्—

मुक्ताः सन्ति कुलाचलेषु करकाकान्त्युद्भवा वंशजाः-
कर्कन्धूफलबन्धवो निदधते कण्ठेषु सिद्धाङ्गनाः ॥

मुक्तालक्षणम्—

श्वेतस्निग्धमतीवबन्धुरतरं स्यात्पारसोकोद्भवं-
रूक्षं काञ्चनवर्णसङ्करयुतं स्याद् बार्बरं मौक्तिकम् ।
शोणं तूर्मजसंभवं विदुरतिस्निग्धं तथा दोषजं-
चातुर्वर्ण्ययुतं सुलक्षणमिति श्लक्ष्णं कविश्रीकरम् ॥

मुक्तापरीक्षा—

यद्विच्छायं मौक्तिकं व्यङ्गकायं शुक्तिस्पर्शं रक्ततां चापि धत्ते ।
मत्स्याक्षाङ्कं रूक्षमुत्ताननिम्नं नैतद्धार्यं धीमता दोषदायि ।
नक्षत्राभं वृत्तमत्यन्तमुक्तं स्निग्धं स्थूलं निर्व्रणं निर्मलञ्च ।
न्यस्तं धत्ते गौरवं यत्तुलायां निर्मौल्यं तन्मौक्तिकं सिद्धिदायि ॥

एक पात्र में आधसेर गोमूत्र, आध छटाक सांभर नोन, डाल उसी में

दे। प्रहर पर्यन्त मोती को दोलायन्त्र द्वारा पकावै फिर निकाल कर धान की भूसी में डाल कर मलै और पानी से धो डालै, यदि मोती का रूपान्तर न हो तो उसे शुद्ध समझ सेवन करना चाहिये ।

९० प्रवालः (मूँगा) । पृ० २७०

हि०—मूंगा । बं०—पला, मुंगा । म०—पोवलें । गु०—परवाला, परवाली । क०—अवलेहवत । तै०—प्रवाळक, पागड़ालु, पगड़मु । फा०—मिरजाना, मिरगां, मिरजां, मरजान् । अ०—एहेम, खुसूसुद, कोरल, वसद् । प०—मा०—मूंगा । क०—हुबलबु, । द्रा०—पवलं ।

अं०—Red Coral (रेड कोरल)

ले०—Coralium Rubrum (कोरेलियम रुब्रम्)

व्यवहार—शुद्धभस्म । मात्रा-२-६ रत्ती ।

अस्य गुणाः—

प्रवालं मधुरं साम्लं कफपित्तादिदोषनुत् ।
वीर्यकान्तिकरं स्त्रीणां धृते मङ्गलदायकम् ॥
क्षयपित्तास्रकासघ्नं दीपनं पाचनं लघु ।
विषभूतादिशमनं विद्रुमं नेत्ररोगहृत् ॥

अस्य मञ्जरीगुणाः—

प्रवालमञ्जरी सार्द्रा कामपुष्टिकरी नृणाम् ।
सेविता सततं देहे वीर्यस्तम्भं करोति च ॥

अस्योत्पत्तिर्लक्षणं च—

बालार्ककिरणारक्ता सागरसलिलोद्भवा च जलतापा ।
न त्यजति निजां रुचिं निकषे घृष्टाऽपि सा मृता जात्या ॥
पक्वबिम्बफलच्छायं वृत्तायतमवक्रकम् ।
स्निग्धमव्रणकं स्थूलं प्रवालं सप्तधा शुभम् ॥
आरङ्गं जलाक्रान्ति वक्रं सूक्ष्मं सकोटरम् ।
रूक्षं कृष्णं लघु श्वेतं प्रवालमशुभं त्यजेत् ॥

अथोपरत्नानि । पृ० २७०

५१ वैक्रान्तमणिः ।

हि०—वैक्रान्त, वैक्रान्तमणि, गोनस, गोनास। बं०-चुनिविशेष।

सं०—वैक्रान्तं चैव विक्रान्तं नीलवज्रं कुवज्रकम्।
गोनासः क्षुद्रकुलिशं जीर्णवज्रं च गोनसम्॥

अस्य गुणाः—

वैक्रान्तस्तु त्रिदोषघ्नः षड्रसो देहदार्ढ्यकृत्।
पाण्डूदरज्वरश्वासकासक्षयप्रमेहनुत्॥

स्फटिकः (बिल्लौर)

हि०—बिल्लौर, फटिकमणि, स्फटिकमणि। बं०—फटिक। म०—स्फटीक। अ०-इज्ररुल, बिल्लौर। सं०-शैवः, शूकः, श्वेतरत्नं, स्फटिकः, निस्तुषोपलम्। अं०—क्रिष्टल।

अस्य गुणाः—

स्फटिकः समवीर्यः स्यात् पित्तदाहार्त्तिशोषनुत्।
तस्याक्षमाला जपतो धत्ते कोटिगुणं फलम्॥ नि० र०॥

यह एक प्रकार का सफेद पत्थर कांच के समान चिकना और स्वाद में फीका होता है।

५२ काचः (कांच) पृ० २७०

हि०-कांच, काच, शीशा, ग्लास। सं०-काचः, कृत्रिमरत्नम्। बं०-कंच, काच। गु०-काच। म०-काच। फा०-आबगीना।

अं०-Glass (ग्लास)। ले०-Glesum (ग्लेसम)।

संस्कृतनामानि—

काचः कृत्रिमरत्नं च पिङ्गाणो मुकुरोऽपि च।

अस्य गुणाः—

काचा तु सारका लघ्वी व्रणनेत्रहितावहा।
लेखनी शूलहृत्प्रोक्ता वैद्यशास्त्रविशारदैः॥

(सूर्यकान्तमणिः)

हि०-आतसीशीशा (सीसा), सूरजकान्त, चकमक शीशा। बं-आतस पाथर, आतस पत्थर। म०-सूर्यकान्तमणि। गु०-अगनचशमानो

काच । अं०-Magnifying Glass. (मैगनिफाइङ्ग ग्लास) ।

अस्य नामानि गुणाश्च—

दीप्तोपलः सूर्यकान्तो ज्वलनाश्माऽग्निगर्भकः ।
सूर्यकान्तो भवेदुष्णो निर्मलश्च रसायनः ॥
वातश्लेष्महरो मेध्यः पूजनाद्रवितुष्टिदः । (रा० नि०)

अस्योत्तमतालक्षणम्—

शुद्धः स्निग्धो निर्व्रणो निस्तुषस्तु यो निर्घृष्टो व्योमनैर्मल्यमेति ।
यः सूर्यांशुस्पर्शनिष्ठ्यूतवह्निर्जात्या सोऽयं चक्षते सूर्यकान्तः ॥

(चन्द्रकान्तमणिः)

सं-चन्द्रकान्तः, सोममणिः, सिताश्मा, प्रस्तरोपलः । हि०-बं०-क०-चन्द्रकान्त । म०-चन्द्रकान्तमणि । तै०-चन्द्रकान्तम् ।

अस्य गुणाः—

चन्द्रकान्तमणिः शीतः स्निग्धः स्वच्छः शिवप्रियः ।
अस्रदाहग्रहालक्ष्मीनाशनोऽयं निरन्तरम् ॥

एतदुद्भूतजलस्य गुणाः—

चन्द्रकान्तोद्भवं रूक्षं शीतं दाहविनाशनम् ।

अस्य स्वरूपम्—

पूर्णेन्दुकरसंस्पर्शादमृतं स्रवति क्षणात् ।
चन्द्रकान्तं तदाख्यातं दुर्लभं तत्कलौ युगे ॥ यु० क० ॥

पेरोजम् (फिरोजा)

हि०-फिरोजा, पिरोज़ा, पेरोज़ा । सं०-पेरोजम् । बं०-उपरत्न विशेष, पेरोजा । गु०-पीरोजा, पीरोजो । फा०-फिरोज़ा । ०-फ़िरोजा । म०-पेरोज । अ०-फिरोजजं । अं०-Tirkois (टरकोआयज़) ।

ले०-Terchesins Turchina (टर्चेसिन्स टरचाइना)

पेरोजनामानि—

पेरोजं हरिताश्मा च भस्माङ्गं हरितं द्विधा ।

अस्य गुणाः—

पेरोजं सुकषायं स्यान्मधुरं दीपनं परम् ।
स्थावरं जङ्गमं चैव संयोगाच्च तथा विषम् ।

तत्सर्वं नाशयेच्छीघ्रं शूलं भूतादिदोषजम् ॥

दुग्धपाषाणिका (शिरगोला)

सं०-दुग्धपाषाणः । हि०-बं०-म०-शिरगोला। गु०-दुधियो पाणो। क०-रंगवालियहरेल्ल।

अस्या नामानि गुणाश्च—

दुग्धपाषाणिका क्षीरी माधवी मेदसन्निभा ।
दुग्धपाषाणको रुच्य ईषदुष्णो ज्वरापहः ।
पित्तहृद्रोगशूलघ्नः कासाध्मानविनाशनः ॥

९३ मुक्ताशुक्तिः (मोती की सीप) पृ० २७०

सं०-शुक्तिर्मुक्ताप्रसूश्चैव महाशुक्तिश्च शुक्तिका ।
मुक्तास्फोटोऽब्धिमण्डूकी मौक्तिकप्रसवा च सा ॥

हि०-सी (र्शी) प, मोती की सीप। बं०-झिनुक। पं०- सीप। म०-मोत्यां ची शिंप, मोती सींप। गु०-मोती नी छीप । क०—मुक्ति नी सिंपु। मा०-खीपड़ी। फा०-गोशमाही। अ०-सदफ।

अं०-Oyster shell (ओएष्टर शेल)।
,, Shell fish (शेल फिश)।

अस्य गुणाः—

मुक्ताशुक्तिस्तु मधुरा स्निग्धा रुच्या च दीपनी ।
कटूवी च कासशूलघ्नी हृद्रोगस्य च नाशिनी ।
स्नायुरोगहरी चैव ज्वरघ्नी व्रणभेदिनी ॥ रा० नि० ॥

इसके भेदों में से दो मुख्य भेद हैं—१ बिलकुल गोलाई युक्त चौड़े मुखकी, २ कर्णिका की भांति की। इनमें दूसरी ओषधि के काम की है, पहली हीनगुण की है। जिसका भीतर का पर्त्त बिलकुल साफ न हो किन्तु फुंसियों के समान उभारों से भरे हों ऐसी 'मुक्ता शुक्ति' उत्तम होती है।

जलशुक्तिः (जलसीप)

हि०-जलसीप, नदीसीप, सितुहा, सितुही। सं०-जलशुक्तिः। म०-नदी तील शींप। क०-तौरेय सिंपु। ब०-शामुक। गु०-नदीनां छिपनां।
अं-shell (शेल)।

अस्या नामानि गुणाश्च—

जलशुक्तिर्वारिशुक्तिः कृमिसूः क्षुद्रशुक्तिका ।
शम्बूका जलडिम्बश्च पुटिका तोयशुक्तिका ॥
जलशुक्तिः कटुः स्निग्धा दीपनी पाचका च सा ।
रुच्या बलप्रदा गुल्मनाशिनी चक्षुषोर्हिता ।
विषदोषं च शूलं च नाशयेदिति कीर्त्तिता ॥ रा० नि० ॥

९४ शङ्खभेदः क्षुद्रशङ्खः (घोंघा) पृ० २७०

हि०–घोंघा, छोटा शंख । बं०–शामुक । म०–धुके ।

सं०–कोशस्था लघुशङ्खास्तु क्षुद्रकाः क्षुल्लकास्तथा ।
शङ्खनकाश्च शम्बूकाः क्षुद्रशङ्खा नदीभवाः ।

अस्य गुणाः—

शम्बूकाः शीतला नेत्ररुजास्फोटविनाशिनः ।
शीतज्वरहरास्तीक्ष्णा ग्राहिदीपनपाचनाः ॥

अथ विषम् ।

९५ तत्र वत्सनाभः । पृ० २७१

हि०–वत्सनाभ विष, वत्सनाग, अमृतविष, मीठाविष, वच्छनाग, वचनाग, मीठातेलिया, डकरा । बं०–कटविष, मीठाविष, अमृतविष, विष । म०–वचनाग । गु०–बच्छनाग, छिगडियो । क०–वसनवी । ते०–नाभि, वसनाभि । पं०–सिंगिया विष । मा०–सिंगीमोरो । द्रा०–क०–वत्सनाभि ।

अं०–Aconite (एकोनाइट)

ले०–Aconitum Ferox (एकोनाइटम फेरोक्स)

आज कल के वत्सनाभ का आकार बछड़े के नाभि के समान नहीं होता बल्कि–गाजर के आकारवाला गावदुम होता है । जिसको "मीठातेलिया" कहते हैं वह प्रायः कृत्रिम होता है, उक्त वत्सनाभ या श्वेतवत्सनाभ को त्रिफले के काढ़े और तेल में पकाकर बनाते हैं, यह कालेरंग का तेल में भीगा सा रहता है ।

वत्सनाभोऽतिमधुरः सोष्णो वातकफावहः।
कण्ठरुक्सन्निपातघ्नः पित्तसन्तापकारकः॥ रा० नि०॥

९६ हारिद्रविषम्। पृ० २७१

हि०-हलदियाविष, हलदुआ विष। सं०-हारिद्रविषम्, हारिद्रकविषम्, ग्रन्थिविषम्।

९७ शृङ्गिकविषम्। पृ० २७१

हि०-शिंगि (घि) या विष, सिंगीमुहरा, सिंघो, मोहरा।

अस्य शुद्धिः—

विषं तु खण्डशः कृत्वा वस्त्रखण्डेन बन्धयेत्।
गोमूत्रमध्ये निक्षिप्य स्थापयेदातपे त्र्यहम्॥
गोमूत्रं च प्रदातव्यं नूतनं प्रत्यहं बुधैः।
त्र्यहेऽतीते समुद्धृत्य शोषयेन्मृदु पेषयेत्॥
शुद्धयत्येवं विषं तच्च योग्यं भवति चार्त्तिजित्।
एकाष्टकं भवेद् यावदभ्यस्तं तिलमात्रया॥
सर्वरोगहरं नृणां जायते शोधितं विषम्।
अतिमात्रं यदा भुक्तं तदाऽऽज्यं टङ्कणं पिबेत्।
विषं सवेगतो नाशमाशु प्राप्नोति निश्चितम्॥

९८ कालकूटविषम्। पृ० २७१

ते०-कर्कोटकविषमु।

९९ ब्रह्मपुत्रः। पृ० २७२

इसके अलावा "संखियाविष" का नामादि कहते हैं।

सं०-शतमल्ले तु मल्लः स्याद् गौरीपाषाणकस्तथा।
आखुपाषाणकश्चैव लोहशङ्करकारकः॥

हि०-शोमलखार, संखिया। म०-सोमळ, शंखिया। गु०-शोमल, शोमलखार, शंखियो। फा०-मिर्गवमूष। क०-सुंबुळखार।

अं०-Oxide of Arsenic (आक्साइड ऑफ् आर्सेनिक्)

लै०-Oxidum Arsenicum (आक्साइडम आर्सेनिकम)

आखुपाषाणकः स्निग्धः पारदस्य नियामकः।
लोहभेदकरश्चैव वीर्यकृत्कान्तिवर्द्धनः॥

त्रिदोषसर्वव्याधीनां नाशकः परिकीर्त्तितः ।
अशुद्धः स तु विज्ञेयः सप्तधातुविनाशकृत् ॥
दाहं चित्तभ्रमं चैव लालास्रावं तथा मृतिम् ।
अनेकवेदनाश्चैव बहुव्याधिं तृषां तथा ॥
करोत्यतो मूर्खहस्ते न दातव्यः कदा चन ।
तत्समीपे नैव वाच्यः प्राणघातकरो ह्यसौ ॥

६० विषस्य भेदादयः । पृ० २७२

स्थावरं जङ्गमञ्चैव द्विविधं विषमुच्यते ।
दशाधिष्ठानमाद्यं तु द्वितीयं षोडशाश्रयम् ॥

स्थावरविषस्य दश प्रकाराः—

मूलं पत्रं फलं पुष्पं त्वक्क्षीरं सारमेव च ।
निर्यासो धातवः कन्दः स्थावरस्याश्रया दश ॥

अस्य भक्षणदोषाः—

स्थावरं तु ज्वरं हिक्कां दन्तहर्षं गलग्रहम् ।
फेनवम्यरुचिश्वासमूर्च्छाश्च जनयेद्विषम् ॥

जङ्गमविषस्य षोडश प्रकाराः—

दृष्टिर्निःश्वासो दंष्ट्राश्च नखमूत्रमलानि च ।
शुक्रं लाला मुखं स्पर्शं सन्दंशं स्रावमर्दितम् ।
गुदास्थिपित्तशूकानि दश षड् जङ्गमाश्रयाः ॥

जङ्गमाश्रयजीवानां नामानि—

सर्पाः कीटोन्दुरा लूता वृश्चिका गलगोधिकाः ।
जलौकामत्स्यमण्डूकाः शलभाः सकृकण्टकाः ॥
श्वसिंहव्याघ्रगोमायुतरक्षुनकुलादयः ।
दंष्ट्रिणोऽमी विषं तेषां दंष्ट्रोत्थं जङ्गमं मतम् ॥

अस्य दोषाः—

निद्रां तन्द्रां क्लमं दाहं सपाकं लोमहर्षणम् ।
शोकं चैवातिसारञ्च जनयेज्जङ्गमं विषम् ॥

विषसेवनप्रकारः—

नानारसौषधैर्यैं तु दुष्टा यान्तीह नो गदाः ।

ते नश्यन्ति विषे दत्ते शीघ्रं वातकफोद्भवाः ॥
शरद्ग्रीष्मवसन्तेषु वर्षासु च प्रदापयेत् ।
चातुर्मास्ये हरेद्रोगान् कुष्ठलूताऽऽदिकानपि ॥
दातव्यं सर्वरोगेषु घृताशिनि हिताशिनि ।
क्षीराशिनि प्रयोक्तव्यं रसायनरते नरे ॥
ब्रह्मचर्यविधानं हि विषकल्पे समाचरेत् ।
पथ्ये स्वस्थमना भूत्वा तदा सिद्धिर्न संशयः ॥
आचार्येण तु भोक्तव्यं शिष्यप्रत्ययकारकम् ।
विषे शुद्धिर्हि तदपि मात्रया नान्यथा भवेत् ।
सर्वरोगप्रशमनं दृष्टिपुष्टिकरं विषम् ॥

विषसेवने पथ्यपदार्थाः—

घृतं क्षौद्रं सितां क्षीरं गोधूमांस्तण्डुलांस्तथा ।
मरिचं सैन्धवं द्राक्षां मधुरं पानकं हिमम् ॥
ब्रह्मचर्यं हिमं देशं हिमं कालं हिमं जलम् ।
विषस्य सेवको मर्त्यो भजेदतिविचक्षणः ॥

मात्राऽधिकभक्षणस्य परीक्षा—

मात्राऽधिकं यदा मर्त्यः प्रमादाद्भक्षयेद्विषम् ।
अष्टौ वेगास्तदा तेन जायन्ते तस्य देहिनः ॥
रोमाञ्चः प्रथमे वेगे द्वितीये वेपथुर्भवेत् ।
वेगे तृतीये दाहः स्याच्चतुर्थे पतनं भवेत् ॥
फेनस्तु पञ्चमे वेगे षष्ठे वैकल्यमेव च ।
जडता सप्तमे वेगे मरणं चाष्टमे भवेत् ॥
विषवेगानिति ज्ञात्वा मन्त्रतन्त्रैर्विनाशयेत् ।
यावन्नाष्टमवेगं तु संप्राप्नोतीह मानवः ॥

विषदूरीकरणोपायाः—

अतिमात्रं यदा भुक्तं वमनं तस्य कारयेत् ।
दद्यात्तावदजादुग्धं यावद्भ्रान्तिर्न जायते ॥
अजादुग्धं यदा कोष्ठे स्थिरीभवति देहिनः ।
विषवेगं ततो जीर्णं जानीयात् कुशलो भिषक् ।

विषं हन्याद्रसः पीतो रजनीमेघनादयोः ।
सर्पाक्षिटङ्कणं वाऽपि घृतेन विषहृत् परम् ॥
पुत्रजीवकमज्जा वा पीता निम्बकवारिणा ।
विषवेगं निहन्त्येव वृष्टिर्दावानलं यथा ॥

विधिसेवितविषगुणाः—

विषं रसायनं बल्यं वातश्लेष्मविकारनुत् ।
कटु तिक्तं कषायं च मदकारि सुखप्रदम् ॥
व्यवायि च शिरोद्दाहि कुष्ठवातास्रनाशनम् ।
अग्निमान्द्यश्वासकासप्लीहोदरभगन्दरम् ॥
गुल्मपाण्डुव्रणार्शांसि नाशयेद्विधिसेवितम् ॥

६१ अथोपविषाः । पृ० २७३

स्नुह्यर्कलाङ्गलीगुञ्जाहयारिविषमुष्टिकाः ।
जैपालोन्मत्ताहिफेनं नवोपविषजातयः ॥
एषां गुणा अतीते वर्गे तत्र तत्र द्रष्टव्याः ।

एषां शुद्धिः—

दोलायन्त्रेण पयसि स्थापयित्वा पचेद्दिनम् ।
एतेनैव विशुद्ध्यन्ति सर्वाण्युपविषाणि च ॥
चिञ्चापत्ररसे कर्षे वस्त्रपूतं पलद्वयम् ।
स्नुहीक्षीरं रौद्रयन्त्रे भावयेद्यत्नतः सुधीः ॥
द्रवे शुष्के समुत्तार्य सर्वरोगेषु योजयेत् ।
शेषाणामुपविषाणां शुद्धिस्तत्र तत्र द्रष्टव्याः ॥

इत्यष्टमो धात्वादिवर्गः समाप्तः ॥ ८ ॥

अथ नवमो धान्यवर्गः ॥ ९ ॥

१ धान्यम् (धान) । पृ० २७३

हि०-धान, चावल, चाउर । बं०-चाउल । म०-भात, साल, तांदुल । गु०-चोखा । क०-नेल्लु । ते०-धान्यमु, वोयमु । फा०-बिरंज । अ०-उरज़, उर्ज़ । पं०-चांवल । अं०-Rice (राइस) ।

ले०-Oriza Sativa (ओरिज़ा साटिवा)।

२ शालिधान्यम् (शालिधान)। पृ० २७३

हि०-शालिधान, वासमती चावल। गु०-शालच। क०-नेलु। म०-सालि। यू०-चावल मोगरा। फा०-बिरंज, मोगरा। अ०-उर्ज़, मोंजरा। बं०-शालिधान्य, शालिचाउल, हैमन्तिक धान्य, आमनधान्य।

३ रक्तशालिः (लाल शालि) पृ० २७६

हि०-लालशालि, दाद्खानी, दाउद खानी चावल। बं०-दाउद्खानि। ते०-एर्र निवर्ण गल धान्यमु।

ले०-Oriza Sativa (ओरिज़ा साटिवा)

भेदसहितानामेषां गुणाः—

रक्तशालिर्महाशालिः कलमा षष्टिका परा।
खञ्जरोटा पसाही च जीरकाऽन्या कपिञ्जला॥
सौगन्धी शूकला चान्या विलवांसी कचोरका।
गरुडा रुक्मवन्ती च कलमाऽन्या तथाऽपरा॥
बिल्वजा मागधी पीता ता अष्टादश शालयः।
रक्तशालिस्त्रिदोषघ्नी चक्षुष्या मूत्ररोगहा॥
महाशालिर्गुरुर्वृष्या चक्षुष्या बलवर्द्धिनी।
शीता गुरुस्त्रिदोषघ्नो मधुरा परषष्टिका॥
जीरका वातपित्तघ्नी कलमा श्लेष्मपित्तहा।
कपिञ्जला श्लेष्मला स्यान्मागधी कफवातला॥
बिलवांसी गुरुश्चापि पित्तघ्नो शुक्रबर्द्धिनी।
शूकला पित्तवातघ्नी कचोरा पित्तनाशिनी॥
गरुडाऽन्या च वातघ्नी पित्तमूत्रगदापहा।
रुक्मवन्ती लघू रुचिबलपुष्टिकरो मता॥
कलमाऽन्या लघुः पथ्या वातश्लेष्मविबर्द्धिनी।
बिल्वजा मागधी पीता सामान्यास्ता गुणागुणैः॥
रुचिकृद् बलकृन्मूत्रदोषघ्नी च श्रमापहा।
दग्धग्रामाचले जाताः शालयो लघुपाकिनः॥

सुपथ्या बद्धविण्मूत्रा रूक्षाः श्लेष्मापकर्षिणः ।
केदारप्रभवा वृक्षा वातपित्तविनाशिनः ।
रक्तपित्तविकारघ्ना वातलाः कफकारकाः ॥
देशे देशे विभिन्नानि नामानि परिलक्षयेत् ।
समान् गुणैश्च सर्वांस्तान् भूमिभागोद्भवान् विदुः ॥
शालयश्छिन्नरोहाश्च मूत्रला वातला हिमाः ॥ हारीतः ॥

४ व्रीहिधान्यम् (व्रीहीधान) । पृ० २७५

हि०-व्रीहीधान, आशुधान, षष्टिकभेद, बोरोधान ।
कृष्णव्रीहिस्त्रिदोषघ्नी मधुरा कार्श्यहा तथा ।
पित्तघ्नी पिच्छिला शुक्ररूपवर्णबलप्रदा ॥ वै० नि० ॥

५ षष्टिकधान्यम् (साठीधान) । पृ० २७५

हि०-साठी धान, साठी चावल ।
यो व्रीहिः षष्टिरात्रेण पच्यते स तु षष्टिकः ।
स्निग्धो ग्राही गुरुः स्वादुस्त्रिदोषघ्नः स्थिरो हिमः ।
षष्टिको व्रीहिषु श्रेष्ठो गौरश्चासितगौरतः ॥ (वाग्भटः) ।

अथ शूकधान्यानि ।

६ यवः (जव) पृ० २७६

हि०-जव, जो, जौ । म०-जौं । क०-मुडजयव, मुंड जयने । ता०-बार्लि-अरिसु, बार्लि अरिसु । तै०-यवधान्य, गोधुमलु यवल नेड धान्यमु । फा०-जव, जओ । अ०-शईर, श्यईर । बं०--जब । ने०-टोस । भू०-नस । गु०-जऊ, यमवा । अं०- Barley (बारली) ।
ले०-Hordeum Vulgare (हारडीयम बलगेयर)

अस्य नामानि—

यवस्तु मध्यः सितशूकसंज्ञो दिव्योऽक्षतः कञ्चुकिधान्यराजौ ।
स्यात्तीक्ष्णशूकस्तुरगप्रियश्च शक्तुर्हयेष्टश्च पवित्रधान्यम् ॥

७ गोधूमः (गेहूं) पृ० २७६

हि०-गेहूं, गहुम, गहूं । बं०-गम । म०-गहूं । को०-पोटे गुल धुवे ।

गु०- घउं, घेऊं'। क०-गोधी, गोधि, गोदी । तै०- गोदुमु, गोधुम, गोधुमतु । फा०-गंदुम अ०-हिन्ता, हिंताह, बुर्र । अं०-Wheat (ह्वीट)

ले०-Triticum Vulgare (ट्रिटिकम वलगेरो)

अस्य नामानि—

गोधूमो बहुदुग्धः स्यादरूपो म्लेच्छभोजनः ।
यवनो निस्तुषः क्षीरी रसालः सुमनश्च सः ॥

अथ शिम्बीधान्यानि ।

८ मुद्गः (मूंग) पृ० २७७

हिं०-मूंग, मुंग । बं०-मुग । म०- मूग, हिरवे मूग । गु०-मग, कच्छो । क०—हेसयेरु, पच्चे हेसरु, हेसरू । ते०—पेसलु, पच्चा पेसलु । प०—मुजि, मुंगी । प्रा०-हरिमुं । फा०-बुनुमाष, बनोमाश, माष । मा०-मूंग । द्रा०—पच्चुपपर । अ०—मजमाश, माष, मज ।

अं०—Green Grain (ग्रीन ग्रेन) ।

ले०- Phaseolus Mungo (फेसीओलस मूंगो)

अस्य नामानि—

मुद्गस्तु सूपश्रेष्ठः स्याद्वर्णार्हश्च रसोत्तमः ।
भुक्तिप्रदो हयानन्दः सुफलो वाजिभोजनः ॥

कृष्णमुद्गस्य नामगुणाः—

कृष्णमुद्गस्तु वासन्तो माधवश्च सुराष्ट्रजः ।
कृष्णमुद्गस्त्रिदोषघ्नो मधुरो वातनाशनः ।
लघुश्च दीपनः पथ्यो बलवीर्याङ्गपुष्टिकृत् ।

हरिन्मुद्गस्य नामगुणाः—

शारदस्तु हरिन्मुद्गो धूसरोऽन्यश्च शारदः ।
हरिन्मुद्गः कषायश्च मधुरः कफपित्तहा ।
रक्तमूत्रामयघ्नश्च शीतलो लघुदीपनः ॥

धूसरमुद्गगुणाः—

तद्वच्च धूसरो मुद्गो रसवीर्यादिषु स्मृतः ।

कषायो मधुरो रुच्यः पित्तवातविबन्धकृत् ॥ रा० नि० ॥

९ माषः (उरद) पृ० २७८

हि०-उड़द, उड़िद, उरद, उरिद, उर्दी । बं०-माष कलाय । म०-उड़िद, उड़ीद । गु०-उडद, अडद । क०-उडु, उद्दु, उंदु । तै०-मिलुमलु, मिनिउलु, मिनुमलु । फा०-माष । अ०-माषा । पं०-माह । द्रा०-उदुंडु । क०—उद्दु ।

अं०-A Sort of Kidney Bean (ए सोर्ट ऑफ् किडनी बीन) ।

ले०—Phaseolus Radiatus (फेसीओलस रेडीएटस्) ।

अस्य नामानि—

माषस्तु कुरुबिन्दः स्याद्धान्यवीरो वृषाङ्कुरः ।
मांसलश्च बलाढ्यश्च पित्र्यश्च पितृभोजनः ॥

१० राजमाषः (बोड़ा) पृ० २७८

हि०-राजमाष, बोरा, बोड़ा, चौरा, चोरा, चवरा, लोबिया, रैसर-मास, बजरबट्टू । बं०-बरवटी, बरवटी कलाय, बर्वटी । म०-नील उरीद, चंवलया, अलंसुदा । गु०-चोला (ल), चोलाभेद । क०-बरवटा, अलसंदे (दि), नीलउंडु । तै०-दन्तपेसलु, अलसुन्दुलु । पं०-रैस, रवांह । फा०-छोवह, लोबिया । अ०-फरिका, फिरीका । मां०-चंवला । द्रा०-करामणि ।

अं०-Chinese Dolicas (चाइनीज डोलीकस)

ले०-Vigna Catiang (विगना काटियंग) ।

अस्य सूपगुणाः—

राजमाषभवः सूपः स्वादू रूक्षः कषायकः ।
ग्राही गुरुर्वातकरः स्तन्यकृद्रुचिकारकः ॥

११ निष्पावः (भटवासु) पृ० २७८

हि०-निष्पाव, भटवासु, भेटरासु, भटवास, भँटवास, राजशिम्बी के बीज । बं०-भटरासु, राजशिंबी बीज, भटेरासु । म०-पावटे, कड़वे वाल । गु०-ओलीया । ओलिय वाल । क०-आवरे, तोरे आवरे । तै०-अनपचेट्टु ।

ले०-Lablab Vulgaris (लबलब वलगारीस)

रक्तनिष्पावगुणाः—

रक्तनिष्पावको रुच्यो मधुरः शीतलो गुरुः।
किंचित्कषायो बल्यश्च वातलः पुष्टिकृन्मतः॥
आध्मानकृद् गुणास्त्वन्ये निष्पावसदृशा मताः॥

नदीनिष्पावगुणाः—

नदीनिष्पावकस्तिक्तः कटुर्वातकरो गुरुः।
रक्तप्रदः कफकरो रुचिकृत्तुवरो मतः।
विषदोषहरश्चैव मुनिभिः परिकीर्त्तितः॥ (नि० र०)

१२ वनमुद्गः (मोठ) पृ० २७८

सं०—कुमीलकः, अमृतोऽरण्यमुद्गश्च वल्लीमुद्गश्च कीर्त्तितः। हि०-मोठ, मोट, मुहट, मुगानो, मोथी । बं०-वनमूंग । म०-मटक्या। गु०-मठ। क०-मुग, हेसरुभेद। तै०-कंकं पेसालु, वनमुद्र चेट्टु। मलावा०-मकुष्ठक। फा०-माषहिन्दी, माशहिन्दी। प०-मा०-मोठ।

अं०-Aconite Leaved Kidney Bean
(एकोनाइट लीव्ड किडनी बीन)।
ले०-Phaseolus Aconite Folius. (फेजीओलस एकोनाइट फोलियस

अस्य सूपगुणाः—

मकुष्ठसूपोऽल्पबलः पाचनो दीपनो लघुः।
चक्षुष्यो बृंहणो वृष्यः पित्तश्लेष्मास्त्ररोगनुत्॥

१३ मसूरः (मसुरी) पृ० २७९

हि०—मसूर, मसूरक, मसूरी, मसुरो। बं०-कलाय मसुरि, मसुरि कलाय। म०-चणई, मसुरा। गु०-मसूर। क०-चणगि। ता०-मिसुर, पुरपुर। तै०-मसूरपप्पु, चिरशन मल्लु, मिसूर पप्पु। फा०-बुनो सुर्ख, नेक सुर्ख, बिसुक, मरजूनक। अ०-अदस। अं०-Lentil (लेण्टिल)।
ले०-Ervum Lens (एरवम् लेन्स)।

अस्य नामानि—

मसूरो रागदालिस्तु मङ्गल्यः पृथुबीजकः।
सूरः कल्याणबीजश्च गुरुबीजो मसूरकः॥

अस्य पर्णशाकगुणाः—

तत्पर्णशाकं तुवरं लघु तिक्तञ्च कीर्त्तितम् ।

१४ आढकी (अरहड़) पृ० २७१

हि०—अरहड़, अड़हर, रहर, रहरी, रहड़, तुवर । बं०—आड़री, अडर । म०—तुरी, तूर । गु०—तुरदाल्य, तुबर । क०—तोवरी, तोगरी, कटलाकुट । प०—अड़ड़ । तै०—कादुलु, कुंदुलु । मा०—तूर, आरडे । द्रा०—तोवरै । फा०—शाखल, शाख़ुल, शाख़ूल । अ०—शाख़ुल, शांज़, सांज़ ।

अं०—Pigeon Pea (पीजन पी) ।

ले०—Cajanus Indicus (केजेनस इण्डिकस)

अस्या नामानि—

आढकी तुवरी वर्या मृत्तालं च मृतालकम् ।

काक्षी करवीरभुजा वृत्तबीजा सुराष्ट्रकम् ॥

अस्या गुणाः—

अर्शोनाशकरी प्रोक्ता घृतयुक्ता च वातहा ।

कफपित्तहरा लेपैः सेकैर्मेदःकफापहा ॥

तुवरीदालिका पथ्या किञ्चिद्वातकरा मता ।

कृमित्रिदोषशमनी घृतयुक्ता त्रिदोषहा ॥

श्वेताढकीगुणाः—

श्वेता तु तुवरी गुर्वी वातपित्तप्रकोपदा ।

अम्लपित्तकरा ग्राहिण्यपथ्याऽऽध्मानकारिणी ।

रक्ताढकीगुणाः—

रक्ता तु तुवरी रुच्या बल्या पथ्या ज्वरापहा ।

पित्तसन्तापादिनानारोगनाशकरी मता ॥

कृष्णाढकीगुणाः—

कृष्णा तु तुवरी बल्या चाग्निदीप्तिकरी मता ।

पित्तदाहप्रशमनी ऋषिभिः परिकीर्त्तिता ॥

१५ चणकः (चना) पृ० २७१

हि०—चने, छोला, रहिला, रोहिला, बूंट । म०—हरबरा, हरभरे, हरभरा, हरभट्या, चणे । बं०—छोला । गु०—चण्या, चणा । क०—कडले, विलिय-

कडले, मोने गडले । तै०-चनगालु, शलंगालु, शेणगुलु, शनिकलु। फा०-नखूद । अ०-हमस, हूमस, हिम्मंस । मा०-चिणा । पं०-छोले। द्रा०-कडलै । अं०-Gram (ग्राम)

ले०-Cicer Arietinum (सीसर एरीएटीनम् ।

कृष्णचणकगुणाः—

कृष्णस्तु चणकः शीतो मधुरश्च रसायनः ।
बलकृच्छ्वासकासघ्नः पित्तातीसारपित्तहा ॥ (नि० र०)

१६ कलायः (मटर) पृ० २७९

हि०-मटर, मट्टर । बं०-मटर, मठर, बांटुला मटर । म०-वाटाणे। गु०-मटाणा, बटाणा । क०-बटूकडले, बटाणि । तै०-पेद्दईत्र, गुंडुचणगलु, पेद्दईवा । पं०-मटर छोटा । मा०-मटर । यू०-मटर काबिली, मटरकबिली । फा०-जलबान, कसंग । अ०-खलज, हुब्बुल बकर ।

अं०-Field Pea (फील्ड पी)

ले०-Pisum Sativum (पाइसम साटिवम)

सं०—कलायो मुण्डचणको हरेणू रेणुकः स्मृतः ।

अस्य गुणाः—

कलायः कुरुते वातं पित्तं दाहकफापहः ।
रुचिपुष्टिप्रदः शीतः कषायश्चामदोषकृत् ॥ (रा० नि०)

१७ त्रिपुटः (खेसारी) पृ० २७९

हि०-खेसारी, खिसारी, कसूर, कस्सा, मटर भेद । बं०-खेसारी कलाय । म०-लांक, लांग । गु०-मटर, मकाई । ते०-लांक । फा०-मासंग, जलबान । अ०-हबुल बकर, खलज ।

अं०-Chickling Vetch (चिक्लिंग वेच) ।

ले०-Lathyrus Sativus (लेथीरस सेटिवस) ।

अस्य गुणाः—

रूक्षो विशोषी मधुरः प्रदिष्टः स्नायुं करोत्यस्थिगतं बलिष्ठम् ।
शूलं विबन्धभ्रमशोफकर्त्ता दाहार्शहृद्रोगविकारकारी ॥ (हा० सं०)

१८ कुलत्थः (कुलथी) पृ० २८०

हि०-कुरथी, कुल्थी, कुर्थी । म०-कुलिथ, कुळाथ, हुळगे । क०-हबु-

बले तीसी, हुरुली । म०-कुलीथ । तै०-बुलाबुलु, बुलबुंलु, ओलवलु । गु०-कुलथी । यू०-गुलथी । फा०-किल्लत, मुखहिन्दी, माशहिन्दी । हब्बुल्कतल, हब्बुल किलत ।

अं०-Two Flowered Dolicos (टू फ्लावर्ड डोलीकोस) ।

ले०-Dolichos Biflorus (डोलीकोस बाईफ्लोरस) ।

अस्य नामानि—

कुलित्थस्ताम्रबीजश्च श्वेतबीजः सितेतरः ।

१९ तिलः (तिल) पृ० २८०

हि०-तिल, तील, तिल्ली, मीठा तिल । बं०-तिल गाछ । म०-तिल, तील । गु०-तलं । द्रा०-क०-एलु, एल्लु । ते०-तोबुलु, मंचिनूने, नुव्वुलु, नुव्वुलु । ता०-बल्लेनेय, बल्लेन्नेय । द्रा०-बाराक तिल । फा०-कुंजद, खसखास स्याह, कोकिनार । अ०-सिमासिम, बजरुल खस खासुलबर्री ।

अं०-Sisamum Nigar seeds (सिसेमम निगर सीड्स्) ।

ले०-Sesamum Indicum (सिसेमम इण्डिकम) ।

अस्य नामानि—

तिलस्तु होमधान्यं स्यात्पवित्रः पितृतर्पणः ।
पापघ्नं पूतधान्यश्च जटिलस्तु वनोद्भवः ॥

अस्य पिण्याकगुणाः—

पिण्याकं मधुरं रूक्ष्यं तीक्ष्णं नेत्रविकारकृत् ।
मलावष्टम्भकं रूक्षं कफवातप्रमेहनुत् ।
पित्तास्रबलपुष्टिं च ददातीति भिषङ्मतम् ॥ (नि० र०)

व्यवहार—बीज । मात्रा—६ माशे से १ तोला ।

२० अतसी (तीसी) पृ० २८०

हि०-तीसी, तिसी, अलसी, मसीना । बं०-तिसी, मसीना । म०-जबस, अलशी । गु०-अलशी । क०-अगसि, अनसीगिड, असगे । तै०-नल्ल यगसि चेट्टु, अलसिवित्तु । ता०-अलशी विराई । काश्मीर०-केवन, अलिश । काशगार०-जिघिर । तुर्की०-जिग्गर । फा०-तुख्मे कतान, ब-

ज़ुरग, बज़ुर्ग। अ०-बज़रहल कत्तान, बज़रुल कत्तान, बज़रुल्कतां। द्रा०-अलि सिवरै। अं०-Common Flax (कामन फ्लैक्स)।
,, Linseed (लीन्सीड)।
ले०-Linum Usitatissimum (लीनम यूसीटेटिस्सीमम)।

व्यवहार—बीज। मात्रा-५-१० माशे।

पर्णमस्याः कासकफवाततुच्छ्वासहृत्तथा। नि० र०॥

२१ रक्तसर्षपः (सरसों) पृ० २८१

हि०-सरसों, सरिसो, सर्सो। बं०-सरीसा, सरिषा, सर्षे। म०-सिरस, शिरस, शिरष। मा०-सरसूं, सरसों। गु०-शरशव, सरशव। क०-सासवे, सासेव, विलिय सासेव, सासुवे। ते०-पाचा आश्वालु, आवालु। द्रा०-कडुहु। प०-सरों। फा०-सर्षफ, सरशफ, सिपन्दान। अ०-उर्फ अबीयद, खर्दले अबयज़, हुर्फ।
अं०-Sinapis Alba (सिनापिस एलबा)।
ले०-Brassica Campestris (ब्रासिका केम्पेस्ट्रिस)

व्यवहार—बीज। मात्रा-३-६ माशे।

२२ गौरसर्षपः (सफेद सरसों) पृ० २८१

हि०-सफेद सरसो, सफेद सरिसो। सं०-गौरसर्षपः, सिद्धार्थः। बं०-श्वेतसर्षप, श्वेतसर्षे, सिद्धार्थ, श्वेतसिरिषा। म०-शेतसिरस। ते०-नल्ल मरि चेट्टु, तेलावारु। अं०-The Rocket (दी राकेट)।
ले०-Eruca Sativa (एरुका साटिवा)।

अस्य नामानि गुणाश्च—

तीक्ष्णकश्च दुराधर्षो रक्षोघ्नः कुष्ठनाशनः।
सिद्धप्रयोजनः सिद्धसाधनः सितसर्षपः॥
सिद्धार्थः कटुकस्तिक्तो रुच्योष्णो वातरक्तकृत्।
ग्रहपीडाऽर्शत्वग्दोषशोथव्रणविषापहः॥

२३ राजिका (राई) पृ० २८१

हि०-राई, लालराई, माकड़ा राई। बं०-राइ सर्षप, राइ सरिषा, राइ-सर्षे। म०-मोहरी, रायी, मुहरी, राई। गु०-राई। क०-सासिराई, सासु-

भेदराई । तै०-बर्गालु, अबलो, आबालु । ता०-कड़ये । अ०-खरदल, खर्दल । फा०-सर्शफ । मा०-राई । पं०-अरयो । द्रा०-कडुह ।

अं०-Mustard seeds (मस्टर्ड सीड्स) ।

ले०-Brassica juncea (ब्रासिका जून्सीआ) ।

व्यवहार—बीज । मात्रा-३-६ मासे ।

राजिकापत्रशाकगुणाः—

राजिकापर्णशाका तु कट्वी चोष्णा बलप्रदा ।
स्वाद्वी पित्तकरी ज्ञेया कृमिवातकफापहा ।
कण्ठरोगहरा चोक्ता पूर्वैः सुज्ञचिकित्सकैः ॥ रा०नि० ॥

२४ कृष्णराजिका (कालीराई) पृ० २८१

हि०-कालीराई, राजसरसों इत्यादि । बं०-काल सर्षे, राई सरिषा, कज्जला, कृष्णराई । गु०-प०-काली राई । म०-कालतिखो । मा०-राई-भेद । तै०-अबलो । क०-बिलेससिवे, करि सासुवे ।

अं०-Black Mustard (ब्लैक मस्टर्ड)

ले०-Brassica Nigra (ब्रासिका निगरा)

अस्या नामानि—

राजक्षवकः कृष्णा तीक्ष्णफला राजिका राज्ञी ।
सा कृष्णसर्षपा विज्ञेया राजसर्षपाख्या च ॥

अस्या गुणाः—

राजसर्षपकश्चोष्णः पित्तलो दाहकारकः ।
कटुस्तिक्तो गुल्मकुष्ठकण्डूव्रणरुजाऽपहः ।
वातशूलं नाशयतीत्येवं पूर्वैर्निवेदितम् ॥

अथ क्षुद्रधान्यम् ।

२५ कङ्गुः (कंगुनी) पृ० २८१

हि०-कंगनी, कांकुनी, कंगुनी, कांगुनी, कौनी, टंगुनी । बं०-कांगुनी, कानोधान । म०-कांग । गु०-कांग । क०-नवणे । तै०-प्रेकणपुचेट्टु । फा०-गल, अरजुन । अ०-दुख्न ।

लै०-Papaver Dubium (पापावर डुबियम)

२६ चीनकः (चीना) पृ० २८२

हि०-चीना, चिन्ना, चैना। बं०-चिने। म०-राले। गु०-चीणो, चीणा। क०-चीनक। फा०-उरजान, उरजन। अ०-बारेगा।

अं०-Millet (मिलेट)

लै०-Panicum Miliari (पेनिकम मिलियरी)

सं०-चीनकः काककङ्गुश्च सुश्लक्ष्णः श्लक्ष्णकः स्मृतः।

वरकस्य नामगुणाः—

सं०-वरकः, स्थूलकङ्गुश्च, रूक्षः स्थूलप्रियङ्गुकः। हि०-चीनाभेद। बं०-चीनाविशेष। म०- वर्या। गु०-वर्यो।

लै०-Panicum Miliari (पेनिकम मिलियरी)

वरको मधुरो रूक्षः कषायो वातपित्तकृत्। (रा० नि०)

नर्त्तकस्य नामगुणाः—

सं०-नर्त्तको नृत्यकुण्डश्च भूचरा च मलीयसः।
कठिनो गुच्छकणिशो लच्छनो बहुपत्रकः॥

हि०-नर्त्तक, मडुआ। म०-नाचणी, नागली। गु०-नागली। क०-टपिगुचणे। फा०-मंडवा। अं०-Thrick spiked Eleusine (ट्रिक स्पाइकूड एल्युसीन)। लै०-Eleusine Coracana (इल्युसीन कोरेकेन)।

नर्त्तकस्तुवरस्तिक्तो मधुरस्तर्पणो लघुः।
बल्यः शीतः पित्तहरस्त्रिदोषशमनो मतः।
रक्तदोषहरश्चैव मुनिभिः पूर्वमीरितः (नि० र०)

२७ श्यामाकः (सांवा) पृ० २८२

हि०-सांवा, समा, सामा। बं-शामा, श्यामाधान। म०-सावे, काथळी। गु०-शामो। क०-संधे, शामे, सावि। तै०-श्यामालु, चामलु। मा०-सांवों। द्रा०-शामै। पं०-सुबांक। यु०-तवजीक, तमातीर। अ०-शामाख, समाख, समाक।

लै०-Panicum Frumentaceum (पेनीकम फ्रूमेण्टेसीयम)

अस्य नामानि—

श्यामाकः श्यामकः श्यामस्त्रिबीजः स्यादविप्रियः।

सुकुमारो राजधान्यं तृणबीजोत्तमश्च सः ।

गुणास्तु—

श्यामाको मधुरः स्निग्धः कषायो लघुशीतलः ।

वातकृत्कफपित्तघ्नः संग्राही विषदोषनुत् । (रा० नि०)

२८ कोद्रवः (कोदो) पृ० २८२

हि०–कोदोधान, कोदव, कोदो । बं०–कोदोधान्य । म०–कोद्र, हरीक, हरिक कोद्रु । गु०–कोदरो । क०–हारकं । तै०–आलुचालु । अ०–कोद्र । फा०–कोदिरम् ।

अं०–Kodra (कोड्रा)

लै०–Paspalum Serabiculatum (पासपेलम सेराबिक्यूलेटम)

वनकोद्रवः (वनकोदो)—

गु०–जंगली कोदरो ।

उद्दालकस्तु वीर्योष्णो लेखनो वातलो लघुः ।

रूक्षः स्वादुः कषायश्च श्लेष्मजिद्बद्धमूत्रविट् ॥ (शो० नि०)

२९ कुसुम्भबीजम् (कुसुम के बीज) पृ० २८२

हि०–कुसुमके बीज, बरे, बरें, कर, करे, करड, करें । बं०–कुसुमफल । म०–कर्डया । गु०–करड, कुसुंबा ना बीज । यू०–कर्ड । पं०–कुसुम्भा । मा०–कुसुम्बो । फा०–तुख्म कापसा, खरुकदाना । अ०–हब्बुल अस्फर, हब्ब कर्त्तम, हब्बुलमास्फर ।

३० गवेधुका (गर हेडुआ) पृ० २८२

हि०–गरहेडुआ, गरहेडु (दु) वा, गरगरी धान । बं०–गड़गड़ दे धान, गुरगुड़ । म०–कसईचे बीज । पं०–संकलु, रानजोंधला । गु०–कसई ।

अं०–Coix Barbata (कोइक्स बारबेटा)

लै०–Coix Lachryma jobi (कोइक्स लाचरिमा जोबी)

३१ नीवारः (तीनी) पृ० २८३

हि०–तीनी, तीन्नी, तिली, तिन्ना, निवार । बं०–उड़िधान्य । म०–देवभात । गु०–वंटी, नानवी । क०–ज्यर हुमेधे, जर हुमेधे । तै०–निवरी वट्टु ।

लै०–Panicum Italicum (पानीकम इटालिकम)

अस्य नामानि—

नीवारोऽरण्यधान्यं स्यान्मुनिधान्यं तृणोद्भवम् ।

३२ यावनालः (जुआर) पृ० २८३

हि०-जुआर, ज्वार, जुवार, जिनोरा, छोटीजोन्हरी, मसुरिया। बं०-जुयारा, जोयार, जनार। म०-जोंधले, ज्वारी। गु०-जाख, जुवार। क०-जोल, जोला। तै०-जोन्नलु। द्रा०-शोलं। फा०-जुरेमका, जिरह मका, गावरस हिन्दी। अ०-हंतारुमिया, खंदरूस, हिन्तये रुमिया।

मकायस्य नामगुणाः—

मकायस्तु महाकायः कटिजः काण्डजः स्मृतः।
शिखालुः संपुटान्तस्थो यावनालसमो गुणैः॥

हि०-मक्का, भुंटे। म०—मका। गु०-मकाई। तै०-जनपटलु।
अं०-Indian Corn Maize (इण्डियन कोर्न मेझ)
लै०-Zia Maize (झिया मेझ)

महाकायस्तृप्तिकरो वातलः कफपित्तहृत्।
विष्टम्भजनको रूक्षः कोमलो रुचिपुष्टिकृत्॥

इति नवमो धान्यवर्गः॥ ९॥

अथ दशमः शाकवर्गः॥ १०॥

१ वास्तूकम् (बथुआ) पृ० २८४

हि०-बथुआ, बथुया, चिल्लीशाक। बं०-बेतुया, बेतोशाक। म०-चाकवत, चकवत्त, चिंविल, चिखिल। गु०-टांको, बथवो, बाथरो, चीली। मा०-बथवो। क०-चक्रवर्त्त, चक्रवती, बिलियचिल्लीके। फा०-मुसेलेसा, सरमक, सलमह। अ०-रोक्बतुलबजामेल, कुतुफ, कतफ।
अं०-White Goose Foot (व्हाइट गूज़ फूट)।
लै०-Chenopodium Album (चेनोपोडियम एलबम)

व्यवहार—बीज। मात्रा—३-९ माशे।

शाकं सर्वमचक्षुष्यं चक्षुष्यं शाकपञ्चकम्।
जीवन्ती वास्तु मत्स्याक्षी मेघनादः पुनर्नवा॥

२ गौडवास्तूकम् (बड़ा बथुआ) पृ० २८४

हि०-बड़ाबथुआ, चिल्लीशाक । बं०-बेतोशाक । म०-चिविळ, चाकवताची भाजी । गु०-चोल । क०-बिलीय चिल्लिके ।

अं०-Purple Goose Foot (पर्पल गूज़ फूट) ।

लै०-Chenopodium Viride (चेनोपोडियम् विरिडे) ।

सं०-चिल्ली, चिल्लिका, तुनो, अम्रलोहिता, मृदुपत्री, क्षारदला, क्षारपत्रा, वास्तुकी, महद्दला, गौडवास्तुकम् ।

अस्या गुणाः—

चिल्ली वास्तुकतुल्या च सक्षारा श्लेष्मपित्तनुत् ।
प्रमेहमूत्रकृच्छ्रघ्नी पथ्या च रुचिकारिणी ॥ रा० नि० ॥

३ पोतकी (पोय) पृ० २८४

हि०-पोय (शाक), पोयका साग, पोई का शाग । बं०-पूंई, पुइंशाक । म०-बेल पोई, मयाल, लथुमयालु, थोरमयालु, मयाला, मयलु, माड़वी, राजगिरा, रुद्बेलि । गु०-पोथी । क०-हरिदोड्डुबसले, बसले । पं०-पोई-साग । मा०-पोई । तै०-बच्चलि । द्रा०-बशल कीरे ।

अं०-Indian Spinach (इण्डियन स्पाईनक्)

लै०-Basella Alba (बेसिला एलबा) ।

उपोदकी द्वितीया च क्षुद्राऽन्या वनजा तथा ।
चतुर्थी मूलपोती च गुणैः सर्वाः समाः स्मृताः ॥

४ श्वेतमारिषः (सफेद मरसा) पृ० २८४

हि०-मरसा,नवड़ा नवड़ो, सफेद मरसा साग, गन्हार । बं०-कांटानटे । कांटानटेर शाक, श्वेत कांटानटे । गु०-डाभो, राजगरो । उ०-नेउटा शाग । ते०-डुगल कुड़ा । म०-पोकल्याचो भाजी, माठाची भाजी । फा०-बुस्तान अफरोज़ ।

लै०-Amarantus Paniculatus (अमरेण्टस् पानिक्युलेटस्)

५ रक्तमारिषः (लाल मरसा) पृ० २८४

हि०-लाल मरसा, लालनवड़ा । बं०-रक्त कांटानटेर शाक, लाळ कांटानटेर । म०-माठाची भाजी । गु०-माटी चुलाई ।

ले०-Amarantus Gangeticus (अमरेण्टस् गैञ्जेटिकस्)

६ तण्डुलीयः (चौलाई) पृ० २८६

हि०-चौलाई का शाक, चौराई का साग, चवड़ाई, चवलाई, गेन्हड़ो साग। बं०-क्षुदेनटे, नटेशाक, कांटानटे। म०-तांदुलजा, तांडुलजा, तांदुळिजा। गु०-तांदलजानी भाजी, तांजलजो, तांदलजो। क०-किरुकुशाल, तप्पलु, मुल्लुकिरई। तै०-मोलाकुरा। ता०-मुलकीरै। फा०-सफेदमर्ज, सुपेदमर्ज। अ०-बुकले यमानीया, बुकलूये यमानिया।

अं०-Prickly Amaranth (प्रिक्ली अमरेन्थ)

ले०-Amaranthus Spinosus (अमरेन्थस् स्पाइनोसस्)

कांटेवाली, बिना कांटेवाली, हरेपत्ते की, लालपत्ते की, नीलापनयुक्त या लालीयुक्त नीले पत्ते की, इस प्रकार से चौलाई के अनेक भेद हैं।

अस्य मूलगुणाः—

तण्डुलीयकमूलं स्यादुष्णं श्लेष्मविनाशनम्।
रजोरोधकरं रक्तपित्तप्रदरसंहरम्॥ आ० सं०॥

७ पानीयतण्डुलीयम् (जलचौलाई) पृ० २८६

हि०-जलचौलाई, चौराईभेद। बं०-चांपानटे, जलतांदुलजा। गु०-पाणीनो तांदलजो। ते०-कुईकोरा, कुईकोरी।

८ पलक्या (पालक) पृ० २८६

हि०-पालक शाक, पालकी, पलाका, पालाकी। बं०-पालंशाक, पालंगशाक, पालेक। म०-पालख, पोई शाक, पालक। गु०-पालखनी भाजी, टांको। क०-पालक्य, मुकुन्दन गिड। पं०-पालख (क)। मा०-पालखो। फा०-इस्पनाख, अस्पनाख, अस्पानाख।

अं०-Spinage (स्पाइनेज़)।

ले०-Beta Vulgaris (बेटा वलगरिज़)।

९ कालशाकम् (नाड़ी का शाक) पृ० २८६

हि०-नाड़ीचा, नरिचा, करेबु शाग, नाड़ीका शाक, पटुआ भेद, गोलवा, ललितापाट। बं०-नालिताशाक, वनपाट, कोस्टार शाक। म०-कुमोची भाजी। गु०-छनेहट, बोराकुंचट।

ले०-Corchorus Capsularis (कोर्कोरस कापसुलेरिस)

१० पट्टशाकः (पटुआ शाक) पृ० २८९

हि०-पटुआ, पटवा, पटुए का साग। बं०-पाटशाक, नालिताशाक, कोस्टारशाक। म०-अलऽया, नाड़ीशाक, मयाल। गु०-अलवी, नालीनी, भाजी। ले०-Corchorus Olitorius (कोर्कोरस ओलिटोरियस)।

नाडीकशाकं द्विविधं तिक्तं मधुरमेव च ।
रक्तपित्तहरं तिक्तं कृमिकुष्ठविनाशनम् ॥
मधुरं पिच्छिलं शीतं विष्टम्भि कफवातकृत् ।

तच्छुष्कपत्रं ज्वरदोषनाशनं, विशेषतः पित्तकफज्वरापहम् ।
जलं च तस्यापि च पित्तहारकं, सुरोचनं व्यञ्जनयोगकारकम् ।(रा०नि०)

११ कलंबी (कलमीशाक) पृ० २८६

हि०-कलंबी शाक, करमी, कलमी का साग, करेबु, करेबुआ। बं०-कलमीशाक, कलमाशाक। ते०-तामे वचलि। गु०-प्रा०-नाड़ीशाक। पं०-नारी, नाली। मु०-नालोची भाजी।

ले०-Ipomia Apuatica (आइपोमिया अक्वेटिका)।

१२ लोणी (छोटी लोणा) पृ० २८६

हि०-छोटी लोणा, नोनी साग, छोटीनोना, लोनो, नोनी, नोनिया, लोनिया, आवंताशाक, अम्ल लोनिया। बं०-भुदेणुनी, वनणुनी, णुनेशाक। म०-घोल, लहान घोल। गु०-लुणी भोणी। क०-गोलि॥ प०-लुनक। तै०-पइलकुर, अईल कुस। ता०-कोरि लकीरई, लकोरई। मु०-कुर्फा। अ०-बुक्ल तुल्ह मका। अं०-Purslane (पर्सलेन)।

ले०-Portulaca Quadrifida (पोर्टुलाका काड्रीफीडा)।

१३ बृहल्लोणी (बड़ीलोणा) पृ० २८६

हि०-बड़ी लोणा, लोणा शाक, कुल्फा। बं०-बड़णुनी। म०-मलेघोल, रायघोल, कुर्फा। गु०-लुणीमोटो। फा०-खुरफा, खुर्फा। अ०-बक्लतुल हुमका। ०-लोनक, कुल्फा। द०-कुल्फे की भाजी। क०-दुदे गोरई।

ले०-Portulaca oleracea (पोर्टुलेका ओलेरेसिया)।

१४ चाङ्गेरी (अंबिलोना) पृ० २८६

हि-चांगेरी, अंबिलोण, अंबिलोना, अम्मीखट्टी बूटी। प०-खटकल,

छोटा चूका, अमता, चौपतिया। बं०-आमरूल । म०-आंबवती, चुका। गु०-चुको, आंबोती। क०-पुलुबुंणिसे, पुल्लं पुलुचे। तै०-पुलिचिंता। द्रा०-पुड़ियारे। अं-Indian Sorrel (इण्डियन सोरल)।

ले०-oxalis Corniculata (ओक्सलीस कार्नीकुलेटा)।

१९ चुक्रिका (चूका) पृ० २८६

हि०-चूका (शाक), बड़ा चूका शाक, खटपालक, चूका पालक। बं०-चु(चू)कापालंग। म०-चुकाबड़िलि, आंबटचुका, थोरचुका, आंबवती। गु०-चुकोखाटी भाजी, मोटोचुको। क०-हुलिच, हुलिकक्कोत, कोत, हुलीचकोत। फा०-तुरश्क बड़ा, तुर्रे खुरासानी, तरहहिरासाई। अ०-हुमाज वुक्लेहा मेजा, बुक्कयेह मिजह।

अं०-Bladders Dack (ब्लेडर्स डाक)।

ले०-Rumex Vesicarius (रुमेक्स वेसी केरियस)।

१६ चञ्चुकी (चेबुना) पृ० २८६

हि०-चंचुशाक, चोंच, चेबुना, चंचू, चेचुक, खेतपात। बं०-चेचकी, बनपात, बिलनलिता। म०-चंचुभाजी, लघुचंचु, थोरचंचु। गु०-छुछराज गरिनी भाजी, छंछरी। तै०-चितचेट्टु।

ले०-Corchorus Fascicularis (कोरकोरस फैसीक्युलरीस)

चञ्चुमहाचञ्चुक्षुद्रचञ्चुनामानि—

चञ्चुश्च विजला चञ्चूः कलभी भीरुपत्रिका।
चञ्चुरश्चञ्चुपत्रश्च सुशाकः क्षेत्रसंभवः।
बृहच्चञ्चुर्विषारिः स्यान्महाचञ्चुः सुचञ्चुका।
स्थूलचञ्चुर्दीर्घपत्री दिव्यगन्धा च सप्तधा॥
क्षुद्रचञ्चुस्तु चञ्चुः स्याच्चञ्चूः शुनकचञ्चुका।
त्वक्सारा भेदिनी क्षुद्रा कटुका पट्टुपत्रिका।

महाचञ्चुक्षुद्रचञ्चुगुणाः—

महाचञ्चुः कटूष्णा च कषाया मलरोधिनी।
गुल्मशूलोदराशोंऽर्त्तिविषघ्नी च रसायनी॥
क्षुद्रचञ्चुस्तु मधुरा कटूष्णा च कषायिका।
दीपनी गुल्मशूलार्शःशमनी च विबन्धकृत्॥

चञ्चुबीजगुणाः—

चञ्चुबीजं कटूष्णं च गुल्मशूलोदरार्त्तिजित् ।
विषत्वग्दोषकण्डूतिमूषकीयविषापहम् ॥

१७ हिलमोचिका (हुलहुल शाक) पृ० २८७

हि०—हुरहुर, हुलहुल, हुलहुर, जलपीपल, मछेछी । बं०—हिलेंचा शाक, हिंचशाक, हिचाशाक, हिंगचा । म०—हुरहुच, हुरहुची । उ०—हिरमिचा ।
ले०—Enhydra Flanctuns (एन्हीड्रा फ्लाङ्कटन्स) ।

व्यवहार—पत्ते, बीज । मात्रा—२-४ माशे ।

१८ शितिवारः (शिरियारी) पृ० २८७

हि०—सिरियारी, चौपतिया, शिरुआरी, गुठवा । बं०—सुषुणीशाक, शुनिशाक, शुशुनीशाक । म०—करडू, कुरड़ाहके । गु०—सुनिसण्णक, लांवरी, खरकतीरा । ते०—सुनिषण्ण मने शाकमु । क०—कुरडु । फा०—अंजरा । उ०—छुनछुनिया ।
ले०—Blepharis Edulis (ब्लेफरिस इडुलिस) ।

अस्य बीजगुणाः—

सुनिषण्णकबीजं तु मूत्रकृच्छ्रनिवारणम् ।

१९ मूलकपत्रम् (मूली के पत्ते) पृ० २८७

इसका परिचय नालशाकवर्ग में दिया जायगा ।

२० द्रोणपुष्पीदलम् (गूमा के पत्ते) पृ० २८७

इसका पूर्ण विवरण गुडूच्यादिवर्ग में दिया गया है ।

२१ यवानीशाकम् (अजवाइन का शाक) पृ० २८७

इसका पूर्ण परिचय हरीतक्यादिवर्ग में दिया गया है ।

२२ दद्रुघ्नपत्रम् (चकवड़ का शाक) पृ० २८७

इसका पूर्ण विवरण हरीतक्यादिवर्ग में दिया गया है ।

२३ सेहुण्डपत्रम् (थूहर के पत्ते) पृ० २८८

इसका पूर्ण परिचय गुडूच्यादिवर्ग में दिया गया है ।

२४ पर्पटपत्रम् (पित्तपापड़ा के पत्ते) पृ० २८८

इसका वर्णन गुडूच्यादिवर्ग में दिया गया है ।

२५ गोजिह्वा (गोभी) पृ० २८८

इसका पूर्ण वर्णन गुडूच्यादिवर्ग में किया गया है ।

२६ पटोलपत्रम् (परवर के पत्ते) पृ० २८८

इसका परिचय फलशाकवर्ग में दिया जायगा ।

२७ गुडूचीपत्रम् (गिलोय का शाक) पृ० २८८

इसका वर्णन गुडूच्यादिवर्ग में किया गया है ।

२८ कासमर्दः (कसौंदी) पृ० २८८

हि०-कसोंदी, कासिंदा, कसौदी, चकौड़ो। बं०-कालकासुन्दा, कालकासुन्दर पाता, कालका कसोंदा। म०-कासबंदा, कासविंदा, रान कासविंदा। गु०-कासोंदरी, कूजी, कासुन्दरो, कासुन्दरानां पांदडा। क०-कासवंदी, एलहुदी, आलुबरी। तै०-गुरुपुताळ्यां, गुरुपुताळ्य, कसिविन्द चेट्टु, पोडितां गेड्डु, कासविंद चेट्टु। मला०-पोन्नावीर। पं०-फनछत्र, फणछत्र। तु०-अनेकजंकु। अं०-The Negro Coffee (दी नीग्रो काफी)। ले०-Cassia occidentalis (कैसिआ ओक्सीडेण्टलिस)।

कासमर्दः सतिक्तोष्णो मधुरः कफवातनुत्।
अजीर्णकासपित्तघ्नः पाचनः कण्ठशोधनः ॥

व्यवहार—जड़, बीज। मात्रा-३-६ माशे।

२९ चणकशाकम् (चने का शाक) पृ० २८८

इसका वर्णन शिम्बीधान्यवर्ग में किया गया है ।

३० कलायशाकम् (मटर का शाक) पृ० २८९

इसका परिचय शिम्बीधान्यवर्ग में दिया गया है ।

३१ सार्षपं शाकम् (सरसों का शाक) पृ० २८९

इसका वर्णन शिम्बीधान्यवर्ग में किया गया है ।

३२ अगस्तिपुष्पम् (अगस्त का फूल) पृ० २८९

इसका विवरण पुष्पवर्ग में दिया गया है ।

३३ कदलीपुष्पम् (केले का फूल) पृ०२८९

इसका परिचय फलवर्ग में दिया गया है ।

३४ शोभाञ्जनस्य पुष्पम् मधु च (सहजना का फूल व मधु) पृ० २८९

इसका वर्णन गुडूच्यादिवर्ग में किया गया है ।

३५ शाल्मलीपुष्पम् (सेमल का फूल) पृ० २८९

इसका विवरण वटादिवर्ग में दिया गया है ।

अथ फलशाकानि ।

३६ कूष्माण्डम् (पेठा) पृ० २९०

हि०-पेठा, भूराकोहला, भूराकुम्हड़ा, भतुआ, कोहला, कुम्हड़ा । बं०-कुमड़ा, साचीकुमड़ा, कुमड़ा गाछ । म०-कोहला, कोहोला । गु०-पद्कोला, भुरूंकोलुं, पद्कोलुं । क०-दारकोहोला, कगुंवल, कग्गुवल । तै०-बेल्ले गुम्मडि, गुम्मडि वडिका, पुल्लाहा, गुमडि । उत्क०-कर वालु, पानी करवारू । कों०-भूरा कोहला । फा०-भूराकुदु, कद्दूय रूमी, रूमाकुदु । अ०-महद्देवा, मोहद्दिवहे, महदेवा ॥

अं०-The white Melon (दि ह्वाइट मेलन) ।

लै०-Benicassa Cerifera (बेनीकसा सेरीफेरा) ।

व्यवहार—बीज । मात्रा—६—९ माशे ।

अस्य पक्वमज्जगुणाः—

पक्वमज्जा च माधुरी । वस्तिशुद्धिकरी वृष्या पित्तनाशकरी मता ।

पीतकूष्माण्डस्य नामानि गुणाश्च—

कूष्माण्डं पीतपुष्पा च ग्राम्या पीतफला च सा ।
गुडयोगफला चैव पीतकूष्माण्ड इत्यपि ॥

हि०-लालपेठा, गोलकद्दू, भिलयाकद्दू । बं०-बिलाति कुमडा । म०-तांबडा भोंपला । गु०-पतकोलु, शाकरकोलु । क०-डंगर । तै०-तिया गुबडिकाया । फा०-बादरंग ।

अं०—The Gourd (दि गोर्ड) ।

लै०—Cucurbita Mascima (कुकुर्बिटा मेसिमा)

अपरं पीतकूष्माण्डं गुरु पित्तकरं परम् ।
अग्निमान्द्यकरं स्वादु श्लेष्मघ्नं वातकोपनम् ॥ आ० सं० ॥

३७ कूष्माण्डी (कोहला) पृ० २९०

हि०-कुम्हरा, कोहला, कोंहड़ा, लालपेठा, गोलकद्दू, भिलया कद्दू, काशीफल, सुफुरिया कुमार। बं०-कुमड़ा। म०-तावड़ा भोंपला। गु०-पवकोलु, शाकरकोलु। क०-डंगर, डंगरी। ते०-तियागुवडिकाया। फा०-बादरंग। अं०-The Gourd (दि गोर्ड)।

ले०-Cucurbita Maxima (कुकुर्बिटा माक्सिमा)।

३८ अलाबूर्दीर्घा वर्त्तुला च (तुम्बी) पृ० २९०

हि०-तुम्बी, लौआ, लौका, लौकी, कद्दू, कदुआ, मीठीतोम्बी, लम्बाकद्दू। बं०-लाउ, लाड़। म०-दुध्याभोंपला, भोंपला। गु०-दुधियुं, दुधलु, आलड़ो। क०-डंउबल काई, डंडबलकायि। ते०-तीया तुखड़ो काया। फा०-कदुशीरिन्, कदुयदरोज। अ०-युक्ति नेहुलुकुरा।

अं०-White Gourd (ह्वाइट गोर्ड)।

ले०-Cucurbita Lagenaria (कुकुर्बिटा लेजिनेरिया)।

> काण्डमस्याश्च मधुरं वातलं कफकारकम्।
> स्निग्धं शीत भेदकं च पित्तनाशकरं जगुः॥ नि०र०॥

३९ कटुतुम्बी (कड़वी तोंबी) पृ० २९०

हि०-कटुलौकी, कड़वीतोंबी, तितलौकी, तितुआलौका, तुमरी, तुम्बी। बं०-तितलाउ, तितलाओ। म०-कडू भोंपला, कड़दुधी, कडूदुध्या भोंपला। गु०-कड़वी तुम्बरी। कहि सोरे। तै०-चेतिआनव। फा०-कदूय तल्ख। अ०-करअउलूमुर, करउलमुर।

अं०-Bottle Gourd (बोटल गोर्ड)।

ले०-Lagenaria Valgaris (लेजिनेरिया वलगेरिस)

अस्याः पर्णगुणाः—

> पर्णं पाके तु मधुरं मूत्रशोधनमुत्तमम्।
> पित्तशान्तिकरं प्रोक्तमृषिभिः सूक्ष्मदर्शिभिः॥

अस्या विषयाः—

> कासश्वासविषच्छर्दिज्वरार्त्ते कफकर्षिते।
> प्रताम्यति नरे चैव वमनार्थं तदिष्यते॥

४० कर्कटी (ककड़ी) पृ० २९०

हि०–ककड़ी (री), कखरी, कर्करी, कांकड़ी । बं०–कांकूड़, बड़कांकूड़ । म०–कांकडी, वालुक । क०–मुल्लु सवति, कयेयसौत । ते०–दोसकाया, नक्कदोस । उ०–फुटी कांकुड़ी । फा०–ख्यारजाव, ख्यारदराज । अ०–किस्सा कद्दस ।

अं०–Cucumber (क्युकम्बर) ।

ले०–Cucumis Utilissimus (क्युकुमिस युटिलिस्सिमस)

व्यवहार—बीज । मात्रा—३—९ माशे)

गृहे जीर्ण तु तज्ज्ञेयमुष्णं पित्तकरं मतम् ।
कफवाय्वोर्नाशकरं प्रोक्तमायुर्विदां वरैः ॥

द्वितीयकर्कटीगुणाः—

कर्कटी मधुरा रुच्या शीता लघ्वी च मूत्रला ।
त्वचायां कटुका तिक्ता पाचिकाऽग्निप्रदीपनी ॥
अवृष्या ग्राहिणी प्रोक्ता मूत्ररोधाश्मरीहरा ।
मूत्रकृच्छ्रं वमिं दाहं श्रमं चैव विनाशयेत् ।
सा पक्वा रक्तदोषस्य कारिण्युष्णा बलप्रदः ॥

तृतीयकर्कटीगुणाः—

तृतीया कर्कटी रुच्या मधुरा वातकारिणी ।
शीता मूत्रप्रदा गुर्वी कफकृद्दाहनाशिनी ।
वमिं पित्तं भ्रमं मूत्रकृच्छ्रं मूत्राश्मरीं हरेत् ॥

अरण्यकर्कटीगुणाः—

अरण्यकर्कटी चोष्णा रसे तिक्ता च भेदिका ।
पाके कट्वी कफक्रिमिपित्तकण्डूज्वरापहा ॥

तिक्तकर्कटीगुणाः—

तिक्तकर्कटिका प्रोक्ता रसे पाके कटुः स्मृता ।
तिक्ता मूत्रकरी वान्तिकारिका मूत्रकृच्छ्रहा ।
आध्मानवातं चाष्ठीलां नाशयेदिति कीर्त्तिता ॥

चीनाकर्कटीगुणाः—

चीनाकर्कटिका शीता मधुरा रुचिदा गुरुः ।

कफवाततृप्तिकरी हृद्या पित्तरुजाऽपहा ।
दाहशोषहरा प्रोक्ता मुनिभिश्चरकादिभिः ॥

सर्वकर्कटीगुणाः—

सर्वा कर्कटिका गुर्वी दुर्जरा वातरक्तदा ।
अग्निमान्द्यकरी प्रोक्ता ऋषिभिः शास्त्रकोविदैः ॥
वर्षाशरदि चोत्पन्ना नो हिता न च भक्षयेत् ।
हेमन्तजा रुचिकरा पित्तहा भक्षिता हिता ।
सैवार्धपका संप्रोक्तांपीनसोत्पादनो मता ।
सम्यक् पका च मधुरा कफनाशकरी मता ॥ नि० र० ॥

४१ चिचिण्डः (चचेंडा) पृ० २९१

हि०—चचेंडा, चिचिंडा, चिचेंडा । बं०—चिचिंगा, चिचिण्डा। म०—टरकाकडी, टरकाकड़ी, गोड़ पड़ वळ । गु०—पण्डोला, पण्डोलां, पंडोलुं । तै०—पोटळाकाया, पोटलकाया ।

अं०—Snake Gourd (स्नेक गोर्ड) ।

लै०— Trichosanthes Anguina (ट्रिकोसेन्थिस ऐंग्विना) ।

४२ कारवेल्लम् (करेला) पृ० २९१

हि०—करेला, करैला, करइला, करेलो । बं०—करोला, बड़करेला, छोटकरेला, उच्छे । म०—कारलें, कारली, क्षुद्रकारली । गु०—कारेला, करेलुं । क०—हागल, हागलकायि, मिडिगायि, हागेल । ‍०—काकर-चेट्टु, करिला, काकर काया, कारला । उ०-शळरा । फा०-कारेलाह् । अ०-किस्सा उल्हिमार, कसायुल्हिमार ।

अं०-Hairy Mordica (हेयरी मोडका)

लै०-Momordica Charantia (मामोर्डिका केरण्टिआ)

४३ कारवेल्लो (करेली) पृ० २९१

हि०-करेली, करैलो । बं०-उच्छे, उच्चे, छोटकरला । म०-लघुकारली, क्षुद्रकारली, लघुकरेलो । गु०-कड़वाचेला करेलुं ।

अं०-Hairy Mordica (हेयरी मोर्डिका)

लै०-Memordica Muricata (मेमोर्डिका म्युरिकाटा)

जलजवनजकारवेल्लयोर्गुणाः—

जलजं कारवेल्लं स्यात्तिक्तं भेदकरं मतम् ।
कफं कुष्ठं पाण्डुरोगं क्रमीन् पित्तञ्च नाशयेत् ॥
वनजं कारवेल्लं तु दीपनं तिक्तकं मतम् ।
हृद्यं ज्वरार्शःकासघ्नं कफवातक्रमीहरम् ॥ रत्नाकरः ॥

४४ महाकोशातकी (नेनुआं) पृ० २९१

हि०-नेनुआ, बड़ीतोरइ, घियातोरई, गलकातोरई, घिउरा, घेवरा, घेवड़ा । बं०-हस्तिघोषा, धुंधुल, दुंदुल, धुन्दुल । म०-घीसाले, घोसाली, पारोशी, पारसादोड़का, मोठी घोसली । गु०-गलका, घीसोड़ा । क०-अरहिरे, तुप्पिरी । ते०-एनुगवीर, पुछ्वावीरकाया । उड़ि०-तरडि । फा०-खियार ।

ल०-Luffa Aegyptica (ल्यूफा (एजिप्टिका)

तिक्तकोशातकी-नामगुणाः—

कोषातक्यां कृतच्छिद्रा जालिनी कृतवेधना ।
क्ष्वेडा सुतिक्ता घण्टाली मृदङ्गफलिका मता ॥

हि०-कड़वीतोरई, जङ्गलीतोरई, झिमनो । बं०-झिङ्गा । म०-कडूदोडके, दीवाली, कडूशिराली । गु०-झुमखंडां, कडवातें कडवी घीसोडी, धीमार्गवते, कडवा तुरोया । क०-काहिरे । ते०-चेदुविकाया । उ०-जनी ।

फा०-तुरीये तल्ख ।

अं०-Bitter Luffa (बिटर ल्युफा) ।

ले०-Luffa Amera (ल्युफा एमेरा) ।

तिक्तकोशातकं तिक्तं वातलं कफपित्तजित् ।
अवृष्यं कटुकं पाके सारकं वान्तिकारकम् ।
एतत्फलं च बीजं च नस्यान्नासाशिरोऽर्त्तिजित् (शो० नि०)

४५ राजकोशातकी (तोरई) पृ० २९१

हि०-तोरई, तरोई, तुरेया, करइतरई । बं०-घोषालता, झिङ्गा । म०-दोडका, शिरालें, शिरालो, मोटीघोषाळी, काहारे । गु०-जुमखड़ा, तुरिया, घिसोडा । क०-धरिबोर, धारवितोरई, होरेकायी । तै०-बीरकाया, बीर, उत्तवेणि ।

ले०-Luffa Acutangula (ल्यूफा एक्युटाङ्गुला)।

४६ पटोलः (परवल) पृ० २११

हि०-परवर, परवल, पलवल, परोर, परोरा। बं०-पटोल, पलता, स्वादुपटोल। म०-सोनपरवल, पडोल, पडवली। क०-सोगवल्ली, पडवल। ता०-पुड़लै। ते०-पोटल, केम्पु पोटला। क०-पड़वल। गु०-मीठापटोल। पं०-पटोली। द्रा०-कोम्बु पुड़ल।

अं०-Sespadula (सेसपडूला)।

ले०-Trichosanthes Dioica (ट्रिकोसान्थिस डाओइका)।

४७ तिक्ता पटोलिका (कड़वा परवल) पृ० २१२

हि०-कड़वा परवल, तीता-तितुआ-जङ्गली परवल, इत्यादि। बं०-पालता, पालतालता। म०-कडुपडोल, कडुपडवल, कहि पडवल, कतुपडोल। क०-सोगवल्ली, कहिपड़वल। गु०-कडवा पडोल, कडवापटोल, आंख्यफुटा माणा। ता०-कोम्बु पुडलै। तै०-कोम्मुपोटल, कोम्मुपटोल। को०-मोरहरी।

ले०-Trichosanthes Cucumerina

(ट्रिकोसान्थिस क्युक्युमेरिना)।

तिक्ता पटोली कटुका सारकोष्णा कटुः स्मृता।
भेदनी पाचनी चैव अग्निदीप्तिकरी परा॥
पित्तं कफं च कण्डूं च कुष्ठं रक्तविकारकम्।
ज्वरं दाहं तृषां कोष्ठरोगं कृमिं च नाशयेत्॥
फलमस्याः कटु तिक्तं पाके स्वादु लघु स्मृतम्।
दीपनं पाचनं वृष्यं मललोमनकारकम्॥
वातपित्तकफानां तु यथास्थाने निवेशकम्।
सारकं श्वासज्वरहृत् त्रिदोषक्रिमिनाशकम्॥
पित्तनाशकरं पर्णं मूलं कफविनाशकम्।
कफनाशकरी वल्ली तैलं वातकफापहम्॥ नि० र०॥

४८ बिम्बी (कन्दूरी) पृ० २१२

हि०-कन्दूरी, बिम्बीफल, कुनली, कुनरी, कुदरी, गुलकांख, कुन्दुरू। बं०-कुन्दरकी, तेलाकुचा, कुन्दुरूकी। म०-तोंडली, गोड़ तोंडली।

गु०-तीडोरी घोलां मोठा, घोली टींडोरो, टींडोरा । क०-सहिदोंडे, तोंडेहण्णु । तै०-दोंडतिगे । यू०-कुन्दरू ।

ले०-Coccinia Indica (कोक्सिनिया इण्डिका) ।

अस्या गुणा रत्नाकरे—

बिम्बिका मधुरा शीता कफवान्तिकरा मता ।
रक्तपित्तक्षयश्वासकामलापित्तशोफकान् ॥
रक्तरुग्विषकासांश्च रक्तपित्तज्वरान् हरेत् ।
फलमस्या गुरु स्वादु शीतलं लेखनं मतम् ॥
मलस्तम्भकरं स्तन्यमुदरे वातसञ्चयम् ।
रुच्यं पित्तं रक्तदोषवातान्छ्वासं च नाशयेत् ॥
शोथवृद्धिदाहकासश्वासनाशकरं मतम् ।
पुष्पमस्याः कण्डुपित्तकामलानाशकारकम् ॥
अस्याः पर्णोद्भवा शाका शीतला मधुरा लघुः ।
ग्राहका तुवरा तिक्ता पाके कटवी च वातला ॥
कफपित्तहरा प्रोक्ता पूर्वैर्वैद्यवरैः स्फुटम् ।
मूलमस्या हिमं मेहनाशनं धातुबर्धकम् ॥
हस्तदाहहरं भ्रान्तिवान्तिनाशकरं मतम् ।

तिक्तबिम्बीनामगुणाः—

तिक्ततुण्डी तु तिक्ताख्या कटुका कटुतुण्डिका ।
बिम्बी च कटुतिक्तादिस्तुण्डीपर्यायगा च सा ॥

हि०-कडवी कन्दूरी । बं०-कटुतराइ, तितपल्ता, तेत् केन्दुरुकी । म०-कडू तांडली । गु०-कडवी घोली । क०-तीत कुन्दुरु, कहितोडे ।

ले०-Cephalandra Indica (सिफेलेण्ड्रा इण्डिका) ।

,, (कोकसिनीयाण्मेरा) ।

तिक्तबिम्बीफलं चामं छर्दनं कफनाशनम् ।
पक्वं पित्तहरं शीतं मधुरं रसपाकयोः ॥ शो० नि० ॥

४९ शिम्बिः (सेम) पृ० २९२

हि०-सेम, शेम, शीम, सीम, सेमि । बं०-शेम, शिम, श्वेतशिम, छोम, वोरा, बरवटी । म०-घेवड़ा, शेङ्ग, शेङ्गा, खडसांवल, सेङ्ग, सेङ्गा,

खडसंवली, बालपापडी । गु०-परबोलिया, वालौर । तै०-कारुचिकटु, चि-कुण्डु । अ०-गलाफुल गोल, गिलाफुलगोल, बीन्सा । ता०-मोच्चै, कोट्टै ।

अं०-Black Seeded Delichos (ब्लैक सीडेड डोलीकोस)

ले०-Dolicos Lablab (डोलीकोस लबलब)

९० कोलशिम्बिः (मुअरा सेम) पृ० २९२

हि०-मुअरासेम, गोजियासेम, कालोसेमि । म०-आबई ची शेङ्ग । गु०-तरवारडी, कालीबालोर । बं०-शेमगाछ । तै०-कारुचिकटु ।

दधिपुष्पी-नामगुणाः—

दधिपुष्पी खट्वाङ्गी खट्वा पयङ्कपादिका कूगा ।
खट्वापादो वंश्या काका कोलपालिका नवधा ॥

हि०-करियासेम, चमरियासेम । बं०-कट्रा शिम् । म०-गोडीकोहली । गु०-अडदवेल्य, कागडोलिया । क०-कूगरी ।

ल०-Mucuna Monosperma (मुक्युना मोनोस्परमा)

दधिपुष्पी कटुमधुरा शिशिरा सन्तापपित्तदोषघ्नी ।
वातामयदोषकरी गुरुस्तथाऽरोचकघ्नी च ॥ रा० नि० ॥
गुरु हृद्यं बीजमस्या रुचिदं स्तम्भकं मतम् ।
कफाग्निमान्द्यकरणं वातं पित्तं च नाशयेत् ॥ नि० र० ॥

९१ शोभाञ्जनफलम् (सहजने की फली) पृ० २९२

इसका परिचय गुडूच्यादिवर्ग में दिया गया है ॥

९२ वृन्ताकम् (भंटा) पृ० २९२

हि०-भटा, भांटा, बेगन, बेगुन, बैगन, बैगुन, बांगन । बं०-बेगुनगाछ, बेगुण । म०-वांगे, बांगी । गु०-रिंगणा, रिंगणी, वंताकड़ी, काकड़िया । क०-बदने, बदनेकायि, काचिगिड । तै०-वंकाया, बंकायि, बंग एहिरिवंगु । उ०-बाइगुण । ता०-कुठिरेकइ, कत्तरिक्काइ । मु०-बांगे । पं०-बैंगन । मा०-बैंगण । फा०-बादंगान । अ०-बादंजान, बादंजान, बाजंजान ।

अं०-Bringle (ब्रिंजल) ।

९३ डिण्डिशः (ढेंड्स) पृ० २९३

हि०-ढेरस, ढेंढस, ढेंड्स, टिंडे । म०-ढेढसे, कंटोली, फांगली । गु०-कंटोला । तै०-अगोरकर ।

भेण्डा-नामगुणाः—

भेण्डा भिण्डातिका भिण्डो भिण्डकः क्षेत्रसम्भवः ।
चतुष्पदश्चतुःपुण्ड्रः सुशाकः पिच्छिलः स्मृतः ॥

हि०—भिण्डी । बं०—भिण्डी । म०—भेण्डे, रानभेण्डे । गु०—भींडा । क०—वेण्डे । तै०—भेडकाया । फा०—बामिया । अ०—कुबार ।

ले०—Hibischus Esculentus (हिबिस्कस एस्क्युलेण्टस)

करपर्णफलं रुच्यं पिच्छिलं गुरु वातलम् ।
वृष्यं श्लेष्मकरं बल्यं शुक्रवृद्धिकरं परम् ।
कासे मन्दानले वाते पीनसेषु विनिन्दितम् ॥

९४ पिण्डारम् (पिण्डालुक) पृ० २९३

हि०—पिंडार, पिण्डारा, पिडालु (रू) । बं०—करहाट ।

ले०—Trewia Midiflora (ट्रेविआ मिडिफ्लोरा)

९५ कर्कोटकी (ककोडा-खेकसा) पृ० २९३

हि०—खेकसा, खेखसा, ककोड़ा, ककोरा, चठइल । बं०—कांकरोल । म०—कर्टोली, कांटली, कंटोलो, फागली । गु०—कंटोळा, कडळो घीसोडो । क०—महुआगाल । तै०—आगाकार, अगोरकुर ।

ले०—Momordica cochinchinensis (मोमोर्डिका कोचिनचाइनेन्सिस) ।

फलमस्यास्तु मधुरं लघु पाके कटु स्मृतम् ।
अग्निदीप्तिकरं गुल्मशूलपित्तत्रिदोषनुत् ॥
कफकुष्ठकासमेहश्वासज्वरकिलासनुत् ।
लालास्रावारुचीवातकिलासहृदयव्यथाः ॥
नाशयेत् पर्णमस्याश्च रुच्यं वृष्यं त्रिदोषनुत् ।
कृमिज्वरक्षयश्वासकासहिक्काऽर्शनाशनम् ।
कन्दो माक्षिकसंयुक्तः शीर्षरोगे प्रशस्यते ॥ (नि० र०)

९६ डोडिका (करेरुआ) पृ० २९३

हि०—करेरुआ, डोडि । म०—विषडोडि, हरणडोरी । गु०—खरबोली, करवो खरखोड़ों । क०—डोढ़ी कर्गसगे ।

९७ कण्टकारीफलम् (कटेरी का फल) पृ० २९४

इसका परिचय गुडूच्यादिवर्ग में दिया गया है ॥

अथ नालशाकम् ।

९८ सार्षपनालम् (सरसों का नाल) पृ० २९४

इसका विवरण शिम्बीधान्यवर्ग में दिया गया है ।

सूरण-नालगुणाः—

नालं तु सूरणं रुच्यं कफवातहरं लघु ।
अर्शसां तु विशेषेण हितं कामाग्निदीपनम् ॥ (म० नि०)

अथ कन्दशाकानि ।

९९ सूरणम् (सूरनकन्द) पृ० २९४

हि०-सूरनकन्द, जमीकन्द, जिमिकन्द, जिमीकन्द, ओल । बं०-ओल । म०-गोडा सुरण । गु०-सूरण । क०-सुरण, सुरणु, सूर्णगड्डु । तै०-मुंचकुंद, मंचाकंद, दोलकंदा, सूर्णगड्डु । मु०-जंलि सूरण । द्रा०-सूरणै किलंग । फा०-ओला ।

ले०-Amorphophalius Campanulatus (एमोर्फोफालियस कम्पान्युलेटस्)

वनसूरण-नामगुणाः—

वज्रकन्दः सुरेन्द्रः स्याद्वन्योऽन्यश्चित्रकन्दकः ।
वनसूरणको रुच्यः कटूष्णः कृमिनाशनः ।
गुल्मशूलादिदोषघ्नः स चारोचकहारकः ॥ रा० नि० ॥

१०० आलुकम् (आलू)

(१) तद्भेदाः काष्ठालुकम् (कठालू) पृ० २९४ ।

हि०-कठालू, काठालू, जमीकन्द, पटनीआलु, माटीआलु । द०-कौकरिन्दा ।

ले०-Dioscorea Bulbifera (डाओसकोरिया बल्बिफेरा)

यह गोलाकार काले रंग का कन्द होता है ।

इसके ऊपर मोटे २ बाल होते हैं।

(२) शङ्खालुकम् (शङ्खालू)

हि०-सफेद शकरकन्द, शंखारू, सफेद अलुआ, सफेद कांदा। बं०-शांकआलु, शांख आलु।

यह रताल्रू का भेद है और यह सफेद होता है।

(३) हस्त्यालुकम् (हस्तारू)

हि०-हस्तारू, हस्तारुकन्द, अरारू।

यह रताल्रू से बहुत लम्बा और मोटा होता है।

(४) पिण्डालुकम् (पिण्डालु)

हिं०-पिंडालु, पिंडालुक, पेड़ालु, शकरकन्दी, सुथनी। बं०-गोलआलु, चुवड़िआलु, हातिखोजा आलु। म०-गोडें रताले, पेंडालु। गु०-श्वेतालु। क०-विलियहेंगडल।

ले०-Batatas Edulis (बाटाटाज् इडुलीज)

यह सफेद, गोल, किञ्चित् लम्बा, रोयेंदार होता है।

अस्य नामगुणाः—

श्वेतः पिण्डीतकः पिण्डकन्दो रोमशकन्दकः।
कन्दग्रन्थिश्च पिण्डालुः पिच्छिलः स्वादुकन्दकः॥
पिण्डालुर्मधुरः शीतो मधुराम्लः श्रमापहः।
दाहशोषप्रमेहघ्नो वृष्यः सन्तर्पणो गुरुः॥ (रा० नि०)

(६) मध्वालुकम् (सप्तालुक-सतालू)

हि०-सप्तालुक, संतालु, आडु, शित्फालु। फा०-शफतालु, सिफ्तालु, सफ्तालु। अ०-खौख़। बं०-पीच। मा०-प०-आडू।

ले०-Prunus Persica (प्रूनस पर्सिका)

यह रोयेंदार, किंचित् चिपटे, नीचे की ओर कुछ झुके होते हैं, पकने पर सुर्खी मायल हरे रंग के होते हैं।

(७) रक्तालुकम् (रताल्रू)

हि०-रताल्रू, रतड़ा, शकरकन्द, शकरकन, अलुआ, लालआलु। बं०-लालपिंडालु। म०-रताले। गु०-रतालु, शकरकन्द। क०-केंपन हेंडल। ते०-चिरगेंड। फा०-ज़रदाकलाहोरी।

अं०-Common yam (कामन याम)।

"-Sweet potatoe (स्वीट पोटाटो)

यह लम्बा, मोटा, लाल रंग का होता है।

अस्य नामगुणाः—

रक्तस्तु रक्तपिण्डालू रक्तालू रक्तपिण्डकः।
लोहितो रक्तकन्दश्च लोहितालुः षडाह्वयः॥
रक्तपिण्डालुकः शीतो मधुराम्लः श्रमापहः।
पित्तदाहापहो वृष्यो बलपुष्टिकरो गुरुः॥ रा० नि०॥

६१ आलुकी (अरूई) पृ० २१९

हि०-अरूई, अरई, घुइयां, लाल आलु, पेपची, कान्दा, कंदा। बं०-कच्चू, कोचू। म०-अलवाचा कान्दा, आलु। गु०-अलवी। पं०-कचालू, राबआलु, अरबी। ता०-शिमक, किज़हंगू। ते०-चम्मकुरा। अ०-हुया-कलकास, कलक्लास।

ले०-Aolocasia Antiquorum (अलोकसिया ऐण्टीकोरम)।

६२ मूलकम् (मूली) पृ० २१९

हि०-मूली, छोटीमूली, मुरई। बं०-मूला, चणकमूली। म०-मुला। गु०-मूला, नाहाना मुला। क०-मुलंगी, मुलूलंगी, हेम्मुल्लंगि। ता०-मुलंगि। तै०-मुलंगीचेट्टु, पेद्दमुल्लंगि। फा०-तुख, तुर्ब। अ०-फजल, हुजल। द्रा०-मुल्लांगि।

अं०-Radish (रेडिश्)।

ले०-Raphanus Sativus (रेफनस सेटिभस्)

शुष्कं त्रिदोषशमनं शोथघ्नं गरजिल्लघु।
तत्पुष्पं कफपित्तघ्नं तत्फलं कफवातजित्॥ (रा० व०)
भक्षिते भोजनात्पूर्वं पित्तदाहप्रकोपणम्।
भोजनोत्तरवेलायां भक्षितं बलदं हितम्।
बेसवारयुतं चार्शःशूलहृद्रोगनाशकम्।

६३ बृहन्मूलकम् (बड़ीमूली) पृ० २१९

हि०-बड़ीमूली, मूला, नेवारमूली, चणकमूली, निवारमली। बं०-चणकमूली। म०-थोरमूला। क०-दोड़मुलंगी।

अस्य नामानि—

चाणक्यमूलकं चान्यद्वानेयं विष्णुगुप्तकम् ।
स्थूलमूलं महाकन्दं कौटिल्यं मरुसंभवम् ।
शालामर्कटक मिश्रं ज्ञेयं चैव नवाभिधम् ।

६४ गृञ्जनम् (गाजर) पृ० २९९

हि०–गाजर, गजरा । बं०–गाजर । म०–सेठोमूल, वाटुला मूला । क०–चिडिकेय मुलंगो, गर्जरि, बट्टमुलंगो । ते०–गृञ्जन ।। फा०–जर्दक जरत्रक, गजर । अ०–जजर ।

अं०–Carrot Root (कैरोट रूट) ।

ले०–Daucas Carota (डाकस करोटा) ।

६५ कदलीकन्दः (केरा कन्द) पृ० २९६

इसका विवरण आम्रादिफलवर्ग में दिया गया है ।

६६ मानकन्द पृ० २९६

हि०–मानकन्द, माणकन्द । बं०–माणकचु, मानकोचु । मा०–मानपात । गु०–मानकन्द ।

ले०–Alocasia Indica (एलोकेसिया इण्डिका) ।

व्यवहार—कन्द । मात्रा—६ माशे से १ तो० ।

६७ वाराहीकन्दः पृ० २९६

हि०–वाराहीकन्द, गेंठो, भिर्वोलीकन्द, चर्मकारालु, चमार आलु । बं०–चामारआलु, चामालु, चुवड़िआलु । म०–डुकरकन्द, वाराहीकन्द । गु०–सुअरिया, सालिवणवेल्य । ते०–ब्राह्मदण्डिचेट्टु, पाचितोके, नेलवाडिचेट्टु । क०–हन्दिगेड्डे । मु०–डुकरकन्द ।

ले०–Dioscorea Sativa (डाओसकोरिआ साटिवा) ।

६८ हस्तिकर्णः [हस्तिकन्दः]-(हाथीकन्द) पृ० २९६

हि०–हाथीकन्द, गजकन्द, पेड़ारू । बं०–हांसा बड़मूला । म०–हस्तिकन्द । क०–सह्लिरक्कसियगडडे । गु०–मानकन्दनो ।

अस्य नामगुणा राजनिघण्टौ—

सं०–हस्तिकन्दो हस्तिपत्रः स्थूलकन्दोऽतिकन्दकः ।
बृहत्पत्रोऽतिपत्रश्च हस्तिकर्णस्तु कर्णकः ॥

त्वग्दोषारिः कुष्ठहन्ता गिरिवासो नगाश्रयः ।
गजकन्दो नागकन्दो ज्ञेयः सप्तद्वयाह्वयः ॥
हस्तिकन्दः कटूष्णः स्यात्कफवातामयापहः ।
त्वग्दोषघ्नो महाकुष्ठविषवीसर्पनाशकः ॥

६९ केमुकम् (केमुआ) पृ० २१६

हि०–केमुआ, केमुका, केबुककन्द, केउंआ, कोबी । बं०–केउमूत, केउ-गाछ, केलूपपेया । म०–कोबी । फा०–कलाम । अ०–कन्दकलब ।

केबुका केमुकः केम्बु सुपत्रा दलमालिनी ।
केलूटः स्वल्पविटपः स्वादुकन्दश्च पोलिनी ॥

अं०–Cabbage (कबज) ।

ले०–Costus Speciosus (कोस्टस स्पेशियोसस्) ।

७० कसेरुः (कसेरू) पृ० २१६

हि०–कसेरू, नागरमोथे की जड़ । बं०–कसेरुक, राजकसेरू, केसुर । म०–कचड़ा कुरड्या । क०–सेकिन गडे, कसरुवा । ते०–इट्टिकोति । कों०–फुरडि, तुङ्गडु । गु०–कसेला ।

ले०–Scirpus Grossus (स्किर्पस ग्रोसस) ।

व्यवहार—जड़ । मात्रा—६ माशे से १ तो० ।

कसेरु-नामानि—

गुडकन्दः कसेरुः स्यात्क्षुद्रमुस्ता कसेरुका ।
सूकरेष्टः सुगन्धिश्च सुगन्धो गन्धकन्दकः ॥

७१ चिचोडम् (छोटा कसेरू) पृ० २१६

हि०–छोटाकसेरू, चिचोड़, चिचोर । बं०–छोटकेसुर । पं०–कसेरूदिला

ले०–Cyperus Esculentus (साइपरस एस्क्युलेण्टस) ।

७२ शालूकम् (भसीडा) पृ० २१७

हि०–भिस्सांड, लज्जालुक, लजालुक, भसींडा, कमलकन्द, कमल की जड, भीसांढ़, सेरुकी । बं०–पद्मेर गेंडो, शालुक । ते०–जाजिकाय ।

७३ संस्वेदजशाकानि पृ० २१७

हि०–भुइछत्ता, भुइंफोछत्ता, छतोना, छाता, सांप की छत्री । बं०–कोड़कछाता, व्यांगेर छाता, छातकुड़ , भुईछाति, छातकुण्ड । म०–भुई-

फोड़, अलम्थी। को०-कालिम । गु०-कुम्यमींदडानीवली, संस्वेदज शाक।
अं०-Mushroom (मसरूम)।
ले०-Agaricus Campestris (एगरीकस कमपेस्ट्रिस्)।

भेदास्त्रयः समाख्याताः कृष्णो रक्तश्च पाण्डुरः।
कृष्णा रसे च पाके च मधुरोष्णा गुरुः स्मृता ॥
श्वेता तु पाककाले च गुर्वी रक्ताऽल्पदोषदा ॥ (नि० र०)

इति दशमः शाकवर्गः ॥ १० ॥

अथैकादशो मांसवर्गः ॥ ११ ॥

१ मांसम् (मांस) पृ २९८

हि०-मांस, कलिया, सगवती, सगौदी। फा०- गोश्त।
अं०-Meat (मीट)।
,,-Flesh (फ्लेश)

२ हरिणः (हरिन) पृ० २९८

हि०-हरिन, हिरन। बं०-हरिण, मृग, ताम्र हरिण। फा०-आहू। अ०-ज़र्बह।
अं०-Deer (डीयर)

३ एणः (काला हरिन) पृ० २९८

हि०-काला हरिन, करिया आइल हरिन, कृष्णसारमृग।

४ कुरङ्गः (कुरंग हरिन) पृ० २९९

हि०-कुरंगहरिन, कुरंगमृग।

५ ऋष्यः (रोज हरिन) पृ० २९९

सं०-नीलाङ्कः। हि०-रोज हरिन, (हरिन) रोझ।

६ पृषतः (चित्तल हरिन) पृ० २९९

सं०-पृषतमृगः, चन्द्रबिन्दुः। हि०-चित्तलहरिन, चितकाबर हरिन, चित्तकबरा हरिन।

७ न्यङ्कुः (बारहसिंगा) पृ० २९९

हि०-बारहसिंगा (घा) हरिन। फा०-गवज़न। अ०-ईल।

८ शम्बरः (साबर हरिन) पृ० २९९

सं०-शम्बरमृगः । हि० साबरहरिन, साबरमृग ।

९ राजीवः (राजीव हरिन) पृ० २९९

हि०-राजीवमृग, राजीवहरिन ।

१० मुण्डी (मुण्डा हरिन) पृ० २९९

सं०-पाठीमृगः, मुण्डीमृगः । हि०-मुण्डाहरिन ।

११ गोधा (गोह) पृ० २९९

सं०-गोधा । फा०-सूसमार । हि०-गोह । अ०-सब ।

१२ शशः (खरगोस) पृ० २९९

सं०-शशः, शशकः, लोमकर्णः । हि०-खरहा, खरगोस, ससा । ते०-चेवुलपिल्ली । अ०-अर्जबुल वर्री । अं०-Hare (हेयर)

१३ भुजङ्गः (सांप) पृ० २९९

हि०-सांप, विषधर अजगर । बं०-साप । फा०-मार । अ०-हय्य । अं०-Snake (स्नेक) ।

१४ आखुः (मूसा) पृ० २९९

हि०-मूस, मूसा, चूहा, चुहरी । सं०-मूषकः, आखुः । बं०-मूषा । अं०-Mouse (माउस) ।
"-Rat (रैट्)

१५ शल्लकी (साही) पृ० २९९

हि०-साहिल, साही । बं०-सजारू, साजारू पशु, स्याही पशु । यू०-सेह । फा०-खार श्त । अ०-फितना ।

१६ गुहाशयाः पृ० २९९

बाघ, भेड़िया आदि ।

१७ पर्णमृगाः पृ०२२९

बानर, रूखी आदि ।

१८ विष्किराः पृ० ३००

वटेर, तीतर आदि ।

१९ प्रतुदाः पृ० ३००

हरियल, कबूतर आदि ।

२० प्रसहाः पृ० ३००

बाज, गिद्ध आदि ।

२१ ग्राम्याः पृ० ३०१

बकरी, भेढा आदि ।

२२ कूलेचराः ० ३०१

भैसा, गेड़ा आदि ।

२३ प्लवाः ३०१

हंस, सारस आदि ।

२४ कोशस्थाः पृ० ३०१

शंख, घोघा, आदि ।

२५ पादिनः पृ० ३०२

कुम्भेर, मगर आदि ।

२६ मत्स्याः।पृ० ३१०

हि०–मछरी, मछली,मच्छ,मच्छी । सं०–मोनः, मत्स्यः । बं०–माछ । फा०–माही ।

अं०–Fish (फिश) ।

२७ रोहितः (रोहू मछली)पृ० ३१०

हि०–रोहूमछली, रेहूमछली । बं०–रोहित मच्छी, रोहित माछ । ते०–एरमीनु । फा०–शबूद ।

२८ शिलीन्ध्रः (सिलन्ध) पृ० ३१०

हि०–शिलिन्द, शिलिन्द मछली । बं०–शालमाछ, सिलनमाछ ।

२९ मकुरः (भाकुर मछली) पृ० ३१०

हि०–भाकट मछरी, भाकर मछली, भाकुर मछली, भटकी मछली, मंगुर मछली, मंगुरी मछली । सं०–भकुरमत्स्यः, मद्गुरमत्स्यः । बं०–भेटकी माछ, बेलिया माछ, मांगुर माछ ।

३० मोचिका (मोई) पृ० ३१०

हि०–मोय, मोई, मोइ मछरी । बं०–कातल माछ, कातलामाछ ।

३१ पाठीनः (बोआरी) पृ० ३१०

हि०–बोआरी, बोयारी, बुआरी मछली । बं–बोयाल माछ ।

३२ श्रृङ्गी (सिङ्गी मछली) पृ० ३१०

हि०–सिंगी मछली, सींघी मछरी । बं०–शिंगी माछ, सिगाड़ा माछ-(मछली) ।

३३ इल्लीसः (इलसा) पृ० ३११

हि०–इलसा मछरी, हिलसा मछली । बं०–इलीश माछ ।

३४ शष्कुली (सौरी) पृ० ३११

हि०-सौरी, सौलीमछली। बं०-शालमाछ, शंकरमाछ।

३५ गर्गर मत्स्यः (गगेरा) पृ० ३११

हि०-गागरमछली, गगेरा, खयरामछली, खैरामछरी, चिपुआ म- मछली। बं०-गागर माछ।

अं०-Pime Lodus Gagora (पाइम लोडस गगोरा)।

३६ कविका (कवई) पृ० ३११

हि०-कवई मछली। बं०-कईमाछ।

३७ वाममत्स्यः (वर्मी) पृ०३११

हि०-वर्मीमछरी, वर्मीमछली, बामीमछरी। बं०-बाममाछ। फा०-मारमाही। अ०-मारमाहीजज़।

३८ दण्डमत्स्यः (दण्डारी) पृ० ३११

हि०-दंडारीमछली, डंडारीमछरी। बं०-बानमाछ, बानमत्स्य, दांडि- कामाछ, डानकोना माछ।

३९ एरङ्गः (अरङ्गी) पृ० ३११

हि०-अरंगीमछली, चोरंगामछरी। बं०-एलङ्गामाछ।

४० महाशफरः (पपता) पृ० ३११

हि०-पपतामछली, महासफरी। सं०-पर्व्वतमत्स्य। बं०-सरलपुंडी। ते०-ओकानोपेट्ट मत्स्यमु।

४१ गरघ्नी (गरई) पृ० ३१२

हि०-गरई मछरी। सं०-गरघ्नी, गडकमत्स्यः। बं०-गरईमाछ, ल्याटा- माछ।

४२ मद्गुरः (मंगुरी) पृ० ३१२

हि०-मंगुरी। बं०-मागुरमाछ।

४३ स्वादमस्यः (टेङ्गरा) पृ० ३१२

हि०-टेंगरा, टेंगड़ामछली। सं०-कङ्कत्रोटमत्स्यः। बं०-टेंगड़ामाछ।
अं०-Pime Lodus Tengara (पाइम लोडस् टेंगरा)

४४ प्रोष्ठी (पोठी) पृ० ३१२

हि०-पोठी, पोठियामछली। बं०-पुंटी माछ।
लै०-Cyprinus Sophore (साइप्रिनस सोफोर)

इति मांसवर्गः ॥ ११ ॥

अथ द्वादशः कृतान्नसाधनवर्गः ॥ १२ ॥

१ सक्तवः (सत्तू) पृ० ३३१

हि०–सतुआ, सत्तू, सतुई । बं०–छातु ।

२ चिपिटाः (चिउड़ा) । पृ० ३३२

हि०–चिउरा(ड़ा), चौला, चिरमुरा, चिरवा । सं०–पृथुकाः, चिपिटकाः ।

३ होलकः (होरहा) पृ० ३३२

हि०–होला, होरहा, ओरहा । बं०–हरापोड़ा । सं०–होलकः ।

४ कुल्माषाः (घुघुरी) पृ० ३३२

हि०–घुघुरा, घुघरी, घुघुनी, घुघनी ।

५ पललम् (तिलकुट) पृ० ३३३

हि०–तिलकुट, तिलवा, तिलकुटा, तिलकुटी । सं०–पललम् ।

६ पिण्याकः (तिलखली) पृ० ३३३

हि०–खली, खरी, पीना, पिन्ना । गु०–खाळ ।

इति कृतान्नसाधनवर्गः ॥ १२ ॥

अथ त्रयोदशो वारिवर्गः ॥ १३ ॥

१ पानीयम् (जल) पृ० ३३३

हि०–जल, पानी । बं०–जल । म०–पाणी । क०–मुनिक, नोरू । ते०–नोरु, निल्लु । द्रा०–तण्णीर । फा०–आब । अ०–मा, माय ।

अं०– Water (वाटर) ।

ले०–AQua (अकुआ) ।

२ करकाजलम् (ओला) पृ० ३३५

हि०–ओला, बनौरी ।

३ तौषारजलम् (ओस) पृ० ३३५

हि०–ओस, पाला, सीत, कूहा, कुहासा । फा०–शबनम ।

इति वारिवर्गः ॥ १३ ॥

अथ चतुर्दशो दुग्धवर्गः ॥ १४ ॥

१ दुग्धम् (दूध) पृ० ३४१

हि०-दूध । म०-दूध । क०-हालु । फा०-शीर । बं०-दुध । गु०-दुध । ते०-पालु । अ०-लबनुल ।

अं०-Milk (मिल्क)

ले०-Lactus (लाक्टस)

२ सन्तानिका (मलाई) पृ० ३४४

हि०-मलाई, साढ़ी, छाली, छाल्ही । फा०-सरशीर । अ०-मशोमाद बाबा ।

इति दुग्धवर्गः ॥ १४ ॥

अथ पञ्चदशो दधिवर्गः ॥ १५ ॥

१ दधि (दही) पृ० ३४६

हि०-दही । बं०-दइ । ते०-हृगु, पेरुगु । गु०-दहि । क०-मोसर, मोसरु । फा०-दोग । अ०-.ज़ुगरात, मास्त ।

अं०-Curdled milk (करड्लड् मिल्क) ।

इति दधिवर्गः ॥ १५ ॥

अथ षोडशस्तक्रवर्गः ॥ १६ ॥

१ तक्रम् (छाछ) पृ० ३४८

हि०-छाछ, मट्ठा, माठा । बं-घोल । म०-ताक । गु०-छास, घोलवु । क०-अलि मज्जिगे । फा०-मास्त, दोग । अ०-ह्मोज, मरवोज ।

अं०-Butter Milk (बटर मिल्क)

इति तक्रवर्गः ॥ १६ ॥

अथ सप्तदशो नवनीतवर्गः ॥ १७ ॥

१ नवनीतम् (मक्खन) पृ० ३५०

हि०-माखन, मक्खन, नैनू, नैनी, नोनी, नवनी । बं०-ननी, माखन, नुनी । म०-लोणी । क०-वेण्णे, बेण्णे । फा०-मस्का । ते०-पेन्ना, वेन्ना । मा०-माखण । गु०-माखण । अ०-जुब्द ।

अं०—Butter (बटर)

ले०-Butyrum (बटीरम)

इति नवनीतवर्गः ॥ १७ ॥

अथाष्टादशो घृतवर्गः ॥ १८ ॥

१ घृतम् (घी) पृ० ३५१

हि०-घृत, घी, घीव । बं०-घि, घृत । गु०-घी । द्रा०-नैय् । म०-तूप । ते०-नेई, नैय्यि । क०-तुप्या । फा०-रोगनेजर्द । अ०-दुहनुलबकर ।

अं०-Clarified Butter (क्लेरिफायड बटर)

इति घृतवर्गः ॥ १८ ॥

अथैकोनविंशो मूत्रवर्गः ॥ १९ ॥

१ मूत्रम् (मूत) पृ० ३५३

हि०-मूत, पेशाब, पेसाब । बं०-मुत, चोना, प्रस्राव । म०-मूंत, मूत्र । गु०-मुतर । क०-आफल गोत, मुत्र । ते०-उच्चा ।

अं०-Urine (यूराइन) ।

ले०-Urina (युरिना) ।

इति मूत्रवर्गः ॥ १९ ॥

अथ विंशस्तैलवर्गः ॥ २० ॥

१ तैलम् (तेल) पृ० ३५४

हि०-तेल । बं०-म०-गु०-तेल । क०-तैलं, येणै । ते०-नुने । फा०-रोगन । अ०-दुहनुल् ।

अं०-Oil (आएल)

ले०-Oleum (ओलियम्)

इति तैलवर्गः ॥ २० ॥

अथैकविंशः सन्धानवर्गः ॥ २१ ॥

१ मद्यम् (मदिरा) पृ० ३५८

हि०-मद्य, मदिरा, दारु, शराब। बं०-मद।

अं०-Wine (वाइन)

इति सन्धानवर्गः ॥ २१ ॥

अथ द्वाविंशो मधुवर्गः ॥ २२ ॥

१ मधु (शहद) पृ० ३६०

हि०-मधु, शहद, शहत, सहत। बं०-मधु, मौ। म०-गु०-मध। मा०- शहत। ते०-तेले, तेनो। क०-जेनपुष्प, जेनतुप्प। पं०-शहत, मधु। द्रा०-तेन्। फा०-शहद, अंगवीन। अ०-असल, असलुन्नहल्।

अं०-Honey (हनी)

ले०-Mel (मेल)

इति मधुवर्गः ॥ २२ ॥

अथ त्रयोविंश इक्षुवर्गः ॥ २३ ॥

१ इक्षुः (ऊंख) पृ० ३६२

हि०-ईख, ऊंख, गन्ना, केतार, गांडा। बं०-आक, इक्षु, कुशिर। म०-उंस, ऊस। गु०-शेरडी। मा०-सांठो, सेलड़ो। क०-काबुएडु, कबु। ते०-चिरकु, चेरकु। ता०-इक्कु। पं०-गन्ना, गंडा। द्रा०-करम्ब। फा०-नएशकर। अ०-कसबुस्सुकर।

अं०-Sugar Cane (शुगर केन)

ले०-Saccharum Officinarum (सक्करम आफिसिनेरम)

२ फाणितम् (राब) पृ० ३६४

हि०-राब । फा०—अफ़्सुर्दह्, मुकब्बिमनेशार ।

गुडः (गुड़) पृ० ३६९

हि०—गुड़, गूड़, मीठा । म०—गूल । गु०-गोड, गोळ । क०—हेसरू । ते०—वेल्लमु, वेलामु । मा०—गुलू । फा०—कन्देस्याह । अ०—कन्दे-अस्वद् ।

अं०—Treacle (ट्रीकल)

४ शर्करा (चीनी) पृ० ३६९

हि०—चीनी, बुरा, भुरा, शक्कर, सफेद् खांड, चिन्नी, बूरा । बं०—चिनी, पिठीसाखर । गु०—साकरिया रवां ।

अं०—Sugar (सुगर) ।

ले०—Saccharum (सक्करम)

५ सितोपला (मिश्री) पृ० ३६६

हि०—मिश्री, मिस्री, मिसरी, कन्द । सं०—सिता । बं०—मिछरी, मिचरी । म०—खडीसाखर । गु०—साखर, खडीसाकर । क०—गुड़गुड़ा तुगितु, कलुसक्करी । ते०—फाटिकेपांचा दारा, फाटिकेपां । फा०—नवात, कन्दुल कन्द । अ०—सक्करे अबियद्, नवातुब्जलाब ।

अं०—Purified Sugar Candy (प्युरीफायड सुगर केण्डी)

ले०—Saccharum Purificatum (सक्करम प्युरीफिकेटम)

इतीक्षुवर्गः ॥ २३ ॥

अथ चतुर्विंशोऽनेकार्थनामवर्गः ॥ २४ ॥

अकारादिक्रमेण भावप्रकाशस्थानेकार्थनामवर्गे समागतानां द्व्यर्थकानामोषधवाचकशब्दानामनुक्रमणिका—

नाम	पृष्ठ
अ	
अग्निः	३६७
अग्निमुखी	३६६
अग्निशिखम्	३६६
अङ्गारवल्ली	३६७
अजशृङ्गी	३६६
अञ्जनम्	३६७
अपराजिता	३६७
अमृणालम्	३६७
अमोघा	३६६
अम्बुजः	३६८
अरुणम्	३६७
अश्मन्तकः	३६६
आ	
आस्फोता	३६७
उ	
उग्रगन्धा	३६७
उत्तमा	३६७
उदुम्बरः	३६७
ऐ	
ऐन्द्री	३६७
क	
कटम्भरा	३६७
कठिल्लकः	३६६
कणा	३६७
कण्टकाढ्यः	३६८
कतकम्	३६८
कर्कशः	३६७
कबरी	३६८
कुटन्नटः	३६७
कुण्डली	३६७
कुनटी	३६७
कुमारी	३६८
कुम्भिका	३६८
कुलकः	३६६
कृमिघ्नः	३६७
कोशातकी	३६६
क्षारः	३६७
क्षारश्रेष्ठः	३६८
ग	
गण्डीरः	३६७
गन्धफली	३६७
गन्धारी	३६७
गोलोमी	३६७
घ	
घोण्टा	३६७
च	
चन्द्रहासा	३६८
चर्मकषा	३६७
चित्रकः	३६८
चित्रा	३६७
त	
तालपर्णी	३६७
तिलपर्णम्	३६८
तुण्डिकेरी	३६७
तुवरी	३६८
तेजनी	३६७
तेजनः	३६७
त्रिपुटा	३६७
द	
दन्तशठा	३६७
दन्तशठः	३६७
दीप्यकः	३६६
दीर्घमूलः	३६७
देवी	३६७
द्राविणी	३६८
ध	
धवफलः	३६७
धान्यम्	३६७
धारा	३६७
न	
नटः	३६८
नन्दिवृक्षः	३६७
नागिनी	३६८
प	
पद्मा	३६७
पयः	३६७
परिव्याधः	३६७
पारावतपदी	३६७
पिच्छिला	३६७
पीलुपर्णी	३६७
पुष्पफलः	३६७
पोटगलः	३६७
प्रियङ्गुः	३६६

नाम	पृष्ठ
ब	
बालपत्रः	३६७
बाह्लीकम्	३६६
ब्राह्मणी	३६७
भ	
भृङ्गः	३६६
म	
मधुरः	३६८
मधूलिका	३६६
मन्दारः	३६८
मरुवकः	३६६
मृदुरेचनी	३६८
मोचा	३६६
य	
यक्षधूपः	३६८
यज्ञियः	३६८
र	
रक्तपुष्पः	३६८
रक्तफला	३६८
रक्तबीजः	३६८
राजपुत्रिका	३६८
राजादनम्	३६७
रुचकम्	३६६
रुहा	३६७
रोचना	३६७
रोचनः	३६७
ल	
लोणिका	३६६
लोहद्राविणी	३६८
व	
वनस्पतिः	३६८
वरतिक्तकः	३६८
वसुकः	३६६
वारि	३६७
वितुन्नकम्	३६६
विषा	३६७
विषमुष्टिकः	३६८
श	
शकुलादनी	३६७
शटी	३६७
शष्ठला	३६८
शारदी	३६७
शीतशिवम्	३६७
श्यामा	३६७
श्वेतपुष्पः	३६८
स	
समङ्गा	३६६
सहस्रवीर्या	३६७
सही	३६८
सेव्यम्	३६७
स्वादुकण्टकः	३६६
ह	
हट्टविलासिनी	३६८

अथ द्व्यर्थकानामोषधिवाचकशब्दानामकारादिवर्णानुक्रमणिका—

नाम	पृष्ठ
अ	
अक्षीवः	३६९
अनन्ता	३६८
अमृता	३६८
अम्बष्ठा	३६८
अरिष्टः	३६८
अव्यथा	३६९
इ	
इक्षुगन्धा	३६९
इन्द्रद्रुः	३६९
ऋ	
ऋष्यप्रोक्ता	३६८
क	
कठिल्लकः	३७०
कपीतनः	३६९
कारवी	३६९
कालमेषी	३६९
कालस्कन्धः	३६९
कालानुसार्यम्	३६९
काश्मीरं काश्मीरी च	३६९
कृष्णवृन्ता	३६८
कृष्णा	३६८
क्रमुकः	३६८
क्षीरिणी	३६८
क्षुरकः	३६८
ग	
गण्डीरः	३७०
गुन्द्रा	३६९
गुन्द्रः	३६९
च	
चन्द्रिका	३७०
चाम्पेयः	३६९
चुक्रम्	३६९
ज	
जीवन्ती	३६८
त	
ताम्रपुष्पी	३६९
द	
दुःस्पर्शः	३६९
देवी	३७०
ध	
धामार्गवः	३६९
न	
नादेयी	३६९

नाम	पृष्ठ
प	
पलङ्कषा	३६९
पलाशः	३६९
पाक्यम्	३६९
पारिभद्रः	३६९
पिच्छिला	३७०
पीतदारु	३६९
पृथ्वीका	३६८
प्रियकः	३६८
ब	
बदरा	३६९
भ	
भूतीकम्	३६८
भृङ्गः	३६८
म	
मण्डूकपर्णः	३६८
मदनः	३६९
मधु	३६९
मधुपर्णी	३६८
मधुरसा	३६९
मधूलिका	३७०
मयूरः	३६९
मर्कटी	३६८
महासहा	३७०
महौषधम्	३६९
र	
रक्तसारः	३६९
रसा	३७०
ल	
लक्ष्मीः	३६९
लता	३६९
लाङ्गली	३७०
लोहम्	३७०
व	
वञ्जुलः	३६९
वरदा	३६९
वशिरः	३६९
वसुकः	३७०
वितुन्नकम्	३७०
विशल्या	३६९
वारः	३६९
वीरतरुः	३६९
श	
शतपर्वा	३६९
शिला	३६९
श्रीपर्णी	३६८
श्रेयसी	३७०
ष	
षड्ग्रन्था	३६९
स	
सदापुष्पः	३६९
समुद्रान्ता	३६९
सहस्रवेधी	३६९
सहा	३७०
सुरभिः	३६९
सुवहा	३७०
सोमवल्कः	३६८
सोमवल्ली	३६९
सौगन्धिकम्	३६८
सौवीरम्	३६९
ह	
हैमवती	३६९

अथ चतुरर्थकानामोषधिवाचकशब्दानामकारादिवर्णानुक्रमणिका—

नाम	पृष्ठ
अ	
अम्बष्ठा	३७०
क	
कारवी	३७०
श	
श्वेतपुष्पा	३७०

अथ बह्वर्थकानामोषधिवाचकशब्दानामकारादिवर्णानुक्रमणिका—

नाम	पृष्ठ
अ	
अक्षः	३७०
क	
काकः	३७०
न	
नागः	३७०
र	
रसः	३७०

इत्यनेकार्थनामवर्गः समाप्तः ॥ २४ ॥

समाप्तञ्चापि परिशिष्टम् भावप्रकाशनिघण्टुभागीयम् ।

* श्रीः *

भावप्रकाशे निघण्टुभागे

परिशिष्टे

समुल्लिखितौषधीनां हिन्दीभाषायामकारादि- वर्णानुक्रमणिका ।

क्रमसंख्या-हिन्दीनाम-संस्कृतनाम—पृ०

अ

१ अकरकरा = आकारकरभः ६८
२ अखरोट = अक्षोटः १८२
३ अगर = अगुरु ४२
४ अगस्त = अगस्त्यः १३६
५ अगस्तका फूल = अगस्तिपुष्पम् २४०
६ अग्निदवना = अग्निदमनकः १३८
७ अङ्कोल = अङ्कोटः ८३
८ अङ्करापान = अङ्करापर्णम् ९८
९ अजमोद = अजमोदा ७
१० अजवाइन = यवानी ७
११ अजवाइन का शाक = यवानी-शाकम् २३९
१२ अजवायन जंगली = वनयवानी ८
१३ अडूसा = आटरूषः ७२
१४ अड़ौल = जपापुष्पम् १३६
१५ अतीस = अतिविषा २८
१६ अदरख = आर्द्रकम् ३
१७ अनार = दाडिमः १७७
१८ अपराजिता (कोयल) = अपराजिता ७६
१९ अपराजिता नीली = नीला-पराजिता ७६
२० अपराजिता सफेद = श्वेता-पराजिता ७६
२१ अफीम = अहिफेनकम् ३२
२२ अबरक = अभ्रकम् १९६
२३ अमरवेल = अकाशवल्ली ११२
२४ अमलतास = आरग्वधः १७
२५ अमलबेंत = अम्लवेतसः १८८
२६ अमावट = आम्रावर्त्तः १९८
२७ अम्बाडा = आम्रातकः १९८
२८ अंबिलोना = चाङ्गेरी २३७
२९ अम्लवाटी पान = अम्लवाटीपर्णम् ९८
३० अरनी = अग्निमन्थः ६१
३१ अरनीभेद = क्षुद्राग्निमन्थः ६२
३२ अरनीभेद = तेजोमन्थः ६२
३३ अरहर = आढकी २२७
३४ अरहर (काली) = कृष्णाढकी २२७
३५ अरहर (लाल) = रक्ताढकी २२७
३६ अरहर (सफेद) = श्वेताढकी २२७
३७ अरंगी मछला = एरङ्गः २९८
३८ अरुई = आलुकी २५२
३९ अर्कपुष्पी ११४
४० अर्जक = अर्जकः १३९
४१ अर्जुन (कोह) = ककुभः १४५

क्रमसंख्या-हिन्दीनाम-संस्कृतनाम	पृ०
४२ अशोक=अशोकः	१३३
४३ अशोक (दूसरी जातिका)= अशोकभेदः	१३३
४४ अष्टवर्ग=अष्टवर्गः	१६
४५ असगन्ध=अश्वगन्धा	९६
४६ असवरग=स्पृक्का	९६
आ	
४७ आक=अर्कः	६८
४८ आकाशमांसी	९१
४९ आतशीशीशा=सूर्यकान्तः	२१४
५० आम=आम्रः	१५७
५१ आमा हलदी=कर्पूरहरिद्रा	२६
५२ आलता=अलक्तकः	२६
५३ आंवला=आमलकी	२
इ	
५४ इन्द्रजो=इन्द्रयवम्	१९
५५ इन्द्रायन=इन्द्रवारुणी	९९
५६ इन्द्रायण (बड़ी)=महेन्द्रवारुणी	१००
५७ इन्द्रायण (लाल)=रक्तेन्द्र-वारुणी	१००
५८ इमली=अम्लिका	१८७
५९ इलसा=इल्लीसः	२५७
उ	
६० उत्पल (रात्रि में फूलनेवाला)	१२४
६१ उदयभास्करकर्पूर	३१
६२ उरद=माषः	२२५
ऊ	
६३ ऊंख=इक्षुः	
ए	
६४ एकपुतिया लहसुन=लशुनभेदः	३०
६५ एकांगी=मुरा	५३
६६ एरण्ड लाल=रक्तैरण्डः	६८
६७ एरण्ड सफेद=शुक्लैरण्डः	६७
६८ एलुआ=एलवालुकम्	५५
६९ एलुवा=एलीयकः	१०५
ओ	
७० ओला=करकाजलम्	२५९
७१ ओस=तौषारजलम्	२५९
क	
७२ ककड़ी=कर्कटी	२४३
७३ ककड़ी (कड़वी)=तिक्तकर्कटी	२४३
७४ ककड़ी (चीनकी)=चीनाक-कर्कटी	२४३
७५ ककड़ी (जंगली)=अर-ण्यकर्कटी	२४३
७६ ककड़ी (तीसरी)=तृतीयकर्कटी	२४३
७७ ककड़ी (दूसरी)=द्वितीयकर्कटी	२४३
७८ ककोड़ा=कर्कोटकी	२४१
७९ कंगुनी=कङ्गुः	२३१
८० कंघी=अतिबला	८५
८१ कचनार छोटा=काञ्चनी	७५
८२ कचनार पीला=पीतकाञ्चनः	७५
८३ कचनार लाल=रक्तकाञ्चनः	७५
८४ कचनार सफेद=श्वेतकाञ्चनः	७५
८५ कचियानोन=काचलवणम्	३४
८६ कचूर=कर्चूरः	५३
८७ कटभी	१९४
८८ कटभीभेद=श्वेतकटभी	१९४
८९ कटसरैया=सैरेयकः	१३३
९० कटसरैया (नीली)=आर्त्तगलः	१३४
९१ कटसरैया (पीली)=कुरण्टकः	१३४
९२ कटसरैया (लाल)=कुरबकः	१३४

क्रमसंख्या-हिन्दीनाम-संस्कृतनाम—पृ०

९३ कटसरैया (सफेद)=सैरेयः १३४
९४ कटहर=पनसः १५९
९५ कटेरी का फल=कण्टकारीफलम् २५०
९६ कण्टकरञ्ज ८०
९७ कण्टाई=विकङ्कतः १७४
९८ कठालू=काष्ठालुकम् २५०
९९ कठूमर=काकादुम्बरिका १४२
१०० कड़वीजीवन्ती=तिक्तजीवन्ती ६६
१०१ कड़वी तोरई=तिक्तकोशातकी २४५
१०२ कत्था=खदिरसारः १४६
१०३ कदम=कदम्बः १२९
१०४ कदमभेद=कदम्बिका १३०
१०५ कदमभेद=धाराकदम्बः १३०
१०६ कदमभेद=धूलीकदम्बः १३०
१०७ कदमभेद=भूमिकदम्बः १३०
१०८ कदमभेद=राजकदम्बः १३०
१०९ कनेर=करवीरः ७०
११० कनेरलाल=रक्तकरवीरः ७१
१११ कनेर सफेद=श्वेतकरवीरः ७१
११२ कन्दगुडूची ५७
११३ कन्दूरी=बिम्बी २४६
११४ कन्दूरी (कडवी)=तिक्तबिम्बी २४७
११५ कन्नानींब=करुणम् १८६
११६ कपास=कार्पासी ८६
११७ कर्पर=कर्पूरम् ३८
११८ कपूरकचरी=गन्धपलाशी ५३
११९ कबीला=काम्पिल्लः १७
१२० कमरख=कर्मरङ्गम् १८६
१२१ कमल=कमलम् १२१
१२२ कमल(नीला)=नीलाब्जम् १२२
१२३ कमल(लाल)=रक्तोत्पलम् १२२
१२४ कमल (सफेद)=श्वेतपद्मम् १२२
१२५ कमलकन्द=शालूकम् १२३
१२६ कमलनाल=मृणालम् १२३
१२७ कमलिनी=पद्मिनी १२३
१२८ कमलगट्टा=पद्माक्षम् १७४
१२९ करञ्ज=करञ्जः ७८
१३० करञ्जी ८०
१३१ करिथासेम=दधिपुष्पी २४८
१३२ करील=करीरः १५३
१३३ करेरुआ=डाडिका २४१
१३४ करेला=कारवेल्लम् २४४
१३५ करेला (जंगली) वनजकारवेल्लम्— २४५
१३६ करेला(जलकी)=जलजकारवेल्लम् २४५
१३७ करेली=कारवेल्ली २४४
१३८ करौंदा=करमर्दः १७३
१३९ करौंदी=करमर्दिका १७३
१४० कर्णिकार १३२
१४१ कलमीआम=राजाम्रः १५८
१४२ कलमीशाक=कलम्बी २३७
१४३ कलम्बक=पीतचन्दनम् ४१
१४४ कलौंजी=कालाजाजी ९
१४५ कलिहारी ७०
१४६ कवई मछली=कविका २५८
१४७ कसेरू=कसेरुः २५४
१४८ कसेरू (छोटा)=चिचोढम् २५४
१४९ कसीस=काशीशम् २०१
१५० कसौंदी=कासमर्दः २४०
१५१ कस्तूरी ३९
१५२ क्षीरविदारी ९४
१५३ क्षुद्रपाटला ६१

क्रमसंख्या-हिन्दीनाम-संस्कृतनाम—पृ०

१५४ कायफल = कट्फल २३
१५५ कालकूटविष २१८
१५६ कालाचीता = कृष्णचित्रकः ७
१५७ कालाञ्जनी ८७
१५८ कालाधतूरा = कृष्णधत्तूरः ७१
१५९ कालानोन = सौवर्चलं लवणम् ३४
१६० कालासेमर = कूटशाल्मलिः १५२
१६१ कालीजीरी = अरण्यजीरकः ९
१६२ कालीमिट्टी = कृष्णमृत्तिका २०२
१६३ कालीसर = कृष्णशारिवा १०७
१६४ काष्ठदारु ४३
१६५ काष्ठागुरु ४३
१६६ कास = काशः ८९
१६७ कांकड़ाश्रृङ्गी = कर्कटश्रृङ्गी २३
१६८ कांच = काचः २१४
१६९ कांसा = कांस्यम् ११३
१७० कींच = कर्दमः २०३
१७१ कुकुरवँदा = कुकुन्दरः १२०
१७२ कुचिला = कुपीलुः १६९
१७३ कुटकी = कटुका १८
१७४ कुड़ा = कुटजः ७८
१७५ कुन्द = कुन्दम् १३५
१७६ कुमुद १२४
१७७ कुमुदिनी १२४
१७८ कुलथी = कुलत्थः २२८
१७९ कुलिञ्जन = सुगन्धा वचा १३
१८० कुलिञ्जनभेद = महाभरी वचा १३
१८१ कुशा = कुशः ९०
१८२ कुसुम = कुसुम्भम् २५
१८३ कुसुम के बीज = कुसुम्भबीजम् २३३
१८४ कृष्णार्जक १३९

क्रमसंख्या-हिन्दीनाम-संस्कृतनाम—पृ०

१८५ कृमिशङ्ख २०४
१८६ कूजा = कुब्जकः १३१
१८७ कूजा (लाल) = रक्तकुब्जकः १३१
१८८ कूठ = कुष्ठम् २१
१८९ केमुआ = केमुकम् २५४
१९० केराकन्द = कदलीकन्दः २५३
१९१ केला = कदली १५९
१९२ केलाभेद = आरण्यकदली १६१
१९३ केलाभेद = कृष्णकदली १६१
१९४ केलाभेद = काष्ठकदली १६१
१९५ केलाभेद = चम्पककदली १६१
१९६ केलाभेद = महेन्द्रकदली १६१
१९७ केलाभेद = सुवर्णकदली १६१
१९८ केलेकाफूल = कदलीपुष्पम् २४०
१९९ केवटी मोथा = कैवर्तीमुस्तकम् ५५
२०० केवड़ा = केतकः १३१
२०१ केवड़ा (पीला) = स्वर्णकेतकी १३२
२०२ केसर = कुङ्कुमम् ४१
२०३ कैथ = कपित्थः १६७
२०४ कोकम = वृक्षाम्लम् १८८
२०५ कोदो = कोद्रवः २३३
२०६ कोशम्भआम = कोशाम्रः १५९
२०७ कोहला = कूष्माण्डी २४२
२०८ कौंच = कपिकच्छुः ८१
२०९ कौंच छोटा = लघुकपिकच्छुः ८१
२१० कौड़ी = कपर्दकः २०३
२११ कौवा ठोढ़ी = काकनासा ११०

ख

२१२ खजूर = खर्जूरी १८०
२१३ खरिया = खटिका २००
२१४ खड़िया (सफेद) = गौरखटिका २०१

क्रमसंख्या- हिन्दीनाम-संस्कृतनाम-पृ०
२१५ खपरिया = खर्परी २०१
२१६ खम्भारी = गाम्भारी ६०
२१७ खरगोश = शशः २५६
२१८ खरबूजा = खर्बूजम् १६४
२१९ खस = उशीरम् ५१
२२० खसखस = खाखसतिला: ३३
२२१ खारीनोन = औषरलवणम् ३९
२२२ खिरनी = राजादनः १७४
२२३ खीरा = त्रपुसम् १६४
२२४ खुरासानी अजवाइन = पारसीकयवानी ८
२२५ खेसारी = त्रिपुटः २२८
२२६ खैर = खदिरः १४५
२२७ खैरभेद = लघुखदिरः १४७
२२८ खैरभेद = वल्लीखदिरः १४७

ग

२२९ गजदण्डसहोरा = पारीषः १४०
२३० गजपीपल = गजपिप्पली ६
२३१ गजमौक्तिकम् २११
२३२ गठिवन = ग्रन्थिपर्णम् ५४
२३३ गदहपुर्ना = रक्तपुनर्नवा १०६
२३४ गन्धक = गन्धकः १९६
२३५ गरईमछली = गरछ्नी २५८
२३६ गरहेडुआ = गवेधुका २३३
२३७ गंगेरन = नागबला ८५
२३८ गंगेरनबड़ी = बृहन्नागबला ८६
२३९ गन्धकोकिला ५५
२४० गन्धमातरी = गन्धमालती ५५
२४१ गन्धमांसी ५१
२४२ गन्धराजगुग्गुलु ४५
२४३ गन्धविरोजा = सरलनिर्यासगुग्गुलुः ४५
२४४ गागरमछली = गर्गरो मत्स्यः २५८
२४५ गाजर = गृञ्जनम् २५३
२४६ गांजा = गञ्जा ३१
२४७ गांडरदूब = गण्डदूर्वा ९२
२४८ गिलोय = गुडूची ५६
२४९ गिलोय का शाक = गुडूचीपत्रम् २४०
२५० गुच्छकरञ्ज ७१
२५१ गुजराती इलायची = एला ४७
२५२ गुड़ = गुडः २५३
२५३ गुफानिवासी = गुहाशय २५६
२५४ गुलाब १२५
२५५ गुञ्जा ८०
२५६ गुञ्जालाल = रक्तगुञ्जा ८१
२५७ गुंजासफेद = श्वेतगुञ्जा ८१
२५८ गूगल = गुग्गुलुः ४४
२५९ गूमा = द्रोणा ११६
२६० गूमा के पत्ते = द्रोणपुष्पादलम् २३९
२६१ गूलर = उदुम्बरः १४१
२६२ गूलर भेद = मधुदुम्बरिका १४२
२६३ गेंठी = वाराहीकन्दः ९२
२६४ गेरू = गैरिकम् २००
२६५ गेहूँ = गोधूमः २२३
२६६ गोखरू = गोक्षुरः ६४
२६७ गोपीचन्दन = गोपीचन्दनम् २०२
२६८ गोभी = गोजिह्वा २४०
२६९ गोभी (जङ्गली) = गोजिह्वा ११९
२७० गोमेद २०९
२७१ गोरखमुण्डी = मुण्डी १०२
२७२ गोलोचन = गोरोचना ५०
२७३ गोह = गोधा २५६

क्रमसंख्या-हिन्दीनाम-संस्कृतनाम-पृ०

२७४ गोंदपटेर = गुन्द्रः ८९
२७५ गौरीसर = श्वेतशारिवा १०७
२७६ ग्राम्यपशु = ग्राम्याः २५७

घ

२७७ घण्टापाढ़ल = घण्टापाटलिः ६१
२७८ घी = घृतम् २६१
२७९ घीकुवार = कुमारी १०५
२८० घुघुरी = कुल्माषाः २५९
२८१ घृतकरञ्ज ७१
२८२ घोंघा = क्षुद्रशङ्खः २१७

च

२८३ चकवड़ = चक्रमर्दः २८
२८४ चकवड़ का शाक = दद्रुघ्नपत्रम् २३९
२८५ चकोतरा विजोराभेद = मधुकर्कटी १८५
२८६ चचडा = चिचिण्डः २४४
२८७ चनसुर = चन्द्रशूरम् ११
२८८ चना = चणकः २२७
२८९ चना (काला) = कृष्णचणकः २२८
२९० चनाखार = चणकाम्लकम् ३६
२९१ चने का शाक = चणकशाकम् २४०
२९२ चन्द्रकान्त २१५
२९३ चम्पा = चाम्पेयः १२७
२९४ चम्बेली = उपजातिः १२७
२९५ चव्य = चव्यम् ५
२९६ चांदी = रूप्यम् १८९
२९७ चिउरा = चिपिटाः २५९
२९८ चिरचिरा = अपामार्गः १०३
२९९ चिरचिरालाल = रक्तापामार्गः १०३
३०० चिरायता = किराततकः १८

क्रमसंख्या-हिन्दीनाम-संस्कृतनाम-पृ०

३०१ चिरायताभेद = नैपालः १९
३०२ चिरौंजी = प्रियालः १७७
३०३ चिल्हक ८२
३०४ चीडा ४३
३०५ चीता = चित्रकः ६
३०६ चीना = चीनकः २३२
३०७ चीनाभेद = वरकः २३२
३०८ चीनियाकपूर = चीनाककर्पूरम् ३९
३०९ चीनी = शर्करा २६३
३१० चुम्बक = चुम्बकः २००
३११ चुरनहार = मूर्वा १०९
३१२ चूक = चुक्रम् ३८
३१३ चूका = चुक्रिका २३८
३१४ चेबुना = चञ्चुकी २३८
३१५ चेबुनाभेद = महाचञ्चुः २३८
३१६ चेबुनाभेद = क्षुद्रचञ्चुः २३८
३१७ चोक = कटुपर्णी २२
३१८ चोपचोनी = द्वीपान्तरवचा ९३
३१९ चोंच से मारकर खानेवाले = प्रतुदाः २५६
३२० चौलाई = तण्डुलीयः २३६

छ

३२१ छाछ = तक्रम् २६०
३२२ छुहारा १८०
३२३ छोटा गोखरू = क्षुद्रगोक्षुरः ६५
३२४ छोंकर = शमी १५५

ज

३२५ जटामांसी ६१
३२६ जमालगोटा = जयपालः ९९
३२७ जमीरो नीबू = जम्बीरः १८६
३२८ जमीरो नीबू (छोटी) = स्वल्पजम्बीरिका १८६

क्रमसंख्या-हिन्दीनाम-संस्कृतनाम—पृ०

३२९ जमीरी नीबू (बड़ा)=बृहज्जम्बीरकम् १८५
३३० जमीरीनीबू (मीठा)=मधुकुक्कुटिका १८५
३३१ जल=पानीयम् २५९
३३२ जलकुम्भी=वारिपर्णी १२४
३३३ जलचौलाई=पानीयतण्डुलीयम् २३६
३३४ जल जामुन=जलजम्बुः १७१
३३५ जलपीपल=जलपिप्पली ११९
३३६ जलबेंत=जलवेतसः ८२
३३७ जलबेंत बड़ा=बृहज्जलवेतसः ८३
३३८ जलभिलावा=नदीभल्लातकः ३१
३३९ जलमहुआ=जलमधूकः १७६
३४० जलमहुआभेद=मधूलिका १७६
३४१ जलसीप=जलशुक्तिः २१६
३४२ जव=यवः २२३
३४३ जवाखार=यवक्षारः ३६
३४४ जवादि कस्तूरी=गन्धमार्जारवीर्यम् ४०
३४५ जवासा=यवासः १०२
३४६ जस्ता=यशदम् १९०
३४७ जाई=जाती १२६
३४८ जावित्री=जातीपत्री ४७
३४९ जामुन=जम्बूः १७०
३५० जामुन (छोटी)=क्षुद्रजम्बूः १७१
३५१ जायफल=जातीफलम् ४६
३५२ जिङ्गिनी १४९
३५३ जीरा=शुक्लजीरकः ९
३५४ जीवन्ती ६५
३५५ जुआर=यावनालः २३४
३५६ जूही=यूथिका १२७

झ

३५७ झरबेर=भूबदरी १७२

ट

३५८ टेकारी=टङ्कारी ८२
३५९ टेंगड़ामछली=सपादमत्स्यः २५८

ढ

३६० ढकने के मध्य में रहनेवाले प्राणी=कोशस्थाः २५७
३६१ ढाक=पलाशः १५०
३६२ ढाकभेद=हस्तिकर्णपलाशः १५१
३६३ ढाढोन=जलशिरीषिका १५५
३६४ ढेंढ़स=डिण्डिशः २४८

त

३६५ तगर=तगरम् ४४
३६६ तज=त्वक् ४८
३६७ तमाल=तमालः १५०
३६८ तरबूज=कालिन्दम् १६४
३६९ ताड़=तालः १६६
३७० तामा=ताम्रम् १८९
३७१ तालभेद=श्रीतालः १६७
३७२ तालभेद=हिन्तालः १६७
३७३ तालमखाना=कोकिलाक्षः १०४
३७४ तालीसपत्र=तालीसपत्रम् ५४
३७५ तिरिच्छ=तिनिशः १५६
३७६ तिल=तिलः २२९
३७७ तिलक (कः) १३५
३७८ तिलकुट्ट=पललम् २५९
३७९ तिलखरी=पिण्याकः २५९
३८० तीनी=नीवारः २३३
३८१ तीसी=अतसी २२९
३८२ तुम्बी=अलावूर्वर्तुला २४२

क्रमसंख्या-हिन्दीनाम-संस्कृतनाम—पृ०

३८३ तुम्बी (कड़वी) = कटुतुम्बी २४२
३८४ तुम्बुल = तुम्बुरु १९
३८५ तुलसी १३७
३८६ तूतिया = तुत्थम् १९३
३८७ तुन = तूणी १५०
३८८ तृणकुंकुम = तृणकुङ्कुमम् ४९
३८९ तेजपात = पत्रकम् ४८
३९० तेजबल = तेजवती २१
३९१ तेल = तैलम् २६१
३९२ तेंदू = तिन्दुकः १६८
३९३ तोरई = राजकोशातकी २४५
३९४ त्रायमान = त्रायमाणा १०९
३९५ त्रिफला ३

थ

३९६ थुनेर = स्थौणेयकम् ५४
३९७ थूहर = सेहुण्डः ६९
३९८ थूहर के पत्ते = सेहुण्डपत्रम् २३९
३९९ थूहरभेद = सेहुण्डभेदः ६९

द

४०० दवना = दमनकः १३८
४०१ दंडारीमछली = दण्डमत्स्यः २५८
४०२ दन्ती = लघुदन्ती ९८
४०३ दन्ती (बड़ी) = बृहद्दन्ती ९८
४०४ दर्दुरमौक्तिकम् २१२
४०५ दही = दधि २६०
४०६ दाख = द्राक्षा १७९
४०७ दाखभेद = कपिलद्राक्षा १७९
४०८ दाखभेद = काकलीद्राक्षा १७९
४०९ दाभ = क्षुरपत्रः ९०
४१० दारुहरदी = दारुहरिद्रा २७
४११ दालचीनी = दारुसिता ४८

क्रमसंख्या-हिन्दीनाम-संस्कृतनाम—पृ०

४१२ दाहागुरु ४३
४१३ दुग्धफेनी ११५
४१४ दुद्धी = दुग्धिका ११५
४१५ दुपहरिया = बन्धुजीवः १३५
४१६ दुर्गन्धखैर = इरिमेदः १४६
४१७ दूध = दुग्धम् २६०
४१८ दूसरे से छीनकर खाने वाले = प्रसहाः २६६
४१९ देवदार = देवदारु ४३
४२० देवदाली (पीली) ११८
४२१ देवदाली (लाल) ११९
४२२ देवदाली (सफेद) ११८
४२३ द्रोणी लवण (णम्) ३५

ध

४२४ धतूर = धत्तूरः ७१
४२५ धनिया = धान्यकम् १०
४२६ धमासा = दुरालभा १०२
४२७ धाई = धातकी २४
४२८ धान = धान्यम् २२१
४२९ धामिन = धन्वङ्गः १५३
४३० धूप = सरलः ४३
४३१ धौ = धवः १५२

न

४३२ नकछिकनी = छिक्कनी १२०
४३३ नख, नखी ५०
४३४ नदी के किनारे चरने वाले = कूलेचराः २६७
४३५ नरसल = नलः ८८
४३६ नरसलभेद = देवनालः ८८
४३७ नलिका ५६
४३८ नवसादर = नरसारः ३५

क्रमसंख्या-हिन्दीनाम-संस्कृतनाम—पृ०

४३९ नाई (रास्नाभेद) = नाकुली २०
४४० नागकेसर = नागकेशरः ४९
४४१ नागचम्पा = नागचम्पकः १२८
४४२ नागदवन = नागदमनी ११९
४४३ नागपुष्पी १११
४४४ नागरमोथा - नागरमुस्तकम् ९२
४४५ नागार्जुनी ११९
४४६ नाडी का शाक = कालशाकम् २३६
४४७ नारङ्गी = नारङ्गः १६८
४४८ नारियल = नारिकेलः १६२
४४९ नारियलभेद = मधुनारिकेलः १६३
४५० नासपाती = अमृतफलम् १८२
४५१ निर्मली = कतकः १७८
४५२ निसोत = त्रिवृत् ९७
४५३ निसोत (काली) = श्यामात्रिवृत् ९७
४५४ निसोत (लाल) = रक्तत्रिवृत् ९७
४५५ निसोत (सफेद) = श्वेतत्रिवृत् ९७
४५६ नीबू = निम्बुकम् १८६
४५७ नीम = निम्बः ७२
४५८ नील = नीला १०१
४५९ नीलचम्पा = नीलचम्पकः १२८
४६० नीलम = नीलम् २०९
४६१ नीलोफर = नीलोत्पलम् १२२
४६२ नेनुआ = महाकोशातकी २४५
४६३ नेवारी = वासन्ती १२५

प

४६४ पंक्तियों से आकाश में उड़ने वाले पक्षी = प्लवाः २६७
४६५ पटसन = शणपुष्पी १०८

क्रमसंख्या-हिन्दीनाम-संस्कृतनाम—पृ०

४६६ पटसनभेद = क्षुद्रशणपुष्पिका १०८
४६७ पटसनभेद = महाशणपुष्पिका १०८
४६८ पटुआशाक = पट्टशाकः २३७
४६९ पटुलिका पान (पर्णम्) ९८
४७० पठानीलोध = पट्टिकालोध्रः २९
४७१ पतङ्ग = पतङ्गम् ४२
४७२ पत्ते खानेवाले = पर्णमृगाः २५६
४७३ पद्ममधु १२३
४७४ पदूमाख = पद्मकम् ४४
४७५ पनडी = पर्पटी ५६
४७६ पन्ना = गारुत्मतम् २०५
४७७ पपता मछली = महासफरः २५८
४७८ पपरियाखैर = श्वेतखदिरः १४६
४७९ परवल = पटोलः २४६
४८० परवल (कडुवा) = तिक्तपटोलिका २४६
४८१ परवर के पत्ते = पटोलपत्रम् २४०
४८२ पर्णकपूर = पर्णकर्पूरम् ३९
४८३ पसरन = गन्धप्रसारिणी १०७
४८४ पाकर = प्लक्षः १४२
४८५ पाखानभेद = पाषाणभेदकः २४
४८६ पाखानभेद (छोटा) = क्षुद्रपाषाणभेदः २४
४८७ पाढ = पाठा ९६
४८८ पाढ (छोटी) = लघुपाठा ९६
४८९ पाढल = पाटला ६०
४९० पातालगरुड़ी = छिलिहिण्टः ११२
४९१ पान = नागवल्ली ५७
४९२ पानी आमला = प्राचीनामलकम् १७२
४९३ पारा = पारदः १९४
४९४ पालक = पालक्या २३६

क्रमसंख्या-हिन्दीनाम-संस्कृतनाम—पृ०

४९५ पांगानमक = सामुद्रं लवणम् ३४
४९६ पांवों के प्राणी = पादिनः २५७
४९७ पिठवन = पृश्निपर्णी ६३
४९८ पिण्डखजूर = पिण्डखर्जूरी १८०
४९९ पिण्डालुक = पिण्डारम् २४९
५०० पिण्डालू = पिण्डालुकम् २५१
५०१ पितौजिया = पुत्रजीवः १४९
५०२ पित्तपापड़ा = पर्पटः ७२
५०३ पित्तपापड़ा के पत्ते = पर्पट-पत्रम् २३९
५०४ पिपरामूल = पिप्पलीमूलम् ५
५०५ पियाज = पलाण्डुः ३०
५०६ पियाजभेद = राजपलाण्डुः ३०
५०७ पीतल = आरकूटम् ११३
५०८ पीपर = पिप्पली ४
५०९ पीपल = पिप्पलः १४०
५१० पीली जाई = स्वर्णजातिः १२६
५११ पीलीजीवन्ती = स्वर्णजीवन्ती ६६
५१२ पीलू = पीलुः १८२
५१३ पीलू (बड़ा) = बृहत्पीलुः १८२
५१४ पुखराज = पुष्परागः २०८
५१५ पुण्डेरी = प्रपौण्डरीकम् ५६
५१६ पुनर्नवा (नील) = नील-पुनर्नवा १०६
५१७ पुनर्नवा (सफेद) = श्वेत-पुनर्नवा १०६
५१८ पुष्पकासीस = पुष्पकाशीशम् २०२
५१९ पुष्पाञ्जन = पुष्पाञ्जनम् १९८
५२० पुहकरमूल (कुठभेद) = पुष्क-रमूलम् २२
५२१ पूतिकरञ्ज (ञ्जः) ७९

क्रमसंख्या-हिन्दीनाम-संस्कृतनाम—पृ०

५२२ पेठा = कूष्माण्डम् २४१
५२३ पेठा (लाल) = पीतकूष्मा-ण्डम् २४१
५२४ पोठिया मछली = प्रोष्ठी २६८
५२५ पोतासकपूर = पोताश्रयकर्पूरम् ३८
५२६ पोय = पोतकी २३५
५२७ पोस्ता = खाखसः ३२
५२८ प्रियङ्गु(ङ्गुः) ५३

फ

५२९ फटकिरी = स्फटिका १९९
५३० फरहद = पारिभद्रः ७४
५३१ फालसा = परूषकम् १७६
५३२ फिरोजा = पेरोजम् २१५
५३३ फूट = चिर्भिटम् १६१
५३४ फूटभेद = मृगाक्षी १६२
५३५ फूलप्रियंगुः = गन्धप्रियङ्गुः ५३

ब

५३६ बकायन = महानिम्बः ७३
५३७ बकुची = वाकुची २७
५३८ बथुआ = वास्तूकम् २३४
५३९ बथुआ (बड़ा) = गौडवा-स्तूकम् २३५
५४० बडपत्री = वटपत्री ११३
५४१ बड़ = वटः १४०
५४२ बड़हल = लकुचः १५१
५४३ गोखरू = बृहद्गोक्षुरः ६५
५४४ बड़ाजीवन्ती = बृहज्जीवन्ती ६६
५४५ बड़ानील = महानीली १०१
५४६ बड़ाशाल = सर्जकः १४३
५४७ बड़ी इलायची = स्थूलैला ४७
५४८ बडी कटेरी = बृहती ६३
५४९ बड़ीकटेरी भेद = क्षुद्रबृहतिका ६३
५५० बड़ीकटेरी भेद = बृहतीभेदः ६४

क्रमसंख्या	हिन्दीनाम-संस्कृतनाम	पृ०
५५१	बड़ी कटेरी भेद = श्वेतबृहतिका	६४
५५२	बड़ीजामुन = राजजम्बुः	१७०
५५३	बड़ी मुण्डी = महामुण्डी	१०३
५५४	बदाम = वातादः	१८१
५५५	बनककोड़ा = बन्ध्याकर्कोटकी	११८
५५६	बन्दाल = बन्दा	११२
५५७	बबूर = बब्बूलः	१४८
५५८	बबूर का गोंद = बब्बूलनिर्यासः	१४८
५५९	बरवेल = बीरतरुः	१२०
५६०	बरासकपूर = कर्पूरभेदः	३८
५६१	बरियारा = बला	८४
५६२	बर्बरचन्दन(नम्)	४२
५६३	बहेड़ा = बिभीतकः	२
५६४	बाकुचीभेद = चित्रारिः	२८
५६५	बाणपुष्प = अम्लाटनः	१३३
५६६	बारहसिंगा = न्यङ्कुः	२५५
५६७	बालू = बालुका	२०१
५६८	बांस = वंशः	८७
५६९	बिजोरा = बीजपूरः	१८३
५७०	बिजोरा (जंगली) = वनबीजपूरः	१८४
५७१	बिजोरा (माठा) = मधुरमातुलुङ्गम्	१८४
५७२	बिरोजा = कुन्दुरुः	४६
५७३	बिल्लौर = स्फटिकः	२१४
५७४	बीरण = वीरणम्	५१
५७५	बेर = बदरी	१७१
५७६	बेरभेद = गजकोलः	१७२
५७७	बेरभेद = राजबदरः	१७२
५७८	बेरी = कैरविणीफलम्	१७५
५७९	बेल = बिल्वः	५९
५८०	बेलफल = बिल्वफलम्	१५७
५८१	बेला = वार्षिकी	१२६
५८२	बेलाभेद = मल्लिका	१२६
५८३	बेलिया पीपर = नन्दीवृक्षः	१४१
५८४	बेंत = वेतसः	८२
५८५	बेंतबड़ा = बृहद्वेत्रः	८२
५८६	बाआरी = पाठीनः	२५७
५८७	बोड़ा = राजमाषः	२२५
५८८	बोल = बोलम्	२०४
५८९	ब्रह्मपुत्रविष	२१८
५९०	ब्राह्मी = ब्राह्मी	११६
५९१	ब्रीहि।धान = ब्रीहिधान्यम्	२२३
	भ	
५९२	भटकटैया = कण्टकारी	६४
५९३	भटवासु = निष्पावः	२२५
५९४	भटवासु(लाल) = रक्तनिष्पावः	२२६
५९५	भटवासुभद = नदीनिष्पावः	२२६
५९६	भंटा = वृन्ताकम्	२४८
५९७	भटेउर = चोरकः	५४
५९८	भद्रदन्ती	९८
५९९	भद्रमुस्तक (कम्)	५३
६००	भसीडा = भिस्साण्डम्	१२३
६०१	भसीडा = शालूकम्	२५४
६०२	भाकुरमछली = भकुरः	२५७
६०३	भारङ्गी = भार्गी	२३
६०४	भांग = भङ्गा	३१
६०५	भांगरा = भृङ्गराजः	१०८
६०६	भिण्डी = भण्डा	२४९
६०७	भिलावा = भल्लातकः	३०
६०८	भीमसेनीकपूर (पूरम्)	३८
६०९	भुइछत्ता = संस्वेदजशाकम्	२५४
६१०	भुंइखखसा = मार्कण्डिका	११८

क्रमसंख्या-हिन्दीनाम-संस्कृतनाम	पृ०
६११ भुंइचम्पा = भूमिचम्पकः	१२८
६१२ भुआमला = भूम्यामलकी	११५
६१३ भूमिजगुग्गुलु (लुः)	४५
६१४ भूतृण = भूतृणम्	९१
६१५ भूमिपाटला	६१
६१६ भूरिछरीला = शैलेयम्	५२
६१७ भोजपत्र = भूर्जपत्रः	१५०
म	
६१८ मकरतेंदुआ = मर्कटतिन्दुकः	१६९
६१९ मकोय = काकमाची	११०
६२० मक्का = मकायः	२३४
६२१ मक्खन = नवनीतम्	२६१
६२२ मखाना = मखान्नम्	१७५
६२३ मङ्गल्यागुरु	४३
६२४ मछरी = मत्स्याः	२५७
६२५ मछेछी = मत्स्याक्षी	११३
६२६ मंजीठ = मञ्जिष्ठा	२४
६२७ मटर = कलायः	२२८
६२८ मटरका शाक = कलायशाकम्	२४०
६२९ मडुआ = नर्त्तकः	२३२
६३० मंडुकपानी = मण्डूकपर्णी	११६
६३१ मण्डूर = मण्डूरम्	१९२
६३२ मत्स्यजमौक्तिकम्	२१२
६३३ मदिरा = मद्यम्	२६२
६३४ मरसा (लाल) = रक्तमारिषः	२३५
६३५ मरसा (सफेद) = श्वेतमारिषः	२३५
६३६ मरिच = मरिचम्	४
६३७ मरुवा = मरुवकः	१३८
६३८ मर्कटी पिप्पली	६
६३९ मलाई = सन्तानिका	२६०
६४० मषवन = माषपर्णी	६७
६४१ मसी = काकजङ्घा	११०
६४२ मसुरी = मसूरः	२२६
६४३ महाकरञ्ज (ञ्जः)	७१
६४४ महुआ = मधूकः	१७५
६४५ मंगुरी = मद्गुरः	२५८
६४६ माधवी	१३१
६४७ मानकन्द (न्दः)	२५३
६४८ मानिक = माणिक्यम्	२०६
६४९ मालकांगुनी = ज्योतिष्मती	२१
६५० मांस = मांसम्	२५५
६५१ मांसरोहिणी	८१
६५२ मिश्री = सितोपला	२६३
६५३ मीठा जमीरीनीबूभेद = लिम्पाकम्	१८५
६५४ मीठातेलिया (विष) = वत्सनाभः	२१७
६५५ मीठानीबू = मिष्टनिम्बूकम्	१८६
६५६ मीठानीम = कैडर्यः	७४
६५७ मुगवन = मुद्गपर्णी	६६
६५८ मुचुकुन्द (न्दः)	१३४
६५९ मुरदासंग = कङ्कुष्ठः	२०४
६६० मुलहठी = यष्टीमधु	१६
६६१ मुण्डाहारिन = मुण्डी।	२५६
६६२ मूली = मूलकम्	२५२
६६३ मूली (बड़ी) = बृहन्मूलकम्	२५२
६६४ मूली के पत्ते = मूलकपत्रम्	२३९
६६५ मूसली (सफेद) = श्वेतमुशली	९५
६६६ मूसली (स्याह) = मुशली	९४
६६७ मूसा = आखुः	२५६
६६८ मूसाकर्णी = आखुकर्णी	१२१
६६९ मूसाकर्णी (बड़ी) = बृहत्या-खुकर्णी	१२१

क्रमसंख्या-हिन्दीनाम-संस्कृतनाम—पृ०

६७० मूंग = मुद्गः २२४
६७१ मूंग(काला) = कृष्णमुद्गः २२४
६७२ मूंग(धूसर) = धूसरमुद्गः २२४
६७३ मूंग(हरा) = हरिन्मुद्गः २२४
६७४ मूंगा = प्रवालः २१३
६७५ मूंगाकी मंजरी = प्रवालमञ्जरी २१३
६७६ मूंज = मुञ्जः ८९
६७७ मूत = मूत्रम् २६१
६७८ मेउड़ी = निर्गुण्डी ७७
६७९ मेउड़ीभेद = अरण्यनिर्गुण्डी ७७
६८० मेउड़ीभेद = कर्त्तरीनिर्गुण्डी ७७
६८१ मेढ़ाशिंगी = मेषशृङ्गी १११
६८२ मेथी = मेथिका ११
६८३ मनफल = मदनः १९
६८४ मनशिल = मनःशिला १९७
६८५ मोइया = माचिका २१
६८६ मोई = मोचिका २५७
६८७ मोखा = मोक्षः १५४
६८८ मोचरस = मोचरसः १५२
६८९ मोठ = वनमुद्गः २२६
६९० मोतियाभेद = मल्लिका १३१
६९१ मोती = मुक्ता २१०
६९२ मोती की सीप = मुक्ताशुक्तिः २१६
६९३ मोथा = मुस्तकम् ५२
६९४ मोथीतृण = एरका ८९
६९५ मोरशिखा = मयूरशिखा १२१
६९६ मोंगरा = मुद्गरः १२६
६९७ मौलसिरी = बकुलः १२९
६९८ मौलसिरी (बड़ी) = बृहद्बकुलः १२९

र

६९९ रतालू = रक्तालुकम् २५१
७०० रसौत = रसाञ्जनम् २७
७०१ राई = राजिका २३०
७०२ राई (काली) = कृष्णराजिका २३१
७०३ राजधत्तूर (रः) ७१
७०४ राजीव हरिण = राजीवः २५६
७०५ राब = फाणितम् २६३
७०६ रामबबूर = किङ्किरातः १३२
७०७ रामसर = भद्रमुञ्जः ८८
७०८ राल = रालः ४५
७०९ रास्ना २०
७१० रांगा = वङ्गम् १८९
७११ रीठा = अरिष्टकः १४८
७१२ रूपामाखी = तारमाक्षिकम् १९२
७१३ रेणुका ५४
७१४ रेवटी = राजावर्त्तः १९९
७१५ रेहगवानोन = खानिजंलवणम् ३४
७१६ रोमकलवण (णम्) ३५
७१७ रोहिणी ८२
७१८ रोहिसघास = कत्तृणम् ९०
७१९ रोहिसघासभेद = दीर्घरोहिषकम् ९१
७२० रोहूमछली = रोहितः २५७
७२१ रोहेड़ा = रोहीतकः १४७
७२२ रोहेड़ाभेद = श्वेतरोहीतकः १४७

ल

७२३ लछमना = लक्ष्मणा ८६
७२४ लजारू = लज्जालुः ११४
७२५ लजालूभेद = अलम्बुषा ११४
७२६ लताकस्तूरी ४०

क्रमसंख्या-हिन्दीनाम-संस्कृतनाम—पृ०

७२७ लहसुन = लशुनः २९
७२८ लहसुनिया = वैदूर्यम् २१०
७२९ लालशालि = रक्तशालिः २२२
७३० लामज्जक ५५
७३१ लालआक = रक्तार्कः ६९
७३२ लालचन्दन = रक्तचन्दनम् ४१
७३३ लालचीता = रक्तचित्रकः ६
७३४ लालसहदेई = रक्तपुष्पा महा-
बला ८५
७३५ लाहो (लाख) = लाक्षा २६
७३६ लिसोड़ा = बहुवारः (श्लेष्मा-
तकः) १७७
७३७ लिसोड़ा (छोटे फल का गोंदी) १७८
७३८ लिसोड़ा (मध्यम फलवाला) =
भूकर्बुदारः १७८
७३९ लोणा (छोटी) = लोणी २३७
७४० लोणा (बड़ी) = बृहल्लोणी २३७
७४१ लोणारक्षार = लवणक्षारः ३७
७४२ लोध = लोध्रः २९
७४३ लोहभेद = कान्तलोहम् १९१
७४४ लोहभेद = कृष्णलोहम् १९१
७४५ लोहभेद = मुण्डलोहम् १९१
७४६ लोहा = लोहम् १९१
७४७ लौकी = अलावूः २४२
७४८ लौंग = लवङ्गम् ४७

व

७४९ वच = वचा १२
७५० वन कपास = वनकार्पासी ८७
७५१ वनकोदो = वनकोद्रवः २३३
७५२ वनतुलसी = वर्वरी १३९
७५३ वनदवना = वनदमनकः १३८

क्रमसंख्या-हिन्दीनाम-संस्कृतनाम—पृ०

७५४ वनपिप्पली ६
७५५ वनवर्वरी १३९
७५६ वनमेथी = वनमेथिका ११
७५७ वनहलदी = वनहरिद्रा २६
७५८ वरना = वरुणः १४४
७५९ वराहमौक्तिकम् २११
७६० वर्वरी १२०
७६१ वल्लीपाटला ६१
७६२ वंशलोचन = वंशरोचना १५
७६३ वंसपत्री = वंशपत्री ११३
७६४ वामीमछली = वर्मिमत्स्यः २५८
७६५ वायविडङ्ग = विडङ्गः १४
७६६ वाराहीकन्द (न्दः) २५३
७६७ विजैसार = असनः १४५
७६८ विदारीकन्द (न्दः) १३
७६९ विदारीकन्द (वंगीय) १४
७७० विदारीकन्द (संयुक्तप्रान्तीय) १३
७७१ विपरीतलजारू = विपरीतल-
ज्जालुः ११४
७७२ विरियासंचरनोन = विडलवणम् ३४
७७३ विष्किरपक्षी = विष्किराः २६६
७७४ देट्टचन्दन (नम्) ४१
७७५ वेणुमौक्तिकम् २१२
७७६ वैक्रान्तमणि (णिः) २१४

श

७७७ शहद = मधु २६२
७७८ शङ्खावास कपूर (कर्पूरम्) ३८
७७९ शङ्ख = शङ्खः २०३
७८० शङ्ख (दक्षिणावर्त्त) २०४
७८१ शङ्खमौक्तिकम् २११
७८२ शङ्खालू = शङ्खालुकम् २५१

क्रमसंख्या-हिन्दीनाम-संस्कृतनाम—पृ०

७८३ शङ्खाहुली = शङ्खपुष्पी ११३
७८४ शम्बरचन्दन (नम्) ४१
७८५ शालिधान = शालिधान्यम् २२२
७८६ शालिभेद (दः) २२२
७८७ शिरगोला = दुग्धपाषाणिका २१६
७८८ शिरियारी = शितिवारः २३९
७८९ शिलाजीत = शिलाजतु १९४
७९० शिंगियाविष = शृङ्गिकविषम् २१८
७९१ शीतलचीनी = कक्कोलम् ५५
७९२ शीशा = सीसम् १९०
७९३ शुक्तिमौक्तिकम् २११
७९४ श्रीवाटी पान (पर्णम्) ५८

स

७९५ सज्जीखार = स्वर्जिका ३६
७९६ सतालू = मध्वालुकम् २५१
७९७ सतावर = शतावरी ९५
७९८ सतावर (बड़ी) = महाशतावरी ९५
७९९ सतौना = सप्तपर्णः १५५
८०० सत्तू = सक्तवः २५९
८०१ सन = शणः १०९
८०२ सफेद आक = श्वेतार्कः ६५
८०३ सफेद कण्टकारी = श्वेत-कण्टकारिः ६४
८०४ सफेदचन्दन = चन्दनम् ४०
८०५ सफेद चम्पा = श्वेतचम्पकः १२८
८०६ सफेद दूब = श्वेतदूर्वा ९२
८०७ सफेदफूलपलाश = श्वेतपुष्प-पलाशः १५१
८०८ सफेद मरिच = सितमरिचम् ४
८०९ सफेदवच = पारसीकवचा १२
८१० सफेदसोहागा = श्वेतटङ्कणः ३७
८११ समुद्रफल = इज्जलः ८३

क्रमसंख्या-हिन्दीनाम-संस्कृतनाम—पृ०

८१२ समुन्दरफेन = समुद्रफेनः १५
८१३ संभालू = सिन्दुवारः ७७
८१४ सरफोंका = शरपुङ्खः १०१
८१५ सरफोंका (सफेद) = श्वेतशर-पुङ्खा १०१
८१६ सरफोंका भेद = कण्ठपुङ्खा १०२
८१७ सरसो = रक्तसर्षपः २३०
८१८ सरसो का नाल = सार्षपनालम् २५०
८१९ सरसो का शाक = सार्षपशाकम् २४०
८२० सरसो (सफेद) = गौरसर्षपः २३०
८२१ सरहटी = सर्पाक्षी ११३
८२२ सरिवन = शालिपर्णी ६२
८२३ सर्पजमौक्तिकम् २१२
८२४ सहजना का फूल व मधु = शोभाञ्जनस्य पुष्पं मधु च- २४१
८२५ सहजने की फली = शोभाञ्जनफलम् २४८
८२६ सहतूत = तूतः १७६
८२७ सहदेई = महाबला ८४
८२८ सहिजना = शोभाञ्जनः ७५
८२९ संखियाविष = आखुपाषाणकः २१८
८३० साखू = शालः १४३
८३१ सागोन = भूमीरुहः १६६
८३२ साठोधान = षष्टिकधान्यम् २२३
८३३ सातला = शातला ७०
८३४ सातसी पान (पर्णम्) ५८
८३५ साबुन = सर्वक्षारः ३७
८३६ सालई = शल्लकी १४४
८३७ साही = शल्लकी २६६

क्रमसंख्या-हिन्दीनाम-संस्कृतनाम—पृ०

८३८ सांप = भुजङ्गः २५६
८३९ साबर हरिन = शम्बरः २५६
८४० सांभर नमक = शाकम्भरीयम् ३३
८४१ सांवा = श्यामाकः २३२
८४२ सिताजंक (कः) १३९
८४३ सिरस = शिरीषः १४३
८४४ सिलन्ध = शिलीन्ध्रः २५७
८४५ सिलारस = शिलारसः ४६
८४६ सिवार = शैवालम् १२५
८४७ सिहोरा = शाखोटः १९३
८४८ सिंगरफ = हिङ्गुलम् १९५
८४९ सिंगी मछली = शृङ्गी २५७
८५० सिंघाड़ा = शृङ्गाटकम् १७५
८५१ सिन्दुरिया = सिन्दूरी १३६
८५२ सिन्दूर = सिन्दूरम् १९४
८५३ सीसम = शिंशपा १४४
८५४ सीसो (कपिल) = कपिल-शिंशपा १४४
८५५ सीसो (सफेद) = श्वेतशिंशपा १४४
८५६ सुअरा सेम = कोलशिम्बिः २४८
८५७ सुक्कडि चन्दन (नम्) ४१
८५८ सुगन्धबाला = बालम् ५०
८५९ सुगन्ध भूतृण (णम्) ९१
८६० सुदर्शन = सुदर्शना १२०
८६१ सुपारी = गुवाकः १६५
८६२ सुरमा (सफेद) = सौवीरम् १९८
८६३ सुरमा (काला) = स्रोतोऽञ्जनम् १९८
८६४ सुलतानचम्पा = सुल्तानचम्पकः १२८
८६५ सुलेमानीखजूर = सुलेमानी खजूरी १६१

क्रमसंख्या-हिन्दीनाम-संस्कृतनाम—पृ०

८६६ सुवर्णजूही = स्वर्णयूथिका १२७
८६७ सुहागा (खार) = टङ्कणक्षारः ३७
८६८ सूरनकन्द = सूरणम् २६०
८६९ सूरनका नाल = सूरणनालम् २६०
८७० सूरन (जंगली) = वनसूरणम् २६०
८७१ सेम = शिम्बिः २४७
८७२ सेमर = शाल्मलिः १९१
८७३ सेमल का फूल = शाल्मलीपुष्पम् २४१
८७४ सेव = सेवम् १८१
८७५ सेवती = शतपत्री १२५
८७६ सेंधानिमक = सैन्धवम् ३३
८७७ सैंहली पिप्पली ६
८७८ सोआ = शतपुष्पा १०
८७९ सोनवेल = स्वर्णवल्ली ८६
८८० सोना = सुवर्णम् १८८
८८१ सोनागेरू = स्वर्णगैरिकम् २००
८८२ सोनापाठा = श्योनाकः ६२
८८३ सोनामाखी = स्वर्णमाक्षिकम् १९२
८८४ सोमलता १११
८८५ सोरठीमाटी = सौराष्ट्री मृत्तिका २०२
८८६ सोरा = सुवर्चिका ३६
८८७ सोहागा = टङ्कणः १९९
८८८ सोंठ = शुण्ठी ३
८८९ सौरी = शष्कुली २५७
८९० सौंफ = मिश्रेया १०
८९१ स्थलकमल = पद्मचारिणी १२३
८९२ स्याहजीरा = कृष्णजीरकः ९
८९३ स्निग्धदारु ४३
८९४ हड़संहारी = अस्थिसंहारः १०४

क्रमसंख्या-हिन्दीनाम-संस्कृतनाम—पृ०

८९५ हड़ संहारी (चौधारी) = अस्थिसंहारभेदः १०५
८९६ हड़संहारी (त्रिधारी) = अस्थिसंहारभेदः १०५
८९७ हरड = हरीतकी १
८९८ हरताल = हरितालम् ११६
८९९ हरिचन्दन(नम्) ४२
९०० हरिन = हरिणः २५५
९०१ हरिन (काला) = एणः २५५
९०२ हरिन (कुरंग) = कुरङ्गः २५५
९०३ हरिन (चित्तल) = पृषतः २५५
९०४ हरिन (रोज) = ऋष्यः २५५
९०५ हरीदूब = नीलदूर्वा ८१
९०६ हलदी = हरिद्रा २६
९०७ हलदुआ विष = हारिद्रविषम् २१८
९०८ हंसराज = हंसपदी १११

क्रमसंख्या-हिन्दीनाम-संस्कृतनाम—पृ०

९०९ हस्तारू = हस्त्यालुकम् २५१
९१० हाऊबेर (दोप्रकारका) = हवुषाद्वयम्— १४
९११ हाथीकन्द = हस्तिकन्दः (कर्णः) २५३
९१२ हारफारेवड़ी = लवली १७३
९१३ हिमकर्पूर (रम्) ३८
९१४ हिंगोट = इङ्गुदी १४९
९१५ हीरा = हीरकः २०५
९१६ हींग = हिङ्गु ११
९१७ हींगपत्री = हिङ्गुपत्री ११३
९१८ हुलहुल = सुवर्चला ११७
९१९ हुलहुलभेद = ब्रह्मसुवर्चला ११७
९२० हुलहुलशाक = हिलमोचिका २३९
९२१ होरहा = होलकः २५९
९२२ ह्वसणोया पान (पर्णम्) ५८

आयुर्वेद तथा संस्कृत की सब प्रकार की पुस्तकें

मिलने का एक मात्र पता—

चौखम्बा-संस्कृत-पुस्तकालय,

बनारस सिटी ।

श्रीमद्भावमिश्रविरचितः

भावप्रकाशः

विद्योतिनी-भाषा टीका सहितः।

यह ग्रन्थ यद्यपि अन्यत्र भी प्रकाशित हुआ है तथापि आकार तथा मूल्य की अधिकता साथही अनुवाद के अधूरेपन से गरीब विद्यार्थियों को बहुत कठिनाई पड़ती हुई देख उनकी सुविधा के लिए मैंने इसका सुन्दर विद्योतिनी नामक अत्यन्त सरल तथा विस्तृत हिन्दी अनुवाद करा कर प्रकाशन किया है।

इसमें और भी सबसे उत्तम विशेषता यह है कि इसके गर्भ-प्रकरण के ऊपर आधुनिक पाश्चात्य आयुर्वेद (डाक्टरी) के अनुसार एक सचित्र परि-शिष्ट तथा निघण्टु भाग में प्रत्येक औषधियों के साथ २ एक विशद विवरण भी दिया गया है। जिसके लिये रूपनिघण्टुकार सुप्रसिद्ध श्रद्धेय श्रीरूप-लालजी (भूतपूर्व सम्पादक सचित्र बूटी दर्पण) ने अपना अमूल्य समय देकर दर्शनीय लेख प्रकाशित किया है। इसमें प्रत्येक विषयों के यथास्थान नवीन नवीन अवतरण भी प्रकाशित किये गये हैं तथा विशेष २ ओषधियों पर चित्र भी दिये गये हैं जिससे 'सोने में सुगन्धि' आ गई है। हमारा दृढ़ विश्वास है कि इस संस्करण का मुकाबला दूसरे कोई भी संस्करण नहीं कर सकते। मूल्य भी सवसाधारण की सुविधा के लिए बहुत अल्प रक्खा जायगा।

प्राप्तिस्थानम्—चौखम्बा संस्कृत पुस्तकालय, बनारस सिटी।

सचित्र-

रसेन्द्रसारसंग्रह-

गूढार्थसन्दीपिकासंस्कृतव्याख्यासहि

प्रिय आयुर्वेदप्रेमि सज्जनों !

जगदीश्वर की अनुपम अनुकम्पा से सर्वत्र प्रचलित प्राचीन ग्र
संग्रह का विशद तथा सरल संस्कृत टीका विशेषकर विद्यार्थियों
उपयोगी तैयार हो गई, अर्थात् मैंने-व्याकरण-साहित्य-दर्शना
तथा काशी हिन्दूयूनिवर्सिटी से रसायन भौतिक वनस्पति और
आयुर्वेद और डाक्टरी में परमनिष्णात तथा हिन्दी और संस्कृत की
में श्री पूजनीय कुलपति पं० मदनमोहन मालवीयजी सरीखे
स्वर्णपदक, रजतपदक आदि प्राप्त आयुर्वेदाचार्य पं० श्री अम्बि
के द्वारा ... को गूढार्थसन्दीपिका नामक ...न्त सं
विस्तृत व्याख्या कराकर मुद्रित किया है। उक्त व्याख्या से यह ग्र
वैज्ञानिक ढङ्ग का अनुपम हो गया है ! केवल इसी एक ग्रन्थ के
सम्पूर्ण रसग्रन्थों का ज्ञान प्राप्त हो सकता है । रोगों का एवं पथ्य
भी इसमें उल्लेख करा दिया गया है अन्त में ओषधियों के अनेक
नाम तथा अन्यान्य उपयोगी विषयों को देकर इस संस्करण को स
र्वोपयोगी बना दिया गया है जिसे पाठक जन स्वयं देखकर जान
लिखना लेख का ... अन्त में इतना
उक्त शास्त्रीजी ने ... के अन्दर त
परिश्रम करने के ... द्र का मन्थ
हुई रत्नरूपी, आप ... र्वोत्तम बना
सर्व साधा... ...तनाम रा

और डाक्टरी में परमनि...
पूजनीय कुलपति पं० मदनमोह
...दक, रजतपदक आदि प्राप्त आयुर्वे
...रा ... को गूढार्थसन्दीपि
...त व्याख्या कराकर मुद्रित किया है।
...निक ढङ्ग का अनुपम हो गया है !

जयकृष्णदास हरिदास गुप्त-
चौखम्बा संस्कृत सीरीज़ आफि
बनारस सिटी ।